राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यत: अखिल भारतीय तथा विशेषत: राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविध वाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावलि

प्रधान सम्पादक

पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएन्टल सोसाइटी, जर्मनी]

सम्मान्य सदस्य

भाण्डारकर प्राच्यविद्यासंशोधनमन्दिर, पूना; गुजरातसाहित्य-सभा, अहमदाबाद;
विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध-संस्थान, होशियारपुर, निवृत्त सम्मान्य नियामक–
(आनरेरि डायरेक्टर)–भारतीय विद्याभवन, बम्बई

ग्रन्थाङ्क ५०

चारण किसनाजी आढ़ा विरचित

रघुवरजसप्रकास

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

चारण किसनाजी आढ़ा विरचित

रघुवरजसप्रकास

सम्पादक

श्रीसीताराम लाळस

वृहद् राजस्थानी कोशके कर्ता

प्रकाशनकर्त्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०१७
प्रथमावृत्ति १०००

भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८२

ख्रिस्ताब्द १९६०
मूल्य ८.२५ न पै.

मुद्रक—हरिप्रसाद पारीक, साधना प्रेस, जोधपुर

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमालाके कुछ ग्रन्थ

प्रकाशित ग्रन्थ

संस्कृतभाषाग्रन्थ–१ प्रमाणमंजरी–तार्किकचूडामणि सर्वदेवाचार्य, मूल्य ६ ०० । २ यन्त्रराजरचना–महाराजा सवाई जयसिंह, मूल्य १ ७५ । ३ महर्षिकुलवैभवम्–स्व० श्रीमधुसूदन ओझा, मूल्य १०·७५ । ४ तर्कसंग्रह–प० क्षमाकल्याण, मूल्य ३ ०० । ५ कारकसम्बन्धोद्योत–प० रभसनन्दि, मूल्य १ ७५ । ६. वृत्तिदीपिका–प० मौनिकृष्ण, मूल्य २.०० । ७ शब्दरत्नप्रदीप, मूल्य २ ०० । ८ कृष्णगीति–कवि सोमनाथ, मूल्य १.७५ ९ शृङ्गारहारावली–हर्षकवि, मूल्य २ ७५ । १० चक्रपाणिविजयमहाकाव्य–प० लक्ष्मीधरभट्ट, मूल्य ३ ५० । ११. राजविनोद–कवि उदयराज, मूल्य २.२५ । १२ नृत्तसंग्रह, मूल्य १ ७५ । १३ नृत्यरत्नकोश, प्रथम भाग–महाराणा कुम्भकर्ण, मूल्य ३ ७५ । १४ उक्तिरत्नाकर–प० साधुसुन्दरगणि, मूल्य ४ ७५ । १५ दुर्गापुष्पाञ्जलि–प० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी, मूल्य ४.२५ । १६ कर्णकुतूहल तथा कृष्णलीलामृत–भोलानाथ, मूल्य १ ५० । १७. ईश्वरविलास महाकाव्य–श्रीकृष्ण भट्ट, मूल्य ११.५० । १८. पद्यमुक्तावली–कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्ट, मूल्य ४ ०० । १९. रसदीर्घिका–विद्याराम भट्ट, मूल्य २.०० ।

राजस्थानी और हिन्दी भाषा ग्रन्थ–१ , कान्हडदे प्रबन्ध–कवि पद्मनाभ, मूल्य १२.२५ । २ क्यामखारासा–कवि जान मूल्य ४ ७५ । ३ लावारासा–गोपालदान मूल्य ३ ७५ । ४ वाकीदासरी ख्यात–महाकवि वाकीदास, मूल्य ५.५० । ५ राजस्थानी साहित्यसंग्रह, भाग १, मूल्य २ ७५ । ६ जुगल-विलास–कवि पीथल, मूल्य १ ७५ । ७ कवीन्द्रकल्पलता–कवीन्द्राचार्य मूल्य २ ०० । ८ भगतमाळ–चारण ब्रह्मदासजी, मूल्य १ ७५ । ९ राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिरके हस्तलिखित ग्रन्थोकी सूची, भाग १, मूल्य ७ ५० । १०. मुहता नैणसीरी ख्यात, भाग १, मूल्य ८ ५० न पै । ११ रघुवरजसप्रकास, किसनाजी आढा, मूल्य ८ २५ न पै

प्रेसोंमें छप रहे ग्रन्थ

सस्कृत-भाषा-ग्रन्थ–१ त्रिपुराभारतीलघुस्तव–लघुपडित । २. शकुनप्रदीप–लावण्यशर्मा । ३ करुणामृतप्रपा–ठक्कुर सोमेश्वर । ४ वालशिक्षा व्याकरण–ठक्कुर सग्रामसिंह ५. पदार्थरत्नमञ्जूषा–प० कृष्णमिश्र । ६ काव्यप्रकाशसकेत–भट्ट सोमेश्वर । ७ वसन्तविलास फागु । ८ नृत्यरत्नकोश भाग २ । ९ नन्दोपाख्यान । १० वस्तुरत्नकोश । ११ चान्द्रव्याकरण । १२ स्वयभूछद–स्वयभू कवि । १३ प्राकृतानद–कवि रघुनाथ । १४ मुग्धाववोध आदि औक्तिक-सग्रह । १५ कविकौस्तुभ–प० रघुनाथ मनोहर । १६ दशकण्ठवधम्–प० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी । १७ भुवनेश्वरीस्तोत्र सभाष्य–पृथ्वीधराचार्य, भा पद्मनाभ । १८ इन्द्रप्रस्थप्रबन्ध । १९ हम्मीरमहाकाव्यम्–जयचन्द्रसूरि । २० ठक्कुर फेरू रचित रत्नपरीक्षादि ।

राजस्थानी और हिन्दीभाषा ग्रन्थ–१ मुहता नैणसीरी ख्यात, भाग २–मुहता नैणसी । २ गोरावादल पदमिणी चऊपई–कवि हेमरतन । ३ चन्द्रवशावली–कवि मोतीराम । ४ सुजान सवत–कवि उदयराम । ५ राजस्थानी दूहा सग्रह । ६ वीरवाण–ढाढी वादर । ७ राठोडारी वशावली । ८ सचित्र राजस्थानी भाषा-साहित्य ग्रथ सूची । ९ राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिरके हस्तलिखित ग्रथोकी सूची, भाग २ । १० देवजी वगडावत और प्रतापसिंह म्होकमसिंघरी वात । ११ पुरोहित वगसीराम और अन्य वार्ताएँ । १२ राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थोकी सूची, भाग १ ।

इन ग्रथोके अतिरिक्त अनेक सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रश, प्राचीन राजस्थानी और हिन्दी भाषामे रचे गये ग्रथोका सशोधन और सम्पादन किया जा रहा है ।

सञ्चालकीय वक्तव्य

राजस्थानी भाषामे इतिहास, धर्मशास्त्र, पुराण और कथा आदि अनेक विषयोके साथ ही काव्यशास्त्रकी विशेष उन्नति हुई है, जिसके परिणाम-स्वरूप विभिन्न काव्य-शैलियोका अनूठे रूपमे विकास हुआ है। उदाहरणार्थ रास, रूपक, मङ्गल, वचनिका, वेलि, पवाडा, विलास, प्रकाश और सतसई आदि सहस्रो राजस्थानी रचनाओको लिया जा सकता है। अनेक काव्य-ग्रन्थोमे गीत, दूहा, नीसाणी, झूलणा, चौपाई, झमाळ आदि छन्दोका प्रयोग भाव, भाषा एवं काव्य-कलाकी दृष्टिसे महत्त्वपूर्ण है।

इस प्रकार राजस्थानी काव्योकी विपुलताके आधार पर राजस्थानी काव्य-शास्त्र-सम्बन्धी ग्रन्थोका निर्माण भी हुआ जिनमे रस, छन्द, अलङ्कार और नायक-नायिका-भेदादि विषयोका विस्तृत एव सम्यक् विवेचन प्राप्त होता है।

चारण कवि किसनाजी आढा रचित 'रघुवरजसप्रकास' राजस्थानी छन्द शास्त्र-विषयक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। ग्रन्थकर्त्ताने इसमे राजस्थानी काव्योमे प्रयुक्त विभिन्न छन्दोके लक्षण प्रस्तुत करते हुए स्वरचित उदाहरणोके रूपमे भगवान् श्रीरामचन्द्रका सुयश गान भी किया है। राजस्थानी काव्य-शास्त्रके विद्वानो मे 'रघुवरजसप्रकास'के प्रकाशनकी बहुत समय से प्रतीक्षा थी।

राजस्थानके सुपरिचित साहित्यसेवी और वृहद् राजस्थानी शब्दकोशके कर्त्ता श्रीसीतारामजी लाळसने कुछ मास पूर्व हमे प्रस्तुत ग्रन्थकी प्रति बताई तो हमने 'राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला'के लिए उपयोगी समझते हुए इसका प्रकाशन स्वीकार कर लिया। प्रसन्नताका विषय है कि यह ग्रन्थ प्रकाशित होकर काव्य-प्रेमियोके हाथोमे पहुँच रहा है। श्रीसीतारामजी लाळसने सपरिश्रम इसका सम्पादन किया है और भूमिकामे सम्बद्ध विषयोकी आवश्यक सूचनाएँ दी है, तदर्थ वह धन्यवादके पात्र है।

इस ग्रन्थके प्रकाशनमे जो व्यय हुआ है उसका अर्द्धांश केन्द्रीय भारत सरकारने प्रदान किया है। तदर्थ सरकारको धन्यवाद अर्पित है।

महाशिवरात्रि, वि०सं० २०१६
भारतीय विद्या भवन,
वम्बई।

मुनि जिनविजय
सम्मान्य सञ्चालक,
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर।

....

भूमिका

संस्कृत साहित्यमे छदशास्त्रका विशेष स्थान है। वेदके छ अगो (१ छद, २ कल्प, ३ ज्योतिष, ४ निरुक्त, ५ शिक्षा और ६ व्याकरण) मे छदशास्त्र भी एक महत्वपूर्ण अग है। इसका स्थान पाद (चरण) माना गया है। कारण कि इसके बिना गति-क्रिया किसीकी सम्भव नही, अत वेदमे भी छन्दस्तु वेदपाद कहा गया है। यह कहना कोई अत्युक्ति नही कि हमारे पूर्वाचार्योंने काव्य-रचनामे छदशास्त्रकी उतनी ही आवश्यकता मानी है जितनी व्याकरणकी। कालान्तरमे अनेक भाषाओका प्रादुर्भाव सस्कृत भाषासे हुआ जैसे कि प्राकृत, अपभ्र श आदि। इन भाषाओके साहित्यमे भी छदशास्त्रको उतना ही महत्त्व दिया गया जितना कि सस्कृत साहित्यमे, फल-स्वरूप प्राकृतपैंगलम् आदि रीति-ग्रथोकी रचना सस्कृतेत्तर छदोके लक्षणोको बतलाते हुए प्राकृत भाषामे की गई।

भाषाका विकास निरतर काल-गतिके साथ होता रहा। अपभ्रंश भाषासे अनेक देशी भाषाओ तथा लोक भाषाओका जन्म हुआ, उनमे मरु-भाषा भी एक है। इसी मरु-भाषाने कालान्तरमे डिगल या राजस्थानी भाषाके नामसे प्रसिद्धि प्राप्त की। भाषाकी विकासकी गतिके साथ साथ मरु-भाषा डिगल या राजस्थानीका भी नवीन व मौलिक साहित्य बढता गया। पूर्व पद्धत्यानुसार डिगल भाषाके मर्मज्ञोने अपने साहित्यमे छंदशास्त्रको महत्व दिया जिसके फलस्वरूप उच्च कोटिके मौलिक छदग्रथोकी रचना की गई जिससे भाषा और साहित्यको पूर्ण बल मिला।

मरु-भाषाके मर्मज्ञ विद्वानोने हिन्दी भाषाके समान ही कुछ सस्कृत एव प्राकृत छदोको ज्यो का त्यो अपना लिया और उनमे अपनी भाषाकी रचना की। वेदोके बाद[1] पद्यमय रचनाका सर्वप्रथम ग्रथ वाल्मीकि रामायण है। उसमे तेरह प्रकारके छदोका प्रयोग मिलता है। फिर महाभारतमे भी यही प्रयोग वृद्धिको प्राप्त हुआ और महाभारतमे १८ प्रकारके छदोका पयोग हुआ। तत्पश्चात् श्रीमद्भागवतमे छदोकी सख्या बढ कर २५ तक पहुँची। इसके बादमे ज्यो ज्यो भाषा और साहित्यका विकास हुआ त्यो त्यो छदोके रूप भी

---

१ भारतका प्राचीनतम साहित्य वेद प्राय छदोवद्ध है। इसके वादके साहित्यकी रचना भी विशेपकर छदोमे हुई है। साहित्यकी वृद्धिके साथ-साथ छदोकी भी सख्या वढी। वेदोमे मुख्य सात छद पाये जाते है, यथा—गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप, वृहती, पक्ति, त्रिष्टुप् और जगती।

निरतर बढते ही गये, जिसके फलस्वरूप आगेके ग्रथोमे अनेक प्रकारके छद हमे मिलते है।

अन्य भाषाओके समान ही राजस्थानी भाषामे विशिष्ट रीति-ग्रन्थोकी रचना प्रारम्भ हुई। रीति-ग्रन्थकारोने अनेक मौलिक छदोका भी निर्माण किया।

वर्णवृत्त एव मात्रिक छद हिन्दीमे भी बहुत अधिक सख्यामे प्राप्त है, परन्तु गीत नामक छंद डिंगलकी अपनी नवीनतम एव मौलिक रचना है। यद्यपि राजस्थानी साहित्यके निर्माणमे चारण कवियोकी ही प्रधानता है, फिर भी यहा पर यह कहना होगा कि डिंगल गीत छदके रचयिता तो चारण कवि ही है। छदशास्त्रका सबसे प्राचीनतम सस्कृतका पिगल मुनिकृत पिगल छद-शास्त्र है। ग्रन्थकारने अपने पिंगल छद शास्त्रमे पूर्वाचार्योंका उल्लेख किया है परन्तु उन सबके नाम सूत्रोमे ही रह गये—उनके ग्रन्थ उपलब्ध नही होते है। पिगल मुनिके छदशास्त्रके बाद छदोका विशद वर्णन अग्निपुराणमे मिलता है परतु पिंगल छदशास्त्र और अग्निपुराणमे वर्णन किये गये छदशास्त्रका प्रकरण परस्पर मिलता-जुलता ही है। इसके बाद छद शास्त्र पर अनेक ग्रथ रचे गये। उनमेसे 'श्रुत-बोध', 'वाणी-भूषण', 'वृत्त-रत्नाकर', वृत्त-दर्पण', वृत्त-कौमुदी' 'सुवृत्त-तिलक' और 'छदो-मजरी' बहुत प्रसिद्ध है। केदार भट्ट विरचित 'वृत्त-रत्नाकर' और गगादास रचित 'छदो-मजरी'का तो घर-घर प्रचार है। ये दोनो ग्रथ इस विषयके पूर्ण मान्य ग्रन्थ हैं।

हिन्दी भाषामे रीतिकालीन कवियोने अनेक छदशास्त्रोकी रचना की। उनमे कई प्राकृतके छदो और उपर्युक्त सस्कृत रीतिग्रथोके छदोको ग्रहण किया गया। इस प्रकार पूर्वापर पद्धत्यानुसार हिन्दीमे भी छदोंके लाक्षणिक ग्रथ पृथक लिखे गये।

इधर मरु-भाषा डिंगल या राजस्थानीमे भी समय समय पर छदोके लाक्षणिक ग्रन्थ रचे गये। सर्वप्रथम पिंगल मुनिके सकेत मात्र लेकर नागराज पिंगळ[1] डिंगल छदशास्त्र नामक वृहद् ग्रथ रचा गया, परन्तु मूल ग्रथके रचयिताके नामका पता न चला और यह ग्रन्थ पूर्णरूपमे प्राप्त भी नही है। दो स्थानो पर मैंने इस ग्रन्थकी पाडुलिपियां देखी हैं, छदोके साथ-साथ गीतोके भी लक्षण दिए गए है, परन्तु यह ग्रन्थ अभी अप्राप्य सा हो है।

उपर्युक्त ग्रन्थके अतिरिक्त अद्यावधि डिंगलके छदशास्त्र पर प्राप्त ६ ग्रथ हैं जिनके नाम क्रमश इस प्रकार है—

---

१ नागराज पिंगळ छदशास्त्रकी एक प्रति सिवाना नगरमे एक जैन यतिके अधिकारमे सुरक्षित है।

१. पिंगळ-सिरोमणि — रावळ हरराज कृत
२. पिंगळ-प्रकास . हमीरदान रतनू कृत
३. लखपत पिंगळ ... ” ” ”
४. हरि-पिंगळ .. जोगीदास चारण कृत
५. कविकुळबोध . उदयराम बारहठ कृत
६. रघुनाथरूपक . मंशाराम सेवग कृत
७. रघुवरजसप्रकास .. किसनाजी आढा कृत
८ रण-पिंगळ .. दीवाण रणछोडजी द्वारा संग्रहीत
९. डिंगल कोश . कविराजा मुरारिदानजी मीसण कृत

उपर्युक्त छदोके लाक्षणिक ग्रथोमे लखपत पिंगळको छोड कर छदोके लक्षणोके साथ साथ गीतोके लक्षण व रचना-नियम दिये गये हैं। लखपत पिंगळमे केवल गीतोके रचनाके नियम न देकर केवल गीत ही दिए गए हैं।

हमने जिन ग्रथोके नाम ऊपर दिए हैं उनमे केवल तीन ग्रथ प्रकाशित हो चुके हैं और चौथा यह रघुवरजसप्रकास है। शेष पाँच ग्रन्थ अप्रकाशित है।

कवि परिचय

प्रस्तुत रीतिग्रन्थ रघुवरजसप्रकासकी समाप्ति पर स्वयं कविने एक छप्पय लिख कर अपना वश-परिचय दिया है, वह इस प्रकार है —

छप्पै

'दुरसा' घर 'किसनेस', 'किसन' घर सुकवि 'महेसुर'।
सुत 'महेस' 'खुमाण' 'खान साहिब' सुत जिण घर ॥
'साहिब' घर पनसा' है 'पना' सुत 'दुलह' सुकव पुण।
'दूलह' घर खट पुत्र 'दान' 'जस' 'किसन' 'बुधो' भण ॥
'सारूप' 'चिमन' मुरधर उतन, परगट नगर पाचेटियौ।
चारण जात आढा विगत, 'किसन' सुकवि पिंगळ कियौ ॥

स्वयं कवि द्वारा प्रदत्त वंश-परिचयसे हमे ज्ञात होता है कि लाक्षणिक ग्रंथ रघुवरजसप्रकासके रचयिता सुकवि किसनजी राजस्थानके प्रसिद्ध एव राष्ट्र-भक्त कवि आढा गोत्रके चारण श्रीदुरसाजीकी वश-परम्परामे थे। प्रस्तुत ग्रंथ-रचयिताके परिचयके पूर्व उनके पूर्वज चारण-कुल-भूषण सुकवि दुरसाजीका संक्षिप्त परिचय देना आवश्यकीय होगा।

सुकवि दुरसाजी आढा गोत्रके चारण थे जिनका जन्म जोधपुर राज्यांतर्गत सोजत तहसीलके धूधला नामक ग्राममे अमराके पुत्र मेहाके घर संवत्

१५९२मे हुआ था। दुर्भाग्यसे बाल्यावस्थामे ही पितृ-प्रेमसे वचित हो गये[1]। अत वगडी गाँवके ठाकुर श्री प्रतापसिंहजी सूडाने इनका पालन-पोषण किया और वयस्क होने पर अपने यहा कार्य पर रख लिया। दुरसाजी अपनी काव्य-प्रतिभाके कारण शीघ्र ही विख्यात हो गये और दिल्लीके सम्राट अकबरके दरबारमे भी अच्छा सम्मान प्राप्त किया।

दुरसाजी राजस्थानके बहुत लोकप्रिय और यशस्वी कवि हुए है। आपने कविताके नामसे बहुत सम्मान व धन प्राप्त किया।

काव्य-रचनाके दृष्टिकोणसे भी दुरसाजीका स्थान बहुत ऊँचा माना जाता है, इसमे कोई सदेह नही। इनके लिखे तीन ग्रंथ प्रसिद्ध हैं—१. बिरुद-छिहत्तरी, २. किरतारबावनी और ३ श्रीकुमार अज्जाजीनी भूचर मोरीनी गजगत। इन ग्रथोके अतिरिक्त दुरसाजीके लिखे पचासो डिंगल गीत उपलब्ध होते है।

दुरसाजीके दो स्त्रिया थी जिनसे चार पुत्र हुए। ये अपने सबसे छोटे पुत्र किसनाजीके साथ पाचेटियामे ही रहते थे। वही स० १७१२में इनका देहावसान हुआ। इन्ही दुरसाजीकी वश-परम्परामे किसनाजीने मारवाड़ राज्यातरगत पांचेटिया ग्राममे जन्म लिया जिसका वश क्रम इस प्रकार है—

१ दुरसौ,
२ किसोजी,
३ महेस,
४ खुमान,
५ साहिबखांन,
६ पनजी
७ दूल्हजी,
८ किसनोजी,

इस प्रकार कवि-परिचयके प्रारम्भमे दिए हुए छप्पयके अनुसार रघुवरजसप्रकासके रचयिता सुकवि किसनाजी आढाका जन्म दुरसाजी आढाकी आठवी पुश्तमे (पीढीमे) दूल्हाजी नामक कविके घर हुआ। दूल्हजीके कुल छ पुत्र थे जिनमे किसनोजी तीसरे थे। इनके जीवनके सम्बधमे श्रीमोतो-

---

१ नोट— इनके पिताने सन्यास ले लिया था।

लालजी मेनारिया द्वारा लिखित राजस्थानी भाषा और साहित्यमे बहुत संक्षिप्त परिचय ही प्राप्त है।

किसनाजी सस्कृत, प्राकृत, वृजभाषा एव राजस्थानी भाषाके उद्भट विद्वान थे। लाक्षणिक ग्रथोका भी इनका ज्ञान पूर्ण परिपक्व था। इतिहासकी ओर भी आपकी विशेष रुचि थी। कर्नल टॉडको अपना राजस्थानका वृहद् इतिहास लिखनेमे किसनाजीके अथक परिश्रमसे पर्याप्त ऐतिहासिक सामग्री उपलब्ध हुई थी।

ये उदयपुरके तत्कालीन महाराणा भीमसिहजीके पूर्ण कृपापात्र थे। महाराणा भीमसिहजीने आपको काव्य-रचनासे प्रभावित होकर सीसोदा नामक ग्राम प्रदान किया था जो अद्यावधि इन्हीके वशजोके अधिकारमे रहा।

महाराणा भीमसिहजी द्वारा इस ग्रामको किसनाजीको प्रदान करनेका किसनाजी कृत निम्नलिखित एक डिंगल गीत हमारे संग्रहमे है—

गीत

कीजै कुण-मीढ न पूजै कोई,
घरपत झूठी ठसक घरै।
तो जिम 'भीम' दिये तावा पत्र,
कवा अजाची भला करै ॥ १ ॥

पटके अदत खजाना पेटां,
देता वेटा पटा दिये।
सीसोदौ सासण सीसोदा,
थारा हाथा मौज थियै ॥ २ ॥

मन महाराण धनौ मेवाडा,
दाखै धाडा दसू दसा।
राजा अन वाधे रजवाडा,
तू गढवाडा दिये तसा ॥ ३ ॥

अधपत तनै दियारौ अजस,
लोभीं अजस लियारौ।
भाणै साच जणायौ 'भीमा',
हाथा हेत हियारौ ॥ ४ ॥

किसनाजी द्वारा रचे हुए मुख्य दो ग्रथ उपलब्ध हैं—एक भीमविलास और दूसरा रघुवरजसप्रकास। भीमविलास महाराणा भीमसिहजीकी आज्ञासे सवत्

१८७९मे लिखा गया था जिसमे उक्त महाराजाका जीवन-वृत्त है । रघुवरजस-प्रकास प्रकाशित रूपमे आपके समक्ष है । इनके अतिरिक्त कविके रचे हुए फुटकर गीत अधिक सख्यामे उपलब्ध होते है जो कविकी विशिष्ट काव्य-प्रतिभा एवं प्रौढ ज्ञानका परिचय देते है ।

रघुवरजसप्रकास

प्रस्तुत ग्रंथ रघुवरजसप्रकास राजस्थानी भाषाका छद - रचनाका उत्कृष्ट लाक्षणिक ग्रन्थ है । इस ग्रन्थमे सस्कृत, प्राकृत, ग्रपभ्रंश व हिन्दीके छंदोका ग्रपनी मौलिक रचनामे पूर्ण विवेचन है ।

ग्रथमे कविने मुख्य विषय छद-रचनाके लक्षणो व नियमोका बडी सरल व प्रसादगुणपूर्ण भाषामे वर्णन किया है । छदोके वर्णनमे कविने ग्रपनी राम-भक्तिका पूर्ण परिचय दिया है । राम-गुणगान ही कविका मुख्य ध्येय था । ग्रत छद-रचनाके लक्षणोके साथ-साथ रामगुण-वर्णन करते हुए कविने एक पथ दो काजकी कहावतको पूर्ण रूपसे चरितार्थ किया है ।

प्रकाशित रीति ग्रन्थ रघुनाथरूपकमे लाक्षणिक वर्णनके ग्रतिरिक्त उदाहरणके गीतोमे रामकथाका ही सहारा लिया है । इसमे रामायणकी भाति रामगाथा क्रमवद्ध चलती है । परन्तु किसनाजीने ग्रपने ग्रन्थमे मुक्तक रूपसे राम-महिमाका वर्णन किया है । इसमे कोई कथाका क्रम नही है । कविने रीतिके ग्रनुसार ग्रथको पांच भागोमे विभाजित किया है । छद-लक्षण जैसे ग्ररुचिकर विपयको ग्रत्यत सरल वना कर ग्रन्थको पर्ण प्रसादगुणयुक्त कर दिया है । ग्रथका सक्षिप्त विवरण इस प्रकार है —

प्रथम प्रकरणमे मगलाचरण, गणागण, गणागणदेव, गणागणका फलाफल, गण मित्र शत्रु, दोपादोष, ग्राठ प्रकारके दग्धाक्षर, गुरु, लघु, लघु गुरुकी विधि, मात्रिक गण, मात्रिक गणोके भेदोपभेद व उनके नाम तथा छंदशास्त्रके आठ प्रत्ययो—१ प्रस्तार, २ सूची, ३ उद्दिष्ट, ४ नष्ठ, ५ मेरु, ६ खडमेरु, ७ पताका, ८ मर्वर्कटिका सक्षिप्त वर्णन व विवेचन किया गया है ।

द्वितीय प्रकरणमे मात्रिक छदका वर्णन किया गया है । कविने इस प्रकरणमे कुल २२४ मात्रिक छदोके लक्षण देकर उनके उदाहरण भी दिए हैं । लक्षण कही-कही पर प्रथम दोहोमे या चोपईमे दिये गये हैं । फिर छदोके उदाहरण दिये है । कही-कही लक्षण ग्रौर छद सम्मिलित ही दे दिये गये है । इस प्रकरणमे

राजस्थानीकी साहित्यिक गद्य-रचनाके नियम भी समझाए है। उनके भेदोपभेद[1] सक्षिप्त रूपमे दिये हैं जो राजस्थानी साहित्यका ही एक मुख्य अंग है। ऐसी गद्य-रचनाओंका हिन्दीमे अभाव ही है। इस प्रकरणमे चित्र-काव्यके भी उदाहरण कमलवध, छत्रबध आदि समझाए गये है।

तृतीय प्रकरणमे छदोके दूसरे भेद, वर्णवृत्तोके लक्षण व उदाहरण दिए हैं। प्रारम्भमे कविने एक अक्षरसे छब्बीस अक्षरके छदोके नाम छप्पय कवित्तमे गिनाए है। ये सब छद संस्कृत छद है—इनका स्वतत्र उदाहरण राजस्थानीमे नही मिलता। तत्पश्चात् क्रमश ११७ वर्णवृत्तोके लक्षण व उदाहरण दिये हैं। कविने अपनी अनन्य रामभक्ति प्रकट करते हुए छदोके उदाहरणस्वरूप राम-गुणगान किया है।

ग्रथके इस चौथे प्रकरणमें राजस्थानी (डिंगल) गीतका (छदोका) विस्तार-पूर्वक विशद् वर्णन है जो इस ग्रथका मुख्य विषय है और साथमे डिंगल भाषाके छदशास्त्र या लाक्षणिक ग्रन्थकी अपनी विशेषता भी है। गीत नामक छंद, उसके भेद डिंगल भाषाके कवियोकी अपनी मौलिक देन है। ग्रन्थकारने गीतोके वर्णनमे गीतोके अधिकारी, गीतोंके लक्षण, गीतोकी भाषा, गीतोमें वैणसगाई, वैण-सगाईके नियम, वैणसगाई और अखरोट, अखरोट और वैणसगाईमे अतर, गीतोमे नौ उक्तियाँ, गीतोमें प्रयुक्त होने वाली जथाए, गीत-रचनामें माने गये ग्यारह दोष एव विभिन्न गीतोकी रचना, नियम आदिका पूर्ण और सरल भाषामे विशद् वर्णन दिया है।

राजस्थानीमें प्राप्त छद-रचनाके लाक्षणिक ग्रन्थोमे इतना विस्तारपूर्ण एव इतने गीतोका वर्णन किसी भी ग्रन्थमे प्राप्त नही होता है। प्राप्त ग्रन्थोमें जो गीत दिये गये है उनकी जानकारी यहा दी जाती है—

१ **पिंगल-सिरोमणि**—इसमे कुल तेतीस गीतोके लक्षण व उदाहरण दिए गए हैं।

२ **हरि-पिंगल**—इसमे प्रथम छदोके लक्षण दिये गये है। तत्पश्चात् बाईस गीतोके भी लक्षण दिये गये हैं। इसकी रचनाका समय सवत् १७२१ है।

३ **पिंगळप्रकास**—इसमें केवल 'छोटा साणोर' और उसके तीस भेदो तथा 'वडी साणोर' और उसके चार भेदोका ही वर्णन है, शेष पुस्तकमें छदोके लक्षण हैं।

---

१ इस प्रकरणमे राजस्थानीकी गद्य सम्बन्धी रचनायें दवावैत, वचनिका और वारता आदि समझाई गई हैं।

४ **लखपतपिंगल**—इसमे गीत-रचनाके लक्षण तो नही है परंतु ग्रन्थके अतमे चौवीस भिन्न-भिन्न गीतोकी जाति व गीत दिए गए हैं।

५ **कविकुलवोध**—इसमे चौरासी प्रकारके गीत, अट्ठारह उक्तियाँ, बाईस जथाए आदिका वडा विशद् वर्णन है। यह अत्युत्तम लाक्षणिक ग्रथ है।

६ **रघुनाथरूपक**—यह प्रकाशित ग्रन्थ है। इसमे वहत्तर प्रकारके गीतोका वर्णन है।

७ **डिंगल-कोश**—यह ग्रन्थ प्रधान रूपसे पद्यवध शव्दकोश है। इसमे भी पद्रह गीतोके लक्षण दिए हैं और उदाहरणके गीतोमे डिगलके पर्यायवाची कोशके शब्दोका वर्णन है।

८ **रण-पिंगल**—यह छदशास्त्रका वृहद् लाक्षणिक ग्रथ है। इसके तीन भाग हैं। इसके तृतीय भागमे भिन्न-भिन्न प्रकारके तीस गीतोके लक्षण व उदाहरण दिए गये है। अधिकाश रघुनाथरूपकके हो गीत इसमें है। यह ग्रथ प्रकाशित है किन्तु अप्राप्य है।

९ **रघुवरजसप्रकास**—प्रस्तुत ग्रन्थ रघुवरजसप्रकासमे ९१ प्रकारके गीतोके लक्षण आदिका विस्तृत वर्णन है। केवल गीतोका ही वर्णन नही, गीतोके विभिन्न अगोका वर्णन भी वडे ही सुन्दर एव विस्तृत ढगसे किया गया है। गीतोके ग्यारह प्रकारके दोष, गीतोमे वैणसगाईके प्रयोगका महत्त्व आदिका सुन्दर वर्णन है। गीतोमें वैणसगाईके प्रयोगके जो उदाहरण दिए गये है वे कविकी रचनाके महत्त्वको द्विगुणित कर गथकारकी काव्य-प्रतिभाका परिचय देते हैं।

छद शास्त्रमे चित्र काव्यका अपना एक विशेष स्थान है। साहित्यकारोने इसे एक स्वतन्त्र रूपसे अलकार माना है जो शब्दालकारका एक भेद माना गया है। सस्कृत व व्रज भाषामे चित्र काव्य पर्याप्त मात्रामे उपलब्ध होता है परन्तु राजस्थानी (डिंगल) गीतोमे चित्र काव्यका उल्लेख नही मिला। अद्यावधि डिंगल गीतोंके लाक्षणिक ग्रन्थ प्राप्त हुए हैं—उनमे किसीमे भी चित्र-काव्य सम्वन्धी विवरण नही है, परन्तु रघुवरजसप्रकासमें एक 'जाळीवध वेलियो साणोर' गीतका चित्र-काव्यके रूपमें उदाहरण मिला है। मेरे निजी सग्रहमे इस जाळीवंध गीतके चित्र वने हुए हैं। एक-दो उदाहरण प्राचोन भी मिलते है। इन उदाहरणोसे पता चलता है कि डिंगल गीतमे भी चित्रकाव्यकी रचना प्रारभ हो गई थी।

पंचम प्रकरण ग्रन्थका अंतिम प्रकरण है। इसमे ग्रन्थाकारने एक राजस्थानी छद विशेष निसाणीका वर्णन करते हुए इसके मुख्य बारह भेदोंके साथ इसके भेदोपभेदोका तथा एक मात्रिक छद कडखाका भी वर्णन किया है। प्रकरणके प्रारम्भमे प्रथम निसाणीके लक्षणोको देकर उदाहरणोको प्रस्तुत किया है। फिर रामगुण-गाथा गाते हुए निसाणीके अन्य भेदोका उत्तम रीतिसे वर्णन किया है। प्रकरणके अतमे कविने अपनी वशपरम्पराका परिचय देकर ग्रथको समाप्त किया है। स्वयम् कवि द्वारा दिए गये इस वश-परिचयसे कविके जीवन-वृत्तको जाननेमे बहुत सहायता प्राप्त होती है।

ग्रन्थ रचना-काल

इस ग्रन्थकी रचनाका प्रारभ और समाप्ति सम्बन्धी स्वय कविने अपने वश-परिचयके पश्चात् एक छप्पय कवित्त इस प्रकार दिया है जिससे पता चलता है कि यह ग्रन्थ वि स. १८८०की माघ शुक्ला चतुर्थी बुधवारको प्रारभ किया गया था। कविने अपनी कुशाग्र बुद्धि और प्रौढ ज्ञानके सहारे वि स. १८८१के आश्विन् शुक्ला विजयादशमी, शनिवारको ग्रथ पूर्ण रूपसे तैयार कर लिया। ग्रन्थ-रचनाके सम्बन्धमे स्वय कविने अपने ग्रन्थके समाप्ति-प्रकरणमे लिखा है—

छप्पय कवित्त

उदियापुर आथाण राण, भीमाजळ राजत।
कवरा-मुकट'जवान' नीत मग जग नीवाजत ॥
अठ्ठारै सै समत वरस अैसियौ माह सुद।
बुद्धवार तिथ चौथ हुवौ प्रारम्भ ग्रन्थ हद ॥
अठारै अनै अकयासिये, सुद आसोज सराहियौ।
सनि विजैदसमी रघुवर सुजस 'किसन' सुकवि सुभक्रत कियौ-॥

भूमिका समाप्त करनेके पूर्व हम राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानके प्रति आभार प्रदर्शित किए बिना नही रह सकते। कारण कि प्रतिष्ठान इस प्रकारके अमूल्य ग्रन्थ जो, साहित्यकी अप्राप्य निधि है "राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला"के अन्तर्गत प्रकाशित कर साहित्यके कलेवरको बढानेमे सतत प्रयत्नशील है। प्रस्तुत ग्रन्थको इस रूपमे प्रकाशित करानेका श्रेय श्रद्धेय मुनिवर श्रीजिनविजयजीको है जिन्होने राजस्थानीके छद-शास्त्रके इस अमूल्य ग्रन्थका प्रकाशन राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला द्वारा करना स्वीकार किया। श्रीगोपालनारायणजी वहुरा, एम. ए. व श्रीपुरुषोत्तमलालजी मेनारिया, एम. ए प्री. साहित्यरत्नका भी पूर्ण रूपसे आभार मानता हूँ कि इन्होने समय-समय पर पुस्तकके प्रूफ-सशोधन और सम्पादन-कार्यमे योग दिया।

हमारे सग्रहमे ग्रथकी प्रतिलिपि मौजूद थी परन्तु उनके क्षतविक्षत होनेके कारण उसका सम्पूर्ण प्रकाशन सम्भव नही था। इस कार्यके लिए मेवाड़के अन्तर्गत मेगटिया ग्रामके ठा श्री ईश्वरदानजी आसियाने प्रस्तुत ग्रन्थकी हस्त-लिखित प्रति, जो पूर्ण सुरक्षित थी, हमे प्रदान कर अपूर्व सहयोग दिया है। उसके लिए वे धन्यवादके पात्र हैं और मैं उनके इस सहयोगके लिए कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

जोधपुर,
२१ फरवरी, १९६० ई.

सीताराम लालस
सम्पादक

विषय - सूची

++++

मात्रा व्रति वरणण

श्रीगणेशाय नमः

श्रीगुरुगणपतीष्ट देवताभ्यो नमः # ॐ नम श्रीसीतारामाय

अथ आढ़ा किसनाजी कृत

पिंगळ रघुवरजसप्रकास

लिख्यते

++

श्रीगणेस स्तुति

छप्पै कवित्त—भाखा मुरधर

श्री लंबोदर परम संत बुद्धवंत परम सिद्धिबर ।
आच फरस ओपंत, विघन-बन हंत ऊबंबर ॥
मद कपोल महकंत, मधुप भ्रामंत गंधमद ।
नंद महेसुर जन निमंत, हित दयावंत हद ॥
उचरंत 'किसन' कवि यम अरज, तम अनंत भगति जुगत ।
जांनकी-कंत अक्खण सुजस, एकदंत दीजै उगत ॥ १

प्रथम अहंम मझ बेद, छंद मारग दरसायौ ।
खग अग पिंगळनाग, 'नागपिंगळ' कर गायौ ॥
'काळिदास', 'केदार', 'अमरगिर' पिंगळ अक्खे ।
भाखा ब्रज सुखदेव, 'सुरतचिंतामण' भक्खे ॥
लछ भाखा पिंगळ ग्रंथ लख, एकठ बोह मत आंणियौ ।
रघुबरप्रकास जस नांम रख, 'किसन्न' सुकव पिंगळ कीयौ ॥ २

---

१ आच—हाथ । फरस—परशु । ओपत—शोभा देता है । हत—नाशक । ऊबबर—समर्थ । निमल—नमते है, झुकते है । हद—असीम । यम—इस प्रकार । अक्खण—कहनेके लिए, वर्णन करनेके लिए । एकदंत—गणेश । उगत—उक्ति ।

२ मझ—मध्य । खग—गरुड । अग—सम्मुख । पिंगळनाग—शेषनाग । नागपिंगळ—'नागराज पिंगळ' नामक छंदशास्त्र का ग्रंथ । गायौ—वर्णन किया । अक्खे—कहा, सुनाया । भक्खे—कहा, वर्णन किया । लच्छ—लक्षण । एकठ—एकत्रित । बोह—बहुत ।

दूहा

बिबुध-भाख ब्रज-भाख बिच, पिंगळ बोहत प्रसिद्ध ।
मुरधर-भाखा जिण निमंत, 'किसनै' रूपग किद्ध ॥ ३
जांणण छंदां मुख जपण, राघव-जस दिन-रात ।
भाड़ौ सांठौ ज्यूं भरै, जाणौ पोहकर जात ॥ ४
पेट काज नर जस पढ़ै, औ कारज अहलोक ।
जस राघव जपणौ जिकौ, लेख काज परलोक ॥ ५
जुध करणौ जमराज हूं, काज विलंबै केण ।
तव नस-दीहा हर तिकौ, जीहा दीधी जेण ॥ ६

अथ गणागण वरणण*

मगण त्रिगरु यगणाह लघु, आद कहै सह कोय ।

---

३. विबुध-भाख—देववाणी । निमत—लिए । रूपग—वह काव्य-ग्रथ जिसमें किसी महान योद्धाका चरित्र हो या वह रीतिग्रथ जिसमें विशेषकर डिंगलके गीत छदोकी रचना आदिके नियमो का वर्णन हो । किद्ध—किया ।

४ भाडौ—(स भाटक) किराया । सांठौ—अधिक, ईख । पोहकर—पुष्कर । जात—यात्रा ।

५ अहलोक—इहलोक, यह ससार । लेख—समझ, समझना ।

६. केण—किसलिए । तव—(स्तवन) स्तुति । नस-दीहा—निशि-दिन । हर—(हरि) ईश्वर । जीहा—जिह्वा । जेण—जिससे, जिसने ।

*

नाम	रेखारूप	वर्णरूप	लघु सज्ञा	शुभाशुभ
मगण	ऽ ऽ ऽ	मागाना	म	शुभ
यगण	। ऽ ऽ	यगाना	य	,,
भगण	ऽ । ।	भागन	भ	,,
नगण	। । ।	नमन	न	,,
रगण	ऽ । ऽ	रामना	र	अशुभ
सगण	। । ऽ	सगना	स	,,
तगण	ऽ ऽ ।	तागान	त	,,
जगण	। ऽ ।	जगान	ज	,,

भगण आद गुरु नगणसौ, त्रिलघु चिहु' सुभ जोय ॥ ७
रगणमध्य लघु सगणरै, अंत गुरु लघु अंत ।
तगण मध्य गुरु जगण औ, च्यारू' असुभ कहंत ॥ ८

गणागण देवता*

दूहौ

देव धरा जळ चंद अ्रह, आग पवन नभ भांण ।

फलाफल

सुख मुद मंगळ धी जळण । दुख निफळ घर हांण ॥ ९

---

७ चिहु–चार ।
९ अ्रह–स्वर्ग । भांण–सूर्य ।
जळण–दाह । हांण–हानि ।

*गणागण देवता और उनके फलाफल

नाम	रूप	देवता	फल
मगण	S S S	पृथ्वी	सुख
यगण	I S S	जल	प्रसन्नता
भगण	S I I	चद्र	मगल
नगण	I I I	स्वर्ग	धी
रगण	S I S	अग्नि	दाह
सगण	I I S	पवन	दुख
तगण	S S I	नभ	निष्फल
जगण	I S I	भानु	गृह हानि

अथ गण मित्र सत्रु कथन*

दूहौ

म न सुमित्र य भ दास मुण, दख ज त विहु उदास ।
र स बिहु वै गण सत्रु रट, पढ़ फिर दुगण प्रकास ॥ १०

अथ दुगण कथन

कवित्त छप्पै

मित्र मित्र रिध सिध, मित्र दासह जय पावत ।
हितु उदास धन हांण, मित्र अरि रोग बधावत ॥
दास मित्र सिध काज, दास दासह सुवसीक्रत ।
दास उदासह हांण, दास अरि हार सु आवत ॥
उदास मित्र फळ तुच्छ गिण, विपत उदास जु दास कर ।
उदास उदास सु निफळ कह, मिळ उदास रिपु सत्रु कर ॥ ११

---

१०. मुण–कह । दख–कह । विहु–दोनो ।

*मित्र दास उदास और शत्रु गण

मित्र मगण, नगण	फल	दास यगण भगण	फल
मित्र + मित्र	सिद्धि	दास + मित्र	सिद्धि
मित्र + दास	जय	दास + दास	वशीकरण
मित्र + उदासीन	हानि	दास + उदास	हानि
मित्र + शत्रु	रोग	दास + शत्रु	पराजय

उदासीन जगण, तगण	फल	शत्रु रगण, सगण	फल
उदासीन + मित्र	अल्पफल	शत्रु + मित्र	शून्य
उदासीन + दास	विपत् (विपत्ति)	शत्रु + दास	जीवहानि
उदासीन+उदासीन	निष्फल (शून्य)	शत्रु + उदासीन	शत्रुहानि
उदासीन+शत्रु	शत्रूत्पत्ति	शत्रु + शत्रु	क्षय

दूहौ

सत्रु मित्र मिळ सुन्य फळ, सत्रु दास जिय हांण।
सत्रु उदाससं हांण अरि, अरि नायक खय जांण॥ १२

दोसादोस कथन

दूहौ

नर-कायब करवा निमत, वद गण अगण विचार।
गुण राघव मझ असुभ गण, न कौ दोस निरधार॥ १३

अथ अस्टदगध अखिर कथन

दूहौ

ह झ घ र घ न ख भ आठ ही, दगध अखिर दाखंत।
कायब्र अग्र वरजित तिकण, भल किव नह भाखंत॥ १४

हकारादि अस्टदगध अखिर क्रमसू उदाहरण

दूहौ

हेत हांण तन रोग व्है, नरपत भय धन नास।
त्रीया घात निरफळ तवां, जस खय भ्रमण प्रवास॥ १५

अथ भाखा पिंगळ तथा डिंगळका रूपग गीत कवित, दूहा, गाहा, छंद तथा सरवत्र छंदरै आद दस आखिर नही आवे नै वरजनीक छै सो लिखा छा।

दूहौ

ऐ औ अंमळ अग्रका, दाख ल च ह ऐ दोय।
क च ट त वरगका अंतका, पद दस वरणन होय॥ १६

अरथ—ऐ १ औ २ अ ३ य ४ स ५ ल्ल ६ क्ष ७ ङ ८ ञ ९ ण १०।

---

१२. खय—(क्षय) नाश।
१३ नर-कायब—(नरकाव्य) मनुष्यकी प्रशसाका काव्य। वद—कह। कौ—कोई।
१४ कायब—काव्य। किव—कवि। भाखत—कहता है।
१५. तवां—कहता हूँ। आद—आदि, प्रथम। आखिर—अक्षर। वरजनीक—त्याज्य।

अै दस अखिर गीत कवित छंदकै पैल्ही न होय। एकार आगली अईकार (ऐ) ओकार आगली अऊकार (औ)। अकार आगली अ कार। मकार आगली यकार। लकार आगली सकार। सकार आगली ललकार नै क्षकार। अै दस आखर भाखारै आद न होवै। नाग यू कह्यौ छै। इति अरथ।

अथ गुरु लघु कथन

दूहौ

गण संजोगी आद गुरु, संजुत ब्यंदु गुरेण।
गुरु फिर बक्र दुमत्त गणि, लघु सुद्ध एक कळेण॥ १७

उदाहरण

दूहौ

लक अम्हींणा भाग लग, सुपनै लिखीउ सोय।
मौजी राघव पलकमैं, जन सरणागत जोय॥ १८

सजोगी आद वरण विचार

दूहौ

संजोगी पहलौ अखिर, वस कोंई ठौड़ वसेख।
कियां विचार प्रकार किण, लघु संग्या तिण लेख॥ १९

उदाहरण

दूहौ

रे नाहर रघुनाथरा, यळ जाहर दत अंक।
विगर लिन्हाई छिनक विच, लहर दिन्हाई लंक॥ २०

---

१७ सजोगी–सयुक्त। सजुत–सयुक्त। व्यदु–बिंदु। कळेण–(कला) मात्रासे।
१८ लक–लका। अम्हींणा–मेरा। सोय–वह। मौजी–उदार।
१९ वसेख–विशेष।
२० यळ–इला, पृथ्वी। दत–दान। छिनक विच–क्षण भरमे।

लघु दीरघ दीरघ लघु करण विधि वरणण

दूहौ

लघु दीरघ दीरघ लघु, पढ़ियां सुधरै छंद ।
दीह लघु लघु दीह करि, पढ़ि कविराज अनंद ॥ २१

उदाहरण

दूहौ

सिर दस दस सिर साबतै, रांम हतै धख राख ।
बिबुधांणी चक्रत हुवा, अ ह ह ह वांणी आख ॥ २२

अथ मगणादिक वरण गण नाम कथनं

दूहौ

मगण नांम संभू मुणै, राक्षस तगण रसाळ ।
यगण बाज आखै इळा, जगण उरौज विसाळ ॥ २३

तगण व्यौम कर सगण तव, रगण सूरमौ राख ।
वरण गणां वाळा विहद, यम कवि नांम स आख ॥ २४

अथ मात्रा पच गण नाम कथन

कवित्त छप्पै

ट ठ ड ढ ण गण अरेह, मात्र गण पंच प्रमांणै ।
टगण छ कळ तेरह सुभेद, कवि ठगण बखांणै ॥
पंच कळा अठ भेद, डगण चव कळ सु भेद पंच ।
ढगण तीन कळ तीन, भेद भाखंत नाग संच ॥
णगणहसु दु कळ दुव भेद निज, लिख प्रसतार निहारियै।
तिण भेद तेर अठ पंच त्रय, दुव जिण नांम उचारियै ॥ २५

---

२१ दीह—दीर्घ ।
२२. धख—क्रोध । बिबुधाणी—देवता । आख—कहना ।
२३. रसाळ—रसयुक्त । इळा—पृथ्वी ।
२४. विहद—असीम । यम—ऐसे ।
२५ अरेह—पवित्र । छ कळ—छ मात्रा । सत्य ।

अै दस अखिर गीत कवित छंदकै पैल्ही न होय। एकार आगली अईकार (ऐ) अोकार आगली अऊकार (अौ)। अकार आगली अ कार। मकार आगली यकार। लकार आगली सकार। सकार आगली ल्लकार नै क्षकार। अै दस आखर भाखारै आद न होवै। नाग यू कह्यौ छै। इति अरथ।

अथ गुरु लघु कथन

दूहौ

गण संजोगी आद गुरु, संजुत ब्यंदु गुरेण।
गुरु फिर बक्र दुमत्त गणि, लघु सुद्ध एक कळेण॥ १७

उदाहरण

दूहौ

लक अम्हींणा भाग लग, सुपनै लिखीउ सोय।
मौजी राघव पलकमैं, जन सरणागत जोय॥ १८

सजोगी आद वरण विचार

दूहौ

संजोगी पहलौ अखिर, वस कौई ठौड़ वसेख।
कियां विचार प्रकार किण, लघु संग्या तिण लेख॥ १९

उदाहरण

दूहौ

रे नाहर रघुनाथरा, यळ जाहर दत अंक।
विगर लिन्हाई छिनक विच, लहर दिन्हाई लक॥ २०

---

१७ सजोगी—सयुक्त। सजुत—सयुक्त। व्यदु—विंदु। कळेण—(कला) मात्रासे।
१८ लक—लका। अम्हींणा—मेरा। सोय—वह। मौजी—उदार।
१९ वसेख—विशेष।
२० यळ—इला, पृथ्वी। दत—दान। छिनक विच—क्षण भरमे।

लघु दीरघ दीरघ लघु करण विधि वरणण

दूहौ

लघु दीरघ दीरघ लघु, पढ़ियां सुधरै छंद ।
दीह लघु लघु दीह करि, पढ़ि कविराज अनंद ॥ २१

उदाहरण

दूहौ

सिर दस दस सिर साबतै, रांम हतै धख राख ।
बिबुधांणी चक्रत हुवा, अ ह ह ह वांणी आख ॥ २२

अथ मगळादिक वरण गण नांम कथन

दूहौ

मगण नांम संभू मुणै, राक्षस तगण रसाळ ।
यगण बाज आखै इळा, जगण उरौज विसाळ ॥ २३

तगण व्यौम कर सगण तव, रगण सूरमौ राख ।
वरण गणां वाळा विहद, यम कवि नांम स आख ॥ २४

अथ मात्रा पच गण नाम कथन

कवित्त छप्पै

ट ठ ड ढ ण गण अरेह, मात्र गण पच प्रमांणै ।
टगण छ कळ तेरह सुभेद, कवि ठगण बखांणै ॥
पंच कळा अठ भेद, डगण चव कळ सु भेद पंच ।
ढगण तीन कळ तीन, भेद भाखंत नाग संच ॥
णगणहसु दु कळ दुव भेद निज, लिख प्रसतार निहारियै ।
तिण भेद तेर अठ पंच त्रय, दुव जिण नांम उचारियै ॥ २५

---

२१ दीह–दीर्घ ।
२२. धख–क्रोध । बिबुधांणी–देवता । आख–कहना ।
२३. रसाळ–रसयुक्त । इळा–पृथ्वी ।
२४. विहद–असीम । यम–ऐसे ।
२५ अरेह–पवित्र । छ कळ–छ मात्रा । सत्य ।

प्रथम टगण छ मात्रा तेरह भेद नाम*

दूहौ

हर १ ससि २ सूरज ३ सुर ४ फणी ५, सेस ६ कमळ ७ ब्रहमांण ८।
कळ ९ सु चंद्र १० ध्रुव ११ धरम १२ कहि, जपै 'साळिकर' १३ जांण ॥२६

A दुतीय ठगण पच मात्रा ग्राठ भेद नाम

दूहौ

इंद्रासण १ रवि २ चाप ३ कहि, हीर सु ४ सेखर ५ संच।
कुसुंम ६ अहिगण ७ पाप ८ कह, आठ भेद कळ पंच ॥ २७

B त्रतीय डगण च्यार मात्रा पच भेद नाम

दूहौ

करण दु गुरु १ करताळ सौं, अंत गुरु २ मन आंण।
पय हर ३ वसुपय ४ मध्यः, अहिप्रिय चौ लघु पहिचांण ॥ २८

---

२६ ब्रहमाण—ब्रह्मा।
२८. चौ—चार।

*टगण, ठगण और डगण मात्रिक गणो का नकशा—

	रूप	सज्ञा		A		B		
		१ टगण						
१	SSS	हर						
२	IISS	शशि		रूप	सज्ञा		रूप	सज्ञा
३	ISIS	सूर्य			२ ठगण			३ डगण
४	SIIS	सुर	१	ISS	इद्रासन	१	SS	कर्ण
५	IIIIS	फणी	२	SIS	रवि	२	IIS	करताळ
६	ISSI	शेप	३	IIIS	चाप	३	ISI	पयहर
७	SISI	कमल	४	SSI	हीर	४	SII	वसु पय
८	IIISI	ब्रम्हा	५	IISI	शेरार	५	IIII	अहिप्रिय
९	SSII	कळि	६	ISII	कुसुम			
१०	IISII	चद्र	७	SIII	अहिगण			
११	ISIII	ध्रुव	८	IIIII	पाप			
१२	SIIII	धर्म						
१३	IIIIII	माळिकर						

नोट—मूल ठगण मे पायक है किन्तु शुद्ध पाप है।

चौथे ढगण तीन मात्रा तीन भेद लघ्वादि नाम *

दूहौ

ध्वज चिंन्ह वास चिराळ, चिर तौमर तूंमर घास।
नूंत माळ रस वलय अे, लादि त्रिमात्र प्रकास ॥ २९

त्रिमात्रा गुरुवादि दुतिय भेद नाम

दूहौ

सुरपति पट्टह ताळकर, ताळ अनंद छंद सार।
आदि गुरु त्रय मत्तकौ, नांम द्विभेद उचार ॥ ३०

त्रिमात्रा त्रतीय सरव-लघु भेद नाम

दूहौ

भावा रस तांडव कहौ, आंकुस और अनार।
है त्रय लघुका नाम अे, त्रय मत्ता प्रस्तार ॥ ३१

पचमौ णगण द्विमात्रादि भेद प्रथम एक गुरु नाम

---

२९. लादि—लघ्वादि।

	रूप	* सज्ञा
		४ ढगण
१	।ऽ	ध्वज, चिन्ह, वास, चिराळ, चिर, तौमर, तूमर, घास, नूत माळ रस वलय
२	ऽ।	सुरपति, पट्टह, ताळकर, ताळ, अनद, छद, सार
३	।।।	भावारस, ताडव, आकुस, अन्तर

	रूप	† सज्ञा
		५ णगण
१	ऽ	नूपुर, रसना, भरण, फणि, चामर, कुडळ, हिमेण, मुग्ध, वक्रमाण, वलय, हार।
२	।।	प्रिय, परमप्रिय।

दूहौ

नूपुर रसना भरण फणि, चांमर कुंडळ हिमेण।
मुग्ध वक्रमांणसु वलय, हारसु गुरु यकेण ॥ ३२

द्विमात्रा द्विलघु भेद नाम

दूहौ

निज प्रिय कहिये परम प्रिय, दु लघु द्वि मत्ता नांम।
गुण यम मात्रा पंच गण, रट कीरत रघुरांम ॥ ३३

अथ साधारण गण नाम

दूहा

आयुध गण कह पंच कळ, दुज तुरंग कळ च्यार।
करण दु गुरु प्रिय दोय लघु, लघु गुरु ध्वज गुरु हार ॥ ३४

तविया गण एता तकौ, समभण छंद सुजांण।
ल कहिये समझे लघु, ग कहिये गुरु जांण ॥ ३५

अथ सोडम करम वरणण

दूहा

संख्या प्रस्तर सूचिका, नस्ट उदिस्ट सुमेर।
ध्वजा मरकटी जांण सुध, आठूं करम अफेर ॥ ३६

आठ सुमत्ता करम अे, आठ वरण अपणाय।
पिंगळ मत अे कवि पढ़ै, सोड़स करम सुभाय ॥ ३७

---

३२. यकेण—एक।

३३ गुण—समझ। यम—इस प्रकार।

३५ तविया—कहे।

३६ प्रस्तर—प्रस्तार। सुध—(सुधि) विद्वान्। अफेर—अटल।

प्रथम लछण

दूहौ

यतरी मत यतरा वरण, कितरा रूप हुवंत।
अन किव, किव पूछै उठै, संख्या तठै सभ्रंत ॥ ३८

सख्याविधि

दूहौ

एक दोय लिख पुरव जुगै, संख्या मत्त सुभाय।
दोय हूंत दुगणा वधै, संख्या वरण सभाय ॥ ३९

अथ प्रस्तार लछण

दूहौ

संख्यामें कहिया सकौ, परगट रूप प्रकास।
जे लिख सरब दिखाळजै, सौ प्रस्तार सहास ॥ ४०

मात्रा प्रस्तार विधि

दूहौ

पहला गुरु तळ लघु परठ, सद्रस पंथ अग्र साय।*
वंचे जिकौ मात्रा वरण, ऊरध परठौ आय। ४१

---

३८ अन—अन्य।
४१. परठ—रख। वचे—शेष रहना। ऊरध—ऊपर।

* आदिमे जहा गुरु हो उसके नीचे लघु लिखो (गुरुका चिन्ह ऽ लघुका चिन्ह । है) फिर अपनी दाहिनी ओर ऊपरके चिन्होकी नकल उतारो। बाई ओर जितने स्थान रिक्त हो (क्रमश दाहिनी ओरसे बाई ओर तक) गुरुके चिन्ह ऽ तब तक रखते चले जाओ जब तक कि सर्व लघु न आ जाय। जब सर्व लघु आ जाय तब उसीको उसका अन्तिम भेद समझो। प्रत्येक भेदमे यह ध्यान रखना आवश्यक है कि यदि वह मात्रिक प्रस्तार है तो, उसके प्रत्येक भेदमे उतने ही चिन्ह आवेंगे जितने मात्राका प्रस्तार होगा। यदि वह वर्णिक प्रस्तार है तो उसके प्रत्येक भेदमे उतने ही चिन्ह आवेंगे जितने वर्णका प्रस्तार होगा।

मात्रिक प्रस्तारके सम कलमे पहला भेद गुरुओका तथा विषम कलमे पहला भेद लघुसे प्रारभ होता है।

वर्णिक प्रस्तारमे पहला भेद गुरुओका ही रहता है।

वरण प्रस्तार विधि

दूहौ

वरण तणा प्रस्तार विधि, गुरु तळ लघू गिणंत ।
उबरै सौ कीजै उरध, सब ही गुरू सुमंत ॥ ४२

सूची लछण

सोरठौ दूहौ

तवौ अमुक प्रस्तार, भेद किता लघु आद भल ।
अर लघु अंत उचार, गुर अंतर गुर आद गुण ॥ ४३
आद अंत (फिर) लघु ऊचरै, आद अंत गुरु अक्ख ।
सूचीसूं जद समझणौ, पेख आंक परतक्ख ॥ ४४

---

४३ तवौ–कहो । भल–ठीक ।
४४ पेख–देख कर । परतक्ख–प्रत्यक्ष ।

(१) वर्णिक प्रस्तार ३ वर्ण	(२) वर्णिक प्रस्तार ४ वर्ण	विषम कल (प्रस्तार ५ मात्रा)	सम कल (प्रस्तार ६ मात्रा)
म ऽऽऽ	१ ऽऽऽऽ	१ ।ऽऽ	१ ऽऽऽ
य ।ऽऽ	२ ।ऽऽऽ	२ ऽ।ऽ	२ ।।ऽऽ
र ऽ।ऽ	३ ऽ।ऽऽ	३ ।।।ऽ	३ ।ऽ।ऽ
स ।।ऽ	४ ।।ऽऽ	४ ऽऽ।	४ ऽ।।ऽ
त ऽऽ।	५ ऽऽ।ऽ	५ ।।ऽ।	५ ।।।।ऽ
ज ।ऽ।	६ ।ऽ।ऽ	६ ।ऽ।।	६ ।ऽऽ।
भ ऽ।।	७ ऽ।।ऽ	७ ऽ।।।	७ ऽ।ऽ।
न ।।।	८ ।।।ऽ	८ ।।।।।	८ ।।।ऽ।
	९ ऽऽऽ।		९ ऽऽ।।
	१० ।ऽऽ।		१० ।।ऽ।।
	११ ऽ।ऽ।		११ ।ऽ।।।
	१२ ।।ऽ।		१२ ऽ।।।।
	१३ ऽऽ।।		१३ ।।।।।।
	१४ ।ऽ।।		
	१५ ऽ।।।		
	१६ ।।।।		

मात्रा सूची विधि

पूरब जुगळ पहलां पढ़ी, संख्या मत्त सहास ।
पूरण अंक नेड़ौ तिकौ, पूरब अंक प्रकास ॥ ४५
आद लघु, लघु अतमें, जितरा है कवि जांण ।
तिणसूं पूरब अंक ते, आद अंत गुरु आंण ॥ ४६

चौपई

पूरण अंकसूं तीजौ अंक, आद अंत लघु जिता निसंक ।
जिणसूं तीजौ अंक जिताय, आद अंत गुरु जिता कहाय ॥ ४७

मात्रा सूची सख्या रूप

१	२	३	५	८	१३

अथ वरण सूची विधि

चौपई

वरण संख बे दुगणी वेस, सम लघु गुरुचा रूप सरेस ।
पूरण निकट पुरव अंक होय, आद अंत लघु गुरु है सोय ॥ ४८
अंक तीसरौ पूरण हूंत, आद अंत लघु गुरुचौ कूंत ।
सूची कौतक अरथस कीजै, तौ के आंन विधांन तवीजै ॥ ४९

वरण सूची सख्या रूप

२	४	८	१६	३२

अथ ऊदिस्ट लछण

चौपई

बीयौ रूप लिख कहै बताय । किसौ भेद ऊदिस्ट कहाय ॥ ५०

---

४५. जुगळ–दो । नेड़ौ–नजदीक ।
४६ आण–लाओ ।
४८. गुरुचा–गुरुका ।
४९. गुरुचौ–गुरुका । कूत–समझ । कौतक–शेष केवल कौतुक । तवीजै–कहा जाता है ।
५०. बीयौ–दूसरा ।

अथ मात्रा ऊदिस्ट*

दूहा

मत ऊदिस्ट सुरूप लिख, पूरब जुगळ सिर अंक ।
लघु सिर एकही अंक लिख, गुरु अध ऊरध अंक ॥ ५१
गुरु सिर ऊपर अक जे, विच प्रस्तार घटाय ।
सेख रहै सौ जांण यम, भेद कहौ कविराय ॥ ५२

वरण ऊदिस्ट†

दूहौ

आखर वरण उदीठ पर, दुगण अंकां देह ।
ऊपरलां लघु अंकड़ां, यक वद भेद अखेह ॥ ५३

---

५३ उदीठ—उद्दिष्ठ । अखेह—कहना ।

*मात्रिक उद्दिष्ट—

मात्रिक उद्दिष्टमे जहा गुरुका चिन्ह हो उसके ऊपर और नीचे सूचीके अक क्रमश लिखो । लघुके ऊपर भी क्रमश सूचीके अक लिखो । गुरुके ऊपरके अक्षरोको पूर्णाङ्कमेसे घटा दो तो भेद सख्या मालुम हो जावेगी ।

उदाहरण, मात्रिक उद्दिष्ट

प्रश्न—वताओ ६ मात्राओमे से यह । ऽ ऽ । कौनसा भेद है ?

उ०—पूर्ण सूची—१ २ ५ १३ पूर्णाङ्क १३
। ऽ ऽ ।
३ ८

गुरुके चिन्हो पर २ और ५ हैं दोनोका योग ७ हुआ । पूर्णाङ्क १३ मे से ७ घटाने पर ६ शेष रहते हैं अत यह छटा भेद है ।

†वर्णिक उद्दिष्ट—

वर्णिक उद्दिष्टमे सूचीके अक आधे आधे लिखो । उसके नीचे रूप लिखो । गुरु चिन्होंके ऊपर जो सख्या हो उसे पूर्णाङ्कमेसे घटा दो । जो शेष रहेगा, वही उत्तर है ।

उदाहरण

प्रश्न—वताओ ४ वर्णोमे यह । ऽ ऽ । कौनसा भेद है ?

उ०—अर्ध सूची—१ २ ४ ८ पूर्णाङ्क १६
। ऽ ऽ ।

गुरुके चिन्होके ऊपर २ और ४ हैं । दोनोका योग ६ हुआ । ६को पूर्णाङ्क १६मे से घटाया तो शेप १० रहे । अतएव १०वा भेद है ।

अथ नस्ट लछण

दूहौ

विण लखियां मात्रा वरण, पूछै भेद सुपात ।
बुधबळसूं अखुं जेण विध, क्रमसौ नस्ट कहात ॥ ५४

अथ मात्रा नस्ट*

कवित्त छप्पै

मात्रा नस्ट विधांन, कहत कविराज प्रमांणहु ।
सब लघु कर तिण सीस, पूरब जुग अंकां ठांणहु ॥
पैलौ पूछै भेद, अंक तिणरौ विलोप कर ।
तिण लोपै फिर रहै सेस, सौ अंक लोप धर ॥
पुरब जु अंक तिण अंकसूं, पर मिळाय गुरु कर कहौ ।
औ मात्र निस्ट पिंगळ अखत, सुकवि 'किसन' यण विध लहौ ॥५५

---

५४ विण लखिया–विना समझे । सुपात–(सुपात्र) कवि । बुधबळ–बुद्धिवल । अखु–कहता हूँ

*मात्रिक नष्ट–

मात्रिक नष्टमे सूचीके पूरे-पूरे अक स्थापित करो । छदके पूर्णाङ्कसे प्रश्नाङ्क घटाओ, शेष वचे उसके अनुसार दाहिनी ओरसे वाई ओरके जो जो अक क्रमपूर्वक घट सकते हो उनको गुरु कर दो किन्तु जहा-जहा गुरु हो उनके आगेकी एक एक मात्रा मिटा दो ।

प्रश्न–वताओ ६ मात्राओमे ११वा भेद कैसा होगा ?

रीति–पूर्णाङ्क १३मे से ११ घटाये, शेष २ रहे । २ मे से २ ही घट सकते हैं अत २ को गुरु कर दिया और उसके आगेकी मात्रा मिटा दी ।

यथा–पूर्ण सूची–१ २ ३ ५ ८ १३
साधारण चिन्ह । । । । । ।

उ०–। ऽ । । । यही ११वा भेद है ।

अथ वर्ण नस्ट विधि*

दूहौ

भाग चींतवौ वरण नव, लघु करि सम जिण वोड़ ।
विसम भागमें मेल यक, गुर कर कवि सिर मोड़ ॥ ५६

अथ सोडस विधि मात्रा वरण प्रस्तार लिखण विधि कौतुकार्थे लिख्यते ।

वारता

एक तौ पिगळ मत सुधौ प्रस्तार ऊपरासू नीचौ लिख्यौ जाय सौ, ज्यौ ही सुद्ध प्रस्तार नीचासू ऊचौ लिख्यौ जाय जीनै प्रकारात कहीजै । इतरैसू आठ प्रकार तौ मात्रा प्रस्तार । हर आठ प्रकार ही वरण प्रस्तार छै जे कहै छै ।

अथ नाम जथा

सुद्ध, मात्रा सुद्ध १, मात्रा सुद्ध प्रकारातर २, मात्रा स्थान विपरीत ३, मात्रा स्थान विपरीत प्रकारातर ४, मात्रा सख्या विपरीत ५ मात्रा संख्या विपरीतकौ प्रकारातर ६ मात्रा सख्या स्थान विपरीत ७, मात्रा सख्या स्थान विपरीतकौ प्रकारातर ८, ए आठ मात्रा प्रस्तार विधि ।

---

*वर्णिक नष्ट–

वर्णिक नष्टमे सूचीके अक आधे-आधे लिखो । छदके पूर्णाङ्कमेसे प्रश्नाङ्क घटाओ । शेष बचे उसके अनुसार दाहिनी ओरसे बाई ओरके जो-जो अक क्रमपूर्वक घट सकते हो उनको गुरु कर दो ।

प्रश्न–बताओ ४ वर्णोमे ९वा रूप कौन सा होगा ?

रीति–पूर्णाङ्क ८×२=१६ मे से ९ घटाये, शेष ७ रहे । ७ मे से ४, २ और १ ही घट सकते हैं । इसलिए इन तीनोको गुरु कर दिया ।

यथा–अर्ध सूची– १ २ ४ ८ पूर्णाङ्क १६
साधारण चिन्ह । । । ।
उ०–ऽ ऽ ऽ । यही नवा भेद है ।

दूसरा प्रकार–

जितने वर्णका वर्णिक नष्ट निकालना हो उतने ही अको तक प्रश्नाङ्कमे २का भाग देकर भागफलको क्रमश बाई ओरसे रख दीजिये किन्तु जिन विषम सख्याओमे २का भाग पूरा-पूरा नही जाता हो उनमे १ जोड देना चाहिए । सम सख्याके नीचे लघु और विषमके नीचे गुरु रखने पर उत्तर मिल जायगा ।

चार वरणो का ९वा रूप—
रीति–९ ५ ३ २
ऽ ऽ ऽ । यही ऽ ऽ ऽ । उत्तर है ।

अथ मात्रा स्थांन विपरीत कडौट फेर प्रस्तार लछण ।

दूहौ

अंत गुरु तळ लघु धरौ, आगै पंत समांण ।
ऊबरे सौ गुरु लघु धरौ, पाछै एह प्रमांण ॥ ५७

अथ मात्रा स्थान विपरीतकौ प्रकारातर ।

चौपई

अंत निकट लघु सिर गुरु धरौ, अधर पंत सम अग्र विचारौ ।
ऊबरे सौ पाछै लघु आवै, कळा थांन विपरीत कहावै ॥ ५८

अथ मात्रा सख्या विपरीतकौ प्रकारातर दोनू भेळा कहै छै ।

चंद्रायणौ

आद अंत लघु संनिध तळ गुरु आंणजै ।
जेम प्रकारांतर गुरु सिर लघु जांणजै ॥
धुर सम पछ लघु गुरु लघू फिर कीजियै ।
संख्या बिहुं प्रकार उलट्ट सुणीजियै ॥ ५९

वारता

सख्या विपरीतका आद लघुका अतकौ लघु जीके नीचे गुरु करणौ । आगै उरध पत, सम पत, ऊबरे सौ लघु करणा । अथ मात्रा सख्या स्थान विपरीतकौ प्रकारातर दोनू भेळा कहा छां ।

चंद्रायणौ

अंत रेख तिण आद, हेठ गुरु अख्यजै ।
भल प्रकार गुरु अंत, सीस लघु भख्यजै ॥

---

५७. तळ—नीचे । पात—पक्ति । समाण—समान । एह—यह ।

५९. सनिध—पास । धुर—प्रथम । पछ—पश्चात् ।

६०. हेठ—नीचे । अख्यजै—कहिए । भख्यजै—कहिए ।

धुर सम पछ लघु गुरु लघू फिर धारजै।
संख्या थळ विपरीत उभय संभारजै॥ ६०

वारता

स्थान विपरीतके सरव लघु कर अंत लघुका आद। लघु नीचे गुरु लखजै। आगै उरध पगत सम पगत करणी पाछै ऊबरे सौ सरब ही लघु करणा। इति अरथ।

मात्रा सख्या प्रकारातरे आदरा गुरु सिर लघु धरजै। आगे पगत नीचली पगत समान अर पाछै ऊबरे सौ दोय ऊबरे तौ गुरु करणौ नै तीन ऊबरे तौ गुरु करे नै लघु करणौ।

अरथ

प्रकारातरे स्थान विपरीतके सरव गुरु कर अतका गुरुके सिर लघु धरणौ। आगे नीचली पगत समान पगत करणी। पाछै एक ऊबरे तौ लघु करणौ, दोय ऊबरे तौ गुरु करणा, गुरु कर लघु करणौ। इति अरथ। इति अष्ट प्रकार मात्रा प्रस्तार सपूरण।

अथ मात्रा अस्ट प्रकार नस्ट उदिस्ट कथन।

वारता

मात्रा सुधकौ अरु मात्रा सुद्धका प्रकारातरकौ तौ निस्ट उदिस्ट आगे सनातनी कहै छै जेहीज जाणणा। हर छ प्रकारका फेर कहा छा।

अथ मात्रा स्थान विपरीत उदिस्ट विधि।

दूहा

थळ विपरीत उदिस्ट सिर, उलटा दीजै अंक।
गुरु सिर अंकां उरध अध, लघु सिर एकही अंक॥ ६१
गुरु सिर वाळा अंक गिणि, पूरण अंकसूं टाळ।
बाकी रहैस भेद कवि, वेडर कहे वताळ॥ ६२

---

६० धुर–प्रथम। पछ–पश्चात्। थळ–स्थान। सभारजै–सम्हालना। लखजै–लिखिए। सनातनी–पूर्वाचार्य। हर–प्रत्येक।

६२ वेडर–निर्भय। वताळ–चतला कर।

मात्रा स्थान विपरीत हर प्रकारातको नष्ट उदिष्ट एकही छै। मात्रा स्थान विपरीत भेद छठौ।

१३	८	५	३	२	१

१३	५	२	१
		ऽ	।
।	ऽ	३	

भेद आठमो स्थांन विपरीत उदिस्टको।

१३	८	५	३	२	१
।	।	।	।	।	।

१३	५	३	२	१
।	ऽ	।	।	।

अथ मात्रा स्थान विपरीत हर प्रकारातर दोनूको नस्ट कहै छै।

चौपई

थळ विपरीत नस्ट कळ कीजै, दखिण उलट अंक क्रम दीजै।
पूछ्यौ भेद पूरणसूं टाळै, पाछै रहैस लोप दिखाळै॥
उलटै क्रम सिर अंकां आवै, पूरब मत्त पर मत्त मिळावै।
गुरु कर रूप भेद सौ गावै, थळ विपरीत नस्ट यम थावै॥ ६३

६३. थळ–स्थान। थावै–होता है।

मात्रा सुद्ध प्रस्तार	मात्रा सुद्ध प्रस्तार-को प्रकारातर नीचा सू ऊंचो लिख्यो जाय छै	मात्रा स्थान विपरीत कडोट फेर प्रस्तार	मात्रा स्थान विपरीत को प्रकारातर प्रस्तार
ऽऽऽ	ऽऽऽ	ऽऽऽ	ऽऽऽ
।।ऽऽ	।।ऽऽ	ऽऽ।।	ऽऽ।।
।ऽ।ऽ।	।ऽ।ऽ	ऽ।ऽ।	ऽ।ऽ।
ऽ।।ऽ	ऽ।।ऽ	ऽ।।ऽ	ऽ।।ऽ
।।।।ऽ	।।।।ऽ	ऽ।।।।	ऽ।।।।
।ऽऽ।	।ऽऽ।	।ऽऽ।	।ऽऽ
ऽ।ऽ।	ऽ।ऽ।	।ऽ।ऽ	।ऽ।ऽ
।।।ऽ।	।।।ऽ।	।ऽ।।।	।ऽ।।।
ऽऽ।।	ऽऽ।।	।।ऽऽ	।।ऽऽ
।।ऽ।।	।।ऽ।।	।।ऽ।।	।।ऽ।।
।ऽ।।।	।ऽ।।।	।।।ऽ।	।।।ऽ।
ऽ।।।।	ऽ।।।।	।।।।ऽ	।।।।ऽ
।।।।।।	।।।।।।	।।।।।।	।।।।।।

मात्रा सख्या प्रस्तार विपरीत प्रस्तार	मात्रा सख्या विपरीतके प्रकारातर प्रस्तार	मात्रा सख्या स्थान विपरीत कडौट फेर प्रस्तार	मात्रा सख्या स्थान विपरीत प्रकारातर कडौट फेर नीचा सू ऊचौ लिख्यौ जाय सौ प्रस्तार
I I I I I I	I I I I I I	I I I I I I	I I I I I I
S I I I I	S I I I I	I I I I S	I I I I S
I S I I I	I S I I I	I I I S I	I I I S I
I I S I I	I I S I I	I I S I I	I I S I I
S S I I	S S I I	I I S S	I I S S
I I I S I	I I I S I	I S I I I	I S I I I
S I S I	S I S I	I S I S	I S I S
I S S I	I S S I	I S S I	I S S I
I I I I S	I I I I S	S I I I I	S I I I I
S I I S	S I I S	S I I S	S I I S
I S I S	I S I S	S I S I	S I S I
I I S S	I I S S	S S I I	S S I I
S S S	S S S	S S S	S S S

मात्रा सख्या विपरीत सख्या विपरीतकौ प्रकारातर ज्यौ दोयाईकौ उदिस्ट कहू छू ।

दूहौ

सूधै क्रंमदै अंक सिर, विध संख्या विपरीत ।
गुरु सिर अंकां एक विध, भेद उदिस्ट अभीत ॥ ६४

अथ मात्रा सख्या विपरीत हर सख्या विपरीतकौ प्रकारातर या दोया कोई नस्ट कहू छू ।

चौपई

नस्ट संख्य विपरीत निदांन, मत्त सीस क्रम अंकसु मांन ।
पूछ्या भेद मांझ घट एक, बाकी रहै सगुरु कर देख ॥ ६५

कडौट–पक्तिके उलटनेकी क्रिया या भाव ।

६४. सूधै–सीधा । विध–विधि । अभीत–निर्भय । दोया–दोनोका ।

६५ माझ–मध्य ।

पूरब मत्त पर मत्त मिळाय, गुरु करि नस्ट भेद यम गाय ॥ ६६

अथ मात्रा सख्या स्थान विपरीत हर प्रकारातर या दोयाईकौ उदिस्ट कहू छू ।

चौपई

भेद सीस दखिरण ब्रत अंक, दै उलटा क्रंम हूंत निसंक ।
गुरु सिर अंकां मझ सिवाय, एक मेळ कर भेद बताय ॥ ६७

अथ मात्रा सख्या स्थान विपरीतकौ हर सख्या स्थान विपरीतको
प्रकारातर या दोयाईकौ नस्ट कहू छू ।

चौपई

क्रम विपरीत अंक लघु सीस, दै पूछ्ह ल यक घाट करीस ।
रहैस पूरब जोड़ पर मत, नस्ट संख्य ऊलट थळ सत ॥ ६८

दूहा

आठ भांत प्रस्तार मत्त, नस्ट ऊदिस्ट प्रकार ।
'किसन' सुकवि जस रांम कज, रटिया मत अनुसार ॥ ६९

इति अस्ट प्रकार मात्रा प्रस्तार उदिस्ट नस्ट सपूरण ।

अथ अस्ट प्रकार वरण प्रस्तार विधि लिख्यते ।

वारता

वरण सुध प्रस्तारकी तौ लछण आगे कह्यौईज छै । अथ अस्ट वरण प्रस्तार नाम । यथा—

वरण सुध प्रस्तार १, वरण सुध प्रकारातर २, नीचासूं ऊचौ लख्यौ जाय जीकौ नाम प्रकारातर कहियै, वरण स्थान विपरीत ३, प्रस्तार नै कडौट फेरावणी सौ स्थांन विपरीत कहीजै । वरण स्थान विपरीत प्रकारातर ४, वरण

---

६६. यम–इस प्रकार । गाय–कह ।

६७ सीस–ऊपर । ब्रत–व्रत । सिर–ऊपर ।

६८. घाट–घटाना । करीस–करना । पर–आगेकी । सत–साथ ।

६९. मत–मात्रा । कज–लिए । मत–(मति)बुद्धि । कड़ौट–पक्तिके उलटनेकी क्रिया या भाव । फेरावणी–उलटना ।

सख्या विपरीत ५, वरण सख्या विपरीतकौ प्रकारातर ६, वरण सख्या स्थान विपरीतकौ कडौट फेर ७, वरण सख्या स्थान विपरीतकौ प्रकारातरमे अस्ट वरण प्रस्तारकौ तुकारथ लिखा छा ।

अथ वरण सुद्ध प्रस्तारका प्रकारातरकौ लछण ।

चौपई

धुर लघुके ऊरध गुरु धरौ, आगे अरध पंत सम करौ ।
ऊबरे सौ पाछै लघु आवै, वरण प्रकार यम सुध गावै ॥ ७०

अथ वरण स्थान विपरीत कडौट फेर प्रस्तार लछण ।

चौपई

अंत गुरु हेठै लघु आंणौ, जुगति अग्र ऊरध सम जांणौ ।
ऊबरे सौ पाछै गुरु लेखौ, वरण स्थांन विपरीत विसेखौ ॥ ७१

अथ वरण स्थान विपरीतकौ प्रकारातरकौ लछण ।

चौपई

अंत लघु सिर गुरु परठीजै, रूप अरध सम अग्र करीजै ।
ऊबरे सौ पाछै लघु लेखौ, प्रकारांतर उलट थळ पेखौ ॥ ७२

अथ वरण सख्या विपरीत लघवादिकसू प्रस्तार चालै जीनै सख्या विपरीत कहीजै

चौपई

आद लघु तळ गुरु धरिये एम, तव उरध सम आगे तेम ।
ऊबरे सौ पाछै लघु आंण, वरण सख्या विपरीत बखांण ॥ ७३

फेर–फिर । तुकारथ–पक्तिका अर्थ ।

७०. धुर–प्रथम । ऊरध–ऊपर । पत–पक्ति । येम–इस प्रकार ।

७१ हेठै–नीचे । विसेखौ–विशेष ।

७२ सिर–ऊपर । परठीजै–रखिये । पेखौ–देखिए ।

वरण सख्या विपरीतकी प्रकारातर लछण ।

चौपई

धुर गुरु सीस प्रथम लघु धारौ, अग्र अरध सम पंत उचारौ ।
ऊबरे सौ पाछै गुरु देह, वरण प्रकार उलट थळ एह ॥ ७४

अथ वरण सख्या स्थान विपरीत कडीट फेर लछण ।

चौपई

अत लघू तळ गुरु धरि एहौ, उरध पंत सम अग्र अछेहौ ।
ऊबरे सौ पाछै लघु आंण, संख्या वरण उलट थळ जांण ॥ ७५

अथ वरण सख्या विपरीत प्रकारातर लछण ।

चौपई

थिर गुरु अत सीस लघु थाप, अग्र अरध सम पंत अमाप ।
वचै स पाछै गुरु करिवेस, संख्या उलट प्रकार सु देस ॥ ७६
पुणिया आठ वरण प्रस्तार, वडा सुकव लीजियौ विचार ॥ ७७

इति अस्ट विधि वरण प्रस्तार सपूरण ।

---

७४ एह–यह ।

७५ एहौ–ऐसा । अछेहौ–अच्छा ।

७६ थाप–स्थापित कर । करिवेस–करिये । देस–दीजिये ।

७७ पुणिया–कहे ।

अथ अष्टविध वरण - प्रस्तार

वरण सुद्ध प्रस्तार	वरण सुद्ध प्रस्तार प्रकारातर	वरण स्थान विपरीत कडोट फेर प्रस्तार	वरण स्थान विपरीतकौ प्रकारातर कडोट फेर
S S S S	S S S S	S S S S	S S S S
I S S S	I S S S	S S S I	S S S I
S I S S	S I S S	S S I S	S S I S
I I S S	I I S S	S S I I	S S I I
S S I S	S S I S	S I S S	S I S S
I S I S	I S I S	S I S I	S I S I
S I I S	S I I S	S I I S	S I I S
I I I S	I I I S	S I I I	S I I I
S S S I	S S S I	I S S S	I S S S
I S S I	I S S I	I S S I	I S S I
S I S I	S I S I	I S I S	I S I S
I I S I	I I S I	I S I I	I S I I
S S I I	S S I I	I I S S	I I S S
I S I I	I S I I	I I S I	I I S I
S I I I	S I I I	I I I S	I I I S
I I I I	I I I I	I I I I	I I I I

वरण सख्या विपरीत प्रस्तार	वरण सख्या विपरीतके प्रकारातर	वरण सख्या विपरीतकौ स्थान विपरीत प्रस्तार	वरण सख्या विपरीत स्थान विपरीतकौ प्रकारातर प्रस्तार
I I I I	I I I I	I I I I	I I I I
S I I I	S I I I	I I I S	I I I S
I S I I	I S I I	I I S I	I I S I
S S I I	S S I I	I I S S	I I S S
I I S I	I I S I	I S I I	I S I I
S I S I	S I S I	I S I S	I S I S
I S S I	I S S I	I S S I	I S S I
S S S I	S S S I	I S S S	I S S S
I I I S	I I I S	S I I I	S I I I
S I I S	S I I S	S I I S	S I I S
I S I S	I S I S	S I S I	S I S I
S S I S	S S I S	S I S S	S I S S
I I S S	I I S S	S S I I	S S I I
S I S S	S I S S	S S I S	S S I S
I S S S	I S S S	S S S I	S S S I
S S S S	S S S S	S S S S	S S S S

अथ अस्ट विध वरण प्रस्तार ज्याका उदिस्ट, नस्ट लिखा छा।

वारता

वरण सुद्ध १ हर वरण सुद्धका प्रकारांतरकौ तौ सदा व्है छै ज्यू हीज छै। हर वाकीरा छ प्रकारकौ लिखा छा।

अथ वरण स्थान विपरीतका प्रकारातर दोयकौ उदिस्टकौ लछण।

चौपई

ऊलट क्रम दखिणसूं अक, रूप वरण सिर धरौ नसक।
ऊपर गुरु अंक जे आवै, पूरण अंक मधि तिके घटावै॥ ७८
बाकी रहैस भेद बिचार, सब तज भज रावौ गुण सार॥ ७९

अथ वरण स्थान विपरीत ईका प्रकारातरकौ नस्ट कहा छां।

दूहौ

दखिण क्रमसू भाग दै, सम लघु रूप सराह।
विखम एक दे गुरु करौ, उलट नस्ट आ राह॥ ८०

अथ वरण सख्या विपरीतकौ हर ईका प्रकारकौ उदिस्ट कहा छा।

दूहौ

यक सू दुगणा रूप सिर, दै क्रम अंक कवेस।
गुरु सिर अंकां एक मिळ, आखव रूप असेस॥ ८१

अथ वरण सख्या विपरीत हर प्रकारातर दोनू कौ नस्ट कहा छा।

चौपई

सूधा क्रमसूं कळपौ भाग, विखम थांन लघु करि अनुराग।
विखम एक मिळ आध कराय, समथळ गुरू विखम लघु थाय॥ ८२

व्है छै—होते हैं।

७८. नसक—नि सदेह। मधि—मध्य। कहा छा—कहता हूँ।

८० आ—यह। राह—तरीका।

८१. कवेस—कवीश। आखव—कह। असेस—अपार।

८२. कळपौ भाग—भाग करो।

विधयण नस्ट संख्य विपरीत, बुध बळ समभौ सुकवि विनीत ॥ ८३

अथ वरण सख्या स्थान विपरीतकौ हर ईंका प्रकारांतरकी उदिस्ट कहा छा ।

चौपई

रूप सीस दखिण व्रत अंक, दै उलटै क्रमसूं कवि निसंक ।
गुरु सिर अकां एक मिळाय, भेद कहौ कवि 'किसन' सुभाय ॥ ८४

अथ वरण सख्या स्थान विपरीतकौ हर ईंका प्रकारांतरकौ दोन्याकौ नस्ट कहा छा ।

चौपई

भाग कळप दखिण कर ओर, विखम भाग लघु करौ सतौर ।
एक भेळ वांटा कर दोय, सम थळ गुरू विखम लघु होय ॥ ८५
नस्ट उदिस्ट आठ परकार, निज कहि 'किसन' वरण निरधार ।
तू अन आळ जजाळ तियाग, रघुबर सुजस सार चित राग ॥ ८६

अथ सोडस प्रस्तार मात्रा वरणका सुगम लिखण विध ।

दहा

सुध सुध विपरीत थळ, संख्या उलट प्रकार ।
संख्या उलट प्रकार थळ, गुरु लघु पच्छु विचार ॥ ८७
सुध सुध विपरीत थळ, प्रकारांत बिहुं जांण ।
सख्य विपरजय संख्य थळ, उलट पच्छ लघु आंण ॥ ८८

वारता

सुधकै १ । सुध स्थान विपरीतकै २ । सख्या विपरीतका प्रकारांतरकै ३ ।

---

८४. सीस–ऊपर । व्रत–वृत्त । हर ईं–प्रत्येक । दोन्याकौ–दोनोहीका ।
८५. सतौर–ठीक । वांटा–विभाजन । थळ–स्थान ।
८६. परकार–प्रकार । अन–अन्य । आळजजाळ–झूठा मायामोह । तियाग–त्याग । सार–तत्व । राग–अनुराग ।
८७. पच्छु–पीछे ।
८८. बिहु–दोनो । विपरजय–विपर्यय । वारता–गद्य ।

सख्या स्थान विपरीतका प्रकारातरकै ४। सम ऊबरे तौ गुरु करणा, बिसम ऊबरे तौ गुरु करनै लघु करणा। सुधका १। सुध स्थान विपरीतका प्रकारातर दोयाईके २। हर सख्या विपरीतके ३। हर सख्या स्थान विपरीतके ४। आ च्यार प्रस्ताराके ऊबरे, सौ सरवे पाछै लघु करणा।

इति प्रस्तार सुगम विध।

मात्रा वरण उदिस्ट नस्ट सुगम लछण।

दूहा

सुद्ध बिहु उदिस्ट नस्ट, सुद्धा क्रमसूं अंक।
बे संख्या बिपरीतरै, निज सुद्ध अंक निसंक ॥ ८९

बे सुद्ध थळ विपरीतरै, बि थळ संख्य विपरीत।
आं चहुं निस्ट उदिस्ट सिर, अंक उलट क्रम दीत ॥ ९०

क्रम संख्या विपरीत बे, बि क्रम बि थळ बिपरीत।
पूछ ल यक घट नस्ट गुरु, वध उदिस्ट कहीत ॥ ९१

सुद्ध बे सुद्ध थळ उलट बे, क्रम बी क्रम धर अंक।
पूछ सेस घट नस्ट कर, वध उदिस्ट गुरु अंक ॥ ९२

इति रघुवरजसप्रकास ग्रथे आढा किसना कृत मात्रा वरण सोडस प्रस्तार उदिस्ट निरूपण सपूरण।

अथ मेर लछण।

दूहा

मुण अमका प्रस्तार मझ, सरब गुरू केह।
एक एक घट फिर अखौ, सब लघु घट लघु जेह ॥ ९३

ऊबरे—शेष रहते हैं। आं—इन।

८९. बिहु—दोनो।

९०. बि—दो। सख्य—सख्या। सिर—ऊपर। दीत—दीजिये।

९१. वध—विधि। कहीत—कहते है।

९२. घट—घटाना।

९३ मुण—कह। अमका—इसका। अखौ—कहो। जेह—जिस।

पूछै यूं अन कवि प्रसन, थाप मेर जिण ठांम।
प्रथम मेर मत कवि परठ, रट कीरत रघुरांम ॥ ६४

अथ मात्रा मेर विध।

कवित छप्पै

कर सम बे बे कोठ, अत यक अक भरीजै।
आद कोठ यक अंक, दुवौ तिण तर हर दीजै॥
ऊरध जुगळ फिर अक, देह पैलां कोठां दख।
विध मध कोठा भरण, लछ आखंत सुकवि लख॥
सिर अंक त्याग दछ अंक सौ, समिळ लेख अध कोठ सुज।
कह मत मेर यण विध 'किसन', तू रट राघव आंन तज॥ ६५

---

६४. यूं–इस प्रकार। अन–अन्य। प्रसन–प्रश्न। थाप–स्थापित कर। मेर–मेरु। ठाम–स्थान। परठ–रच।

६५. कोठ–कोठा। दुवौ–दूसरा। तिण–उस। तर–तल, नीचे। ऊरध–उर्ध्व। दख–कह। विध–विधि। मध–मध्य। लछ–लक्षण। आखत–कहते हैं। समिळ–साथ। अध–नीचे। सुज–वह। आन–अन्य।

अथ पताका लछ्ण ।

दूहौ

मुणिया भेळा मेरमें, गुरु लघु रूप गिनांन ।
जपौ जेण थळ जूजुवा, थपि पताक कह थांन ॥ ९६

अथ मात्रा पताका विध ।

कवित छप्पै

अंक रीत उदिस्ट देहु, पूरण अंक बांमह ।
अंक पूरब ता अंक मेटि, क्रम क्रम विधि तांमह ॥
एक अंक लोपंत, एक गुरु ग्यांन गिणीजै ।
दोय अंक ओपंत, दोय गुरु ग्यांन भणीजै ॥
त्रय लोप त्रि गुरु चव लोप चव, गुरु गियांन यम जांणियै ।
लिख्य मेर संख्य ध्वज मत सौ, जस राघव ध्वज जांणियै ॥ ९७

---

९६ मुणिया–कहे । भेळा–शामिल । गिनान–ज्ञान । जूजुवा–पृथक्-पृथक् ।
थपि–स्थापित कर । थांन–स्थान ।

९७. देहु–देकर । बांमह–बाया । तामह–उसमे । लोपत–लोप होते है ।
ओपत–शोभा देता है । चव–कहो । चव–चार ।

दस मत्राकी पताका

१

२ ४ ९ २२ ५६

३ ६ ७ १४ १५ १७ ३५ ३६ ३८ ४३

५ १० ११ १२ २३ २४ २५ २७ २८ ३० ५७ ५८ ५९ ६१ ६२ ६४ ६९ ७० ७२ ७७

८ १६ १८ १९ २० ३७ ३९ ४० ४१ ४४ ४५ ४६ ४८ ४९ ५१

१३ २६ २९ ३१ ३२ ३३ ६० ६३ ६५ ६६ ६७ ७१ ७३ ७४ ७५ ७८ ७९ ८० ८२ ८३ ८५

२१ ४२ ४७ ५० ५२ ५३ ५४

३४ ६८ ७६ ८१ ८४ ८६ ८७ ८८

५५

८९

दस मात्राकी पताका

दस मात्राकी पताकाका दूसरा रूप यह भी होता है।

१	१५		३५		२८		९		१
SSSSS	IISSSS		IIIISSS		IIIIII SS		SIIIIIIII		IIIIIIIIII
१	२	३	५	८	१३	२१	३४	५५	८९
			८ ६१		२१		५५		
	३ ३५		१०		२६		६८		
	४		११ ६२		२९		७६		
	६ ३६		१२ ६४		३१		८१		
	७ ३८		१६ ६९		३२		८४		
	९		१८		३३		८६		
	१४ ४३		१९ ७०		४२		८७		
	१५		२० ७२		४७		८८		
	१७ ५६		२३ ७७		५०				
	२२		२४		५२				
			२५		५३				
			२७		५४				
			२८		६०				
			३०		६३				
			३७		६५				
			३९		६६				
			४०		६७				
			४१		७१				
			४४		७३				
			४५		७४				
			४६		७५				
			४८		७८				
			४९		७९				
			५१		८०				
			५७		८२				
			५८		८३				
			५९		८५				

अथ मात्रा पताका अन्य विध ।

दूहा

अंक मत्त उदिस्ट लिख, समझ विचार सुजांण ।
वळे पताखा दंड विच, विध एही बुधवांण ॥ ९८

विरळी पूरण अंक विण, बे बे पकत बंध ।
ऊपरली बे पांतरौ, आंक उपंत समंध ॥ ९९

असौ अंक पूरण अंकसूं, परठव तीजी पंत ।
गुणीयण कहणौ गुरु लघु, पहली तरह पढ़त ॥ १००

अन्य प्रकार नवीन मत दस मात्रा पताका स्वरूप ।*

९८ वळे–फिर । बुधवांण–बुद्धिमान् ।

९९. पांत–पक्ति । उपत–उपात्य । समंध–सम्बन्ध ।

१००. परठव–रच । गुणीयण–कवि ।

* दूसरे प्रकारसे सप्त मात्रा पताकाके स्वरूपकी तरह १० मात्रा पताकाका स्वरूप भी निकाला जा सकता है ।

अथ सप्त मात्रा पताका स्वरूप ।*

१	२	३	५	८	१३	२१
२		५		१३		
४		६		१६		
९		७		१८		
		१०		१९		
		११		२०		
		१२				
		१४				
		१५				
		१७				

---

* ७ मात्राओंकी पताका निम्न प्रकारसे भी लिखी जाती है।

७ मात्राओंकी पताका

१	२१									
६	८	१३	१६	१८	१९	२०				
१०	३	५	६	७	१०	११	१२	१४	१५	१७
४	१	२	४	९						

अथ वरण मेर भरण विध ।

दूहौ

संख्या अक्खर कोठ सभ्र, एकौ आदर अंत ।
सून कोठ सिर अंक बे, समिल लेख अध संत ॥ १०१

अथ वरण मेर खड विध ।

दूहौ

परठ दच्छ सुधी पंगत, उत्तर चढ़ा उतार ।
आद अंत भर एकड़ौ, आंन अग्र उणहार ॥ १०२

अथ सप्त वरण मेर स्वरूप ।

सप्त वरण मेर ।

२								
१	१							भेद २
१	२	१						भेद ४
१	३	३	१					भेद ८
१	४	६	४	१				भेद १६
१	५	१०	१०	५	१			भेद ३२
१	६	१५	२०	१५	६	१		भेद ६४
१	७	२१	३५	३५	२१	७	१	भेद १२८

---

१०२. उणहार–समान ।

अथ वरण खड मेर स्वरूप

						१	१
					१	२	१
				१	३	३	१
			१	४	६	४	१
		१	५	१०	१०	५	१
	१	६	१५	२०	१५	६	१
१	७	२१	३५	३५	२१	७	१

प्राचीन मत च्यार वरण पताका स्वरूप

१	२	४	८	१६
	३	६	१२	
	५	७	१४	
	९	१०	१५	
		११		
		१३		

अथ वरण पताका विध ।

दूहा

यक दौ च्यार सु आठ विध, अंक वरण उदिच्छ ।
पुरण अंकसूं वांम तिण, परलौ लोपव पच्छ ॥ १०३

एक अंक लोपै तिकण, पंत एक गुरु ग्यांन ।
दोय अंक दु गुरू त्रियंक, तीन गुरू मन मांन ॥ १०४

१									
२	३	५	९	१७					
४	६	७	१०	११	१३	१८	१९	२१	२५
८	१२	१४	१५	२०	२२	२३	२६	२७	२९
१६	२४	२८	३०	३१					
३२									

अथ वरण पताका नवीन मत अन्य विध सुगम ।

दूहा

वरण पताका आंन विध, अंक उदिस्ट विधांन ।
पूरण अंक संनिधि जिकौ, पूरब अंकसु मांन ॥ १०५

पूरब अंक सिर अंकसूं, जोड़ अक गिण जेह ।
सौ पूरणसूं दूसरी, पंकत धरौ सप्रेह ॥ १०६

पूरब अंक सिर पंतसूं, पह भर छेल्ही पंत ।
त्रतीय अंक गुण पुब्बसूं, पंत दुती भर संत ॥ १०७

---

१०५. सनिधि–निकट ।

१०६. सप्रेह–सप्रयत्न ।

१०७. सिर–ऊपर । पत–पक्ति । पह–प्रथम । छेल्ही–अतिम । पुब्बसू–पूर्वसे । दुती–द्वितीय । सत–सज्जन ।

यण विध पूरब अंक जुड़, सिर पंकतरा अंक ।
वरण पताका नवीन विध, सूधौ मत निरसंक ॥ १०८

अथ मरकटी लखण कथन ।

छप्पै

किव पूछै जौ कोय, ग्यांन खट भांत एक थळ ।
जिणरी अखु' जुगत, सुणौ कवि सुमति सउज्जळ ॥
किती व्रत्तिके भेद, मात्र कितरीके वरणह ।
कितरा गुरु लघु किता, रटौ हिक ठौड़ सु निरणह ॥
मांडजै तेण पुळ मरकटी, खट विध ग्यांन दिखाइयै ।
'किसनेस'सुकव धन जनम किव,गुण जौ राघव गाइयै ॥१०९

अथ मात्रा मरकटी विध कथन ।

कवित छप्पै

पंकत खट करि प्रथम, संख्य मत्ता कोठा सम ।
पांत व्रत्त भर प्रथम, एक दौ त्रय चव यण क्रम ॥
पूरव जुगळ भर भेद पंत, त्री चवथ पंच तज ।
पंत छटी भर पहल, एक बे अंक परठ सुज ॥
धर बीय सीस अंकौं सधर, बियौ भेद पंकत सुमिळ ।
लख बीया अग्र पांचौं सुलछं, पांत छठी यम भर प्रघळ ॥ ११०

आद सुन्य गुरु पंत, अंक अन गुरु लघु आरख ।
गुरु लघु पंकति गिणौ, वरण पंकत भर बेधख ॥

---

१०८ निरसक—निशक ।

११० पात—पक्ति । त्रय—तीन । चव—चार । यण—इस । त्री—तीन । चवथ—चौथा । बे—दो । परठ—रख । बीय—दूसरा । बियौ—दूसरा । सुलछ—अच्छे लक्षण । प्रघळ—अच्छी प्रकार ।

१११. आरख—समझ । बेधख—निर्भय ।

व्रत भेद गुण विन्हैं पंत, विच मत्त पंत धर ।
यम खट पंकत सुकवि, सुमत हूंता पूरण भर ॥
मरकटी मत्त यम 'किसन' मुण,खट विध ग्यांन सु एक थळ ।
जनम कर सफळ पायौ जिकौ, आख क्रीत रघुबर अमळ ॥ १११

अथ दस मात्रा मरकटी स्वरूप

वृत्ति	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
भेद	१	२	३	५	८	१३	२१	३४	५५	८९
मात्रा	१	४	९	२०	४०	७८	१४७	२७२	४९५	८९०
वर्ण	१	३	७	१५	३०	५८	१०९	२०१	३६५	६५५
गुरु	०	१	२	५	१०	२०	३८	७१	१३०	२३५
लघु	१	२	५	१०	२०	३८	७१	१३०	२३५	४२०

अथ वरण मरकटीं भरण विध

कवित छप्पै

प्रथम परठ खट पंत, कोठ वरणां समांन कर ।
व्रत पत यक दोय तीन, चव पंच सस्ट भर ॥
भेद पंत बे च्यार आठ भर दुगुण अंक भण ।
व्रत्ति भेद गुण बिहुं, वरण वंकत चौथी वण ॥
वरण पत अंक कर अरध धर, गुरु लघु पंकत भर गहर ।
गुरु वरण पंत जै अंक मिळ, भल मत पंकत त्रतीय भर ॥ ११२

इति वरण मरकटी ।

---

१११. विन्हैं—दोनो । हूता—से । मुण—कहना । एक थळ—एक स्थान । आख—कह । क्रीत—कीर्ति । अमळ—निर्मल ।

११२. कोठ—कोष्ठक । व्रत—वृत । विहु—दो । गहर—गभीरता ।

अथ अष्ट बरण मरकटी स्वरूप ।

वृत्ति	१	२	३	४	५	६	७	८
भेद	२	४	८	१६	३२	६४	१२८	२५६
मात्रा	३	१२	३६	९६	२४०	५७६	१ ४४	३०७२
वरण	२	८	२४	६४	१६०	३८४	८९६	२०४८
गुरु	१	४	१२	३२	८०	१९२	४४८	१०२४
लघु	१	४	१२	३२	८०	१९२	४४८	१०२४

अथ सात मात्रा मरकटी स्वरूप ।

वृत्ति	१	२	३	४	५	६	७
भेद	१	२	३	५	८	१३	२१
मात्रा	१	४	९	२०	४०	७८	१४७
वर्ण	१	३	७	१५	३०	५८	१०९
गुरु	०	१	२	५	१०	२०	३८
लघु	१	२	५	१	२०	३८	७१

इति मात्रा वरण सोडस करम सपूरण ।

++++++++++

अथ मात्रा व्रत्ति वरणण

दूहा

मत्त व्रत्तमें सुकव मुण, मात्र प्रमांण मुकांम ।
आवै समता आखिरां, वरण व्रत्त जिण ठांम ॥ १

मत्त व्रत हिक अह मुणी, पढ़ि सौ च्यार प्रकार ।
मत्त छंद उप छंद पद, असम सुदंडक धार ॥ २

छंद चंद्रायणौ *

लग मत्ता चौवीस छंद मत्त लेखजै ।
सुज यां अधिका मत उपछंद विसेखजै ॥
वरण मत सम नहीं असम पद जांणजै ।
बे छंदां मिळ दंडक मत्त बखांणजै ॥ ३

अथ मात्रा छंद तत्र गमक छंद

पंच मत, गमक सत ।
सीत बर, रांम रर ॥ ४

छंद बांम छ मात्रा

छ मत 'बांम' समरि स्यांम ।
झूठ धंध, मन म बंध ॥ ५

---

१. मुकाम–स्थान । आखिरां–अक्षरोंमे । ठाम–स्थान ।
२. हिक–एक । अह–शेषनाग । मुणी–कही ।
३. लेखजै–समझिये ।
४ सत–सत्य । रर–राम शब्दकी ध्वनि ।
५ छ–६, है । मत–मात्रा, मति । बांम–एक छंदका नाम, स्त्री । स्याम–स्वामी, ईश्वर । धंध–सांसारिक प्रपञ्च । म–मत ।

रे मूर्ख ! तेरी बुद्धि स्त्रीमे है । तू सांसारिक झूठे प्रपञ्चोंमे अपने मनको मत फँसा और ईश्वरका स्मरण कर ।

---

* एक मात्रासे २४ मात्रा तकके पद्यको छंद कहते हैं । २४ मात्रासे अधिक को उपछंद तथा छंद और उपछंदके मेलको दंडक छंद कहते हैं । मतान्तर से ३२ मात्राके छन्दको भी दंडक कहते है ।

छंद कंता सात मात्रा

कळ सत 'कंत', जिण जगणंत।
रट रघुराय, थिर सुख थाय ॥ ६

दूहौ

सात मत्त पद प्रत पड़ै, सुगति छंद सौ थाय।
आठ मत्त अंतह तगण, पगण छंद कहवाय ॥ ७

छंद सुगति

भूप रघुबर, सभ्भत धनु सर।
जूम्फ मंडे, दैंत दंडे ॥ ८

छंद पगण अस्ट मात्रा

रांम महराज, करण जन काज।
कोट रवि क्रंत, देह दुति वत ॥ ९

छंद मधु-भार

चव कळ जगांण, मधु भार जांण।
भजि औध भूप, रवि कोट रूप ॥
श्रीरांमचंद्र, बिबुधेस बंद।
तन दीध तास, जपि क्रीत जास ॥ १०

---

६. कळ—मात्रा, समार। सत—सात, सत्य। जिण जगणत—जिसके अन्तमे जगण होता हो। जिसमे सारा जग विलीन होता हो। थिर—स्थिर। थाय—होता है।

ससारमे सत्य केवल ईश्वर है जिसमे ही जगत विलीन होता है। अत हे मन! तू रामचन्द्रजीको रट जिससे तेरे सब सुख स्थिर हो जायें।

७ पद प्रत पडै—प्रत्येक चरणमे हो।

८ जूम्फ—युद्ध। मडे—रचा। दैत—दैत्य। दडे—दण्ड दिया।

९ क्रत—काति। दुतिवत—दीप्तिमान्।

१० चव—चार, कह। कळ—मात्रा, दुख। जगाण—जिसके अतमे जगण हो, ससार। मधुभार—एक छद का नाम (मधु—नशा। भार—बोझ)।

अथ नव मात्रा छद

छंद रसकल

नौ मात जैरै, गुरु अंतपै रै।
रसकळ सूछंद, भज्जि कवसलैंद ॥ ११

अथ दस मात्रा छद

छंद दीपक

मुण पाय दह मात, दीपक्क सुखदात।
जीहा अठूजांम, संभार स्री रांम ॥ १२

इग्यारे मात्रा छद

छंद रसिक

चव लघु सिव मत चरण।
वळ खट पय तिण वरण॥
रसिक जिकण जग रटत।
मुण रघुबर अघ मटत॥
धनख धरण धुर धमळ।
'किसन' समर मुख कमळ॥ १३

बिबुधेस–इद्र। दीध–दिया। तास–उसने। क्रीत–कीर्ति। जास–जिसकी।

हे मन! तू इस ससारको दु खका घर और सासारिक नशेको बोझ समझ। देवताओके स्वामी इन्द्रके वन्दनीय और करोडो सूर्योके समान तेजस्वी अयोध्याके स्वामी श्रीरामचद्रजी, जिन्होने तुझे यह शरीर दिया है उनका स्मरण एव सदैव कीर्ति-गान कर।

११. नौ–नव, न। मात–मात्रा। जैरै–जिसके। अतपै–अतमे। कवसलैद–कौशलेन्द्र, श्री रामचद्र।

१२. पाय–चरण। दह–दस। जीहा–जिह्वा। अठूजांम–अष्टयाम। सभार–स्मरण कर।

१३. चव–कह। सिव–ग्यारह। मत–मात्रा। वळ–फिर। तिण–उस। जिकण–जिसको। मटत–मिटते हैं। धनख धरण–धनुर्धारी। धुर–बोझ। धमळ–वहन करने वाला।

छंद आभीर

जै पय सिव मत जांण।
अंत पयोधर आंण॥
छंद आभीर अछेह।
रट रघुनाथ अरेह॥
हर जस गावण हार।
धन मांनुख तन धार॥१४

बारै मात्रा छंद
उद्धौर

कळ भांण पाय कहंत।
उद्धोर जिण जगणंत॥
रे किसन भजि सियरांम।
धांनंख धर सुख धांम॥१५

त्रयोदस मात्रा छंद
छंद अनाम

तेरै मत्त गुर लघु अंत।
किव छंद अनांम कहंत॥
रट सीता नायक रांम।
करौ चित तणा सिध कांम॥१६

---

१४. जै–जिस। पय–चरण। सिव–ग्यारह। पयोधर–मध्यगुरुकी चार मात्राका नाम ।ऽ।।
अछेह–अखंड। अरेह–निष्कलंक।

१५. भाण–(भानु) बारह। पाय–चरण। जगणंत–जिसके अंतमे जगण हो।

१६ किव–कवि।

चतुरदस मात्रा छंद

छंद हाकल

त्रै दुज गुर कळ चवद तठै।
जांणौ हाकळ छंद जठै॥
भव सागर तर रांम भजौ।
तै विण आंन उपाय तजौ॥ १७

छंद झंपताल

गुर अंत मत चवदह गिणौ।
भल झंपताळी कवि भणौ॥
रघुनाथ जेण रिझावियौ।
पद उरध तै कवि पाइयौ॥ १८

पचदस मात्रा छंद

छंद जैकरी

कळ दह पंच जांण जैकरी।
दुज मुर प्रिय अंतै गुरु धरी॥
भज भज सीता राघव भई।
दस सिर जेता अघ हर दई॥ १९

छंद चौपई

पद दस पंचह मत्त प्रमांण, जगण अंत चौपई सजांण।
पायौ जै धन मांनव पिंड, आखै राघव क्रीत अखंड॥ २०

---

१७. त्रै–तीन। दुज–४ मात्रा। तै विण–उसके बिना। आन–अन्य।

१८. भल–ठीक। रिझावियौ–प्रसन्न किया। उरध–ऊर्ध्व। पाइयौ–प्राप्त किया।

१९. दह–दस। दुज–४ मात्रा। मुर–तीन। प्रिय–दो मात्रा। जेता–विजयी।

२०. पायौ–प्राप्त किया। जै–जो। पिंड–शरीर। आखै–कह। क्रीत–कीर्ति।

सौडस मात्रा छद

दूहौ

च्यार चतुकळ सोळमत, सगरा अंत पय साज।
सिंह बिलोकरा छंद सौ, रट कीरत रघुराज॥ २१

छंद सिंह विलोकरा

धन धन हरि चाप निखंग धरी।
धर सील सधर क्रत ऊच करी॥
करतार करां जग भौक जपै।
जय क्रती जिकै खळ पाप खपै॥ २२

छंद चरना कुलक

सौ पदकूळ पय मत्त सोळै।
अंतक सं निरभै हर ओळै॥
जै कज हे किव रांम जपीजै।
जांरा करजुळ आयुख छीजै॥ २३

छद अरिल

दौ लघु अंत पय मत्त खोड़स।
छंद अरिल्ल विना हर खोड़स॥
केसव नांम विना अराभै कर।
कौसळनंद जनं नरभै कर॥ २४

---

२१. सौ–(स) वह।
२२ धन–धन्य। निखग–(निषग) तर्कश। सधर–द्रढ, अटल। क्रत–कार्य। ऊंच–श्रेष्ठ। भौक–धन्य-धन्य। जयक्रति–विजयी। जिकै–जिसके। खळ–दुष्ट। खपै–नाश होते हैं।
२३ सौ–उसके। पदकूळ–चरनाकुल। अतक–यमराज। हर–(हरि) ईश्वर। ओळै–ओट। जै–जिग। कज–लिये। करजुळ–हायका जल। आयुख–आयु। छीजै–नष्ट होनी है।
२४. अरणभै–निर्भय। जन–भक्त। नरभै–निर्भय।

छंद पाद्धरी

अख मत्त सोळ यक जगण अंत ।
पाद्धरी छंद कवि जे पढ़ंत ॥
राजाधिराज माराज रांम ।
ते ताज सीस आलम तमांम ॥
'अरिहंत' भरत अग्रज अहेस ।
जांनुकीकंत मतिवंत जेस ॥
तन स्यांम घणा घण रूप ताय ।
पट पीत बरण तड़िता प्रभाय ॥
आजांणबाहु अद्वितीय अंग ।
निज पांण बांण धनु कटि निखंग ॥
सीय बांम अंग मुख अग्र सेख ।
बजरंग पाय सेवत बिसेख ॥
इण रूप ध्यांन निज अवध ईस ।
कर भजन 'किसन' निस दिन कवीस ॥ २५

छद बै अखरी

गुरु लघु अनियंम सोळ मता गण ।
छंद बै आखरी सोय बिचच्छण ॥
दाटक रांम आलाटक दंडण ।
हाटक कोट अधीस विहंडण ॥

---

२५ आलम–ससार । अरिहत–शत्रुघ्न । अहेस–लक्ष्मण । मतिवत–बुद्धिमान् । घणाघण–(घनाघन) वादल । तडिता–विजली । प्रभाय–चमक । आजाणबाहु–आजानुबाहु । पाण–(पाणि) हाथ । सेख–लक्ष्मण । बजरग–हनुमान । पाय–चरण ।

२६ अनियम–नियम नही । विचच्छण–विचक्षण । दाटक–समर्थ । आलाटक–दुष्ट । दडण–दड देने वाला । हाटक–स्वर्ण । कोट–गढ । अधीस–स्वामी । विहडण–नष्ट करने वाला ।

आस्त्रय आय भभीखरा आतुर।
बेख ब्रवी जिरा लंक सियाबर॥
एक घड़ी मझ्झ दास उधारै।
धांनुंखधार बडा व्रद धारै॥
सौ नित गाव 'किसन' सुभायक।
नाथ अनाथ धरणी रघुनायक॥ २६

छंद रड्ड

सप्तदम मात्रा

दूहौ

कीजै दूहौ प्रथम यक, सत्तरह मत्ता पाय।
तिथ रिव तिथ सिव तिथ, सुपय रड्ड छंद कहाय॥ २७

छंद ग्रंथां तरे चूडामरण नांम

धारत कर सायक धनुख, त्रेभोयरा सिरताज।
भजियां जन कारक अभै, जै राघव माहराज॥
राज भभीखरा लाज राखरा, सरणागत साधाररा।
धनंख सायक भुजां धाररा, मह असुर खळ माररा॥
जांनुकीवर मरम जांरांग, तेग अरेसां तायक।
'किसन' भज जन मांन रखके, दांन अभै वरदायक॥ २८

---

२६. आतुर–दुखी। वेख–देख। ब्रवी–इनायत की। मझ्झ–मध्य। दास–भक्त। धानुखधार–धनुषधारी। व्रद–विरुद। सुभायक–सुरुचिकर। धणी–स्वामी।

२७. तिथ–१५। रिव–१२। सिव–११।

२८. त्रैभोयण–त्रिभुवन। साधारण–रक्षा करने वाला। मह–(महि) पृथ्वी। मरम–मर्म। जाणग–जानने वाला। अरेसां–(अरि+ईस) शत्रु। तायक–नाश करने वाला।

नोट—सप्तदस मात्राके रड्ड छदका लक्षरा जैसा ग्रथकारने दिया है उसके अनुसार उदाहरण नही है, क्योकि सत्रह मात्रा किसी भी चरणमे नही हैं।

अथ वीस मात्रा पवगम छद

ग्रथातरे चद्रायणौ छद

दूहौ

त्रे खट कळ लघु गुरु चरण, अंत मत्त इक वीस ।
चुरस छद चंद्रायणौ, आख सुजस अवधीस ॥ २९

छंद चंद्रायणौ

स्यांम घटा तन रूप विराजत सांमळा ।
बेखौ दुपटा पीत छटा जिम बीजळा ॥
कट तट ओप निखग कोट छिब कांमकी ।
रूप अनूप सचूप यसी दुति रांमकी ॥ ३०

तेवीस मात्रा

छद महादीप

महदीप छंद तेरहै दस मत पय जांणौ ।
यण जोड़ सुजस रांम नृपत उर मझ्झ आंणौ ॥
जनपाळ स्री दयाळ सुलख जियगतजांमी ।
सरण सधार बिरदधार हणूंमांन सांमी ॥ ३१

छद हीर

त्रय खटकळ अंत रगण नांम छंद हीर है ।
सौ पसु कव धन्य पढ़त कीरत रघुबीर है ॥

---

२९. त्रे–३ । खट–६ । चुरस–श्रेष्ठ ।

३०. बेखौ–देखिए। छटा–दीप्ति । बीजळा–बिजली । कटतट–कटितल । ओप–शोभित । निखग–तर्कश । सचूप–सुन्दर । यसी–ऐसी । दुति–द्युति ।

३१. मझ्झ–मध्य । जनपाळ–भक्तोकी रक्षा करने वाले । जीयगतजांमी–अन्तर्यामी । सरणसधार–शरणमे आये हुएकी रक्षा करने वाला । हण्मान–हनुमान । सामी–स्वामी ।

३२. पसु–पशु, मूर्ख । कव–कवि, विद्वान ।

धरण धनुस बांम पांण बांण दच्छ हाथ है।
भंजण गढ़ लंक भूप गजण दस माथ है ॥ ३२

छंद रोला

औयण मत चौवीस होय जिण रोळा आखत।
भल कवि जोड़ग छंद मांझ, राघौ जस भाखत ॥
गैल औण रज परसत रीजै नारी गौतम।
प्रतिपल 'किसना' रांमचंद्र सौ भज पुरसोतम ॥ ३३

छंद बथुवा

भव तेरह मत औण, कोय उप दोहा भाखै।
अख रोळा बथु ऊभै, त्रिविध आंनंद बथु आखै ॥
दस तेरह मत्त रुद्र रुद्र रुद्रह नव आवै।
राय बिथु तिण नांम रुद्र दस अंन मत गावै ॥ ३४

अथ छंद काव्य

आद मत्त अगीयार, दुतीय पद तेर मात दख।
काव्य छंद तिण कहत, अवध ईस्वर कीरत अख ॥
जिग कोसिक रख जेण, असुर मारीच उडायौ।
मार सुबाह मदंध, प्रगट रघुबर जय पायौ ॥ ३५

---

३२. बाम–बाया। पाण–(पाणि) हाथ। दच्छ–दाहिना। भजण–तोडने वाला। लक–लका। गजण–पराजित करने वाला। दसमाथ–रावण।

३३ औयण–चरण। मत–मात्रा। आखत–कहते हैं। भल–उत्तम, श्रेष्ठ। जोडग–रचना करने वाला। माझ–मध्य। राघौ–श्री रामचद्र भगवान। गैल–रास्ता। औण–चरण।

३४ भव–ग्यारह। भाखै–कहते हैं। रुद्र–ग्यारह।

३५. आद–आदि। अगीयार–ग्यारह। मात–मात्रा। दख–कह। अख–कह, वर्णन कर। जिग–यज्ञ। कोसिक–विश्वामित्र। रख–रक्षा कर। जेण–जिस।

दूहौ

मत्त छंद 'किसनै' मुणौ, निज कीरत रघुनंद ।
सुणौ सुकव अखंु सकौ, अब मत्ता उप छंद ।। ३६

इति मात्रा छद सपूरण

अथ मात्रा उप छद वरणण

दूहौ

जिण पथ मंदाकिण जनम, अघ नासिणी अपार ।
जिण भजतां अघ जाणरो, विसमय किसुं विचार ।। ३७

तत्रादि हरि गीत छद

चव आद खटकळ दुकळ गुरु यक पाय मत अठ वीसयं ।
हरि गीत सौ जिण अत लघु सौ रांम गीत मती सयं ।।
बपु स्यांमसुंदर मेघ रुचि फबि तड़ित पीत पटंबरं ।
सुज बांम चाप निखंग कटि तट दच्छ कर आंमत्त सरं ।। ३८

छंद रांम गीत

दसमाथ भज समाथ भुज रघुनाथ दीन दयाळ ।
गुह ग्राह ग्रीधक बंध तै गत स्रवण भाल विसाळ ।।
सुग्रीव निरबळ राखि सरणै सबळ बाळ संघार ।
पह जोय 'किसना' नांम परचौ तोय गिरवर तार ।। ३९

---

३७ पथ–चरण । मदाकिण–(मदाकिनी) गगा । अघ–पाप । नासिणी–नाश करने वाली, मिटाने वाली । विसमय–(विस्मय) आश्चर्य । किसू–कैसा ।

३८ चव–कह । आद–(आदि) प्रथम । वपु–शरीर । रुचि–काति । तडति–बिजली बाम–बाया । चाप–धनुष । निखग–तर्कश । दच्छ–दक्षिण ।

३९ दसमाथ–रावण । समाथ–समर्थ । गत (गति) मोक्ष । स्रवण–देने वाला । बाळ–बालि नामक बदर । परचौ–चमत्कार । तोय–पानी । गिरवर–पर्वत ।

नोट—हरि गीत और राम गीतमे यही अतर है कि राम गीतमे अतिम वर्ण ह्रस्व रहता है । परन्तु उपर्युक्त राम गीत मे छब्बीस मात्रा ही है ।

छंद सवैइया

अंत भगण ईकतीस मत्त पद छैस सवैयौ छाजत।
लख कारज तज समर रांम पद बीजां भजतौ मुढ़ न लाजत॥
संत अनेक उधार सियाबर पै सरण अनाथां पाळण।
गढ़वा जै पढ़ वीज सची गथ जनमां तणा दुख सौ जाळण॥ ४०

दूहौ

पद प्रत मत गुणतीस पढ़ि, अंत गुरु लघु होय।
राघव जस जिण मभ्क रटां, कहै मरहट्टा सोय॥ ४१

छंद मरहट्टा

सीता सी रांणी वेद वखांणी, सारंगपांणी सांम।
मीढ़ न मघवांणी बळ ब्रहमांणी, नहिं रुद्रांणी नांम॥ ४२
जे अंतर जांमी वार नमांमी, स्वांमी जग साधार।
जोड़ी चिरजीवं पतनी पीयं, सुज सस दीवं सार॥ ४३

दूहौ

सात चतुकळ चरण मैं, एक होय गुरु अंत।
चतुर पदी कोइक चवै, रुचिरा कोय रटंत॥ ४४

छंद चतुरपदी तथा रुचिरा

दस माथ विहडण आसुर खंडण, राघव भूप अरोड़ा।
पाथर रच पाजं समुद सकाजं, तै गड हाटक तोड़ा॥

---

४०. छाजत–शोभा देता है। लख–लाखो। बीजा–दूसरोको।

४१. पद–चरण। प्रत–प्रति। सोय–वह।

४२ सारगपाणी–(सारगपाणि) विष्णु, श्रीरामचद्र। साम–(स्वामी) पति। मीढ़–समता। मघवाणी–इन्द्राणी। ब्रहमाणी–ब्रह्माणी। रुद्राणी–पार्वती, सती।

४३ साधार–रक्षक। पतनी–पत्नी। पीय–पति। सस–शशि, चद्रमा। दीव–सूर्य।

४४. कोइक–कोई। चवै–कहते हैं। रटत–कहते है।

४५ विहडण–नाश करने वाला। अरोडा–जबरदस्त। पाथर–पत्थर। पाज–सेतु, पुल। हाटक–स्वर्ण। रिव–(रवि) सूर्य।

सीताचौ स्वांमी अंतरजांमी रवि'कुळ मंडण राजा।
जिण सुजस जपीजै लभ तन लीजै कीजै सुक्रत काजा॥ ४५

छंद घत्ता

सत दुजबर ठांणौ त्रय कळ आंणौ कहि घत्ता यक तीस कळ।
रटजै मझ राघौ दुख अघ दाघौ फिर तन धारण पाय फळ॥
द्रुम सात बिभेदण क्रमगत छेदण तै जस कह भव सिंधु तर।
सुत स्त्री कौसल्या तार अहल्या, करुणानिध सौ याद कर॥ ४६

ग्रथातरे धतानद अन्य विध

दस सात मात्रा पर विस्राम ग्रत लघु सतरै मात्रा सौ धतानद छद।

छंद त्रिभंगी

दस अठ अठ छामं चव विस्रांमं छंद सुनांमं तिरभंगी।
रघुनाथ समथ्थं हणि दसमथ्थं रखि यळ गथ्थ रिण संगी॥
ससिबदनी सीता कंत पुनीता दास अभीता कुळदीता।
'किसना' जिण कीता गुण मुखगीता प्रगट पुणीता जग जीता॥ ४७

खट सद्रस्य छद लछण

दूहौ

तिरभंगी १ पदमावती २ दंडकळ ३ लीलावती ४।
दुमिळा ५ जनहर ६ छंद दख औ सम छहूं अखत॥ ४८

---

४५ मडण–ग्राभूषण। लभ–लाभ। काजा–कार्य।

४६ सत–सात। दुजवर–चार मात्राका नाम। ठाणौ–रखो। त्रय–तीन। मझ–मध्य। दाघौ–जलाग्रो। बिभेदण–भेदन करने वाला। क्रमगत–कर्मगति। छेदण–नाश करने वाला। भव–ससार।

४७. छाम–छ मात्रा। चव–कह। समथ्थ–समर्थ। हणि–मार कर। दसमथ्थ–रावण। रखि–रख कर। यळ–पृथ्वी। गथ्थ–गाथा, वृत्तान्त। ससिवदनी–चन्द्रमुखी। कत–पति। पुनीता–पवित्र। दास–भक्त। ग्रभीता–निर्भय। कुळदीता–(कुल+ग्रादित्य) सूर्यवशी। कीता–कीर्ति। गीता–गाया।

छंद पदमावती

दस वसु खट आठं इक पद पाठं सौ पदमावती छंद सही ।
सौ सुकव सुभागी हरि अनुरागी मत लागी जस रांम मही ॥
सीता वर सुंदर मह गुण मंदर पाय पुरंदर दास पड़ै ।
चव जै जस चारण 'किसन' सकारण धारण सौ यक एक धड़ै ॥ ४९

छंद दंडकल

दस अठ चवदेस दंडकळ सं मत्त बतेसं जेण पयं ।
कह जे मझ कीरत पावत स्रीपत लाभ सधारण देह लयं ॥
अवधेस अभंगं, जीपण जंगं कोटि अनंगं धारी कळं ।
खर दूखर खंडण बाळ विहंडण दाप निवारण पाप दळं ॥ ५०

छंद दुमिला

दस वसुखट ठांणौ फिर वसु आंणौ दुमिळा ठांणौ करणांता ।
दसरथ सुत नृपवर कळख खयंकर, सौ भव दध तिर निज संता ॥
रवि कौट प्रकासं जपि मुख जासं, देण अभेपद निज दासं ।
निस दिन पत्रासं, हरखि हुलासं, जस प्रतिसासं जपि जासं ॥ ५१

---

४९ वसु–आठ । खट आठ–चौदह । सौ–वह । सुकव–सुकवि । सुभागी–भाग्यशाली । मत–मति । मह–महि, महान् । पाय–पैर । पुरदर–इन्द्र । दास–भक्त । धडै–तराजूके पलडेमे ।

५० चवदेस–चवदह । मत्त–मात्रा । बतेस–बत्तीस । पय–चरण । मझ–(मध्यमे) । अभग–वीर । जीपण–जीतने वाला । जग–युद्ध । कळ–काति । खर दूखर–खर, दूषण । खडण–मारने वाला । बाळ–वालि । विहडण–नष्ट करने वाला । दाप–दर्प, अभिमान । दळ–समूह ।

५१. वसुखट–चौदह । ठाणौ–स्थापित करो । आणौ–लाओ । करणता–जिसके अतमे कर्ण (ऽऽ) हो । कळख–कलुष । खयकर–नष्ट करने वाला । भव–ससार । दध–(उदधि) समुद्र । अभेपद–निर्भयता । पत्रास–पत्ते खाकर । जस–यश । प्रतिसास–(श्वास प्रतिश्वास) प्रत्येक श्वास ।

छंद लीलावती

गुरु लघु विण नियमं तीस बि मत्ता।
लीलावती गुरु अंत कहै।
जौ रघुबर गावै सब सुख पावै,
निभय जिकां जम ताप नहै।
सर गिरवर तारे पदम अठारै,
सेन उतारे जगत सखै।
भिड़ रांवण भजे गढ़हिम गजे,
अमरां रंजे ब्रहम अखै। ५२

छंद जनहरण

सब लघु पय पय धरि पछ यक गुरु करि,
जळहर कळ सम लछण धरै।
सुंज उर दुति सरवर तिम कळ तरवर,
सिध रघुवर सुजस बरै।
हर अकरण करण सरण असरण हरी,
तरण अतर भव जळधि तिकौ।
कट कट अघ दुघट विकट्ट थट अण घट,
झट झट रट रट 'किसन' जिकौ। ५३

छंद वरवीर

चव कळ उरोज थळ च्यार वोज,
वरवीर छंद कह यम कव्यंद।

---

५२ विण–विना। मत्ता–मात्रा। नहै–नष्ट होते हैं। सर–समुद्र। सखै–साक्षी देता है। भिड–योद्धा। भजे–नाश किया। गढहिम–लका। गजे–जीत लिया। रजे–प्रसन्न किया। ब्रहम–ब्रह्मा। अखै–कहता है।

५३. पय–चरण। पछ–पश्चात्। जळहर–छदका नाम। विकट्ट–भयकर। थट–समूह। अणघट–जो घटित न हो।

५४ कव्यद–कवीद्र, महाकवि।

जस वांग जास मधि चित हुलास,
अख पाप नास रघुवंस यद।
दसरथ कुमार, धनुबांण धार,
जुध असुर जार सरण सधार।
जांनकीनाथ गिरतार पाथ,
सौ है समाथ भव सिंधु सार। ५४

सोरठौ

वीस मत्त विसरांम, दुवै सतर गुरु अंत दस।
तीस सात मत तांम, जिण पद छंद सझूलणा॥ ५५

दूहौ

आठ पच्च कळ पाय यक, आख फेर गुरु अंत।
नांम जेण पिंगळ निपुण, उप झूलणा अखंत॥ ५६

छंद झूलणा

वेद चव भेद खट तरक नव व्याकरण वळै खट भाख जीहा वखांणै।
भांत पौरांण दस आठ पिंगळ भरथ, उगत जुगतां तणा भेद आंणै॥
राग खट तीस धुनि ब्यंग भूखण सुरस पात पद।
जिकै विण समझ चडूल पंखी जिही जे न रघुनाथचौ नांम जांणै॥ ५७

---

५४ मधि–मध्य। यद–इन्द्र। असुर–राक्षस। जार–नष्ट कर। पाथ–जल। समाथ–समर्थ। भव–ससार। सिधु–समुद्र।

५६ पाय–चरण। यक–एक। आख–कह। अखत–कहते है।

५७ वळै–फिर। भाख–भाषा। जीहा–जिह्वा। पौराण–पुराण। उगत–उक्ति। जुगता–युक्तियो। धुनि–(स०ध्वनि) वह निबंध या काव्य जिसमे शब्द और उसके साक्षात् अर्थसे व्यगमे विशेषता या चमत्कार हो। व्यग–(स०व्यग्य) व्यजना वृत्तिसे प्रकट शब्दका गूढार्थ। भूखण–अलकार। विण-समझ–मूर्ख, अज्ञानी। चडूळ–एक प्रकारकी खाकी रगकी छोटी चिड़िया जो वृक्षो पर बहुत सुदर घोसला बनाती है और बहुत ही मधुर बोलती है। पखी–पक्षी। जिही–जैसे। जे–जो।

छंद उप झूलणा

सीस दीधौ जिकौ नांम रघूनाथसूं ,
नैण दीधा जिकौ निरख माधव नरा ।
जीभ दीधी जिकै क्रीत स्रीवर जपौ ,
होठ मुसुकाय रिझवाय पातक हरा ।
हाथ दीधा जिकौ जोड़ आगळ हरी ,
उदर परसाद चरण-अम्रत आचरा ।
पाय दीधा जिकै 'किसन' पर-दछ ,
फिर नाच राघव आगै सफळ कर तन नरा ॥ ५८

छद मदन हरा लछण

दूहौ

अठ दुजबर खटकळ सुयक, एक हार गण अंत ।
मदन हरा सौ छंद मुणि, राघव सुजस रटंत ॥ ५९

छंद मदन हरा

रज पाय परस जिण नार रिखी ,
तज देह सिला छिन मांह तरी, रट सौ हरी ।
दिन मांन कदन नृप जनक सदन धनुभंजी ,
वदै जग सीय बरी, क्रत उद्धकरी ।

---

५८ दीधौ—दिया । दीधा—दिये । नरा—नर, मनुष्य । दीधी—दी । स्रीवर—(श्रीवर) विष्णु । पातक—पाप । हरा—मिटाने वाला । आगळ—अगाडी । पर-दछ—प्रदक्षिणा । आगै—अगाडी ।

नोट—छद-शास्त्रके अनुसार झूलणा (ना) छदके लक्षणमे १०, १०, १० और ७ पर विश्रामसे कुल ३७ मात्राए प्रत्येक चरणके अतमे यगण सहित होती है । यहा पर ग्रथकर्ताके दिए झूलणा छदके लक्षण स्पष्ट नही होते हैं । इसी प्रकार उपझूलणाके भी लक्षण स्पष्ट नही है ।

५९. अठ—आठ । दुजबर—चार मात्राका नाम । मतातरसे आदि गुरुकी चार मात्राका नाम (ऽ।।) । हार—एक दीर्घका नाम (ऽ) ।

६०. रज—धूलि । पाय—चरण । कदन—नाश । सदन—भवन । क्रत—(क्रतु) यज्ञ । उद्धकरी—उद्धार किया ।

आजांनसुकर सर चाप सुधर,
जिण अतुळ पराक्रम वेद अखै, सिस सूर सखै।
'किसनेस' सुकव दख सौ निस दिव,
रदि सिं भाखै, भव कंज भखै॥ ६०

दूहौ

कर दुजवर नव रगण हिक, चव पै मत चाळीस।
सुकवी खंजा छंद सौ, मुण कीरत लिछमीस॥ ६१

छद खंज

रखण जन सरण रघुराज कौसळ कंवर,
धनुख सर धरण कर सकळ सुख धांम है।
भरत्थ अरिहा लछण भ्रात अग्रज सुभग महा,
मन हरण घण रूप तन स्यांम है।
सरल तन सहज दन मुकत दायक सुमत,
गजगमणी जांनकी भांम गुण ग्रांम है।
रात दिन हुलस मन सुजस 'किसनेस' रट,
रखण जन मांम तरुकांम रघु रांम है॥ ६२

दूहौ

बार प्रथम तेरह दुतीय, रगण अंत विस्रांम।
मांझ चरण पचीस मत्त, निज गगनागा नांम॥ ६३

---

६० आजानसुकर–आजानबाहु। सर–बाण, तीर। चाप–धनुष। सिस–(शशि) चन्द्रमा। सूर–सूर्य। सखै–साक्षी देते हैं। दख–कह। निस दिव–रात दिन। रदि–हृदय।

६१. लिछमीस–(लक्ष्मी+ईश) विष्णु, श्रीरामचन्द्र।

६२ भरत्थ–भरत। अरिहा–शत्रुघ्न। लछण–लक्ष्मण। घण–(घन) बादल। मुकत–मुक्ति, मोक्ष। गजगमणी–गजगामिनी। भाम–भामिनी। गुण ग्राम–गुणोका समूह। जन–भक्त। माम–प्रतिष्ठा, मर्यादा। तरुकाम–कल्प वृक्ष।

६३ बार–बारह। मांझ–मध्य, मे।

छंद गगनांगा

खळ दळ समर खपावत कवि जण गावत कीरती।
सीता वाहर सझतां वसुधा जाहर वीरती॥
'किसना' निस दिन जस कर गुणियण जैनूं गावजै।
राघव राजा सौ रट प्रगट उंच पद पावजै॥ ६४

दूहौ

एक छकळ फिर च्यार कळ, पांच होय गुरु अंत।
अठावीस कळ ओण प्रत, द्रुपदी छंद दखंत॥ ६५

छंद द्रुपदी

जनक सुता मन रंजण गंजण, असुर अगजण आहव।
मैं सरणागत कदम सदा मद, मौ लजा रख माहवं॥
दीनांनाथ अभै वरदाता, त्राता सेवग तारणं।
तौ निज पायनि मौ दसरथ तण, घण पापां सिंघारणं॥ ६६

दूहौ

दस दस पर विसरांम चव, मत चाळीस हुवंत।
गुरु लघु अखिर नियम नहिं, उद्धत छंद अखंत॥ ६७

छंद उद्धत

दळ सझत खळ दाह यभ बाज अणथाह,
गह रचण गजगाह नरनाह रघुनाथ।

---

६४. खपावत—नाश करते हैं। कीरती—कीर्ति यश। वाहर—रक्षा। वसुधा—पृथ्वी। जाहर—जाहिर, प्रसिद्ध। वीरती—वीरत्व, शौर्य। गुणियण—कवि। जैनूं—जिसको।

६५. अठावीस—अट्ठाईस। ओण—चरण। प्रत—प्रति। दखत—कहते हैं।

६६ रजण—प्रसन्न करने वाला। गजण—नाश करने वाला। अगजण—वह जो जीता न जा सके, अजयी। आहव—युद्ध। घण—बहुत। सिंघारण—सहार करने वाला।

६७ चव—कह। हुवत—होते है, होती हैं। अखत—कहते हैं।

६८ यभ—इभ, हाथी। वाज—घोडा। अणथाह—अपार। गह—गभीर, महान। गजगाह—युद्ध।

छंद पंच-वदन

रघुवर महाराज गाव नहचै यक पळ न लाव,
रंक करै सोई राव सुद्ध भाव सांम रे।
दीनबंधु देवदेव भाखत स्रुति भ्रहम भेव,
जेता जग सौ अजेव गहर गरुड़ गांम रे।
जळद नील देह जेह तड़िता पट पीत तेह,
गोब्यंद सत क्रत गेह सीत नेह संजणं।
राखण मिथळेसराज लाखवात अघट लाज,
करि अमाप सबळ करग भरग चाप भंजणं ॥ ७२

दूहौ

अै मात्रा उपछंद, कहिया मत माफक 'किसन'।
नहचै सुण रघुनंद, निज सेवगां निवाजसी ॥ ७३

इति मात्रा उपछंद संपूरण।

अथ मात्रा असम चरण छंद वरणण

दूहौ

मरण जनमचौ सळ मिटण, सौ सलभ व्है संभार।
जंम मौ सळ भंजै जिसौ, कौसळ राजकंवार ॥ ७४
नर तन पावै जे नरा, गुण गावै गोब्यंद।
जनम सफळ थावै जिकै, फिर नावै जम फंद ॥ ७५

---

७२. राव—राजा। साम—स्वामी। भ्रहम—ब्रह्मा। भेव—भेद। जेता—जीतने वाला। अजेव (अजय)—जो किसीसे जीता न जा सके। गहर—गभीर। जळद—बादल। जेह—जिस। तडिता—बिजली। तेह—उस। गोब्यद—गोविन्द। सीत—सीता, जानकी। नेह—स्नेह, प्रेम। सजण—साधन करने वाला। करग—हाथ। भरग—भृगु मुनि, परशुराम। चाप—धनुष। भजण—भजन करने वाला।

७३. अै—ये। मत—मति, बुद्धि। माफक—माफिक। निवाजसी—प्रसन्न होंगे।

७४ चौ—का। सळ—कष्ट। सलभ—सुलभ। सभार—स्मरण कर। मौ—मेरा। जिसौ—जैसा।

७५. गुण—यश, कीर्ति। गोब्यद—गोविंद। फद—जाल, बधन।

अथ मात्रा असम चरण छंद वरणण ।

तत्रादि दोहा छंद

दूहौ

तेर मत्त पद प्रथम त्रय, दुव चव ग्यारह देख ।
अख सम पूरब उत्तर अध, लछ्छण दूहा लेख ॥ ७६

अन्य लछ्छण दूहा

दूहौ

सुज उलटायां सोरठौ, सांकलियौ आदंत ।
मध्य मेळ दूहौ मिळै, तव तूंबेरौ तंत ॥ ७७

दूहौ

अजामेळ पर आविया, साठ सहंस जम साज ।
नांम लियां हिक नारियण, भड़ सोह छूटा भाज ॥ ७८

सोरठौ

प्रगट ऊव्हांणै पाय, आयौ सोह जांणै यळा ।
सिंधुरतणी सिहाय, कीधी धरणीधर 'किसन' ॥ ७९

साकलियौ दूहौ

मत जकडी भव माग, मकड़ी जाळा जेम मन ।
हर द्रढ़ कर पकडी हिया, लकड़ी हगी पळ लाग ॥ ८०

---

७६ तेर—तेरह । मत्त—मात्रा । त्रय—तृतीय । दुव—दूसरा द्वितीय । चव—चतुर्थ । लछ्छण—लक्षण ।

७७ मध्य मेळ दूहौ—वह दोहा छंद जिसकी तुकबंदी द्वितीय और तृतीय चरणसे की जाती है। इस दोहा छंदका दूसरा नाम तूंबेरा (तूंबेरौ) भी है। तव—कह । तंत—उसे ।

७८ सहंस—सहस्र । जम—यम, यमदूत । साज—सुसज्जित होकर । हिक—एक । नारियण—नारायण । भड—योद्धा । सोह—सब । भाज—भग कर ।

७९ ऊव्हांणै—नंगे पैर । यळा—इला, पृथ्वी, संसार । सिंधुर—गज, हाथी । तणी—की । सिहाय—सहाय, सहायता । कीधी—की । धरणीधर—ईश्वर ।

८० सांकळियौ—वह दोहा छंद जिसकी तुकबन्दी प्रथम चरण और चतुर्थ चरणसे की जाती है। इस दूहा (दोहा) छंदका दूसरा नाम अन्तमेळ भी है। कहीं-कहीं इसे बडा दूहा भी कहा गया है। मत—मति, बुद्धि। जकडी—बंधनमें की गई। भव—संसार। मकडी—(सं०मर्कटक) आठ आंखों और आठ पैरों वाला एक कीडा जो दीवारों आदि पर अपना जाल बनानेमें प्रसिद्ध है ।

दूहौ तूबेरौ

मेवा तजिया महमहण, दुरजोधनरा देख।
केळा छोत विसेख, जाय बिदुर घर जीम्हिया ॥ ८१

दूहौ

सौ दूहा तेईस सुज, नांम सहत निरधार।
जोड़ देखाऊं जूजुवा, सुणौ रांम जस सार ॥ ८२

कवित छप्पै

भ्रमर १ भ्रामरौ २ सरभ ३ सैन ४,
मंडुक ५ मरकट ६ सख।
करभ ७ नरह ८ सुमराळ ९,
अवर मदकळ १० पयधर ११ अख ॥
चळ १२ वांनर १३ कह त्रकळ १४,
मच्छर १५ कच्छप १६ सादूळह।
अहिवर १८ बाघ १९ बिडाळ २०,
सुनकर २१ ऊंदर २२ स्रप २३ थूळहा ॥
तेईस नांम दूहां तणौ,
वरणे 'किसन' बखांणियौ।
यळ व्रथ जनम खोयौ अवस,
ज्यां हरि नांम न जांणियौ ॥ ८३

उदाहरण

दूहौ

भमर अखिर छाईस भण, चव लघु गुरु बाईस।
यक गुर घट बे लघु बधै, सौ सौ नांम कवीस ॥ ८४

---

८१. महमहण–विष्णु, ईश्वर। छोत–छिलका। विसेख–विशेष। जीम्हिया–भोजन किया।
८२. सौ–वे। जोड–रच कर। जूजुवा–पृथक-पृथक।
८३. व्रथ–व्यर्थ। अवस–अवश्य।
८४ अखिर–अक्षर। छाईस–छब्बीस। भण–कह। चव–चार। यक–एक। बे–द्वे, दो।

अथ भ्रमर नाम
अख्यर २६ गुरु २२ लघु ४
दूहौ

ना कीज्यौ सैणा नरां, काचौ बीजौ कांम ।
राखै लाजा संतरां, राजा साचौ रांम ॥ ८५

अथ भ्रामर नाम
अख्यर २७ गुरु २१ लघु ६
दूहौ

कोड़ां पापां कीजतां, कोपै धू की नास ।
जीहा राघौ जौ जपै, तौ नांही तिल त्रास ॥ ८६

अथ नाम सरभ
अक्षर २८ गुरु २० लघु ८
दूहौ

मांनौ वारंवार मैं, देखे नां नर देह ।
गायां स्री राघौ गुणां, औ पायां फळ एह ॥ ८७

अथ नाम सैन
अख्यर २९ गुरु १९ लघु १०
दूहौ

भौळा प्रांणी रांम भज, तूं तज भौड़ तमांम ।
दीहा छेल्है देख रे, कैसे हूंता कांम ॥ ८८

अथ मडूक नाम
अख्यर ३० गुरु १८ लघु १२
दूहौ

जाई बेटी जांनकी, रांम जमाई रंज ।
भाग बडाई जनकरी, गाई बेद अगंज ॥ ८९

---

८५ अख्यर—अक्षर । सैणा—सज्जन । काचौ—कच्चा । बीजौ—दूसरा । लाजा—लज्जा । साचौ—सत्य ।

८६. तिल—किंचित । त्रास—भय । राघौ—श्री रामचन्द्रजी ।

८८. भौड—कलह, प्रपच । दीहा—दिन । छेल्है—अन्तिम ।

८९. जमाई—दामाद । रज—प्रसन्न, खुश । अगज—न मिटने वाला ।

अथ मरकट नाम

अख्यर ३१ गुरु १७ लघु १४

दूहौ

हर मत छाडै रै हिया, लिया चहै जौ लाह ।
दिल साचै तेड़ौ दियां, नेड़ौ लिछमी नाह ॥ ६०

अथ करभ नाम

अख्यर ३२ गुरु १६ लघु १६

दूहौ

मांनवियां छाडौ मती, कर गाढ़ौ भज टेक ।
जाडौ दळ फिरियां जमां, आडौ राघव अेक ॥ ६१

अथ नर नाम

अख्यर ३३ गुरु १५ लघु १८

दूहौ

रोम रोममैं रम रि'यौ, देख अखंड दईव ।
चोरी जिणसूं नह चलै, जाबक भोळा जीव ॥ ६२

अथ मराळ नाम

अख्यर ३४ गुरु १४ लघु २०

दूहौ

मूरख जाचक जाच मत, जाच जाच जगदीस ।
के रंकां राजा करै, एक पलक मझ ईस ॥ ६३

अथ मदकळ नाम

अख्यर ३५ गुरु १३ लघु २२

दूहौ

भख पुंहचावै भूधरौ, अजगर रै अनय्यास ।
किम भूलै संतां 'किसन', संभरतां सुख रास ॥ ६४

---

६०. हर–इच्छा । छाडै–त्यागे । लाह–लाभ । तेडौ–बुलावा । नेड़ौ–निकट । लिछमी–लक्ष्मी । नाह–नाथ, पति ।

६१. मानविया–मनुष्यो । छाडौ–त्यागो, छोडो । गाढौ–दृढ, मजबूत । जाडौ–घना, अधिक । आडौ–रक्षक ।

६२ दईव–देव, ईश्वर । जाबक–जवुक, मूर्ख । भोळा–अज्ञानी ।

६३. जाचक–याचक । रंका–गरीबो । मझ–मध्य, मे । ईस–ईश्वर ।

६४. भख–भोजन । –भूधरौ–भूधर, ईश्वर । अनय्यास–अनायास, विनाश्रम ।

अथ पयोधर नाम
अख्यर ३६ गुरु १२ लघु २४
दूहौ

मन दुख दाधा डौल मत, साधा जग तज साव ।
मांनव भव भीता मिटण, गुण सीतावर गाव ॥ ९५

अथ चळ नाम
अख्यर ३७ गुरु ११ लघु २६
दूहौ

सह रांचै जन सादियां, मत बहरौ कर मांन ।
कीड़ी पग नेवर भ्रणक, भणक सुणै भगवांन ॥ ९६

अथ वानर नाम
अख्यर ३८ गुरु १० लघु २८
दूहौ

रै चित ब्रत द्रढ़ प्रेम रख, मूरत स्यांम मभार ।
मेल्ह सुरत नट वांसमैं, प्रगट वरत व्है पार ॥ ९७

अथ त्रिकळ नाम
अख्यर ३९ गुरु ९ लघु ३०
दूहौ

केसव भजतौ हरख कर, मत कर आळस मूढ़ ।
जिण दीधौ मनखा जनम, गरभ कौल कर गूढ़ ॥ ९८

अथ मच्छ नाम
अख्यर ४० गुरु ८ लघु ३२
दूहौ

चित जे मत व्है चळ विचळ, भज भज नहचळ भाय ।
कूक करै जिण दिन कुटंब, स्रीवर करै सिहाय ॥ ९९

---

९५ दाधा–दग्ध, जला हुआ । साव–स्वाद । भव–ससार । भीता–भीति, डर, भय ।
९६ सादिया–पुकार करने पर । वहरौ–वहरा । नेवर–पैरोका आभूषण विशेष । भ्रणक–ध्वनि । भणक–आवाज, शब्द ।
९७ मूरत–मूर्ति । स्याम–श्याम, श्रीकृष्ण । मभार–मध्य, मे । सुरत–ध्यान । वरत–वरत्र, चमडेका वना मोटा रस्सा ।
९८ मूढ–मूर्ख । दीधौ–दिया । मनखा जनम–मनुष्य जन्म । कौल–वादा, प्रण । गूढ–गुप्त ।
९९ चळ विचळ–डावाडोल । कूक–पुकार । स्रीवर–श्रीवर, विष्णु । सिहाय–सहाय ।

अथ कछप नाम

अख्यर ४१ गुरु ७ लघु ३४

दूहौ

मिळै न पुळ पुळ तन मनख, धनख-धरण चित धार।
पात झड़ै तरवर पहव, चढ़ै न फेर विचार॥ १००

अथ सादूळ नाम

अख्यर ४२ गुरु ६ लघु ३६

दूहौ

धन धन कुळ पित मात धन, नर अथवा धन नार।
रघुबर जस अह-निस रटै, जे धन अवन मझार॥ १०१

अथ अहिवर नाम

अख्यर ४३ गुरु ५ लघु ३८

दूहौ

हर हर जप अनम कर हर, परहर अहमत पोच।
व्यापक नर हर जगत विच, अंतर गत आलोच॥ १०२

अथ बाघ नाम

अख्यर ४४ गुरु ४ लघु ४०

दूहौ

अमरत दध नह तिय अधर, विधु यिमरत न वखांण।
के जन अजरांमर करण, जस हर यिमरत जांण॥ १०३

---

१०० पुळ पुळ—बार बार। तन—शरीर। मनख—मनुष्य। धनख-धरण—धनुषधारी, श्री रामचंद्र। पात—पत्ता, पान। पहव—प्रथम।

१०१ धन धन—धन्य धन्य। पित—पिता। मात—माता। नार—नारी, स्त्री। अह-निस—रात दिन। अवन—अवनी, भूमि। मझार—मध्यमे।

१०३ दध—उदधि, समुद्र। तिय—स्त्री। अधर—ओष्ठ। विधु—चंद्र, चंद्रमा। यिमरत—अमृत। अजरामर—वह जो न वृद्ध हो और न मृत्युको प्राप्त हो। हर—हरि, विष्णु, ईश्वर। जाण—समझ।

अथ विडाळ नाम

अक्षर ४५ गुरु ३ लघु ४२

दूहौ

जिण हर सरजत नर जनम, सुजदी रसण समाथ।
कर झटपट कवियण 'किसन', नितप्रत रट रघुनाथ ॥ १०४

अथ सुनक नाम

अख्यर ४६ गुरु २ लघु ४४

दूहौ

परगट कट तट तड़त पट, सरस सघण तन स्यांम।
गह भर समपण कनक गढ़, रहचण दस-सिर रांम ॥ १०५

अथ ऊदर नाम

अख्यर ४७ गुरु १ लघु ४६

दूहौ

राघव रट रट हरख कर, मट मट अघ दळ महत।
जनम मरण भय हरण जन, कज भव हर रिख कहत ॥ १०६

अथ सरप नाम

अख्यर ४८ गुरु ० लघु ४८

दूहौ

हर रिण दस-सिर विजय हित, धर निज कर सर धनक।
पढ़त 'किसन' किव सरण पय, जय रघुबर जग जनक ॥ १०७

---

१०४ सरजत—रचता है। रसण—जिह्वा, जीभ। समाथ—समर्थ। झटपट—शीघ्र। कवियण—कविजन, कवि। नित प्रत—नित्य प्रति, सदैव।

१०५ परगट—प्रकट। कट—कटि, कमर। तडत—तडिता, बिजली। पट—वस्त्र। कनक गढ—लंका। रहचण—नाश करने वाला। दस सिर—दशानन।

१०६ मट—मिटते हैं। अघ—पाप। दळ—समूह। महत—महान। कज—ब्रह्मा। भव—महादेव। हर—हरि, विष्णु। रिख—ऋषि। कहत—कहते हैं।

१०७ कर—हाथ। सर—बाण। धनक—धनुष। जग—संसार। जनक—पिता।

अथ चरणा दूहा विचार

पहल त्रतीय पद सोळ मत, दुव चव ग्यारह दाख।
चरणा दूहा चुरस कर, भल किव तिणनूं भाख॥ १०८

उदाहरण

चरणा दूहौ

दट अणघट अघ विकट दळांरौ, राजा सांचौ रांम।
बळ सौ है दिन जन निबळांरौ, नित जापौ तै नांम॥ १०९

पंचा दूहौ लछण

पहलै तीजै बार पढ़, उभये वेद इग्यार।
पंचा दूहा सौ पुणै, सुकव जिके मतसार॥ ११०

उदाहरण

रांम भजनसूं राता, महत भाग जे मांन।
ज्यां सारीखौ जगमें, उत्तम न जांणौ आंन॥ १११

अथ नदा दूहा तथा बरवै छंद
मोहणी लछण

दूहौ

धुर तीजै मत बार धर, सुज बे चौथे सात।
नंदा दोहा मोहणी, बरवै छंद कहात॥ ११२

---

१०८ सोळ–सोलह। मत–मात्रा। दुव–दूसरा। चव–चतुर्थ। दाख–कह। चुरस–रीति, अनुसार, नियमानुसार। भल–श्रेष्ठ। किव–कवि। तिण–उस। भाख–कह।

१०९ दट–दुष्ट। अणघट–अपार। अघ–पाप। साचौ–सच्चा। सौ–वह। जापौ–जपो। तै–उसका।

११० पहलै–प्रथम। बार–बारह। ईग्यार–ग्यारह। पुणै–कहते हैं। मत–बुद्धि, मति।

१११ राता–अनुरक्त, लीन। महत–महान। भाग–भाग्य। सारीखौ–सदृश, समान। आन–अन्य।

११२ धुर–प्रथम। मत–मात्रा। बार–बारह। बे–दूसरा।

नोट– ग्रथकर्ताने नन्दा मोहणी और बरवैको एक-दूसरेके पर्याय मान कर रचना नियमके एक ही लक्षण प्रथम तथा तृतीय चरणमे बारह मात्रा और द्वितीय और चतुर्थ चरणमे सात-सात मात्रा मानी है पर नदा मोहणी और बरवैमे पूर्वाचार्य्योंकि मतसे कुछ-कुछ भिन्न लक्षण होते हैं। बरवैमे प्रथम तृतीय चरणमे बारह-बारह मात्रा तथा द्वितीय और चतुर्थ चरणमे सात-सात मात्रा सहित अतमे जगण होना आवश्यक माना गया है। इसी प्रकार मोहणी छदके अन्तमे सगण होना आवश्यक होता है।

उदाहरण बरवै नदा

दूहौ

पह ज्यांरा चित लागा, रघुबर पाय ।
पुळ पुळमें त्यां पुरखां, थिर सुख थाय ॥ ११३

अथ चौटिया दूहा लछण

चौटियौ दूहौ

दूहा पूरब अरध पर, अधक बार मत होय ।
उत्तरारध दस मत अधक, दुहौ चौटियौ सोय ॥ ११४

उदाहरण

चौटियौ दूहौ

महाराजा रघुवंसमण, सुज रावण समथरा धनु सर पांणां धारै ।
वायक सत सीतावरण, नृप नायक रघुनाथ तूं संतां तारै ॥ ११५

अथ दूहाकौ नाम काढण विध

दूहौ

दूहा लघु गिण आध कर, ज्यां मझ घट कर एक ।
रहेस बाकी नांम रट, वीदग अघट विसेक ॥ ११६

इति भ्रमरादिक तेवीस दूहा नाम करण विध सपूरण ।

छंद चूळियाला

दूहा अध पर पंच मत, चूळियाळा सौ जांणसु ।
कविवर देह लियां फळ एह, दख बद जीहा बाखांण स रखुबर॥११७

---

११३ पह–प्रथम । ज्यारा–जिनके । पाय–चरण । थिर–स्थिर, अटल ।

११४ अधक–अधिक । सोय–वह ।

११५. रघुवसमण–रघुवंशमणि । धनु–धनुष । सर–बाण । पाणा–हाथों ।

११६ वीदग–विदग्ध, कवि, पंडित ।

११७ एह–यह । दख–कह । बद–वर्णन कर । जीहा–जिव्हा । बाखाण–वर्णन, यश ।

छंद निस्रेणका

सम्भ तेरह धुर फेर दस, जांणौ निस्रेणी ।
रिख नारी तरगी हरी, परसत पग रेणी ॥
जेण रांम जस दिवस निस, किव 'किसन' जपीजै ।
लाभ देह रसना समुख, पायांरौ लीजै ॥ ११८

छंद चौबोला

धुर मत्त सोळ अवर चवदह धर, अंत गुरु चौबोल अखै ।
सौ भज 'किसन' रांम सीतावर, संत तार ब्रद निगम सखै ॥
रांवण कंूभ मेघ खर रह्चे, कथ सौ बेद पुरांण कही ।
बगसी भूपां भूप बभीखण, सरणागत हित लंक सही ॥ ११९

छंद ककुभा

कळ धुर सोळ बार सौ ककुभा, उप चौबोलक कहावै ।
सुणजैं सौ सुभ छंद, जेणमें गुण सीतावर गावै ॥
जांमण मरण मरण फिर जांमण, जग नट गौटौ जांणौ ।
सौ दुख मेट अखै पद समपण, केसव नांम कहांणौ ॥ १२०

दूहौ

खट दुजवर कर प्रथम पद, अंत जगण गण आंण ।
दूजी तुक दुज सात धर, जगण सिखा सौ जांण ॥ १२१

---

११८ धुर–प्रथम । रिख–ऋषि । रेणी–धूलि । रसना–जिह्वा ।

११९. सोळ–सोलह । अवर–अपर, अन्य । निगम–वेद । सखै–साक्षी देता है । कूंभ–कुभकर्ण, रावणका छोटा भाई । मेघ–मेघनाद, रावणका पुत्र । खर–एक राक्षसका नाम । रह्चे–मार डाला, सहार किया । बगसी–बख्शिश कर दी । सरणागत–शरणमे आया हुआ । लंक–लका ।

१२०. कळ–मात्रा । सोळ–सोलह । बार–बारह । सीतावर–श्रीरामचन्द्र भगवान । गावें–वर्णन करें । जामण–जन्म । मरण–मृत्यु, मौत । नट गौटौ–नट क्रीडा, ऐंद्रजालिक खेल । अखै–अक्षय । समपण–देने वाला । कहाणौ–कहा गया ।

छंद सिख

सर धनुख सभ्भत जन सरण,
रख करण सुख रट सु भ्रट रांम।
'किसन' किव समर पल यक न कर,
गहर सुण घर विरद भज सुख धांम॥ १२२

छद रस उल्लाला

पनरै तेरैह मत्त पय, छंद उल्लाल पिछांणजै।
रघुनाथ सुजस सौ छंद रच, बीदग मुख वाखांणजै॥ १२३

रस उल्लारा भेद

दहा

रस उल्लाल तिथ तेर मत, छवीस सम पद स्यांम।
स्यांमक रस दूहा सहित, मुण तै छप्पय नांम॥ १२४
उलटौ रस उलाल उण, आख वरंग उलाल।
दाख त्रिदस फिर पंच दस, तुक बिहुं वै पड़ताळ॥ १२५
पनर पनर मत दोय पय, कांम उलाल कहंत।
यण विध छंद उलालरा, भेद पांच भाखंत॥ १२६

अथ माहा छद लछण *

प्रथम त्रीये मत बार पढ़, अख पद बियै अठार।
चौथै पनरह मात रच, यम गाथा उच्चार॥ १२७
सात चतुर कळ अंत गुरु, जगण छठे थळ जोय।
उत्तर दळ छट्ठे सुथळ, दुज कै यक लघु होय॥ १२८

---

१२३. बीदग–(स० विदग्ध) पंडित, कवि।
१२४ तिथ–पन्द्रह।
१२५ त्रिदस–तेरह।
नोट—ग्रंथकर्त्ताने निम्नलिखित रस उल्लालाके पांच भेदोंके नाम दोहोंमे वतलाये है, उनके उदाहरण नही दिये। १ रस उल्लाला, २ स्याम उल्लाला, ३ छप्पय उल्लाला, ४ वरग उल्लाला, ५ काम उल्लाला।
* ग्रंथकर्त्ताने महाछंद शीर्षक देकर नीचे गाथा अर्थात् आर्या छन्दोंका विवरण दिया है।

तीस समत पूरब अरध, उत्तर सत्ताईस।
सत्तावन मता सरब, आखव नांम छवीस ॥ १२६

अथ गाथा उदाहरण

गिरिस गिरा गौ गौरी, हर गिर हिम हंस हास सिस हीरा।
सुसरि सेस सुरेसं ए, स्रीरांम क्रत आरख्यं ॥ १३०

अथ गाथा गुण दोस कथन

छंद बेअखरी

ाज आखै किव 'किसन' निरूपण, सुणौ गाहा गुण दोस सुलछण।
ात चतुरकळ अंत गुरु सज्ज, देह छठे थळ जगण तथा दुज ॥१३१
ांधव पूरब अरध एण बिध, यम हिज जांण जगण उत्तरारध।
ाय छठे थळ यक लघु कीजै, दुसट विखम थळ जगण न दीजै ॥१३२
त्त सतावन स्रब गाथा मह, कळातीस पूरबा अरध कह।
ोस सात कळ उतर अरध विच, रेणव अेम छंद गाथौ रच ॥१३३
ाय प्रथम पढ़ हंस गमण पर, कह गत दुवै पाय विध केहर।
ाज गत तीजै पाय गुणीजै, औण चवथ गथ सरप अखीजै ॥१३४
्क जगण जिण मांहे आवै, कुळवंती सौ गाहा कहावै।
ा जगण परकीया बखांणौ, जगण घणा तिण गनका जांणौ ॥१३५
ागण विनां सौ रांड गणीजै, किणी मांझ सौ गाहा न कीजै।

---

१२६ आखव—कह। छवीस—छव्वीस।
१३१ निरूपण—निर्णय। थळ—स्थान। दुज—चार मात्रा।
१३२. एण—इस। यम—ऐसे। हिज—ही। यक—एक।
१३३. मत्त—मात्रा। मह—मे। रेणव—कवि। गाथौ—गाथा।
१३४. पाय—चरण। विध—विधि। औण—चरण। चवथ—चतुर्थ।
१३५. माहे—मे। गाह—गाथा, गाहा।

नोट—गाहा छदमे जगण। ऽ। गण आना अनिवार्य माना गया है। जिस गाथा छदमे एक जगण होता है उस गाहा छदको कुलवती गाथा कहते हैं। जिस गाथा छदमे दो जगण हो उसको परकीया गाथा कहते हैं। जिस गाथा छदमे जगण अधिक आ जाते हैं उसे गणिका गाथा कहते है। जिस गाथा छदमे जगण न हो उसे विधवा गाथा कहेंगे।

विप्री तेरह लघुव दीजै, लघु यक्कवीस खित्रणी लीजै ॥१३६
सतावीस लघु वैसी सोई, है लघु अधिक सुद्रणी होई।
बिण अनुसार अंध का वाचत, सुज अनुसार एक कांणी सत ॥१३७
व्यंदु दोय सुनयणा बिसेखौ, बहु अनुसार मनहरा बेखौ।
विण सकार पदमणी विसेखत, एक सकार चित्रणी ओपत ॥१३८
च्यार सकार हसतणी चावी, बहु सकार संखणी बतावी।
गण बोह करण जिका बाळा गण, मुगधा करतळ घणा तिका मुण ॥१३९
भगण बहुत सौ प्रौढ़ा भंणजै, गण बोह विप्र वरधका गिणजै।

---

१३६. राड–विधवा। माझ–(मध्य) मे। जिस गाथा छदमे १३ लघु वर्ण होते हैं उसे विप्र कहते हैं। २१ लघु वर्ण जिम गाथामे आ जाते हैं उसे क्षत्रिया सज्ञा दी गई है। इसी प्रकार जिस गाथा छदमे २७ लघु वर्ण आ जाँय उसको वैश्य सज्ञा दी गई है और जिस गाथा छदमे २७ से भी अधिक लघु वर्ण आ जाते हैं उसकी शुद्रा सज्ञा मानी जाती है।

१३७ गाथा छदमे अनुस्वार आना जरूरी माना गया है। जिस गाथा छदमे अनुस्वार न हो उसकी सज्ञा अध मानी गई है। जिस गाथा छदमे एक ही अनुस्वार होता है उसे एकाक्षी कहते हैं। इसी प्रकार जिम गाथा छदमे दो अनुस्वार आते है उसको सुनयणा कहते है और जिसमे अनुस्वारो की वाहुल्यता होती है उसे मनोहरा गाथा कहते हैं।

१३८ जिस प्रकार गाथा छदमे अनुस्वार लेना ठीक माना गया है ठीक उसके विपरीत सकार अक्षरका न प्रयोग करना ही मुदर गिना जाता है। जिस गाथा छदमे सकार नही होता है उसकी सज्ञा पद्मिनी मानी गई है। जिसमे एक भी सकार आ जाय उसे चित्रणी, जिसमे चार सकार आ जाय उसे हस्तिनी तथा सकार-वाहुल्या गाथाको शखणी कहते हैं।

१३९ गण–गाथा छदमे चार मात्राके न।मको गण कहते हैं। ऐसे चतुष्कलात्मक सात गण और एक गुरुके विन्यामसे गाथा छदका पूर्वार्द्ध वनता है। वे चतुष्कलात्मक पाच गण निम्न प्रकारके होते है—

प्रथम गण— (SS) चार मात्राका। इमका दूमरा नाम कर्ण भी है।
द्वितीय गण—(।।S) चार मात्रा। इसका दूसरा नाम करतळ या करताळ भी है।
तृतीय गण—(।S।) चार मात्रा। इमका दूसरा नाम पयहर, पयोहर, पयोधर भी है।
चतुर्थ गण—(S।।) चार मात्रा। इसका दसरा नाम वसु, पय भी है।

जिस गाथामे दो दीर्घ मात्राका करण (कर्ण) गण वहुत आता हो उसे वाला गाथा कहते हैं तथा जिस गाथामे करतळ या करताळका [।।S प्रथम दो ह्रस्व मात्रा तथा एक दीर्घ मात्रा कुल चार मात्राके समूहका] प्रयोग वहुत हो उसे मुग्धा कहते है। जिस गाथा छदमे भगणका [प्रथम दीर्घ फिर दो ह्रस्वके चार मात्राके समूहका] प्रयोग वहुत हो उसे प्रौढा कहा गया है। ठीक इसी प्रकार जिम गाथा छदमे विप्रका [दुज=द्विज, चार मात्राके ही समूहका] प्रयोग वहुत हो उमे वरधका [वृद्धा] गाथा कहा जाता है।

कका दोय मझ गौरी कहीयै, चंपा अंगीक केहि कच हीयै ॥१४०

भीना अंगी-तीन कके भण, तव बौह ककां नांम काळी तण।
आंमी वसत्र सेत तन भासत, वसन लाल खित्रणी सुवासत ॥१४१

पीत दुकूळ वैसणी पहरण, गाह सुद्रणी स्यांम वसन गण।
गौरे वरण विप्रणी गाहा, चंपक वरण खित्रणी चाहा ॥१४२

भीनै रंग वैसणी सुभायक, लख सुद्रणी स्यांम रंग लायक।
मुगता भूखण विप्री मोहत, सुज खित्रिणि हिम भूखण सोहत ॥१४३

रूपा भरण वैसणी राजत, सुद्रणि पीतळ भूखण साजत।
ऊजळ तिलक विप्रणी ओपत, तिलक सुद्रणी लाल ओपत ॥१४४

पीळौ तिलक वैसणी परगट, रुच सुद्रणी स्यांम टीलौ रट।
गाहा तणौ छंद कुळ गायौ, वेद पिता कवि जणां वतायौ ॥१४५

सरस भाख माता सुरसत्ती, उप राजक ब्रहमांण उकती।
स्रवण नखित्र मझ जनम तास सुण, कहियौ सरब गाह चौकारण।
गाथा नांम छवीस गिणावै, ग्रंथ अनेक वडा कवि गावै ॥१४६

---

१४०. जिस गाथा छदमे दो 'क' होते हैं उसकी गौरी सज्ञा होती है। जिसमे एक ही 'क' हो उसकी सज्ञा चपा वर्ण मानी गई है। जिसमे तीन 'क' होते हैं उसका वर्ण (रग) श्यामता लिए हुए गौर माना गया है और जिसमे 'क' की वाहुल्यता होती है उसकी काली सज्ञा मानी जाती है।

१४१ सेत–स्वेत। खित्रणी–क्षत्रिया।

१४२. पीत–पीला। दुकूळ–वस्त्र। वैसणी–वैश्य (स्त्री)। सुद्रणी–शुद्रा। वसन–वस्त्र।

१४३ विप्री–विप्रा। खित्रिणि–क्षत्रिया। हिम–सोना।

१४४ वैसणी–वैश्य (स्त्री)। राजत–शोभा देती है। विप्रणी–ब्राह्मणी। ओपत–शोभा देती है।

१४५ टीलौ–तिलक।

१४६. भाख–भाषा। उकती–उक्ति। नखित्र–नक्षत्र। मझ–(मध्य) मे। तास–उस।

अथ गाथा छंद छब्बीस नाम कथन

कवित छप्पै

लच्छी रिद्धी बुद्धी, लज्जा विद्या खंम्या ।
लहदेवी गौरी धात्री, कविस चूरणा छाया ॥
कह कांती मह माया, ईस कीरती सिद्धी ।
मांणणि रांमा गाहेणि, वसंत सोभा हरणी ॥
सुण चक्कवी, सारसी, कुररी चवी, सिंघी हंसी साखिए ।
छावीस नांम गाथा छजै, भल राघव जस भाखिए ॥ १४७

अथ लछी नाम गाथा लछण

सतावीस गुरु त्रय लघू, लछी आखर तीस ।
यक गुरु घट बे लघु वधै, सौ सौ नांम कवीस ॥ १४८

लछी गाथा उदाहरण

अख्यर ३० गुरु २७ लघु ३

तौ सारीखौ तं ही, जै जै स्री रांम जीपणा जंगां ।
सीता वाळा स्वांमी, भूपाळां मौड़ हूं भांमी ॥ १४९

गाथा नाम रिद्धी

अख्यर ३० गुरु २६ लघु ४

रै भौका स्रीरांमं, तूं सातै ताळ वेधण तीरं ।
थूरै दैतां थौका, दीनांचा नाथ जगदाता ॥ १५०

---

१४७ चवी–कही । छजै–शोभा देते हैं ।

१४८ त्रय–तीन । यक–एक ।

१४९ तौ–तेरे । सारीखौ–सदृश, समान । जीपणा–जीतने वाला । जगा–युद्धो । मौड–अवतश । हू–मैं । भाभी–वलैया लेता हूँ, न्यौछावर होता हूँ ।

१५० भौका–धन्य-धन्य । ताळ–ताड, वृक्ष । थूरै–नाश करता है । दैता–दैत्यो । थौका–समूह ।

नोट—गाथाकी सख्याका छप्पय मूल प्रतिके अनुसार ही है किन्तु ठीक प्रतीत नही होता ।

गाथाओ के २६ नाम—लच्छी, रिद्धी, बुद्धी, लज्जा, विद्या,खम्या, देवी, गौरी, धात्री, चूरणा, छाया, काती, महामाया, कीरती, सिद्धी, माणणि, रामा, गाहेणि, वसत, सोभा, हरणी, चक्कवी, सारसी, कुररी, सिंही, हसी ।

गाथा नाम बुद्धी

अख्यर ३२ गुरु २५ लघु ७

जीहा राघौ जंपै, मोटौ छै भाग जेणरौ भूमं।
तोटौ ना'वै त्यांरै, केसौ पय सेव अधिकारी ॥ १५१

गाथा नाम लज्जा

अख्यर ३३ गुरु २४ लघु ९

कां कहणौ कौसल्या, मोटौ तैं कीध पुन्य श्रै भ्रममं।
जै कूंखै खळ जेता, आखै जग रांम औतारं ॥ १५२

गाथा नाम विद्या

अख्यर ३४ गुरु २३ लघु ११

वेदां भेदां वेखौ, पेखौ दह आठ हेर पौरांणं।
राघौ नांम सरीखं, नह कौ नर देव नागिंद्रं ॥ १५३

गाथा नाम खम्या

अख्यर ३५ गुरु २२ लघु १३

है कांनै मौताहळ, कर पूंची कंठमाळ पै संकळ।
राघौ नांम विहूंणा, अनखांणौ ढोर आदम्मी ॥ १५४

गाथा नाम देवी

अख्यर ३६ गुरु २१ लघु १५

सुंदर स्यांम सरीरं, बाधौ कट रांम पीत पीतंबर।
काळै वादळसूं कै, वीटांणी वीज वरसाळै ॥ १५५

---

१५१ जीहा–जिह्वा। जपै–जपता है। भूम–भूमि। तोटौ–कमी। त्यांरै–उनके। केसौ–केशव, विष्णु। पय–चरण।

१५२ मोटौ–महान। कीध–किया। पुन्य–पुण्य। भ्रमम–ब्रह्म, परब्रह्म। जै–जिस। कूखै–कुक्षि। खळ–असुर, राक्षस। जेता–जीतने वाला। औतार–अवतार।

१५३ वेखौ–देखिये, देखो। पेखौ–देखो। दह–दस। हेर–देख कर। पौराण–पुराण। सरीख–समान सदृश। नागिंद्र–(नागेन्द्र) नाग।

१५४ कानै–कानोमे। मौताहळ–मोती। कर–हाथ। पूंची–हाथकी कलाईका आभूषण विशेष। विहूण–विना, रहित। अनखाणौ–अन्न खाने वाला। ढोर–पशु।

१५५ कट–कटि, कमर। पीत–पीला। वीटाणी–वेष्टित हुई। वीज–विजली। वरसाळै–वर्षा ऋतुमे।

गाथा नाम गौरी

अख्यर ३७ गुरु २० लघु १७

सज्झी न राघव सेवं, सेवा सौ जाय घरोघर साझै ।
निज सिर हरी न ना'यौ, उण ना'यौ सीस जग अग्गां ॥ १५६

गाथा नाम धात्री

अख्यर ३८ गुरु १९ लघु १९

पढ़ सीतावर प्रांणी, जगचा तज आंन आळ जंजाळं ।
उंबर अंजुळि आब, नहचै आ जांण थिर नांही ॥ १५७

गाथा नाम चूरणा

अख्यर ३९ गुरु १८ लघु २१

रिख सिख गंगा रांम, सेवै पद कंज मंजु सीतावर ।
सौ राघौ पै 'किसना', चींतव निस दिवस उर चंगा ॥ १५८

गाथा नाम छाया

अख्यर ४० गुरु १७ लघु २३

रट रट स्री रघुरांम, दस-सिर जे तार तारके दीनं ।
करुण ऊदध कर कंजं, सीतावर संत साधारं ॥ १५९

गाथा नाम काती

अख्यर ४१ गुरु १६ लघु २५

अजामेळ यक वारं, आखे अणजांण नारायण ।
जांण आंण जम हरिजन, जुड़ियौ नह मग्गा घर जेणं ॥ १६०

---

१५६ सज्झी—हुई । सेव—सेना । सौ—वह । ना'यौ—नमाया । उण—उस । अग्गा—अगाडी ।

१५७ आंन—अन्य । आळ—असत्य, झूठ । जंजाळ—प्रपंच । उंबर—उम्र, आयु । आब—पानी । नहचै—निश्चय । थिर—स्थिर ।

१५८ कंज—कमल । मंजु—सुंदर । चींतव—स्मरण कर । चंगा—श्रेष्ठ, उत्तम, स्वस्थ ।

१६० यक—एक । वार—समय । आखे—कहा । अणजाण—अज्ञानावस्था । जुड़ियौ—प्राप्त हुआ । मग्गा—मार्ग । जेणं—जिस ।

गाथा नाम महामाया

अख्यर ४२ गुरु १५ लघु २७

आळस न कर अजांणां, निज मन कर हरख भजन रघुनाथं ।
सुपन रूप संसारं, विण संतां देहनां वारं ॥१६१

गाथा नाम कीरती

अख्यर ४३ गुरु १४ लघु २९

कमळनायण कमळाकर, कमळा प्रांणेस कमळकर केसौ ।
तन कमळ भातेसं, जे मुख च्यार कमळभू जंपै ॥१६२

गाथा नाम सिद्धी

अख्यर ४४ गुरु १३ लघु ३१

रिखय मख कर रखवाळं, तारी रिख घरण चरण रज हूंता ।
राख जनक पण रघुबर, भागौ कोदंड भूतेसं ॥१६३

गाथा नाम माणणी

अख्यर ४५ गुरु १२ लघु ३३

जिण दिन रघुबर जंपै, सुकियाअरथ दिवस सोय नर संभळ ।
दखै न राघव जिण दिन, जांणे सोय आळजंजाळ ॥१६४

गाथा नाम रामा

अख्यर ४६ गुरु ११ लघु ३५

निज कुळ कमळ दिनेसं, चवि सुर गण नखत जांण तिण चंदं ।
मुनि बन रखण म्रगाधिपं, रघुबर अवतं(स) राजेसं ॥१६५

---

१६१ अजांण–अज्ञान । सुपन–स्वप्न ।

१६२. कमळाकर–विष्णु । कमळा–लक्ष्मी । प्राणेस–पति । कमळभू–ब्रह्मा ।

१६३ रिखय–ऋषि । मख–यज्ञ । रखवाळ–रक्षा । घरण–स्त्री, पत्नी । हूता–से । पण–प्रण । कोदड–धनुष । भूतेस–महादेव ।

१६४. जपै–जपता है, स्मरण करता है । सुकियाअरथ–सफल । दिवस–दिन । सोय–वह । सभळ–समझ । दखै–कहता है । आळजजाळ–व्यर्थ ।

१६५. दिनेस–सूर्य । चवि–कह कर । नखत–नक्षत्र । म्रगाधिप–मृगेन्द्र सिंह । अवत(स)–शिरोमणि । राजेस–सम्राट ।

गाथा नाम गाहेणी
अख्यर ४७ गुरु १० लघु ३७

असमझ समझ अखीजै, तौ पण हरि नांम अवस जन तारत ।
जिम परसत अजांणं, दगधत तन समथ्थ दावानळं ॥१६६

गाथा नाम वसत
अख्यर ४८ गुरु ९ लघु ३९

रघुबर सौ प्रभु तज कर औयण जे अवर अमर अभियासत ।
त्रखित सुरसुरी तीरह, खिती कूंप खणात नर मूरख ॥१६७

गाथा नाम सोभा
अख्यर ४९ गुरु ८ लघु ४१

अघ हर सुखकर अमळं, रट रट जस अघट भाग धन रघुबर ।
गावण जिण फळ गहरं, बगै बलमी करिख बिसुधा ॥१६८

गाथा नाम हरिणी
अख्यर ५० गुरु ७ लघु ४३

नित जप जप जगनायक, वायक सत कहण सुजस कमळावर ।
सुकरत करण सदीवत, सोहत अै करत सत पुरसं ॥१६९

गाथा नाम चवकवी
अख्यर ५१ गुरु ६ लघु ४५

अह मत तज भज ईसर, करणाकर सधर सु तन दसरथकौ ।
यक छिन तन ऊधारण, रत कर चित्त चरण रघुबररे ॥१७०

---

१६६. **असमझ**–अज्ञ नावस्था । **समझ**–ज्ञान, बुद्धि । **अखीजै**–कहा जाय । **पण**–भी । **अवस**–अवश्य । **जन**–भक्त । **तारत**–उद्धार करता है । **परसत**–स्पर्श करते है । **अजाण**–भूलसे । **दगधत**–जलाता है । **समथ्थ**–समर्थ । **दावानळ**–दावाग्नि ।

१६७ **सौ**–जैसा । **प्रभु**–प्रभु, ईश्वर । **औयण**–चरण । **अभियासत**–अभ्यास करते हैं, स्मरण करते हैं । **त्रखित**–त्रषित, प्यासा । **सुरसुरी**–गगानदी । **तीरह**–तट । **खिती**–पृथ्वी । **खणत**–खोदता है ।

१६८. **अमळ**–पवित्र । **गहर**–गभीर । **बलमी**–वलमीकि, वावी । **करिख**–कर्षण कर । **बिसुधा**–पृथ्वी ।

१६९. **कमळावर**–कमलापति, विष्णु । **सुकरत**–श्रेष्ठ कार्य, सुकृत्य । **सदीवत**–सदैव, नित्य ।

१७०. **अह**–अभिमान, गर्व । **मत**–बुद्धि । **करणाकर**–करुणाकर, दयालु । **यक**–एक । **छिन**–क्षण ।

गाथा नाम सारसी

अख्यर ५२ गुरु ५ लघु ४७

जन लज रखण जरूरह,
दसरथ सुत सकळ सुजन सुखदायक।
सिरदस घायक समहर,
सत वायक रांम सरसत सुभ ॥१७१

गाथा नांम कुररी

अख्यर ५३ गुरु ४ लघु ४९

भुज-बळ खळ-दळ भंजण,
निज जन सुख करण सरण राखण नित।
कहत वरण कथ जग कर,
आपण दत लंक चित अपहड़ ॥ १७२

गाथा नाम सिंघी

अख्यर ५४ गुरु ३ लघु ५१

असन वसन जळ अहनिस,
मत कर मन फिकर समर महमाहण।
पोखण भरण दिवस प्रत,
निज जन फिकर चित्त रघुनायक ॥ १७३

गाथा नाम हसी

अख्यर ५५ गुरु २ लघु ५३

जगत जनक हरि जय जय,
भय जांमण मरण हरण कर निरभय।

---

१७१. जरूरह–अवश्य। सिरदस–रावण। घायक–सहारक, नासक। समहर–युद्ध। वायक–वाक्य, शब्द।

१७२ आपण–देने वाला। दत–दान। लक–लका। अपहड़–उदार।

१७३ असन–भोजन। वसन–वस्त्र। अहनिस–रात दिन। महमाहण–विष्णु, ईश्वर। दिवस–दिन। प्रत–प्रति।

१७४. जांमण–जन्म। हरण–मिटाने वाला।

'किसन' सुकव सिर धर कर,
रखण चरण सरण रघुनायक ॥ १७४

दूहौ

विध यण गाथा वरणिया, सुजस रांम कथ सार।
विध कोई चूकौ वरणतां, सत किव पढ़ौ सुधार ॥ १७५

अथ गाहा १ गाहू २ विगाहा ३ उगाहा ४ गाहेणी ५ सीहणो ६ खधाणा ७।
विचार लछण वरणण।

गाहा विगाहा लछण

छद बेअख्यरी

गाहा१ मात्र सतावन गावै, गाहौ२ उलट विगाह गिणावै।
चौपन मत गाहू३ उचरीजै, उगाहौ४ मत्त साठ अखीजै ॥१७६
गाहेणी५ बासठ मत गावत, कियां उलट सीहणी६ कहावत।
चौसठ मत खंधांण७ चवीजै, कळ विभाग यां पद-प्रत कीजै ॥१७७

गाथारै पद-प्रत मात्रा वरणण

आद बार मत दुवै अठारह, बार त्रतीय चव पनर विचारह।

विगाह पद-प्रत मात्रा

पद धुर बार दुवै पनरह पुण, तीयै बार अठार चवथ तिण ॥१७८

गाहू पद-प्रत मात्रा

प्रथम बार मत्त पनर दुवै पद, वळ तिय बार पनर चौथै वद।

उगाहा पद-प्रत मात्रा प्रमाण

पहला बार अठार दुवै पढ़, तीजै बार अट्ठार चवथ द्रढ़ ॥१७९

---

१७५ विध—विधि। यण—इस। किव—कवि।
१७६ मात्र—मात्रा। उचरीजै—कहिए। अखीजै—कहिए।
१७७ मत—मात्रा। कहावत—कहा जाता है। चवीजै—कहिए। पदप्रत—प्रति पद, प्रति चरण।
१७८ पद—चरण। धुर—प्रथम। बार—बारह। दुवै—दूसरे। पुण—कह। तीयै—तृतीय। चवथ—चतुर्थ।
१७९ वळ—फिर। तिय—तृतीय।

गाहेणी पद-प्रत मात्रा

आद बार अट्ठार दुतीय अख, सुज तिय बार बीस चोथै सख।

सीहणी पद-प्रत मात्रा

बाद आद दूसरै वीस बळ, कह तिय बार अठार चवथ कळ ॥१८०

खधाणा पद-प्रत मात्रा

मात्र बतीस च्यार तुक मांही, दोय गुरु पद अंत दियांही।
निज किव किसन कियां यम निरणौ, बड कवि सीय रांम जस वरणौ ॥१८१

अथ गाथा अथवा गाहा उदाहरण

महकुळ धिन पित मातं, सौ घर न धन्य सुरग पित्रेसुर।
सौ धन भवन सकाजं, बासै जै दास रघुबरकौ ॥१८२

अथ विगाहौ उदाहरण

करणी धन कौसळ्या, उदरे जिण रांम औतारं।
भण दसरथ बडभागं, जिण घर सुत रांमचंद्र जग जेता ॥१८३

अथ गाहू उदाहरण

सुखदाता सरणायां, निज संतां जानुकी नायक।
दस सिर भंज दुबाहं, राहं जग क्रीत राजेस्वर ॥१८४

अथ उगाहौ

तूं जौ चाहै तरबौ, जप मत मन आंन आळ जंजाळं।
नित जप राघव नांमं, तिण पाथर नाव उदध कपि तारे ॥१८५

---

१८० आद—आदि, प्रथम। दुतीय—द्वितीय। अख—कह। सुज—फिर। तिय—तृतीय। कळ—मात्रा।

१८१. मात्र—मात्रा। माही— मे, अदर। यम—इस प्रकार।

१८२ धिन—धन्य। पित—पिता। मात—माता। सुरग—स्वर्ग। धन—धन्य।

१८४ सरणाया—शरणमे आया हुआ। दुवाह—वीर।

१८५ तरबौ—तैरना, उद्धार करना। आन—अन्य। आळ जजाळं—व्यर्थका प्रपच। पाथर—पत्थर। उदध—उदधि, सागर। कपि—वदर।

अथ गाहिणी

तन घरणस्यांम तराजं, तड़िता छिब भात पीत पीतंबर।
सुकर बांरण सारंगं, सीता अंग बांम रांम भज नूप सिध ॥१८६

अथ सीहणी

आखर बखत उचारै, जीह्वा धन रांम नांम रट झट जौ।
पोखरणतौ भर पायौ, भोजन अढार भांतचौ भरणौ ॥१८७

अथ खधाणा

दीन करण प्रतपाळ दासरथ, भारत खळदळ सबळ बिभंजे।
धनख धरण तन बरण नीरधर, रघुबर जनक सुता मन रंजे ॥१८८
संूदर रूप अनूप स्यांमता, अंजण नयण मुनी रिख अंजे।
तीनकाळदरसी व्है ततपुर, गौरव कांम क्रोध अध गंजै ॥१८९

अथ एकसू लगाय छवीस ताई गाथा काढण विध

दूहौ

गाथारा लघु अखिर गिणि, जां मझ एक घटाय।
आध कियांसूं ऊबरै, सोई नांम सुभाय ॥ १९०

अरथ

हरेक गाथारा लघु आखिर गिणणा ज्यामेसू पेली तौ एक अखिर घटाय देणौ, पछै बाकी रहै ज्यानै दोय भागमासू एक भाग परौ काढचा बाकी रहै अखिर जतरमौ गाहौ छै, यू जाणणौ।

---

१८६. घण–घन, वादल। तराज–समान। तडिता–बिजली। छिब–काति, शोभा। भात–शोभा। सुकर–हाथ। बाण–तीर। सारग–धनुप।

१८७ आखर–आखिर, अतिम। बखत–समय। जीह्वा–जिव्हा, जीभ। पोखणतौ–पोपण करता हुआ।

१८८ दीन–गरीब। प्रतपाळ–पालन-पोपण। विभजे–नाश किये। नीरधर–बादल। रजे–प्रसन्न किया।

१८९. तीनकाळदरसी–त्रिकालदर्शी।

१९० अखिर–अक्षर। जा–जिन। मझ–मध्य। आध–आधा। सोई–वही। ज्यां–जिन।

अथ गद्य छंद लछण विध

दूहौ

गद्य पद्य बे जगतमें, जांण छंदकी जात।
सम पद पद्य सराहजै, छूटक गद्य छ जात ॥ १६१

दवावैत फिर बात दख, जुगत वचनका जांण।
औछ अधक तुक असम अे, बीदग गद्य बखांण ॥ १६२

अथ दवावैत

माहाराजा दसरथके घर रांमचंद्र जनम लिया।
जिस दिन सै आसरू नै ऊदेग देवतं नै हरख किया।
विसवामित्र मख-रख्याके काज अवधेसतैं जाच लिये।
माहाराजा दसरथ उसी बखत तईनाथ किये।
सात रोज निराहार एकासण सनद्ध रहै।
रिखराजका जिगकी रछ्याकाज रजवाटका बिरद भुजदंडं गहे।
सुबाहूकू बांणसे छेद जमराजके भेट पुंहुंचाया।
मारीचके तांई वाय बांणसे मार उडाया।
रज पायसे तारी गौतमकी घरणी।
खडपरसका कोदड खड कर जांनुकी परणी।

---

१६१ **सम पद**–यहा छद-शास्त्रानुसार छदोके नियममे बधे हुए शब्द व वाक्य। **सराहजै**–सराहना कीजिए। **छूटक**–जिन पदोंमे छद-शास्त्रानुसार नियम न हो, गद्य।

१६२. **औछ**–कम। **अधक**–अधिक। **बीदग**–विदग्ध, पडित, कवि।

१६३. **आसरू**–असुर, राक्षस। **ऊदेग**–उद्वेग, चिंता। **मख-रख्या**–यज्ञकी रक्षा। **जाच लिये**–माग लिये। **तईनाथ**–तैनात, किसी काम पर लगाया या नियुक्त किया हुआ'। **निराहार**–विना भोजन। **एकासण**–एक ही आसन या बैठक। **सनद्ध**–(सन्नद्ध) कटिबद्ध। **जिग**–यज्ञ। **रछ्या**–रक्षा। **रजवाट**–क्षत्रियत्व, वीरता। **बिरद**–विरुद। **गहे**–धारण किये। **ताई**–लिये। **रज**–धूलि। **पाय**–चरण। **घरणी**–स्त्री, पत्नी। **खडपरसका**–खडपरशु महादेवका। **कोदड**–धनुष।

अवधकू आते दुजराजकं सुद्ध भाव किया।
जननीसे सलांम कर सपूतीका ब्रिरद लिया।
ऐसा स्री रांमचंद्र सपूतंका सिरमोड़।
अरोड़ का रोड़।
गौ बिप्रंका पाळ।
अरेसका काळ।
सरणायं-साधार।
हाथका उदार, दिलका दरियाव।
रजवाटकी नाव।
भूपंका भूप साजोतका रूप।
काछवाचका सबूत।
माहाराज दसरथका सपूत।
भरथ लछमण सत्रुघणका बंधु।
करुणाका सिंधु। १९३

वचनका

हांजी ऐसा माहाराजा रांमचद्र असरण-सरण।
अनाथ नाथ बिरदकू धारै।
सौ ग्राहकू मार न्याय ही गजराजकू तारै।
और भी नरसिंघ होय प्रवाड़ा जगजाहर किया।
हरणाकुसकू मार प्रहलादकू उबार लिया।
प्रळैका दिन जांण सत देस उबारणकं मच्छ देह धारी।

---

१९३ जननी–माता। सलाम–प्रणाम। सपूती–सुपुत्र होनेका भाव। अरोड–वह जो किसीके बधन या रोकमे न रह सके। रोड–रोक, बधन। अरेसू–अरीश, शत्रु। काळ–मृत्यु। सरणायू-साधार–शरणमे आने वालेकी रक्षा करने वाला। साजोतका रूप–ज्योति-स्वरूप। काछवाचका सबूत–जितेन्द्रिय नियतात्मा और सत्य-सध। सिंधु– समुद्र।

१९४ असरण-सरण–जिसे कोई शरण न देने वाला हो उसे भी शरण देने वाला। प्रवाडा–महान् कार्य, चमत्कारपूर्ण कृत्य। हरणाकुस–हिरण्यकशिपु। प्रळै–प्रलय, नाश। मच्छ–मत्स्यावतार।

सतब्रतकी भगती जगजाहर करी।
ऐसा स्रीरांमचंद्र करणानिध।
असरण-सरण न्याय ही वाजै।
जिसके तांई जेता बिरद दीजै जेता ही छाजै॥ १९४

वारता

रांमचंद्र जिसा सिध रजपूत कोई वेळापुळ होवै छै।
ज्यांके प्रताप देव नर नाग खटब्रन सुख नींद सोवै छै।
राजनीतका निधांन सींह बकरी एक घाटै नीर पावै छै।
पछीकी पर बागां बाज दहसत खावै छै।
तपके प्रभाव पांणी पर सिला तरै छै।
भ्रगुपत सा त्रबंक ज्यांका बळ काढ़ सणांकसुधा करै छै।
बाळ दहकधसा अरोड़ान् रोड़ जमींदोज कीजै छै।
सुग्रीव भभीखण जिसा निरपखांनं् केकधा लंक दीजै छै।
जांका भाग धन्य जे रांमगुण गावै छै।
जांमण मरण भय मेट अभैपद पावै छै॥ १९५

---

१९४ करणानिध–करुणानिधि, दयासागर। ताई–लिए, निमित्त। जेता–जितने। छाजै–शोभा देते हैं, शोभित होते हैं।

१९५. जिसा–जैसा। सिध–सिद्ध, वीर। वेळापुळ–समय, कभी। खटब्रन–षडवर्ण, ब्राह्मणादि छ जातिएं विशेष। निधांन–खजाना। पर–पख। बाज–शिकारी पक्षी विशेष। दहसत–भय, डर। सिला–पत्थर। भ्रगुपत–परशुराम। त्रबक–विकट, बाकुरा अथवा त्र्यवक, महादेव। बळ–गर्व। सणकासुधा–बिलकुल सीधा। बाळ–वालि बदर। दहकध–दशकधर, रावण। अरोडा–जबरदस्त। जमींदोज–जो गिर कर जमीनके बराबर हो गया हो, जमीनके अदर। भभीखण–विभीषण। निरपखा–जिसका कोई पक्ष या सहायक न हो। केकधा–(स० किष्किधा) मैसूरके आसपासके देशका प्राचीन नाम। जाका–जिनके। जामण–जन्म। अभैपद–मोक्ष।

दूहौ

असम चरण मात्रासु यम, कहीया छंद 'किसन'।
राघव जस छंदां रहस, बुध सारीख · न ॥ १९६

इति मात्रा असम चरण छद सपूरण ।
अथ मात्रा दडक छद वरणण

दूहौ

भगवत गीताऊ भणै, बीता अघ सरबेण।
सीता नायक सभरै, जन भीता नह जेण ॥ १९७

सोरठौ

पेट हेक कज पात, मेट सोच सांसौ म कर।
रे संभर दिन-रात, नांम विसभर नारियण ॥ १९८

अथ मात्रा दडक छद लछण

दूहौ

बे छंदां मिळ छंद व्है, मात्रा दडक सोय।
छप्पें कुंडळियौ कवित्त, फिर कूंडळिया होय ॥ १९९

अथ छप्पै लछण

दूहौ

कायब उल्लालौ मिळै, छप्पै तिण थळ होय।
ग्यार तेर मत च्यार पय, पनर तेर पय दोय ॥ २००

छप्पै उदाहरण

कवित छप्पै

पंखी मुनि मन पंख, तीर भव-सिंधु तरायक।
मुकत त्रिया सुख मूळ, स्रवण ताटंक सुभायक॥

---

१९६ यम—ऐसे। रहस—रहस्य, भेद।
१९७ भणै—कहते है। बीता—व्यतीत हो गये। अघ—पाप। सरवेण—सब, समस्त। सभरै—स्मरण कर। भीता—भयभीत। जेण—जिससे।
१९८. पेट हेक कज—एक पेटके लिए। पात—पात्र, कवि। सोच—चिंता। सासौ—सशय, शक। सभर—स्मरण कर। विसभर—विश्वभर, ईश्वर। नारियण—नारायण।
१९९. सोय—वह।
२०० कायव—काव्य, काव्यछद। थळ—स्थान। मत—मात्रा। पय—चरण।
२०१ पखी—पक्षी। तीर—तट,किनारा। भव-सिंधु—ससार रूपी समुद्र। तरायक—तैरने वाला। मुकत—मुक्ति। स्रवण—कान। ताटक—कर्ण-भूषण। सुभायक—सुन्दर।

अघ कळ घोर अंधार, बिंब रवि चंद्र बिकासण।
प्रगट धरम द्रुम उभय यम स्रुति नयण सुभासण ॥
बद 'किसन' रकार मकार बिंदु, सत रथ चक्र समाथका।
भव जन तमांम कारक अभय, नांम अंक रघुनाथका ॥ २०१

अजय नाम छप्पै लछण

दूहौ

बिध यकहत्तर छपय बद, सतर गुरु लघु बार।
अजय जिकौ गुरु घट बधै, बेलघु नांम निहार ॥ २०२

अजय छप्पै उदाहरण

छप्पय

जै जै भूपां भूप, सदा संतां साधारै।
दीनां दाता देव, मेछ आनेकां मारै ॥
सीता स्वांमी सूर, बीर बागां बांणासां।
लंका जैहा ले'र, दांन देणौ तूं दासां ॥
सेहाई संतां सेवगां, ताई देणा तापरां।
औनाड़ा राघौ भू अखै, पांणां धाड़ा आपरां ॥ २०३

अथ यकहतर छप्पै नाम कथन

छप्पै

अजय १ बिजय २ बळ ३ करण ४,
बीर ५ वैताळ ६ व्रहंजळ ७।
मरकट ८ हरि ९ हर १० ब्रहम ११,
इंद १२ चंदण १३ सुभकर १४ वळ।

२०१. अघ–पाप। कळ–समूह, कलियुग। बिंब–प्रतिबिंब। भव–ससार। कारक–करने वाला।
२०३ साधारै–रक्षा करता है। मेछ–म्लेच्छ, असुर। आनेकां–अनेक। सूर–सूरवीर। बागा–वजने पर, चलने पर। बांणासा–तलवारो। जैहा–जैसा। दासा–भक्तो। सेहाई–सहायक। ताई–आततायी, दुप्ट। ताप–कष्ट। औनाडा–वीर। पाणां–हाथो। धाडा–धन्य-धन्य।

स्त्रांन १५ सिघ १६ सादूळ १७,
कूरस १८ कोकिल १९ खर २० कुंजर २१ ।
मदन २२ मछ २३ तालंकर २४,
सेस २५ सारंग २६ पयोधर २७ ।
कह कुंद २८ कमळ २९ बारण ३० सरभ ३१,
जंगम ३२ जुतिस्ट ३३ बखांण जग ।
दाता ३४ सर ३५ सुसरह ३६ समर ३७ दख,
सारस ३८ सारद ३९ कह सुभग ॥ २०४

फेर नाम
छप्पै

मेर ४० मकर ४१ मद ४२ सिद्ध ४३,
बुद्धि ४४ करतळ ४५ कमळाकर ४६ ।
धवळ ४७ सुमण ४८ फिर मेघ ४९,
कनक ५० क्रस्णह ५१ रंजन ५२ धर ।
ध्रुव ५३ ग्रीखम ५४ गरुड़ह ५५,
गिणा (य) ससि ५६ सूर ५७ सल्य ५८ सख ।
नवरंग ५९ मनहर ६० गगन ६१,
रतन ६२ नर ६३ हीर ६४ भ्रमर ६५ अख ।
सेखर ६६ कुसम ६७ कहि दीप ६८ संख ६९,
बसु ७० सबद ७१ बाखांणीये ।
कवि छपय नांम जसराम कज,
जग यकहतर जांणीये ॥ २०५

१ अजय—अ० ८२ गु० ७० ल० १२ । २ विजय—अ० ८३ गु० ६९ ल० १४ । ३. बल—अ० ८४ गु० ६८ ल० १६ । ४. करण—अ० ८५ गु० ६७ ल० १८ । ५ बीर—अ० ८६ गु० ६६ ल० २० । ६ बैताल—अ० ८७ गु० ६५ ल० २२ । ७ ब्रहजल—अ० ८८ गु० ६४ ल० २४ ।

८ **मरकट**—अ० ८६ गु० ६३ ल० २६ । ६. **हरि**—अ० ६० गु० ६२ ल० २८ । १० **हर**—अ० ६१ गु० ६१ ल० ३० । ११ **ब्रहम**—अ० ६२ गु० ६० ल० ३२ । १२ **इद**—अ० ६३ गु० ५६ ल० ३४ । १३. **चदरा**—अ० ६४ गु० ५८ ल० ३६ । १४ **सुभकर**—अ० ६५ गु० ५७ ल० ३८ । १५ **स्वांन**—अ० ६६ गु० ५६ ल० ४० । १६ **सिंघ**—अ० ६७ गु० ५५ ल० ४२ । १७ **सारदूल**—अ० ६८ गु० ५४ ल० ४४ । १८ **कूरम**—अ० ६६ गु० ५३ ल० ४६ । १६. **कोकिल**—अ० १०० गु० ५२ ल० ४८ । २० **खर**—अ० १०१ गु० ५१ ल० ५० । २१ **कुजर**—अ० १०२ गु० ५० ल० ५२ । २२ **मदन**—अ० १०३ गु० ४६ ल० ५४ । २३ **मछ**—अ० १०४ गु० ४८ ल० ५६ । २४ **तालक**—अ० १०५ गु० ४७ ल० ५८ । २५ **सेस**—अ० १०६ गु० ४६ ल० ६० । २६. **सारग**—अ० १०७ गु० ४५ ल० ६२ । २७ **पयोधर**—अ० १०८ गु० ४४ ल० ६४ । २८. **कुद**—अ० १०६ गु० ४३ ल० ६६ । २६ **कमल**—अ० ११० गु० ४२ ल० ६८ । ३० **बारण**—अ० १११ गु० ४१ ल० ७० । ३१ **सरभ**—अ० ११२ गु० ४० ल० ७२ । ३२ **जगम**—अ० ११३ गु० ३६ ल० ७४ । ३३ **जुतिष्ट**—अ० ११४ गु० ३८ ल० ७६ । ३४ **दाता**—अ० ११५ गु० ३७ ल० ७८ । ३५ **सर**—अ० ११६ गु० ३६ ल० ८० । ३६ **सुसर** (सुस्सू)—अ० ११७ गु० ३५ ल० ८२ । ३७ **समर** (ब्रह्म नाळीक जात)—अ० ११८ गु० ३४ ल० ८४ । ३८ **सारस**—अ० ११६ गु० ३३ ल० ८६ । ३६ **सारद** (ईनै वळता सख कैवै छै)—अ० १२० गु० ३२ ल० ८८ । ४० **मेर**—अ० १२१ गु० ३१ ल० ६० । ४१ **मकर**—अ० १२२ गु० ३० ल० ६२ । ४२ **मद**—अ० १२३ गु० २६ ल० ६४ । ४३. **सिंघ**—अ० १२४ गु० २८ ल० ६६ । ४४ **बुद्धि**—अ० १२५ गु० २७ ल० ६८ । ४५ **करतल** (मुगताग्रह)—अ० १२६ गु० २६ ल० १०० । ४६. **कमलाकर**—अ० १२७ गु० २५ ल० १०२ । ४७. **धवल**—अ० १२८ गु० २४ ल० १०४ । ४८ **सुमरा**—अ० १२६ गु० २३ ल० १०६ । ४६ **मेघ**—अ० १३० गु० २२ ल० १०८ । ५० **कनक** (कमळबध अत नगण सरवत्र)—अ० १३१ गु० २१ ल० ११० । ५१. **क्रष्ण**—अ० १३२ गु० २० ल० ११२ । ५२ **रंजन**—अ० १३३ गु० १६ ल० ११४ । ५३ **ध्रुव**—अ० १३४ गु० १८ ल० ११६ । ५४. **ग्रीखम** (ग्रीष्म)— अ० १३५ गु० १७ ल० ११८ । ५५ **गरुड़** (ई कवितकौ नाम ममवळति विधान कहै छै)—अ० १३६ गु० १६ ल० १२० । ५६ **ससि**—अ० १३७ गु० १५ ल० १२२ । ५७ **सूर**—अ० १३८ गु० १४ ल० १२४ । ५८. **सल्य** (शल्य)—अ० १३६ गु० १३ ल० १२६ । ५६. **नवरग**—

अ० १४० गु० १२ ल० १२८ । ६०. **मनहर** (मनोहर)—अ० १४१ गु० ११ ल० १३० । ६१. **गगन**—अ० १४२ गु० १० ल० १३२ । ६२. **रतन**—अ० १४३ गु० ९ ल० १३४ । ६३. **नर**—अ० १४४ गु० ८ ल० १३६ । ६४. **हीर**—अ० १४५ गु० ७ ल० १३८ । ६५. **भ्रमर**—अ० १४६ गु० ६ ल० १४० । ६६. **सेखर**—अ० १४७ गु० ५ ल० १४२ । ६७. **कुसम** (ईंकौ नाम जातासख कैवै छै)—अ० १४८ गु० ४ ल० १४४ । ६८. **दीप**—अ० १४९ गु० ३ ल० १४६ । ६९. **सख**—अ० १५० गु० २ ल० १४८ । ७०. **वसु**—अ० १५१ गु० १ ल० १५० । ७१. **सब्द**—अ० १५२ गु० ० ल० १५२ ।

अथ छप्पै नाम काढण विध । छप्पैरा लघु आखर व्है ज्यामेसू दम घटाय दोय भाग करणा, एक भाग घटाया बाकी रहै जतरमौ छप्पै छै ।

अथ अजयादिक यकहत्तर छप्पै नाम काढण विध ।

दूहा

गिण छप्पयच्चा बरण लघु, त्यां मज्झे दळ टाळ ।
आधा कीधां ऊबरै, वेडर नांम बताळ ॥ २०६

इति यकहत्तर विध छप्पय अख्यर गुरु लघु प्रमाण नाम कथन संपूरण ।

सुभ भवतु

अथ मात्रा छद, मात्रा उपछद, मात्रा असम चरण, मात्रा दडक छद गुरु लघु काढण विध ।

अथ दूहौ

पूछै अन कवि छंद पढ़ि, गिण जिण मत्त प्रमांण ।
घटै म गुरु कह गुरु घटै, सेख रहै लघु जांण ॥ २०७

अरथ

पैला कवेस्वर दूहौ पढ नै कहै—यणमे गुरु कितरा, लघु कितरा सौ कहौ । जठै दूहारी सरब मात्रा अडताळीस गिणणी, अडताळीसमे घटै जतरा गुरु अखर जाणणा नै गुरु हुवै सौ घटाया बाकी रहे सौ लघु जाणणा । यू सरब मात्रा छद गीत कवितादिक जाणणा ।

---

२०५ ज्यामेसू–जिनमे । जतरमौ–उतना । यकहत्तर–इकहत्तर ।

२०६ वेडर–निर्भय । बताळ– बतला ।

२०७ काढण–निकालने । अन–अन्य । सेख–शेष । पैला–प्रथम । कवेस्वर–कवीश्वर । यण–इस । कितरा–कितने । जतरा–उतने, जितने । यू–इस प्रकार ।

उदाहरण

दूहौ

रे चित व्रत द्रढ़ एम रख, मूरत सांम मझार।
मेल्ह सुरत नट वांसमें, प्रगट वरत व्है पार ॥ २०८

अरथ

इण दूहारा अडतीस अखिर छै, नै दूहौ छंद अठताळीस मात्रारौ व्है छै। अठताळीस माहासू दस अखिर गिया जद अडतीस रह्या।

सौ ईं दूहामे दस गुरु आखिर छै, नै अडतीस मासू दस गुरु आखिर घटाया जद अठाईस रह्या सौ अठाईस आखिर लघु छै, यू समस्त मात्रा छंद जाणणा।

दूहौ

वळ अह-पिंगळ कवितरी, वदी जात बावीस।
तवूं नांम सारा तिकै, वळ नोखा वरणीस ॥ २०९

अथ बावीस छप्पै नाम

कवित छप्पै

वळता १ जाता संख २ कमळबंधह ३ समबळ ४ कह।
लघु ५ ब्रह्मनाळीक ६ छत्र ७ नीसरणीबंधह ८ ॥
नाट ९ चोप १० संकळह ११ अनै मुगताग्रह १२ अक्खव।
कुंडळियौ १३ चौटियौ १४, वेध-हीरा १५ कर-पल्लव १६ ॥

---

२०८ एम—इस प्रकार। मूरत—मूर्ति। साम—श्याम, स्वामी, श्रीरामचद्र भगवान। मझार—मध्य मे। मेल्ह—रख। सुरत—ध्यान। वरतन—वरत्र, चमडेका मोटा रस्सा।

२०९ वळ—फिर। अह-पिंगळ—नागराज पिंगल, शेषनाग। वदी—कही। तवू—कहता हू तिकै—वे

२१० २२ छप्पय कवित्तोके नांम—

१ वळता (वळता-सख), २ जाता सख, ३ कमळबध ४ समवळ (समवळ विधान अथवा समवळ विधानीक), ५ लघुनाळीक, ६ ब्रह्मनाळीक, ७ छत्रबध, ८ नीसरणीबध, ९ नाट, १०. चोप, (मतातरसे चोपई, छप्पै, कवित), ११ सकळ (सकळजात), १२ मुकताग्रह, १३. कुडळियौ, १४ चौटियौ (चौटीबध), १५ वेधहीरा (हीराबेधी), १६ करपल्लव।

एक-लवयरा १७ मज्झ अक्खरौ १८,
विधांनीक १९ हल्लव २० विहद्द ।
ताळूर-ब्यंव २१ अहरेअळग २२,
वीस दोय छप्पय सुवद ॥ २१०

अथ अनुक्रमसे छप्पै नाम

दूहा

वळता १ जाता २ संख लघू ३ व्रह्म-नाळीक ४ ।
समवळ ५ नाट ६ चौटियौ ७, ताळब्यंव ८ तहतीख ॥ २११

चोप ९ हल्लव १० कवीत ए, दिया नाग दरसाय ।
यकहतरसू अधिक कहि, कीधी जुगत न काय ॥ २१२

कर विचार मनहूं कहूं, वरणण सुद्ध वणाय ।
तगसीरी छिम जोतका, 'किसन' कहै कविराय ॥ २१३

उक्त छप्पै

दूहा

कमळ १ छत्रबधह २ कवित, निसरणीबंध ३ नांम ।
मुगताग्रह ४ करपल्लवी ५, तव कुंडळियौ ६ ही तांम ॥ २१४

हीरावेधी ७ हिक वयण ८, मझ्झ अखिरौ ९ विधांन १० ।
अहरअळग ११ संकळयता १२, मुणिया नाग सुमांन ॥ २१५

द्वादस छपय अह दखे, जुगत रूप सुध जांण ।
बावीसह छप्पय वदूं, वरणो रांम वखांण ॥ २१६

---

१७ एकळवयरा (हेकलवयरा), १८ मजभग्रखरौ, १९ विधानीक, २० हल्लव, २१ ताळूरव्यव, २२ अहरेअळग (अहरअळग) ।

नोट—उपर्यूक्त २२ ही छप्पय कवित कविने आगे इसी क्रमसे नही दिये हैं ।

२११ यकहतर—इकहत्तर । कीधी—की । जुगत—युक्ति ।

२१२. काय—कुछ । तगसीरी—तकसीर, कमी । छिम—क्षरा, क्षीरा ।

२१३ तव—कह ।

२१४ मुणिया—कहे । नाग—नागराज पिंगल, शेषनाग ।

२१६ वदू—कहता हूँ । वखाण—यश, कीर्ति ।

अथ समवळ विधान छप्पै मात्रा वरण लछण

दूहौ

आद अंत छप्पय नगण, गुरु पनरहै उगणीस।
यक सौ सैंतीसह अखर, बद लघु सौ बावीस॥ २१७

अरथ

छ ही चरणके आद अंत नगण आवै, एकसौ सैंतीस सरब अखिर। पनरै गुरु अखिर होवै, लघु अखिर एकसौ बावीस होवै अर उपमे उपमानकौ सम भाव वरणै सौ समवळ विधान कवित छप्पै।

दूहौ

जिणमें समता वरणजै, उपमे अर उपमांन।
जांणौ छप्पै अह जपै, सौ सम वळह विधांन॥ २१८

समबल विधांन छप्पै उदाहरण

नयण कंज सम निपट, सुभग आंणण हिमकर सम।
जप सम 'ग्रीवह' जळज, तवत सम हीर डसण तिम॥
अधर ब्यंब सम अरुण, समह भुज नागरौ ज सख।
सिल समांन उर समर, अथघ सम स्यंध उदर अख॥
कह सम मयंद अत छीण कट, जयत खंभ रिण सुपय जिम।
समवळ विधांन खटपद 'किसन', सुज राघव रवि कोट सम॥२१९

जाता सख लछण दूहौ

रस स्यंगार य हासरस, बिच जिण कवित बखांण।
जाता संख जिणनं कहै, वरणव रांम वखांण॥ २२०

---

२१७ उगणीस–उन्नीस।

२१८ समता–समानता, सादृश्य। उपमे–उपमेय, जिसकी उपमा दी जाय, वर्णनीय। उपमान–वह पदार्थ जिससे किसी दूसरे पदार्थको उपमा दी जाय। अह–शेषनाग।

२१९ कज–कमल। सम–समान। निपट–अत्यन्त। सुभग–सुदर। आणण–आनन, मुख। हिमकर–चद्रमा। जळज–शख। हीर–हीरा। डसण–दांत। अधर–ओष्ट। ब्यब–बिंब। अरुण–लाल। समह–समान। नागरौ–हाथीका। समर–युद्ध। अथघ–अपार। स्यध–सिंधु। मयद–सिंह। छीण–क्षीण। कट– कटि, कमर। खंभ–स्तभ। सुपय–चरण, पैर। खटपद–छप्पय।

२२० स्यगार–शृगार। हास रस–हास्यरस। वखांण–वर्णन। वरणव–वर्णन कर। वखांण–यश, कीर्ति।

जाता संख छप्पै उदाहरण हास्यरस

सगर सुतण जिग करत, अगत हकनाहक दीनी ।
वर करतां सुपनखा, कांन नासा विण कीनी ॥
जाचंतां निज रूप, कियौ नारद मुख बंदर ।
त्यागी सौळ हजार, घाल कुबज्या घर अंदर ॥
कैळासे नरग उधार कीय, अजामेळ उतावळां ।
आदेस करै 'किसनौ' अनंत, राघव कौतक रावळां ॥ २२१

अथ वळता सख छप्पै लछण

दूहौ

वदीस तुक पाछी वळै, पर लाटानुप्रास ।
वळता संख वखांणजै, सकौ कवित सर रास ॥ २२२

अरथ

पैली कही सौ तुक फेर पाछी कहै, लाटानुप्रास अलकार ज्यू तथा सीह चला गीत ज्यू सौ वळता सख कवित तुका पाछी वळै जीसू ।

अथ वळता सख उदाहरण

कवित छप्पै

जिण भजियौ जगदीस, जिकौ जमहूंत न भजियौ ।
नह तजियौ रघुनाथ, तेण म्रत जांमण तजियौ ॥
निज लीधौ हरि नांम, जिकण जम नांम न लीधौ ।
तिण नंह अम्रत त्रखा, रांम नांमांम्रित पीधौ ॥

---

२२१ सुतण–सुत, पुत्र । जिग–यज्ञ । अगत–अधोगति । हकनाहक–व्यर्थ । दीनी–दी । वर–पति । नासा–नाक । विण–विना, रहित । कीनी–की । केळा–क्रीडा, खेल । नरग–नरक । ऊतावळा–शीघ्रता करने वालो । आदेस–नमस्कार । अनत–विष्णु, ईश्वर । कौतक–कौतुक, खेल, क्रीडा । रावळा–आपके ।

२२२ वदीस–कही जाती । वळै–फिर । वखाणजै–वर्णन कीजिये । सकौ–वह । ज्यू–जैसे । जींसू–जिमसे ।

२२३ जिण-जिस । भजियौ–भजन किया, स्मरण किया । जिकौ–वह । जमहूत–यमराजसे । भजियौ–भागा । म्रत–मृत्यु । जामण–जन्म । लीधौ–लिया । जिकण–जिसका । त्रखा–तृपा, प्यास । नांमाम्रित–नाम रूपी अमृत । पीधौ–पिया ।

नर च्यार असी नाचै निकं, निज हरि आगळ नाचियौ ।
जाचणौ जिकां रहियौ न जग, ज्यां रघुनायक जाचियौ ॥

अथ सकल जात छप्पै लछण

एक सबदकी तेवड़ी, व्है आवरत विसेस ।
कहियौ अह तिण कवितरौ, संकळ नांम कवेस ॥ २२४

साकळ कवित उदाहरण

छप्पै

पूर अपूरिय आस, तौ पिण उमरथी पूरिय ।
हाथ जुड़त तिल चढ़ न, हाथ डुळ हाथ हजूरिय ॥
दिल ऊजळ नर उजळ, लखिन ऊजळ सिर लेखीय ।
दौलत दौलत मिलि न, लगी दो लत द्रिढ़ लेखीय ॥
कवि क्रिस्ण क्रिस्ण चित दुरन किय, क्रस्ण जगत देखीय कपट ।
रे रांम मंत्र रट रांम रट, रांम रांम रट रांम रट ॥२२५

कमळबन्ध लछण

दूहौ

द्वादस दळ द्वादस तुकां, अखर एक तुक अंत ।
सौ अधबिच तुक चौतरफ, कमळबंध स कहंत ॥ २२६

---

२२३. आगळ–अगाडी, अग्र । जाचणौ–याचना । जिकां–जिनको ।

२२४ तेवडी–तीन वार । आवरत–आवृत्ति ।

२२५ पूर–पूर्ण । अपूरिय–अपूर्ण । पिण–भी । दौलत–परिभ्रमण । दौलत–धन, सपत्ति । लेखीय–समझिये ।

२२६ द्वादस–बारह । दळ–फूलोकी पखडी । सौ–वह । अधबिच–ठीक मध्यमे । चौतरफ–चारो ओर । स–वह । कहत–कहा जाता है ।

कमळबंध उदाहरण

छप्पै

कौसळ्या सुख करण, नेत-बंध दसरथ नंदण।
ब्रत खित्रवट निरवहण, दुसट ताड़का निकंदण॥
रिण सुबाहु संघरण, असुर मारीच उडावण।
रज पै अहल्या तरण, संत जम त्रास छुडावण॥
ब्रत जनक राव सीताबरण, धांनुखभंजण जटधरण।
मुण 'किसन' सुजस रघु-बंस-मण, सीतापत असरण सरण॥ २२७
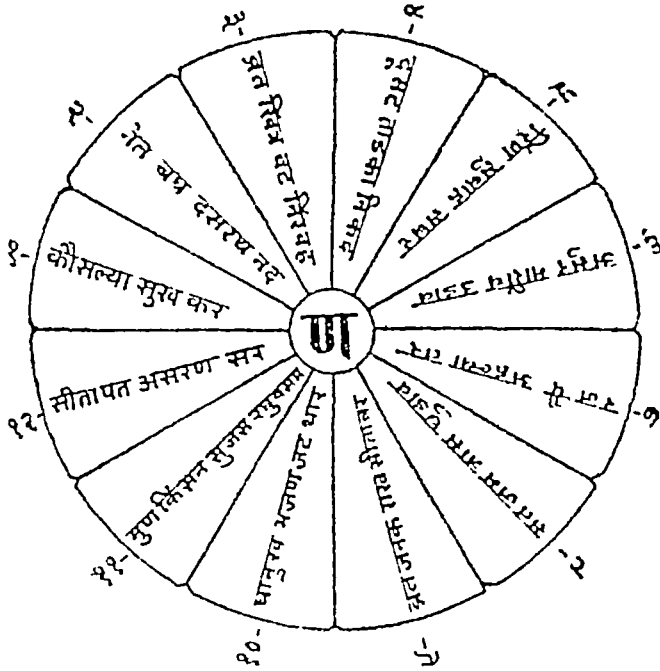
२२७ नेत-बंध—अपना निजका झंडा या ध्वजा रखने वाला, वीर। नंदण—पुत्र। ब्रत—वृत, आचार। खित्रवट—क्षत्रियत्व, वीरता, शौर्य। निरवहण—वहन करने वाला, धारण करने वाला, निभाने वाला। निकंदण—संहार करने वाला, मारने वाला। रिण—युद्ध। संघरण—संहार करने वाला, मारने वाला। रज—धूलि। पै—चरण, पैर। तरण—उद्धार करने वाला। जम—यम, यमराज। त्रास—भय, डर। ब्रत—प्रण। सीतावरण—सीतापति, श्रीरामचंद्र। धानुख—धनुष। भंजण—तोडने वाला। जटधरण—महादेव। मुण—कह, वर्णन कर। रघु-वंस-मण—रघुवंशमणि। सीतापत—सीतापति।

अथ छत्रबध छप्पै लछण

दूहौ

सरब कवितकौ अरथ सौ, अंत चरण आभास।
आद अखर तुक नीसरै, जपै छत्रबंध जास॥ २२८

छत्रबध उदाहरण

								कै								
							कै	स	कै							
						कै	स	धे	स	कै						
					कै	स	धे	व	धे	स	कै					
				कै	स	धे	व	अ	व	धे	स	कै				
			कै	स	धे	व	अ	त्र	अ	व	धे	स	कै			
		कै	स	धे	व	अ	त्र	छ	त्र	अ	व	धे	स	कै		
	कै	स	धे	व	अ	त्र	छ	प	छ	त्र	अ	व	धे	स	कै	
कै	स	धे	व	अ	त्र	छ	प	ओ	प	छ	त्र	अ	व	धे	स	कै

छप्पै

कह सेवा की कहै १ ?, नांम परजक कवण भण २ ?।
अख के मासां अयन ३ ?, नांम की सिंभ जयौ जिण ४ ?॥
कहजै देवां किसूं ५ ?, महत आदरैन केनूं ६ ?।
दूधां सिघ कुण दूध ७ ?, मित्र दाखत कीजै नंू ८ ?॥
रिप पंड कवण कह नांम जिण ६ ? संतां तार सुरेसके।
कवि 'किसन' छत्रबधह कवित, ओप छत्र अवधेसके॥२२६

२२६ परजक-पर्यंक, पलग। कवण-क्या। भण-कहै। अख-कहै। के-कितने। अयन-सूर्य अथवा चदकी उत्तर दक्षिणकी ओर गति या प्रवृत्ति जिसको उत्तरायण और दक्षिणायन भी कहते हैं। जयौ-जीता। रिप-शत्रु। पंड-पडव। कवण-कौन। सुरेस-इद्र।

नोट—१ ओयण (चरण)। २ पलग। ३ छ मासा। ४ त्रपुर। ५ अमर। ६ वडाई। ७ धेनको। ८ सजण। ६ कैरव। इन शब्दोके आदि अक्षरके पढनेसे 'ओप छत्र अवधेसके' इस तुकका छत्रवध वनता है।

अथ मझ अखिरा छप्पै लछण

दूहौ

कवित अरथ बाहर लिखै, अखिर मझ विचार।
और जठै प्रगटै अरथ, सौ मझ अख्यर धार ॥ २३०

अथ मझ अखिरा छप्पै उदाहरण

स्वाद मीठा कह किसौ १ ?, किसू मूरखनं कहजै २ ?।
की कह भ्रात कनेठ ३ ?, नांम रेखा की लहजै ४ ?॥
कहै धरानं किसं ५ ?, रक किण नांम जितं कह ६ ?।
मंदभाग की मुणै ७ ?, ठहै तारा किण ठांमह ८ ?॥
रघुनाथ भगौ की जनकघर ९ ?,
मल बुध किसं भणीजियै १० ?।
कवि 'किसन' कवित मझ अख्यिर कह,
जस रघुनाथ जपीजियै ॥ २३१

अथ लघुनाळीक छप्पै लछण

दूहौ

अखर अठारह चरण चव, बे चरणां बावीस।
कवित लघु नाळीक कहि, बरणत सरब कवीस ॥ २३२

अथ लघुनालीक छप्पै

तिण मारी ताड़का, जिकण रिख मख रखवाळै।
हण सुबाह मारीच, पैज खित्रवट ध्रंम पाळे ॥

---

२३० जठै–जहा। प्रगटै–प्रकट होता है। अख्यर–अक्षर।

२३१ मीठ–मीठा। किसौ–कौनसा। किसू–क्या। की–क्या। कनेठ–कनिष्ठ। धरा–अवनी, पृथ्वी। जितू–जीता। मदभाग–अभाग्य। मुणै–कहते है। ठहै–ठहरते है। ठामह–स्थान। भगौ–तोडा। अख्यिर–अक्षर।

नोट—१ मिश्रीको। २ अजाण। ३अनुज। ४ लकीर। ५ अवन। ६ मल्लको। ७ अभागी। ८ गयण। ९ धनख। १० सुमत। इनके मध्याक्षरके पढनेसे श्री जानुकी वल्लभाय नाम बनता है।

२३२ अखर–अक्षर। चव–चार। बे–दो।

२३३ तिण–जिस, उस। जिकण–जिस। रिख–ऋषि। मख–यज्ञ। रखवाळै–रक्षा की। हण–मार कर। पैज–मर्यादा, नियम, आचरण। खित्रवट–क्षत्रियत्व, वीरता, शौय। ध्रम–धर्म। पाळे–पालन किया।

नग रज गौतम नार, जेण उधरी जग जांणै ।
धनुख भंज सीय बरी, प्रथी भुज जोर प्रमांणै ॥
रे अधम समझ मुख नांम रट, सीत-बर समराथकौ ।
कह जीहहूत 'किसना' कवी, नितप्रत जस रघुनाथकौ ॥ २३३

अथ ब्रधनाळीक छप्पै लछण

दूहौ

उगणीसह चव पद अखिर, अकवीसह बे औण ।
कवित ब्रधनाळीक कवि, भणै नाग त्रय-भौण ॥ २३४

अथ ब्रधनाळीक छप्पै उदाहरण

जिण राघव जापियां, थरू घर नवनिध थावत ।
जिण राघव जापियां, प्रसध ईजत नर पावत ॥
जिण राघव जापियां, सुलभ भवसागर तरसी ।
जिण राघव जापियां, सरब मन कारज सरसी ॥
जापियां जेण रघुबर सुजस, धरै ऊंच विरदां धरा ।
तै नांम जोड़ नां ज्याग तप, नित राघव जप जप नरा ॥ २३५

अथ निसरणीबध छप्पै लछण

दूहौ

एक दोय त्रण ऐण क्रम, छप्पय करै वखांण ।
गत जिम चढजे गातियां, निसरणीबंध जांण ॥ २३६

---

२३३ नग–चरण । रज–धूलि । नार–नारी, स्त्री । जेण–जिस । अधम–नीच, पतित । सीत-बर–सीतावर, श्री रामचद्र भगवान । समराथकौ–समर्थका । जीहहूत–जिहासे । नितप्रत–नित्यप्रति ।

२३४ अकवीसह–इक्कीस । बे–दो । औण–चरण । त्रय-भौण–त्रिभुवन ।

२३५ जिण–जिस । जापियां–जपने या भजन करने पर । थरू–स्थिर । नवनिध–नवनिधि । थावत–हो जाती है । प्रसध–प्रसिद्धि । पावत–प्राप्त करता है । भवसागर–समार रूपी समुद्र । कारज–कार्य, काम । सरसी–सफल होगे, सिद्ध होगे । जेण–जिस । विरद–विरुद, कीर्ति । तै–उस, उसके । जोड–समान, बराबर । ना–नही । ज्याग–यज्ञ ।

२३६ गत–प्रकार, तरह । गातियां–काष्ट या लोहकी बनी निश्रेणीके बीच-बीचमे लगे वे डडे जिन पर पैर रख-रख कर चढते व उतरते है, पावदान ।

अथ निसरणीबंध छप्पै कवित उदाहरण

एक रमा अहनिसा, दोय रवि चद त्रिगुण दख।
च्यार वेद तत पंच, सुरत छह सपत सिंध सख॥
आठ कुळाचळ अनड़, नाग नव नाथ निरंतर।
दस द्रिगपाळ दुबाह, रुद्रह एकदस सर तर॥
सभ्भ सभ्भ उमंग बारह सघण, बिसुध चित्त कायक बयण।
तेरहा भांण पय रांमतौ, भल सेवै चवदह भुयण॥२३७

अथ नाट नाम छप्पै लछण

दूहौ

नाट सबद जिण कवितमें, आद अंत लग होय।
नाट नांम तिणनं कहै, सुकव महा-मत सोय॥ २३८

अथ नाट छप्पै उदाहरण

लाभ नहीं अहलोक, नहीं परलोकह निरभय।
सुमति नहीं ज्यां स्यांन, खांत ज्यां नहीं पाप खय॥
जीवण सुख नहि जिकां, नहीं ज्यां मुवां मुकत निज।
नही जिके नहच्यंत, कदे ज्यां नहीं सरै कज॥
निकलिक बांण ज्यांरी नहीं, दसा नहीं सुभ ज्यां दपै।
ज्यां नहीं सफळ मनखा जनम, जिके नहीं रघुबर जपै॥ २३९

---

२३७ अहनिसा—रात-दिन। रवि—सूर्य। चद—चद्र। दख—कह। तत—तत्त्व। पच—पाच। सपत—सात। सिंध—समुद्र। कुळाचळ—आठ पर्वतोका समूह, मतातरसे सात पर्वतोका समूह, कुलपर्वत। अनड—पर्वत। द्रिगपाळ—दिकपाल। दुबाह—महान, दृढ। उमग—तरग, इच्छा। सघण—वन, बादल। पय—चरण। भल—ठीक, श्रेष्ठ। भुयण—भवन।

२३८ नाट—नही, नही अर्थका शब्द। महा-मत—महामतिवान। सोय—वह।

२३९ अहलोक—इह लोक, इस ससारमे। सुमति—श्रेष्ठ मति। स्यान—बुद्धि। खात—विचार। ज्या—जिन। खय—नाश। मुकत—मुक्ति, मोक्ष। नहच्यत—निश्चित। कज—काम। दपै—शोभायमान होती है। मनखा जनम—मनुष्य जन्म।

अथ चौपई नाम छप्पै लछण

दूहौ

बीस बीस चोपद बरण, दोय बीस दो पाय।
चोप किवत जिण चोपसुं, रटीयौ पनंगांराय ॥ २४०

अथ चौपई छप्पै उदाहरण

चोप अरच हरि चरण, चोप फिर रे परदछण।
चोप करे करजोड़, जनम सरजत आगळ जण॥
चोप करे चित बीच, नांम सिर अगर सु नर हर।
चंनण घस जुत चोप, कमळ त्यं तिलक चोप कर॥
अत चोप भजन सी-वर उचर, ध्यांन हृदय जुत चोप धर।
कवि चहै चोप रघुराजकौ, कर कर चोप स भजन कर॥२४१

अथ मुकताग्रह नाम छप्पै लछण

दूहौ

आद अंत तुकरै झमक, अरथ अवर उर आंण।
गंूथ मुकत जिम छपय गत, मुगता ग्रह परमांण॥ २४२

अथ मुकताग्रह कवित उदाहरण

भव ब्रह्मा जिण भजै, भजै तिण नांम पाप भर।
भर टाळण सह भूम, भूम-पतनकौ जेण सर॥
सर धनुं धार समाथ, माथ दस भंज समर मह।

---

२४० चोपद-चार पद या चरण। बरण-अक्षर। पाय-चरण। चोप-बुद्धि, चतुराई, दक्षता। पनगांराय-शेषनाग।

२४१. अरच-पूजा कर। परदछण-प्रदक्षिणा। जनम सरजत-जो जन्म देता है, जन्म रचता है। आगळ-अगाडी। जण-जिस। चोप-ध्यान। कमळ-शिर, मस्तक। सी-वर-सीतावर, श्री रामचन्द्र। उचर-उच्चारण कर, भजन कर। चोप-कृपा, दया।

२४२. झमक-यमकानुप्रास। गूथ-रच, बना। मुकत-मोती।

२४३ भव-महादेव, शिव। ब्राहम-ब्रह्मा। भर-भार, बोझ। भूम-भूमि। भूमपत-भूमिपति। सर-बाण, तीर। धनु-धनुष। समाथ-समर्थ। माथ-मस्तक, सिर। समर-युद्ध। मह-मे।

महि राखण मुरजाद, जादपत पब्बै तार जह ॥
जह दुसह पाळ जन सांमरथ, रथ खगेस मारुत सजव ।
सज मख सिहाय भंजण सुभुतज, भज रघुबर तर उदध भव ॥ २४३

अथ छप्पै नाम कवित कुंडळिया लछण

दूहौ

पहलां दूहौ एक पुण, आद अंत तुक जेण ।
पलटै धुर पूठा कवित, तव कुंडळियौ तेण ॥ २४४

अथ कुंडलिया उदाहरण

जपै रसण रघुबर जिकै, अघ त्यां कपै अमांण ।
जनम मरण सुधरै जिकां, जे बड़भागी जांण ॥
जे बड़भागी जांण, लाभ तन पायां लीधौ ।
त्यां जिग किया तमांम, कांम सुक्रत ज्यां कीधौ ॥
वां व्रत किया अनेक, हिरण दे दे विप्रां हथ ।
ज्यां सधिया अठ जोग, त्यां किया कौटक तीरथ ॥
धन मात पिता जिण वंस धर, कळुख तिकां दरसण कपै ।
कवि 'किसन' कहै धन नर तिकै, जिके रसण रघुबर जपै ॥२४५

---

२४३ मह–महि, पृथ्वी। मुरजाद–मर्यादा। जादपत–यादपति, समुद्र। पब्बै–पर्वत। जह–जिस। सामरथ–समर्थ। खगेस–गरुड। मारुत–पवन। सजव–वेग सहित। मख–यज्ञ। सिहाय–सहाय। उदध–उदधि, समुद्र। भव–ससार।

२४४ पहला–प्रथम। पुण–कह। धुर–प्रथम। तव–कह।

२४५ रसण–रसना, जिह्वा। अघ–पाप। कपै–नाश होते है। अमाण–अपार। बडभागी–बडे भाग्यशाली। जाण–समझ। जे–वे, जो। लीधौ–लिया। त्या–उन्होने। जिग–यज्ञ। तमाम–सब, समस्त। सुक्रत–पुण्य। कीधौ–किया। वा–उन्होने। हिरण–हिरण्य, सोना। हथ–हाथ। सधिया–साधन किये। अठ-जोग–अष्ट-योग। कौटक–करोडो। धन–धन्य। मात–माता। कळुख–पाप। तिका–जिनके, उनके। जिके–जो, वे।

अथ चौटीबध छप्पै लछण

दूहौ

आद कहै सौ अंतमें, नांम गणात नरबाह ।
सिरै कवित बंधै सिखा, चौटीबंध सराह ॥ २४६

अथ चौटीबंध छप्पै उदाहरण

सूरजपणौ सतेज, स्रवण अम्रत हिमकर सम ।
उर दाहक सम आग, तौर सुर-राज राज तिम ॥
सत हरचंद समांन, प्रगट दरियाव अथघपण ।
सुर तर आस सपूर, जांण पारस सेवक जण ॥
रवि अमी आग इंद चंद हरि, दध सुरतरमण आद ले ।
परभाव आठ निज कांम पर, एक रांम तन ऊझळै ॥ २४७

अथ हीराबेधी छप्पै लछण

दूहौ

एकण हीरौ विहरियां, दूजौ हीरौ थाय ।
हीराबेधी कवित जिम, दोय अरथ दरसाय ॥ २४८

अथ हीराबेधी छप्पै उदाहरण

नारंगी संसार नीम, ऊंबर कर अंबह ।
करणा सुभ करतूत, झाल हर कदमां झंबह ॥

---

२४६ सिरै–श्रेष्ट । सराह–प्रशसा कर, सराहना कर ।

२४७ सूरजपणौ–सूर्यत्व, सूर्यका गुण । स्रवण–श्रवण, टपकना । हिमकर–चद्रमा । सम–समान । दाहक–जलाने वाला । सुरराज–इन्द्र । सत–सत्य । हरचद–हरिश्चद्र, हरि-चदन । अथघपण–अथाहपन, गहरापन । अमी–अमृत । सुरतर–कल्प वृक्ष । मण–मणि । आद–आदि । ऊझळै–प्रभाव दिखाता है ।

२४८ विहरिया–विदीर्ण करने पर, चीरने पर ।

२४९ ऊबर–वृक्ष विशेष । अबह–आम्र । करणा–वृक्ष विशेष व उसका फल । करतूत–कर्त्तव्य, काम ।झाल–पकड । कदमा–चरण, वृक्ष विशेष । झबह–सहारा ।

बोर छोड़ बावळा, खैर करमद बकायण।
बीजा धव बट बैत, ईख सुरतर नारायण॥
खरबूजा जग सह जाय रे, सौ असोक अंमर सदै।
सैमळ सरीस तज आंन सुण, दाख रांमफळ सेवदे॥ २४६

अथ करपल्लव नाम छप्पै लछण

दूहौ

आंगळियां करसूं अरथ, जेण कवितरौ होय।
आछी विध अह अक्खियौ, करपल्लव कह सोय॥ २५०

अथ करपल्लव छप्पै कवित उदाहरण

यूं जे तैं न कियौ, करसु यूं जण जण आगळ।
यूं न लिया हरि अगै, लेस नितप्रत गदगद गळ॥
कीध यूं नह कदे, करसु तोपण विध दुख तन।
यूं न कियौ उण हेत, देस तौ यूं जग दन दन॥
यम येम ए मन कीयौ अधम, मूरख यूं जम मारसी।
यूं कियौ ज तै अहनिस अवस, यूं रघुनाथ उधारसी॥ २५१

अरथ

हे प्राणी तै स्री रामचद्र आगै हाथ नही जोडचा तौ तू जणा जणा आगळ हाथ जोडसी। जो तै दसी आगळ प्रभु आगै मुखमे न लिया, तौ जगत आगै

---

२४६ बोर—वदरी नामक वृक्ष या उसका फल। बावळा—मूर्ख। खैर—वृक्ष विशेष, कुशल। करमदा—वृक्ष विशेष, तथा उसका फल। बकायण—नीम जैसा एक वृक्ष। बीजा-दूसरा, एक वृक्ष विशेष या उसका फल। धव—वृक्ष विशेष। बट—बरगदका वृक्ष। बैत—बेंत, एक लता। ईख—देख, गन्ना, इक्षु। सुरतर—कल्पवृक्ष। आन—अन्य। दाख—द्राक्षा, कह। रामफळ—सरीफा, सीताफल।

२५० अह—अहि, शेषनाग। अक्खियौ—कहा।

२५१. यू—ऐसे। तै—तूने। आगळ—अगाडी। अगै—अगाडी। लेस—किंचित। नितप्रत—नित्य-प्रति। गदगद गळ—गदगद कठ। कीध—किया। कदे—कभी। तोपण—तो भी। हेत—स्नेह। अवस—अवश्य। आगळ—उगुली।

गदगद कठ होय नित हाहा खासी नै आगळी मूढामे लेसी। जे तै श्री राम आगै ऊभी आंगळी न कीदी, तौ सरीरमे दुख पाय जणा जणा आगै ऊभी आगळी करसी। ऊण ईस्वर निमत यू कैता देवाकै वासतै हाथ पाची आगळयासू ऊचौ न कीधौ तौ थारै जगत माथामे यू पाची आगळयांसू डूचका देसी। यम कैता प्रभुनै कदी पाच ही आगळयासू चदण पुसप चढाया अरच्या नही, फेर एम कैता प्रभुरी आरती उतारी नही, फेर यम कैता प्रभुनै नमसकार प्रणांम कीधौ नही तौ यू जम मार देसी, अर कदा'क तै यू कैता आगळयासू रात दिन माळा फेरे नै भजन कीधौ छै तौ यू कहता बाह पकड नै भवसागर मासू, यू स्रो रघुनाथ उधारसी, इति करपल्लव कवित अरथ।

अथ हेकल्लवयण छप्पै लछण

दूहौ

यक सौ अर बावन अखर, जठै सरब लघु जांण।
एकल बयणौ कवित यं, वदियौ नाग वखांण॥ २५२

अथ हेकल्लवयण छप्पै कवित उदाहरण

तरण सरस छब तरण, सरण असरण हरखण सक।
मरण जनम भय मटण, धरण बड बरद रहत धक॥
अजर जरण रण असह, दन जद ससर सम वड दह।
लख दन समपण लहर, कहर चत अघट अथघ कह॥
भल करम मन वतन, अत दलभ, अखत बयण अह नर अमर।
कर हरख पहर अठ कव 'कसन', सधर समन रघबर समर॥२५३

---

२५१ आंगळी–उगुली। कीदी–की। निमत–निमित्त, लिए। वासतै–लिए। कीधौ–किया। डूचका–मुट्ठी बद करके मध्यमा उगलीको इस स्थितिमे रखना जिससे उसका पीछेका जोड दूसरी उगलियोसे कुछ आगे निकला हुआ हो। इस उठे हुए भागसे किया जाने वाला प्रहार या चोट। कदी–कभी। कदाक–कभी।

२५२ यक सौ–एक सौ। जठै–जहा। वदियौ–कहा। नाग–शेषनाग।

२५३ तरण–तरणि, सूर्य। सरस–समान। तरण–तरुणी। बड–बडा। बरद–विरुद। धक–इच्छा। रण–युद्ध। असह–असह्य। कहर–कोप। अथघ–अपार। अत दलभ–अति दुर्लभ। अखत–कहता है। अह–नाग। अमर–देवता। रघबर–रघुवर। समर–याद कर, स्मरण कर।

अथ हल्लव नाम कवित लछण

दूहौ

वीस वीस चौतुक अखर, बेतुक कह बावीस।
हल्ल सबद वरणौ सुमझ, हल्लव नांम कहीस ॥ २५४

अथ हल्लव नाम कवित उदाहरण

हल हल्लिय गिर आठ, सपत हल्लिय जळ सायर।
धूजह हल्लिय धरण, गिरद हल्लिय नभ छायर।
सिर हल्लिय अध सेस, हहर चित्त कछप हल्लिय।
हल्लिय दाढ़ वराह, दुसह हल हल्ल दहल्लिय।
हल हल्लिय लंक गढ़ बंकसौ दस-धू पै हल काहल्लिय।
हल्लिय पताख गजराज पै, विजै कटक राघव हल्लिय ॥ २५५

अथ कवित छप्पै नाम ताळूरव्यब लछण

दूहौ

लागै पढ़तां ताळवै, जीहा अग्र जरूर।
कहजे छप्पय 'किसन' कवि, तिकौ ब्यंब ताळूर ॥ २५६

अथ ताळूरव्यब छप्पै उदाहरण

रट रट रे नर ईस, नाय ओणे जिण सीसं।
चाळ झाल कर चहूं, देस ईछत जगदीसं॥
ईस अचळ सरणाय रीझ इज्जत द्रढ़ रक्खयण।
दट दट अकत दूठ, ईस नां छोड अधक्खण॥

---

२५४. चौतुक—चार तुक।

२५५ हल हल्लिय—चलायमान हुए। सपत—सप्त, सात। सायर—सागर, समुद्र। धूजह—ध्रुव। वराह—विष्णुका एक अवतार विशेष। दहल्लिय—भयभीत हुए, कंपायमान हुए। दस-धू—दश शिर वाला रावण।

२५६ ताळवै—तालु, तालू। जीहा—जिह्वा। तिकौ—वह। व्यब ताळूर—तालूर व्यब।

२५७ नाय—नमा कर। ओणे—चरणोमे। सरणाय—शरण देने वाला। रक्खयण—रखने वाला। दट—नाश कर। अकत—दुष्कर्म पाप। दूठ—दुष्ट, भयकर। नां—नही। अधक्खण—अघक्षण।

तीरथां इळा अट अट स तं, देणौ चित सतसंग दुस ।
दस सिर खळ गंजण दाख रे, जांनंकीनायक सुजस ॥ २५७

अहर अळग कवित छप्पै

दूहौ

पढ़तां होठ मिळै नहीं, ऊ प फ ब भ म न आंण ।
कहियौ अह अन कवि कहै, अहर अळग सौ जांण ॥ २५८

अथ अहर अळग छप्पै उदाहरण

नारायण नरकार, नाथ नरहर जग-नायक ।
कंज नयण कर कंज, तरण संतां खळ-तायक ॥
धरणीधर गिरधार धनौ स्रीधर धू धारण ।
हाथी ग्रह निज हाथ, तोयहूंता झट तारण ॥
करुणा निधांन कोदंड कर, नित चालण यळ रीत नय ।
रघुकुळ दिनेस जन लाज रख, जग अधार औधेस जय ॥ २५९

अथ विधानीक जात छप्पै कवित लछण

दूहौ

ले खटहूंता नव लगै, वरणौ मांझ विधांन ।
विधांनीक छप्पय वदै, वडा सुकवि बुधवांन ॥ २६०

अथ सप्त विधान छप्पै उदाहरण

कमळ उदध कळव्रछ, भांण मघवांण, मेर ससि ।
वदन, सहज, दत, तेज, राज, गरूवत दीठ लसि ॥

---

२५७ खळ—असुर, राक्षस । गजण—नाश करने वाला । दाख—कह ।

२५८ अह—शेषनाग । अन—अन्य । अहर—अधर, होठ । अळग—दूर, पृथक ।

२५९ नरकार—निराकार । कज—कमल । कर—हाथ । तरण सता—सतोका उद्धार करने वाला । खळ-तायक—असुरोका सहार करने वाला । तोयहूता—पानीसे । झट—शीघ्र । तारण—उद्धार करने वाला । कोदड—धनुष । चालण—चलने वाला । यळ—इला, पृथ्वी । नय—नीति । दिनेस—सूर्य । औधेस—अवधेश, श्रीरामचद्र ।

२६० विधान—किसी कार्यकी विधि या व्यवस्था । वदै—कहते है । बुधवान—बुद्धिमान ।

२६१. उदध—उदधि, समुद्र । कळवरछ—कल्पवृक्ष । भाण—सूर्य । मघवाण—इन्द्र । मेर—सुमेरु पर्वत । ससि—चद्र । वदन—मुख । दत—दान । गरूवत—गभीर, भारी । दीठ—दृष्टि ।

सजळ, सलहर, सपत्र, सतप, सुरस्रंग, ससीतळ ।
प्रात, पुनिम, मधु, जेठ, त्रखा, विग्रह, राका मिळ ॥
प्रफुलंत, अथघ, दतवार, तप, ओज, सरण, स्रावण, अम्रत ।
तन एक रांम दसरथ सुतण, विहद सात गुण निरवहत ॥ २६१

इति पुरस प्रत विधानिक

अथ सत्री प्रत विधानिक छप्पै

सेस, इंदु, म्रग, दीप, जांण, कोकिल, म्रगपति, गज ।
बेण, वदन, चख, नाक, बोल, कटि, जंघ, चाल, सज ॥
असित, सकळ, चळ, सुथिर, गुप्त, अंगिरात, अक्रमत ।
सुरत्रि, ब्योम, बन, अयन, नूत, पब्बय, सुब्यध, थित ॥
मण, सरद, चकित, निस, रतिपतिह, लंघणीक, मंदह चलत ।
मिथलेस कुंवरि सीता सुतन, कवि एती ओपम कहत ॥ २६२

इति विधानिक सपूरण

अथ नाट सला छप्पै लछण

दहौ

यक तुक तौ थापै अरथ, अन तुक दियै उडाय ।
नाट सलौ तिण कवित नै, सुकवि कहै सुभाय ॥ २६३

---

२६१ प्रात–प्रात काल । पुनिम–पूर्णिमा । मधु–वसत, अथवा मधु-वसत, मधु-चैत है, मधु मदिरा मकरद । मधुपै मधुहरि मधुसुधा मधुमाधव गोविन्द ॥ राका–पूर्णिमा । दतवार–दान । स्रावण(श्रावण)–श्रवण करने वाला । सुतण–सुत । विहद–अपार । निरवहत–धारण करते, वहन करते ।

२६२ प्रत–प्रति । सत्री–स्त्री, नारी । सेस–शेष, यहा कृष्ण-सर्प अर्थ है । इदु–चद्रमा । म्रग–हरिण । दीप–दीपक, दिया । कोकिल–कोयल । म्रगपति–सिह । गज–हाथी । वेण–वेणी, वेणी, स्त्रियोके सिरके बालोकी चोटी । बदन–मुख । चख–चक्षु, नेत्र । बोल–शब्द, आवाज, वचन । कटि–कमर । जघ–जाघ, ऊरू । चाल–गति । असित–श्याम, काला । सकळ–शुक्ल, सफेद । चळ–चचल । सुथिर–स्थिर । सुरभि–सुगधि, खुशबू । व्योम–आकाश । नूत–आम्र, आम । पब्बय–पर्वत । थित–स्थित । मण–मणि । निस–निशा, रात्रि । रतिपतिह–कामदेव । लघणीक–भूखा, कृशोदर । मदह–मद । मिथलेस–राजा जनक । सुतन–पुत्री । एती–इतनी । ओपम–उपमा । कहत–कहता है ।

२६३ यक–एक । थाये–होता है । अन–अन्य, दूसरी । उडाय–मिटा कर । सुभाय–सुरुचिकर ।

अथ नाट सला छप्पै

उदाहरण

सूर प्रभवतौ तेज, तेज नंह इम्रत स्रायक।
यिम्रत स्रायक चंद, चंद नह स्यांम सुभायक॥
स्यांम सुभायक मेघ, मेघ नह मायावंतह।
मायावंतह साह, साह नाहीं खर अंतह॥
खर अंत ततौ चित्रक अखव, नह चित्रक नर जांणिये।
नर नहीं नरां नायक निपट, प्रभव-भांण पहचांणिये॥ २६४

अथ सुद्ध कुंडळियौ लछ्रण

कायब दूहासूं मिळै, कुंडळियौ सुध कत्थ।
अम्रत-धुन अनुप्रास घण, स्री रघुनाथ समत्थ॥
स्री रघुनाथ समत्थ, हत्थ धारण धनु सायक।
सेवक सरण सधार, लेख सेवै पद लायक।
सीतानाथ सुजांण, पांण खग धन ब्रद पायब।
कुंडळियौ सौ कहै, मिळै दूहासूं कायब॥ २६५

---

२६४ सूर—सूर्य। प्रभवतौ—उत्पन्न करता है, उत्पन्न करता हुआ। इम्रत—अमृत। स्रायक—श्रायक, श्रवने वाला, देने वाला। सुभायक—रुचिकर, मनोहर। मायावतह—धनाढच। साह—सेठ। खर—खरदूषण राक्षससे तात्पर्य है। अखव—कह। चित्रक—हरिण। प्रभव-भाण—सूयवशी।

नोट—नाट नामक छप्पयका उल्लेख पूर्व २२ छप्पयोंमे मय उदाहरणके हो चुका है—यह नाटसला भी उसीका एक भेद प्रतीत होता है।

२६५ कायब—काव्य छंद, यह रोला छदका ही एक भेद है जिस रोला छदके चारो चरणोमे ११वी मात्रा हृस्व हो उसे काव्य-छद कहते हैं। किसी-किसीके मतसे दोहाके पश्चात् रोला छदको जोडने से ही कुडलिया छदकी रचना मानी गई है। कत्थ—कह। अम्रत-धुन—अमृत-ध्वनि। यह भी छ चरणका एक मात्रिक छद है जो दोहा और दोहाके पश्चात् २४ मात्रा अथवा रोला छदके जोडनेसे ही बनता है परन्तु अमृत-ध्वनिमे यमकालकारको तीन बार झमकावके आठ-आठ मात्रा सहित रखा जाता है। घण—बहुत। समत्थ—समर्थ। हत्थ—हस्त, हाथ। धनु—धनुष। सायक—बाण, तीर। सरण-सधार—शरणागत रक्षक। लेख—देव, देवता। खग—तीर, बाण। ब्रद—विरुद, यश। पायब—प्राप्त करने वाला।

अथ कुंडळियौ झड उलट लछण

दूहौ

दूहौ धुर धुर पच्छ तुक, आद अंत उलटंत।
वीस मत्त चो तुक वळै, सौ झड़ उलट समंत॥ २६६

कुंडळिया झड उलट उदाहरण

भुज दंड लीजै भांमणा, अध्रियांवणा अभीत।
विध-विध दास वचावणा, जुध पावणा सजीत॥
जीत जुध पावणा, आद असुरां जरे।
सीस दस कुंभ घणा, नाद सा स्यंघरे॥
सधर कर भभीखणा, रिव जस रसांमणा।
भुजां रघुवर अडर, लीजियै भांमणा॥ २६७

अथ कुंडळियौ जात दोहाळ लछण

दूहौ

मुघ कुंडळिया अंत सुज, एक दूहौ फिर आख।
कुंडळियौ दोहाळ कह, भल राघव जस भाख॥ २६८

अथ कुंडळियौ दोहाळ

उदाहरण

केकंधा लंका कहै, जग रघुनाथ सुजांण।
कहै भभीखण रविजकी, मुख हूं अवळीमांण॥

२६६ धुर-प्रथम । पच्छ-पश्चात् । मत्त-मात्रा । चो-चार । तुक-चरण । वळै-फिर ।
२६७ भामणा-[illegible] । अध्रियावणा-वीर, [illegible] । अभीत-निडर, निर्भय । [illegible] । दास-भक्त । वचावणा-बचाने वाला । पावणा-प्राप्त [illegible] । [illegible] । सीस दस-रावण । [illegible] । सा-समान, जैसा । स्यंघरे-[illegible] । [illegible] । भभीखण-विभीषण । रिव-रवि, [illegible] । [illegible] ।
२६८ [illegible]
२६९ [illegible]

मुखहू अवळीमांण, किसूं पायक जस कत्थै।
दत देखा दत दहूं, सुजस जग कहै समत्थै॥
कासीदी गुण करै, जिका कथ सह जग जांणै।
केतक डमरां कुसम उरड़ भमरां दळ आंणै॥
जुग जुग मुख 'किसना', जपै नित नव नव एहनांण।
केकंधा लंका कहै, जस रघुनाथ सुजांण॥ २६९

अथ कुडळणी लछण

दूहौ

उगाहौ कर आद यक, तुक पलटै धुर अंत।
कायबरी तुक च्यारि कह, कुंडळणी स कहंत॥ २७०

अथ कुंडलणी उदाहरण

यिक रघुनाथ उजाळौ सारौ, रघुवंस जेण दुति सरसत।
विध जूं है कळ वाळौ, मझ सह नभ तेज करत तेजोमय॥
तेजोमय नभ होत, चंदहूंता जग चावौ।
एक सेस अजवाळ, सरब कुळ सरप सुभावौ॥
हेक मेर-गिर हुवै, सौ भगिर वंस सिघाळौ।
विध जिण सह रघुवंस, एक रघुनाथ उजाळौ॥ २७१

कवित कुंडळिया १ सुध कुडळिया २ झड उलट कुंडळिया ३ दोहाळ कुंडळिया ४ कुंडळणी ५—इति पच प्रकार कुडळिया सपूरण।

---

२६९ अवळीमांण—अपने ऐश्वर्यका उपयोग करने वाला, वीर। किसूं—कैसे। पायक—सेवक। कत्थै—कहे। दत—दान। समत्थै—समर्थ। कासीदी—कासिदका कार्य, हरकाराका कार्य। गुण—लाभ। कथ—कथा। सह—सब। केतक—केतकी, केवडा। डमरा—सुगधि, महक। कुसुम—पुष्प, फूल।

२७१. यिक—एक। दुति—द्युति। विध—विधु, चन्द्रमा। जूं—जैसा। कळ—कला। मझ—मध्य। सह—सब। नभ—आकाश। तेजोमय—प्रकाशमय। चदहूता—चन्द्रमासे। चावौ—प्रसिद्ध। मेर-गिर—सुमेरु-पर्वत। सौ—वैसा। भगिर—अयोध्या नरेश दिलीपके पुत्र, भगीरथ। सिघाळौ—श्रेष्ठ। उजाळौ—प्रकाश, रोशनी।

दूहा

मात्रा दंडक वरणिया, इण विध छंद उदार।
'किसन' रिझावण जस कियौ, रांमचंद्र रिझवार ॥ २७२

कवि राजांसं॒ किसन कवि, यम अक्खै अरदास।
माफ करौ तगसीर मौ, देख रांम पय दास ॥ २७३

इति मात्रा व्रत सपूरण

++++++++++

[illegible]

[illegible] नागौर (नागौर)—[illegible]

अथ वरण व्रत (वृत) वरणण

दूहा

स्री गणनायक सारदा, दीजै उकत दराज।
वरण व्रति 'किसनौ' वदै, जस राघव महराज ॥ १

वरण व्रति सौ दोय विधि, कहै वडा कवि कत्थ।
वरणछँद उपछँद वद, स्री धर सुजस समथ्थ ॥ २

लेखव वरण छवीस लग, वरण छँद सौ वेस।
आखर छविसां ऊपरां, सौ उपछँद सरेस ॥ ३

अथ एक वरणसू लगाय छवीस वरण ताई छदारी जातरा नाम वरणण।

कवित छप्पै

उक्ता अत्युक्ताह अखत, मध्या, वखांणत।
वळे प्रतिस्ठा वेस, जगत सु प्रतिस्ठा जांणत ॥
गायत्री ऊसणीक अनुस्टप, व्रहती पंगत।
त्रिस्टुप जगती तवां, अती जगती सकरी मत।
अत सकरी अस्टती यिस्टि अख ध्रति ॥
अति ध्रती, क्रती प्रक्रतीय।
आक्रति, विक्रति, फिर संसक्रती ॥
अतक्रति, उतक्रति, हरि भजीय ॥ ४

दूहौ

यकसं वरण छवीस लग, बरण छंदकी जात।
क्रीत रांम वरणण कियां, सुकवि सुमुख सरसात ॥ ५

नोट—छप्पयमे आए हुए छदोके शुद्ध सस्कृत नाम—

१ उक्था, २ अत्युक्था, ३ मध्या, ४ प्रतिष्ठा, ५ सुप्रतिष्ठा, ६ गायत्री, ७ उष्णिक, ८ अनुष्टुप, ९ बृहति, १० पक्ति, ११ त्रिष्टुप, १२ जगती, १३ अति जगती, १४ शक्वीर, १५ अति शक्वरी, १६ अत्यष्ठि, १७ अष्ठि, १८ घृति, १९ अति घृति, २० कृति, २१ प्रकृति, २२ आकृति, २३ विकृति, २४ सस्कृति, २५ उत्कृति, २६ अतिकृति।

अथ छद वरणण

दूहौ

एक गुरु स्री छंद कहि, दु गुरु छद कहि कांम ।
दोय लघु मधु, लघु गुरु, महि छॅद रटि रांम ॥ ६

अथ स्री छंद, जात उक्ता (ग.)

गै । गै । स्री । थी । रां । कां ॥ ७

कांम छंद (ग. ग.)

गौ दौ । कांमौ । गावौ । रांमौ ॥ ८

दोय वरण छंद जात अत्युक्ता

मधु छंद (ल. ल)

हरि । हरि । ररि । ररि ॥ ९

मही छद (ल. ग)

रमा उमा । पियं वियं । रटौ उठौ । अधं दधं ॥ १०

दूहौ

गुरु लघु सार वखांणजै, फेर मगण प्रस्तार ।
आठ छंद तिण ऊपना, वे कवि नांम उचार ॥ ११

ताळी १ ससी २ प्रिय ३ रमण ४,
तवि मुणि पंचाळ ५ म्रगिंद्र ६ ।
किसन फेर मंदर ७ कमळ ८,
चवि जस राघवचंद्र ॥ १२

---

७ उक्ता—उक्था छद ।

९ अत्युक्ता—अत्युक्था छद ।

११ सार—छद का नाम । फेर—फिर । तिण—उससे । ऊपना—उत्पन्न हुए ।

१२ ताळी—शब्द मूलमे भी है अत हमने भी यहा ताली ही रखा है— परन्तु यहा पर नारी शब्द होना चाहिए । तवि—कह कर । मुणि—कह, कह कर । चवि—कह, कह कर । राघवचद्र—रामचद्र ।

सार छद (ग ल.)

रांम, चंद, भूप, वंद, क्रीत गाय धन्य थाय ॥ १३

तीन वरण छद जात मध्या छद ताळी (ग. ग. ग.)

जौ बंदै, गोबंदै, तौ देही, नां रेही ॥ १४

छद ससी (ल.ग.ग अथवा यगण)

रटौ रांमचंदं, कटौ पाप कंदं ।
करौ सुद्ध देहं, बडौ लाभ एहं ॥ १५

छद प्रिया (ग.ल ग. अथवा रगण)

रांम सीतापती, ओर वी अक्रती ।
सिंध साभाय जे, पंकज पाय जे ।
जीभ दीधी जकौ, क्यूं न गावै तकौ ॥ १६

छद रमण (ल.ल ग. अथवा सगण)

रट दासरथी, कथ बेद कथी ।
रज जे पगरी, रिख नार तरी ॥
हर चाप जिया, सत खंड किया ।
रट सौ रसना, किव तूं किसना ॥ १७

छद पचाल (ग ग ल. अथवा तगण)

स्री रांम राजेस, सेवो 'किसंनेस' ।
जोवौ जसं जेस, भाखै भुजंगेस ॥ १८

---

१३ वद—नमस्कार कर । क्रीत—कीर्ति । गाय—वर्णन कर । थाय—हो, हो कर ।
१४ गोबदै—गोविन्द । तौ—तेरी । देही—(देह) शरीर । ना—नही । रेही—रहेगी ।
१५. कदं—मूल । एह—यह ।
१६ वी—उस, उसकी । अक्रती—आकृति, वनावट । सिंध—(सिंधु) समुद्र । साभाय—स्वभाव । जे—जो । पकज—कमल । पाय—चरण । जकौ—जिसने । तकौ—उसको ।
१७ दासरथी—श्री रामचद्र भगवान । रज—धूलि । जे—जिसके । रिख—ऋषि । नार—नारी । चाप—धनुष । रसना—जिह्वा । किव—कवि ।
१८ राजेस—राजाओका राजा, सम्राट । जसं—(यश) कीर्ति । जेस—जिसका । भुजगेस—शेषनाग ।

छंद मिरगेंद्र (ल.ग ल. अथवा जगण)

नमौ रघुनाथ, सधीर समाथ ।
गणां गजगाह, दसानन दाह ॥
भभीखण आय, सु आस्रय पाय ।
व्रवी जिण रंक, लछीवर लंक ॥ १६

छंद मद (ग.ल.ल. अथवा भगण)

सीत-पती कह, ओघ अघं दह ।
देह अभै करि, रांम रदे धरि ॥
गावत पांमर, झूठ पयंपर ।
ऊंबर सौ वित, कांय गमावत ॥ २०

छंद कमल (ल.ल ल. अथवा नगण)

भगत-विछळ, नयण कमळ ।
जगत जनक, धरण-धनक ॥
सिर नमि नमि, चरण पदम ।
'किसन' रसण, रघुबर भण ॥ २१

अथ च्यार अखिर छंद जात प्रतिस्ठा

दूहौ

जीरण चरणह च्यार गुरु, धांनी रत्त पहिचांण ।
जगण निगल्ली अत गुरु, संमोहा गुरु बांण ॥ २२

---

१९ मिरगेंद्र–मृगेन्द्र । सधीर–धैर्यवान । समाथ–समर्थ । गजगाह–युद्ध । दसानन–रावण । दाह–जलाने वाला, ध्वंसक । भभीखण–विभीषण । आस्रय (आश्रय)–शरण, पनाह । पाय–प्राप्त कर । व्रवी–प्रदान की, दे दी । रंक–गरीब । लछीवर–लक्ष्मीपति । लंक–लंका ।

२० सीत-पती (सीतापति)–श्रीरामचन्द्र । ओघ–समूह । अघ–पाप । रदे–हृदय । पांमर–नीच पुरुष । ऊंबर (उम्र)–आयु । वित–धन । कांय–क्यों । गमावत–गमाता है, नाश करता है ।

२१ भगत-विछळ–भक्त वत्सल । धरण-धनक–धनुष धारण करने वाला । पदम(पद्म)–कमल । रसण–जिह्वा, जीभ । भण–कह ।

२२ [illegible] नाम है जिसके प्रस्तार भेदसे क्रमशः १६ भेद होते हैं । इन [illegible] (क [illegible] तीर्णा) धारी और निगल्लिका आदि हैं । [illegible]

छद जीरणा (जीर्णा) (म.ग)

सीता राघौ गावै सोई, जीता है जम्मारा जोई ।
चेता राघौ नां चीतारै, है सोई जम्मारा हारै ॥ २३

छंद घांनी (र ल.)

ईद चद्रमा अहेस, साधना करै महेस ।
सीतनाथ रांमचद, सीस नांम पाय वद ॥ २४

छद निगल्लिका (ज.ग)

दसानन विनासनं, असेख पाप नासन ।
सदाजनं सिहायकं, नमांमि सीत-नायकं ॥ २५

पचगुरु अखिर, पचा अखिर छंद वरणण जात प्रतिस्ठा

छंद समोहा (म.ग ग.)

सीता प्राणेसं, राजा-राजेसं ।
गावौ स्री रामं, पावौ जे धांमं ॥ २६

दूहौ

हारी तगण सु करण यक, हस भगण करणेण ।
नगण दुलघु, मिळ जमकहि, जस भण राघव जेण ॥ २७

---

२३. जीरणा (जीर्णा) इसका दूसरा नाम तीर्णा या कन्या भी है । सोई—वही । जम्मारा—जीवन । जोई—वही । चेता—चित्त । चीतारै—स्मरण करता है ।

२४. अहेस—(अहीस) शेषनाग । सीतनाथ (सीतानाथ)—श्री रामचन्द्र भगवान । नाम—नमा कर, झुका कर । पाय—चरण ।

२५ दसानन—रावण । विनासन—नाश करने वाला । असेख (असख्य)—अपार । नासनं—नाश करने वाला । सिहायकं—सहायक । सीत-नायक—सीतापति ।

नोट—मूल हस्तलिखित प्रतिमे पाच गुरु अखिर पचाखिर छद वरणण जात प्रतिष्ठा है परन्तु पचाक्षरा वृत्तिका शुद्ध नाम सुप्रतिष्ठा पचाक्षरा वृत्ति है ।

२६ प्राणेस (प्राण+ईश)—पति । राजा-राजेस—(राजाओका राजा) सम्राट । जे—जिसका । धांम—स्थान, मोक्ष ।

२७ करण (कर्ण) दो दीर्घका नाम ऽऽ । करणेण—दो दीर्घ ऽऽ से । भण—कह । जेण—जिस, जिससे ।

छंद हारी (त.ग.ग)

धांनख-धारी, पै नीत-चारी ।
सौ सील सींधू, बाताद बंधू ॥
सोहै सकाजं, जांनंक राजं ।
जामात जोई, संभार सोई ॥
रेवंस रूपं, भूपाळ भूपं ।
सारंगपाणं, जीहा जपांणं ॥
दी औध ईसं, पै बंद सीसं ।
तूं धन्य तांमं, रे सेव रांमं ॥ २८

छंद हंस (भ.ग ग)

रांम भजीजे, झौड़ तजीजे, लाभ सदेही, वेद वदेही ।
संत सिहाई, राघवराई, वौ हरि गावौ, पै उध पावौ ॥ २९

छंद जमक (न.ल ल.)

धर धनक, जग जनक ।
दहण दुख, समुद सुख ॥
अवधपत, सरस सत ।
कमळकर, समर हर ॥ ३०

---

२८ धानख-धारी—धनुषधारी । पै—चरण । नीत-चारी—नीति पर चलने वाला । सींधू—(सिन्धु) समुद्र । बाताद—(वात+अद=पवनाशन=सर्प=शेषनाग) लक्ष्मण । जानक—राजा जनक । जामात—दामाद । जोई—जो, वह । सभार—स्मरण कर । सोई—वही, उसी । रेवंस (रवि-वंश)—सूर्यवंश । सारंगपाण (सारंगपाणि)—सारंग नाम धनुष धारण करने वाले, विष्णु, श्री रामचन्द्र । जीहा—जिव्हा । जपाण—जप कर, भजन कर ।

२९ हंस—इस छंदका दूसरा नाम पंक्ति भी है । झौड—प्रपंच । तजीजे—तजिये । वदेही—कहते हैं । सिहाई—सहायक । राघवराई—श्री रामचन्द्र । पै—पद । उध—उद्धार ।

३० जमक—इस छंदका दूसरा नाम करता भी है । धनक—धनुष । जनक—पिता । दहण—जलाने वाला । समुद (समुद्र)—सागर । अवधपत्त (अयोध्यापति)—श्री रामचन्द्र । कमळकर—कमल स्वरूप हाथ । समर—युद्ध ।

अथ खडाखर छंद गायत्री

दूहौ

दोय मगण सेखा, तिलक सगण दु, रगण दोय।
वीजोहा दुजबर करण, सौ चऊरसा होय॥ ३१

छंद सेखा (म.म.)

राघौजी जौ गावौ, प्राभ्भी लच्छी पावौ।
संतां कारी साता, देखी दीनां दाता॥ ३२

छंद तिलका (स स.)

रघुनाथ रटौ, क्रत हीण कटौ।
कवसल्ल सुतं, दिननाथ दुतं॥
तन स्यांम सुभं, घण रूप लुभं।
कट पीत पटं, छज ओप छटं॥
कवि तूं 'किसना', रट सौ रसना॥ ३३

छंद विजोहा (र.र.)

नांम है रांमकौ, ओक आरांमकौ।
साच राघौ कथा, वांण दूजी व्रथा॥ ३४

---

३१ खडाकर–षडाक्षर, छ अक्षर। गायत्री–छ वर्णोंकी एक वर्ण-वृत्ति जिसके कुल ६४ भेद होते हैं। उनमेसे कुछका उल्लेख ग्रन्थकर्ताने भी किया है। दुजबर–चार लघु मात्रा। करण–दो दीर्घ मात्रा।

३२ प्राभ्भी–वहुत, अपार। लच्छी–लक्ष्मी। कारी–करने वाला। साता–सुख।

३३ क्रत–कार्य, काम। हीण–तुच्छ, भद्दा। कटौ–काट डालो। कवसल्ल–कौसल्या। सुत–पुत्र। दिननाथ–सूर्य। दुत–(द्युति) काति, दीप्ति। तन–शरीर। सुभ–शुभ। घण–(घन) वादल। लुभ–लोभाय, मान करने वाला। कट–(कटि) कमर। पीत–पीला। पट–वस्त्र। छज–शोभा, शोभा देता है। ओप–काति, दीप्ति। छट–(छटा) विजली। रसना–जिव्हा, जीभ।

३४ विजोहा–विमोहा नाम ६ वर्णंका छंद जिसके अन्य नाम जोहा, द्वियोधा, विज्जोदा भी मिलते हैं। ओक–घर। साच–सत्य। राघौ–राम। वाण–वाणी, शब्द। व्रथा–व्यर्थ।

छंद चऊरस (ल.ल ल ल ग ग)

रिख मख त्राता, दित कुळ घाता।
सु भुज निघायौ, किरण उडायौ॥
गवतम नारी, रज पय तारी।
भव जय भाखी, सुर मुनि साखी॥ ३५

दूहौ

यगण संखनारी उभय, दोय तगण मंथांण।
दुजगण प्रियगण मिळ दहूं, मदनक छंद प्रमांण॥ ३६

छंद सखनारी तथा विराज (य य)
(तथा छंद रसावळा)

रिखं साथ रांमं, गये कांम धांमं।
सुरं तीन भूपं, तहां आय नूपं॥
दसग्रीव बांणं, उभै जोर बांणं।
बियं आय तत्थं, ठयं मंच जत्थं॥
भुजं-बीस भल्लं, धनू काज हल्लं।
कसै चाप केमं, जती चीत जेमं॥
हजार दसानं, नूपं भग मांनं।
पड़े जोर पोचं, अनगेस सोचं॥

---

३५ रिख—ऋषि। मख—यज्ञ। त्राता—रक्षक। दित—दैत्य, असुर। घाता—संहारक, ध्वंशक। गवतम—गौतम। रज—धूलि। पय—चरण। भव—महादेव। भाखी—कही। साखी—साक्षी।

३६ दुजगण—चार लघु मात्राका नाम।
प्रियगण—दो लघु मात्राका नाम।

३७ सखनारी—इसका दूसरा नाम सोमराजी भी है। रिख—ऋषि। दसग्रीव—रावण। ठय—हुआ। मंच—ऊँचा बना हुआ मंडप जिस पर बैठ कर सर्वसाधारणके सामने किसी प्रकारका कार्य किया जाय। जत्थ—यूथ, झुण्ड। भुज-बीस—रावण। भल्लं—ठीक, श्रेष्ठ। धनू—धनुष। काज—लिये। हल्ल—चला। चाप—धनुष। केम—कैसे। जती—(यती) जितेन्द्रिय। चीत—चित्त, मन। जेम—जैसे। दसान—रावण। मान—प्रतिष्ठा। पोच—कम। अनगेस—महादेव। सोच—भय।

रघुवरजसप्रकास

नरव्वीर रेणं, भई भांत केण
सुणे सेख तत्थं, कहे तांम कथ्थ
मिथल्लेस राजं, कहौ केण का
नरव्वीर वांणी, महाहीण मांणी
हुवै रांम जत्थं, अखौ नां अकथ्थ
उठे रांम तांमं, जगै कोप जां
कटं पीतपट्टं, सुबंधे सुघट्ट
गतं पंचमुखं, चले चाप रुख
करं वांम चापं, उठायौ अमा
नमायौ निखंगं, गुणं वाळ अ
रमानाथ रीसं, करंते कसीस
कुडंडं अचूकं, कियौ टूक टू
सिया मात सुक्खं, विदेहं हरक्ख
नूपं जीत जांमं, वरी सीत वां
जसं औधरायं, 'किसनेस' गाय

---

२७ नरव्वीर–नरवीर। रेण–भूमि। भात–प्रकार। केण–वि
लक्ष्मण। तत्थ–वहां। ताम–उनको। कथ्थ–शब्द, व
जनक। केण–किम। काज–लिए। वांणी–शब्द, वचन
अति तुच्छ। अखौ–कहो। ना–नही। अकथ्थ–अकथनीय,
जाम–परशुराम। कट–(कटि) कमर। पीतपट्ट–पीताम्बर
गतं–प्रकार, तरह। पचमुख–सिह। रुख–ओर, तरफ।
वाया। चाप–धनुष। निखग–(निषग) तर्कश, तूणीर, गुण
रमानाथ–लक्ष्मीपति, श्री रामचन्द्र। रीस–रिस, कोप।
धनुषको मोड़ कर प्रत्यञ्चा चढ़ाई, धनुष चढ़ाया। कड़ड़–

छद मंथांणी.(त त)

सीता रमा सोय, कीजै समं कोय ।
भाखौ परीभ्रंम्म, राघौ महारंभ ॥ ३८

छंद मदनक (ल ६)

सहदत सत, दसरथ सुत ।
रविकुळमण, रघुबर भण ॥ ३९

दूहौ

दोय जगण यक चरणमें, सौ मालती सुभाय ।
कीरत जिणमें 'किसन' किव, रट रट स्री रघुराय ॥ ४०

छद मालती (ज ज)

वडौ धन वेस, म खोय मुढेस ।
चवां चित चेत, पुणौं मत प्रेत ॥
भणां धन भाग, रघुब्बर राग ॥ ४१

अथ सप्त वरण छद जात उस्णिक

दूहौ

रगण जगण पय अंत गुरु, समांनिका कह सोय ।
दुजबर भगण पयेण जिण, छंद सबासन होय ॥ ४२

छद समानिका (र ज ग)

रांम नांम गाव रे, पाय कंज धाव रे ।
जांनकीस जांण रे, वेस तं जवांण रे ॥ ४३

---

३८. रमा–लक्ष्मी । सोय–वह । सम–समान । कोय–किस । परीभ्रम्म–(परब्रह्म) परमात्मा । महारभ–(महारम्भ) जिसके आरम्भ करनेमे महान यत्न करना पडे महान, वडा ।
३९ रिवकुळमण–रविकुलमणि । भण–कह ।
४१ वडौ–महान, वडा । वेस–आयु, उम्र । म–मत । खोय–गमा, नष्ट कर । मुढेस–मूर्ख । चवा–कहता हूँ । चेत–सतर्क हो । पुणौं–कहो । भणा–कहता हूँ । राग–प्रेम अनुराग ।
४२ पय–चरण । सोय–वह । दुजवर–चार लघु मात्रा । पयेण–चरण ।
४३ पाय–चरण । कज–कमल । धाव–ध्यान कर । जानकीस–श्री रामचन्द्र भगवान । जाण–समझ । वेस–आयु, उम्र । जवाण–जवान, युवा ।

छद सबासन
(४ लभ अथवा नजल)

खर खळ खंडण, महपत मंडण ।
रसण वडापण, रघुवर जंपण ।। ४४

दूहौ
दुजबर जगण पयेण जिण, सौ करहची सुणंत ।
सात गुरु पय जास मध, सीखा छंद सुभंत ।। ४५

छंद करहची
(४ लज अथवा नसल)

लसत चख लाज, सुकर धनु साज ।
सभ्रण सगरांम, रसण भज रांम ।। ४६

छंद सिखा
(७ ग अथवा ममग)

जांणै सौ राघौ जांणै, ठांणै सौ राघौ ठांणै ।
जीवाड़ै राघौ जैनं्, तौ मारै केहौ तैनं् ।। ४७

अथ अस्टाखिर छद वरणण, जात अनुस्टप

दूहौ
आठ गुरू पद छंद जिण, विद्युन्माळा अक्ख ।
गुरु लघु क्रम अठ वरण पद, सौ मल्लिक विसक्ख ।। ४८

---

४४ छद सबासनका ठीक लक्षण नगण जगण और एक लघुसे बैठता है परन्तु कविने अपनी दक्षतासे चार लघु और एक भगण कर दिया। खर–एक राक्षसका नाम। खळ–असुर। खडण–नाश करने वाला। महपत–(महीपति) राजा। मडण–आभूषण। रसण–जिव्हा, जीभ। जपण–जपना।

४५ दुजबर–चार लघु मात्रा। पयेण–चरण। पय–चरण। करहची–इसका दूसरा नाम करहस है। जास–जिसके। मध–मध्य। सुभत–शोभा देता है।

४६ लसत–शोभा देता है, शोभा देती है। चख–(चक्षु) नेत्र, नयन। सुकर–श्रेष्ट हाथ। धनु–धनुष। सभ्रण–सुसज्जित होनेके लिए। सगराम–युद्ध। रसण–जीभ।

४७ जाणै–जानता है। ठाणै–विचारता है। ज.वाडै–जीवित रखता है। जैनू–जिसको। केहौ–कौन। तैनू–उसको।

४८ अस्टाखिर–अष्टाक्षर। अक्ख–कह। अठ–आठ। विसक्ख–विशेष।

छंद विद्युन्माला
(८ ग अथवा म म ग ग)

राघौ राजा सीता रांणी, वेदांमें धाता वाखांणी।
सौ गावै जोई है साचौ, कीटांनं गावै सौ काचौ॥ ४९

छंद मल्लिका (र ज ग ल)

आच आब जेम आय, जोव तांस छीज जाय।
कोय अत नाय कांम, रे अबूझ गाय रांम॥ ५०

छंद प्रमांणी तथा अरध नाराज तथा तुंग
(ज र ल ग)

दूहौ

लघु गुरु क्रम वरण अठ, छंद प्रमांणी कथ्थ।
दोय नगण फिर करण दे, सौ कह तुंग समथ्थ॥ ५१

छंद प्रमाणी

नमौ नरेस राघवं, दराज पाय दाघवं।
उपंत स्यांम अंगयं, सनीर अब्र ढंगयं॥
दकूळ पीत लोभयं, सुरूप बीज सोभयं।
निखग पीठ रज्जयं, सुचाप पांणि सज्जयं॥
मुखारविंद मोहनं, सुमंद हास सोहनं।
जु बांम अंग जांनकी, सु सोभना समांनकी॥

---

४९ धाता—ब्रह्मा। वाखाणी—वर्णन की, यश गायन किया। सौ—उस, वह। जोई—वही। साचौ—सच्चा। कीटानू—कीटोको, तुच्छ देवोको। काचौ—कच्चा।

५० मल्लिका प्रथम गुरु फिर लघु इस क्रमसे रखे हुए आठ वर्णका छंद। आच—हाथ। आब—पानी। जेम—जैसे। आय—आयु, उम्र। छीज जाय—नाश हो रही है, नाश होती है। कोय—कुछ। अबूझ—मूर्ख।

५१ प्रमाणी—प्रमाणिका छंद। कथ्थ—कह। करण—दो दीर्घ मात्राका नाम। समथ्थ—समर्थ।

५२ दराज—लंबा, विशाल। उपत—शोभा देता है। स्याम—श्याम। अगय—शरीर। सनीर—कांतिवान। दकूळ—वस्त्र। पीत—पीला। लोभय—लोभायमान करने वाला। बीज—बिजली। सोभय—शोभायमान। निखग, (निषङ्ग)—तर्कश। रज्जय—शोभायमान। सुचाप—सुंदर धनुष। पाणी—हाथ। सज्जय—धारण किए हुए है। मुखारविंद—कमल-स्वरूपी मुख। मोहन—मोहित करने वाला। सुमंद—सुंदर और मंद। हास—हँसी। सोहन—शोभायमान होती है। बाम—बाया।

वसंत ध्यांन मंजयं, ह्रदे महेस कंजयं ।
तवै ज क्रीत तासयं, जनंम धन्य जासयं ॥ ५२

छंद त्वग तथा तुंग (न न ग ग.)

दस सिर खळ दाहं, सुचित सुजन चाहं ।
जप जप रघुराजं, सु भुज समर लाजं ॥ ५३

दूहौ

दुजबर जगण सु अंत गुरु, कमळ छंदस कहांण ।
भगण करण फिर सगण मिळ, मांन क्रीड़ सु वखांण ॥ ५४

छंद कमल (४ ल ज ग.)

रवि सुनिभ राजही, सुकर धनु साजही ।
सुकव धर सीस जौ, अवधपुर ईस जौ ॥ ५५

छंद मांनक्रीड़ा (भ ग ग स)

स्यांम भजै तांम सुखी, दांम भजै औेर दुखी ।
सीतपती गाव सदा, राख जिकौ ध्यांन रिदा ॥ ५६

दूहौ

च्यार तुकां लघु पंचमौ, खट आठम गुरु आंण ।
दूजी चौथी सातमौ, लघु अनुस्टुप जांण ॥ ५७

---

५२ मजय–मध्यमे । ह्रदे–हृदय । महेस–महादेव । कंजय–कमल । तवै–कहता है, स्तवन करता है । क्रीत–कीर्ति, यश । तासय–उसका । जासय–जिसका ।

५४ दुजबर–चार लघु मात्राका नाम । कहाण–कहा गया । करण–दो दीर्घ मात्राका नाम ।

५५ रिव–सूर्य । सुनिभ–समान, आभा, प्रभा । राजही–शोभा देता है । साजही–शोभा देता है । अवधपुर–अयोध्या ।

५६ स्याम–स्वामी, श्याम, श्रीराम । ताम–वहुत, अधिक । सीतपती–(सीतापति) श्रीरामचद्र भगवान । जिकौ–वह, उस । रिदा–हृदय ।

नोट—जिसके चारो चरणोमे पाचवा अक्षर लघु और छठा अक्षर दीर्घ हो और सम पदोमे सातवा अक्षर भी लघु हो, इनके अलावा अन्य अक्षरो पर कोई खास नियम न हो उसे श्लोक तथा अनुस्टुप कहते है । ग्र थकारने जो अनुस्टुपका लक्षण दिया है वह सस्कृतके ग्रथोसे मेल नही खाता ।

वारता

जीके चार ही तुका पचमौ अखिर लघु आवै, अरु छठौ आठमौ गुरु आवै, दूजै, चौथै, सातमौ लघु आवै, च्यार ही तुका सौ अनुस्टुप छद छै। पैलौ तीजौ अछिरकौ गुरु लघुकौ नेम ही नही, गुरु आवै भावै लघु, पचमौ अखिर च्यार ही तुका लघु, छठौ च्यार ही तुका गुरु। दूजी चौथी तुकरा सातमौ अखिर लघु आवै सौ अनुस्टुप कै छै।

छद अनुस्टुप

राघव जपतौ प्रांणी, मूढ आळस मां करै ।
आव दरब आळप, चेता अंध सचेत रे ॥ ५८

अथ व्रहती जात नव-अखिर छद वरणण

दूहौ

महालिछमी पद मही, तीन रगण दरसंत ।
दुजबर करणह सगण दखि, सारंगिका लसत ॥ ५९

छंद महालक्षिमी (र.र र)

रांम राजै रसा रूप रे, नेतबधी वणै नूप रे ।
सीत वाळौ पती साच रे, रे मना जेणहू राच रे ॥ ६०

छद सारगिका
(४ ल ग ग ग रा अथवा न य स)

रघुबर भीली कर रे, बिलकुल सीताबर रे ।
रुचि करकधू फळ रे, जमि हसि पीधौ जळ रे ॥ ६१

---

५८ मूढ–मूर्ख । मां–मत । आव–आयु, उम्र । दरब–(द्रव्य) धन-दौलत । आळप(अल्प)–अल्प, कम । चेता–चितमे ।

५९ व्रहती–(वृहती) । नव-अखिर–नवाक्षर वृत्ति । महालिछमी–महालक्ष्मी । पद–चरण । मही–मे । दरसत–दिखाई देते है, देखे जाते है । दुजबर–चार लघु मात्राका नाम । करणह–दो दीर्घ मात्राका नाम । दखि–कह कर । लसत–शोभा देता है, शोभा देती है ।

६० महालक्षिमी–महालक्ष्मी । राजै–शोभा देता है । रसा–पृथ्वी । नेतबधी–अपना निजका झंडा या ध्वजा रखने वाला, वीर । सीत–सीता । वाळौ–का । मना–मन । जेणहू–जिसमे । राच–अनुरक्त या लीन रह ।

६१. भीली–भिल्लनी । कर–हाथ । सीताबर–सीतापति, श्रीरामचद्र । करकधू (कर्कन्धु)–बेरका फल या वृक्ष, बदरीफल । जमि–खा कर । हसि–हंस कर । पीधौ–पिया ।

दूहौ

मगण भगण फिर सगण मुणि, पायत छंद प्रकास ।
गण बे दुजबर एक गुर, रति पद सौ सुख रास ।। ६२

छंद पायत (म भ स)

तौ पै धूळी सिल तरगी, वारी सारै हि ।
ऊं ही राघौ तरणि उडै, छै य्यौ साकौ स कुळ छुडै ।।
धोवौ पै तौ कदम धरौ, कै कीरौ कै करौ ।। ६३

छंद रतिपद (८ ल ग अथवा न न स)

धरण कर धनक है, जगत सह जनक है ।
समर कळतरस है, सुज जनम सरस है ।। ६४

दूहौ

न स य बिंब तोमर सगण, यक बे जगण स कोय ।
च्यार करण गुरु एक सौ, रूपा-माळी होय ।। ६५

छंद बिंब (न स य)

मुण महण तार माथै, सुज गिरवरां समाथै ।
खळ सबळ वंस खोयौ, जग सरब तेण जोयौ ।।
जस 'किसन' ते जपीजै, लभ रसण देह लीजै ।। ६६

---

६२ मुणि—कह कर । पायत—एक छंदका नाम, इस छंदका दूसरा नाम पाईता भी है । बे—(द्वे) दो । दुजबर—चार लघु मात्राका नाम ।

६३ तौ—तेरे । पै—पैर । सिल—पत्थर । वारी—जल । ऊ ही—ऐसे ही । राघौ—श्रीरामचंद्र भगवान । तरणि—नौका, नाव । छुडै—छूट जाय । तौ—तव । कदम—चरण । क—कहता है । कीरौ—कीर, धीवर, मल्लाह । कै—या, अथवा । करद—किराया या कर देने वाला ।

६४ धरण—धारण किए हुए । कर—हाथ । धनक—धनुष । जनक—पिता । समर—स्मरण कर । कळतरस (कल्पतरु)—कल्प वृक्ष । सरस—सफल ।

६५ न स य—नगण सगण यगणका संक्षिप्त रूप । बिंब—एक छंदका नाम । यक—एक । करण—दो दीर्घ मात्राका नाम ऽऽ । रूपामाळी—एक छंदका नाम ।

६६ महण—महार्णव सागर, समुद्र । माथै—ऊपर । समाथै—समर्थ, महान । खोयौ—नाश किया । जोयौ—देखा । ते—उसका । जपीज—जप, जपना चाहिए । लभ—लाभ । रसण—जिह्वा, जीभ । देह—शरीर ।

छंद तोमर (स.ज ज)

कटि तूंण चाप कराग, खळ भंज रावण खाग।
पह सिद्ध बधण पाज, मनमोट स्री महराज॥
तिय जांनुकी भरतार, कुळमौड़ भू करतार।
जप पात तूं अठजांम, रवि वंस ओपम रांम॥ ६७

छंद रूपमाली (९ ग अथवा म.म.म.)

आपे लंकासी मौजां यूंही, तौ जेहौ आखां दाता तूंही।
थूरै जंगां के दैतां थौका, झौका झौका जी राघौ झौका॥ ६८

अथ दस अखिर छंद वरणण जात पक्ति

दूहौ

एक सगण बे जगण गुरु, सजुतका सौ गाय।
चंपक माळा भ म स गुरु, त्रिभग सारवति ठाय॥ ६९

छंद सजुतका (स.ज ज ग)

जय रांम संत सिहायकं, घण दैत आहव घायकं।
मिथळेस राजकुमारयं, उरहार प्रांण अधारयं॥

---

६७ कटि–कमर। तूण (तूंण)–तर्कश, भाथा। चाप–धनुष। कराग (कराग)–हाथमे। खळ–राक्षस। भज–नाश कर। पह–प्रभु। सिद्ध–सफल, प्रयत्न। पाज–सेतु। मनमोट–उदार। तिय–स्त्री। जानुकी–सीता। कुळमोड–कुलश्रेष्ठ। भू–भूमि। पात (पात्र)–कवि। अठजाम–अष्ठ याम, आठो पहर। रिव (रवि)–सूर्य। ओपम–शोभा, काति।

६८ आपे–दे दी, प्रदान कर दी, अर्पण कर दी। लकासी–लकाके समान। मौजा–दान। यूही–ऐसे ही। तौ–तेरे। जेहौ–जैसा। आखा–कहता हू। दाता–दातार। थूरै–नाश करता है, सहार करता है। दैता–दैत्यो। जगा–युद्धोमे। थौका–समूह। झौका–धन्य-धन्य।

६९. सजुतका–एक छदका नाम, इसका दूसरा नाम सयुत भी है। भ म स–भगण, मगण, मगणका सक्षिप्त रूप। त्रिभग–तीन भगण और एक गुरुका सक्षिप्त नाम। सारवति–एक छदका नाम।

७० सिहायक–सहायक। घण–बहुत, अधिक। दैत–दैत्य। आहव–युद्ध। घायक–नाश करने वाला। मिथळेस–राजा जनक। राजकुमारय- राजकुमारी। अधारय–आधार।

तन कंद स्यांम सुभावनं, पटपीत विद्युत पावनं।
'किसनेस' पात उधारयं, धनु बांण पांणसु धारयं ॥ ७०

छंद चंपकमाळा (भ म स.ग)

गोह सरीखा पांमर गाऊं, ब्याध कबंधा ग्रीध बताऊं।
नै सट पापी गौतम नारी, ते रज पावां भेटत तारी ॥
देव सदा दीनां दुख दाघौ, रे भज प्रांणी भूपत राघौ ॥ ७१

छंद सारवती (भ भ.भ ग)

चाप करां नृप रांम चढ़े, मांझ रजी तद भांण मढ़े।
खोहण के असुरांण खपे, पंख सिवा पळ खाय त्रपे ॥
रे नित सौ जन भीड़ रहै, कूंण जनां दुख देण कहै ॥ ७२

दूहौ

तगण यगण भगणह गुरु, सुखमा छंद सुभाय।
नगण जगण नगणह गुरु, अम्रित गत यण भाय ॥ ७३

---

७० तन–शरीर। कद–बादल। सुभावन–सुन्दर। पटपीत–पीताम्बर। विद्युत–बिजली। पावन–पवित्र। धनु–धनुष। पाणसु–हाथमे। धारय–धारण किए हुए।

७१ गोह (गुह)–प्रसिद्ध राम-भक्त निषादराज जो शृगवेरपुरका स्वामी था। सरीखा–समान, सदृश। पामर–नीच। ब्याध (विराध)–एक राक्षसका नाम जिसको दण्डकारण्यमे लक्ष्मणने मारा था। कबधा–एक दानव जो देवीका पुत्र था, इसका मुंह इसके पेटमे था। कहते है कि इन्द्रने इसको एक बार वज्रसे मारा इससे शिर और पैर पेटमे घुस गये थे। इसे पूर्वजन्मका विश्वासु गधर्व लिखा है। रामचद्रजीसे इसका दण्डकारण्यमे युद्ध हुआ था। रामचद्रजीने इसका हाथ काट कर इसको जीवित भूमिमे गाड दिया। ग्रीध–जटायु नामका पक्षी। नै–और। सट–मूर्ख। रज–धूलि। पावा–पैरो। भेटत–स्पर्श करते ही। तारी–उद्धार कर दिया। दाघौ–जलाया, जलाने वाला। भूपत (भूपति)–राजा। राघौ–श्री रामचद्र।

७२ चाप–धनुष। करा–हाथो। माझ–मध्य, मे। रजी–धूलि। तद–तब। भाण–सूर्य। मढे–आच्छादित हो गया। खोहण (अक्षौहिनी)–सेना। असुराण–असुर, राक्षस। खपे–नाश हो गये। पख–पक्षी। सिवा (शिवा)–शृगाली। पळ–आमिष। त्रपे–सतुष्ठित हुए, अघाये। सौ–वह। भीड–सहाय, मदद। कूण–कौन। जना–भक्तो। देण–देनेको।

७३ सुभाय–अच्छा लगे। यण–इस। भाय–प्रकार।

छद सुखमा (त य भ.ग.)

नागेस भजै राघौ नत ही, साधार धरा भासै सत ही।
जे गाव कवि तूं धन्य जथा,क्यूं और बखांणै आळ कथा ॥ ७४

छद अमित गति (न ज न ग)

दसरथ राजकँवर है, सुभ कर धांनख सर है।
रघुबर सौ किव रट रे, मळ तनचा सब मट रे ॥ ७५

अथ एकादस अखिर छद वरणण, जात त्रिस्टूप

दूहौ

तीन भगण दौ गुरु जठै, दोधक छंद स दाख।
दोय लघु त्रय सगण पद, सौ सुमुखी अहि साख ॥ ७६

छंद दोधक (भ भ.भ ग ग)

राघव ठाकुर है सिर ज्यांरै, तौ किसड़ी घर ऊंणत त्यांरै।
की जिण राखस सेव करी सी,वेख भभीखण लंक वरी सी ॥ ७७

छद समुखी (ल ल स स म अथवा न ज ज ल ग)

जय जय राघव दैतजई, महपत मूरत साचमई।
हरण अनेक विघंन हरी, कमळ करं प्रतपाळ करी ॥ ७८

---

७४ नागेस–शेष नाग। नत–नित्य। साधार–आधार, सहारा। धरा–पृथ्वी। भासै–मालूम होता है, शोभा देता है। सत–सत्य। जे–अगर। जथा (यथा)–कथा, वृत्तान्त। क्यू–क्यो। बखाणै–वर्णन करता है। आळ–व्यर्थ, असत्य।

७५ कर–हाथ। धानख–धनुष। सर–वाण। सौ–वह, उस। किव–कवि। मळ–मैल। तनचा–शरीरका। मट–मिटा दे।

७६ जठै–जहा। स–वह। दाख–कह। सौ–वह। अहि–शेषनाग। साख–साक्षी।

७७ ठाकुर–स्वामी। ज्यारै–जिनके। तौ–तब। किसडी–कैसी। ऊणत–अभाव, कमी। त्यारै–उनके। राखस–राक्षस। वेख–देख। भभीखण–विभीषण। वरी–प्रदान की।

७८ दैतजई–दैत्योको (असुरोको) जीतने वाला। महपत (महिपति)–राजा। मूरत–मूर्ति। साचमई–सत्यमयी। कर–हाथ। प्रतपाळ–रक्षा। करी–हाथी अथवा की।

दूहौ

दोय करण फिर रगण दौ, अंत एक गुरु आंण।
सुणियौ खग कहियौ सरप, छंद सालिनो जांण ॥ ७९

छंद सालिनी

(४ ग र.र ग अथवा म त त ग ग)

गावै राघौ सोभणौ पात गाढ़ौ।
आखै वांणी यूं 'किसन्नेस' आढ़ौ ॥
ते भूला राघौ, विगूतौ भवि त्यांरौ।
जांणैसी पीछै वडौ भाग ज्यांरौ ॥ ८०

दूहौ

दौ दुजबर अंतह सगण, मदनक छंद मुणंत।
गुरु लघु क्रम ग्यारह वरण, सौ सेनका सुणंत ॥ ८१

छंद मदनक (८ ल स. अथवा न न न ल ग)

हरण कसट जन हर है।
विमळ बदन रघुबर है ॥
सरब सगुण सह सरसै।
दनुज दहण भुज दरसै ॥ ८२

---

७९ करण–दो दीर्घ मात्राका नाम ऽऽ। आण–ला कर। खग–गरुड। सरप–शेषनाग।

८० राघौ–श्री रामचद्र। सोभणौ–शोभा देने वाला। अथवा–सो = वह, भणौ = कहो। पात (पात्र)–कवि। गाढ़ौ–दृढ, गभीर। आखै–कहता है। आढौ–आढा गोत्रका चारण। ते–वे। विगूतौ–वरवाद हुआ, व्यर्थ गया। भवि (भव)–जन्म या ससार। त्यारौ–उनका। जाणैसी–जानेंगे। पीछै–पश्चात्। वडौ–महान। भाग–भाग्य। ज्यारौ–जिनका।

८१ दुजवर–चार लघु मात्रा।।।। मुणत–कहा जाता है। सुणत–सुना जाता है।

८२ विमळ–पवित्र। बदन–मुख या शरीर। दनुज–राक्षस। दहण–नाश करनेको। दरसै–दिखाई देते हैं।

छंद सैनिका

(ग ल ग ल ग ल ग ल ग ल ग अथवा र ज र ल ग)

माथ पंच दूरा जुद्ध मारणं ।
धांनुखं सरेरा पांरा धाररणं ॥
बार बार रांम क्रीत बोल रे ।
ताहरौ वडौ कवेस तौल रे ॥ ८३

दूहौ

मालतिका ग्यारह गुरु, बि तगरा ज कररा जांरा ।
छंद इंद्र वज्रा छजै, वड कवि रांम वखांरा ॥ ८४

छद मालतिका

(११ ग. अथवा म म म ग ग)

राघौ रूड़ौ स्री सीता स्वांमी राजै ।
भारांथां लाखां दैतां थौका भांजै ॥
जैनूं जीहा रातौ-दीहा जी जंपौ ।
कांतौ थे कीनासाहूंता ही कंपौ ॥ ८५

छद इंद्र वज्र (त त ज ग ग)

गोपाळ गोव्यंद खगेस-गांमी ।
नागेस सज्या क्रत सैन नांमी ॥

---

८३ माथ (मस्तक)–शीश। दूण–दुगना। मारण–मारने वाला। धानुख–धनुष। सरेण–वारा, वाराणसे। पाण (पारिग)–हाथ। धारण–धाररा करने वाला। क्रीत(कीर्ति)–यश। ताहरौ–तेरा। कवेस (कवीश)–महाकवि। तौल–मान, प्रतिष्ठा।

८४. वि (द्वे)–दो। ज–जगरा। करण–दो गुरु मात्रा ऽऽ। छजै–शोभा देता है। बखाण–वर्णन कर।

८५ रूडौ–बढ़िया। राजै–शोभा देता है। भाराथा–युद्धों। थौका–समूह। भाजै–नाश करता है, तोड़ता है। जैनू–जिसको। जीहा–जीभ। रातौ-दीहा–रातदिन। जी–जीव, प्रारा। जपौ–याद करो, स्मरण करो। कातौ–पति। कीनासहता–यमराजसे। कपौ–कम्पायमान है।

८६ गोव्यद–गोविंद। खगेस-गामी–गरुड पर सवारी करने वाला, गरुडके वाहनसे गमन करने वाला। नागेस–शेषनाग। सज्या–शय्या। क्रत–करने वाला। सैन–शयन। नामी–नाम वाला।

है जग वागां दस-माथ हंता ।
माहेस वाछ्ळ्य सुकंठ मीता ॥ ८६

दूहौ

जगण तगण जगण करण, छंदस वज्रउपेंद ।
वज्र इद ऊपयंद पद, मिळ उपजाती छद ॥ ८७

उपेंद्रवज्रा (ज त.ज.ग.ग.)

अरेस जेतार जुधां अथाहं ।
बिसाळ ऊरंसु अजांनबाहं ॥
धनेस देवेस दुजेस ध्यावै ।
गुणीस राघौ नित क्यूं न गावै ॥ ८८

छद उपजात

स्री जांनुकीनाथ सदा सराहौ ।
चितस बीजौ भजवा न चाहौ ॥

---

८६ जगवागा—युद्ध होने पर । दस-माथ—रावण । हता—मारने वाला । माहेस—शिव । वाछ्ळ्य—वात्सल्य । सुकठ—सुग्रीव । मीता—मित्र ।

८७. वज्रउपेंद—उपेन्द्रवज्रा नामक छद । ऊपयद—उपेन्द्रवज्रा छद । उपजाती (उपजाति)—इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्राके योगसे बनने वाला छद कहलाता है । इस प्रकारके छद सस्कृत साहित्यमे १४ है जो इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्राके योगसे ही बनते है यथा कीर्ति, वाणी माला, शाला, हसी, माया, जाया, बाला, आर्द्रा, भद्रा, प्रेमा, रामा, ऋद्धि और सिद्धि ।

नोट—कही-कही इद्रवश और वशस्थ तथा कही-कही सार्दूल विक्रीडित और स्रग्धरा छदके योगसे बनने वाले छदोकी सज्ञा भी उपजाति मानी गई ।

८८ अरेस (अरीश)—महाशत्रु । जेतार—जीतने वाला । अथाह—अपार । ऊरसु—उरसे, हृदयसे, वक्षस्थलसे । अजानबाह—आजानबाहु । धनेस—कुवेर । देवेस—इन्द्र । दुजेस(द्विजेश)—बडे-बडे ऋषि, नारद, व्यासादि । गुणीस (गुणीश)—महाकवि । राघौ—श्रीरामचद्र । क्यू—क्यो ? न—नही ।

८९. उपजात—उपजाति । सदा—नित्य । सराहौ—कीर्तन करो, यशगान करो । चितस—चितसे । बीजौ—दूसरा । भजवा—भजन करनेको । चाहौ—इच्छाकरो ।

दीनांदयावंछित मौज दाता ।
भला गुणां जोग अहेस भ्राता ॥ ८६

दूहौ

रगण नगण रगणह ध्वजा, रथोद्धिता सौ होय ।
रगण नगण भगणह करण, जिकौ स्वागता जोय ॥ ६०

छंद रथोद्धिता (र न र.ल.ग)

गौर स्यांम सिय रांम गाव रे, पात तूं सपद ऊंच पाव रे ।
नेक पाप हर जेण नांम रे, राज राज जगमौड़ रांम रे ॥ ६१

छंद स्वागता (र न भ ग ग)

रांम नांम सर पाथर तारे, आप पांण कपि सेन उतारे ।
जेण नांम सिव संकर जापै, मांझ कासि नर मोख समापै ॥ ६२

अथ द्वादसाखिर छंद जात जगती

च्यार यगण पदप्रत्त चवां, छंद भुजंगप्रयात ।
लिखमीधर पदप्रत सुलछ, रगण च्यार दरसात ॥ ६३

छंद भुजंगप्रियात

निमो रांम जेणं तरी भ्रम्ह नारी ।
यूंहीं ताड़का मार बांणां उधारी ॥

---

८६ दीनांदयावछित—दीनो पर दया करनेकी इच्छा वाला अथवा हे दीनो, जो तुम अपने पर दया की इच्छा करते हो। मौज—दान। दाता—देने वाला। भला—श्रेष्ठ। जोग—योग्य। अहेस (अहीस)—लक्ष्मण।

६० ध्वजा—एक लघु और एक दीर्घ मात्राका नाम। जिकौ—वह।

६१ रथोद्धिता—रथोद्धता नामक छंद। सिय—सीता। पात (पात्र)—कवि। नेक—थोडा, किंचित। जेण—जिसका। जगमौड—संसार-शिरोमणि।

६२ सर—सागर, समुद्र। पाथर—पत्थर। पाण—शक्ति बल, भुजा, हाथ। सेन—सेना। जापै—जपते हैं। मांझ—मध्यमे। मोख—मोक्ष। समापै—देते हैं।

६३ द्वादसाखिर छंद—द्वादशाक्षरावृत्ति। पदप्रत—प्रति पद या चरण। चवां—कहता हूं।

६४ भ्रम्ह—ब्राह्मण, यहां गौतम ऋषिसे अभिप्राय है जिनकी स्त्रीका नाम अहल्या था। यूंहीं—ऐसे ही।

रघुवरजसप्रकाश

सुवाहं कियौ खंड खंडं स
निमौ च्यारसै कोस मारीच
करी ज्याग स्याहाय मूनेस
दखे जै जया बोल आंनेक
चितं चाय सीता सपीता
कियौ चाप भूतेसरौ टूक
'किसन्नेस' आखै अरज्जी क
बडौ आसरौ रांम पादार

छद लक्ष्मीधर (र.र.र.र)

रांम वाळी रजा सीस ज्यां
कं्ण त्यांनै हुवा हीण मांण
वीसरै जीवहूं जेह सी
न्यायहीण मदां हाय तेता

दूहौ

च्यार स तोटक च्यार तह, कह सा
च्यार ज मुत्तीय दांम चव, च्यार भ

---

६४. सरखे–वाणसे । च्यारसै–चार सौ । नखे–फेक
स्याहाय–सहायता । मूनेस (मुनीश)–विश्वामित्र मु
कहते हैं। जै–जय । जया–जय । आनेक–अनेक ।
चाह कर । चाप–धनुष । भूतेसरौ–महादेवका । टूक–टू
अरज्जी–प्रार्थना । कविंद (कवीन्द्र)–महाकवि । आसरौ
(पादारविंद) कमलस्वरूपी चरण ।

६५ लक्ष्मीधर–इस छदके अन्य नाम कामिनीमोहन, लक्ष्मी

छंद तोटक (स स.स.स.)

रघुराज सिहायक संत रहै ।
कथ भेद जिकौ अज वेद कहै ॥
दसमाथ बिभंज भराथ दखं ।
पहनाथ समाथ अनाथ पखं ॥
पत-सीत प्रवीत सनीत पढं ।
दळ जीत लखां रिण जीत दढं ॥
रसना 'किसना' जिण क्रीत रटौ ।
दुख प्राचत ओघ अमोघ दटौ ॥ ९७

छंद सारंग (त त त त)

राजेस स्रीरांम जे नैण राजीव ।
पातां अभै दांनकी जांनकी पीव ॥
औधेस आछेहके संत आधार ।
सारंग-पांणी 'किसन्नेस' साधार ॥ ९८

छंद मोतीदाम (ज ज.ज.ज)

दिपै रघुनायक दीनदयाळ, पुणां खळ घायक सेवग-पाळ ।
चढे दसमाथ विभंजण वंक, लछीवर देण भभीखण लंक ॥ ९९

---

९७ सिहायक—सहायक । जिकौ—जिस, वह । अज—ब्रह्मा । दसमाथ—रावण । बिभंज—नाश कर । भराथ (भारत)—युद्ध । पहनाथ (प्रभुनाथ)—ईश्वर । समाथ—समर्थ । पख—पक्ष, मदद । पत-सीत (सीतापति)—श्रीरामचंद्र । प्रवीत—पवित्र । दळ—सेना । रिण—युद्ध । रसना—जीभ । जिण—जिसकी । क्रीत—कीर्ति, यश । प्राचत—पाप, दुष्कर्म । ओघ—समूह । अमोघ—निष्फल न होने वाला, अव्यर्थ । दटौ—नाश करो ।

९८ राजेस (राजेस)—सम्राट । जे—जिसके । राजीव—कमल । पाता—कवियो । पीव—पति । औधेस—अयोध्या-नरेश, श्रीरामचंद्र । आछेह—अपार । सारंग-पाणी (सारंग-पाणि)—सारंग नामक धनुषको धारण करने वाला, विष्णु, श्रीरामचंद्र । साधार—रक्षक ।

९९ दिपै—शोभायमान होते हैं । पुणा—कहता हू । खळ—असुर, राक्षस । घायक—विध्वंशक, नाश करने वाला । सेवग-पाळ—सेवक या भक्तकी रक्षा करने वाला । दसमाथ—रावण । विभंजण—नाश करनेको, मिटानेको । वंक—वक्रता, गर्व । लछीवर—लक्ष्मीपति, श्रीरामचंद्र । देण—देनेको । भभीखण—विभीषण । लंक—लंका ।

छंद मोदक (भ भ भ.भ)

नायक है जग रांम नरेसर, ते कर लायक देवतरेसर ।
सीत तणौ पत संत सधारण, चाव करे भज तूं धिन चारण ॥ १००

दूहौ

च्यार नगण पद अेकमें, तरळनयण भण तास ।
नगण भगण बे सगण निज, सौ सुंदरी सुभास ॥ १०१

छद तरलनयण (न न न न.)

विकट कसट हर रघुबर ।
सझत सुकर निज धनु सर ॥
भगतविछळ जिण ब्रद भण ।
सुकवि 'किसन' तिण भज सुण ॥ १०२

छद सुदरी (न भ भ स.)

समरमें दसकंठ जिण सजे, पह वडा हर चाप दळ पजे ।
मनव ते धन जांण सुध मता, रघुपति जस जेस नित रता ॥ १०३

चौपई

सगण जगण सगणह बे पच्छ ।
सौ प्रमिताखिर छंद सुलच्छ ॥ १०४

---

१०० नरेसर–नरेश्वर । देवतरेसर (देवतरु)–कल्प-वृक्ष । सीत–सीता । तणौ–का । पत–पति । सधारण–रक्षक, सहायक । चाव–उत्साह, उमग, इच्छा । धिन–धन्य ।

१०१ भण–कह । तास–उसको । सौ–वह ।

१०३ समरमे–युद्धमे । दसकठ–रावण । जिण–जिस । सजे–सहारे, मारे । पह–प्रभु, राजा । वडा–महा । हर–महादेव । चाप–धनुष । दळ–समूह । पजे–पराजित किये, सजा दी । मनव–मानव, मनुष्य । धन–धन्य । जांण–समझ । मता (मति)–बुद्धि । जेस–जो । रता–अनुरक्त, लीन ।

१०४ बे (द्वे)–दो । पच्छ–पश्चात । सौ–वह । प्रमिताखिर–प्रमितासरा नामक छद ।

छद प्रमिताखिरा (स ज स स.)

लिछमीस रांम अरा-भंग लखौ ।
परमेस पाळ जन दीन पखौ ॥
हर पाप ताप दुख-ताप-हरी ।
तिरा पाय रेरा रिख नार तरी ॥ १०५

अथ त्रयोदस अखिर छद वरणण जात अतिजगति

दूहौ

पंच गुरू सगराह भगरा, कररासु माया जांरा ।
तोटकमें गुरु एक वध, तारक छंद वखांरा ॥ १०६

छंद माया

(५ ग.स भ.ग ग. अथवा म त य स ग.)

राघौ राघौ जंपरारी, ढील म राखै ।
देवा दैतां मांनव नागा, सह दाखै ॥
सीतारौ सांमी, जन पाळै ।
सतधारी थासी आ देही धन गायां जरा थारी ॥ १०७

छंद तारक (स स स स ग)

घरास्यांम सरूप अनूप घराौ रे ।
तड़ता पळकौ पटपीततराौ रे ॥

---

१०५. **अण-भंग**—न भागने वाला, अखड, वीर । **लखौ**—समझो । **परमेस**—परमेश्वर । **पाळ**—रक्षक । **जन**—भक्त । **पखौ**—पक्ष, मदद । **दुख-ताप-हरी**—दु ख और ताप मिटाने वाला । **तिण**—उस । **पाय**—चरण । **रेण**—धूलि । **रिख** (ऋषि)—गौतम । **तरी**—उद्धरी, उद्धार हुआ ।

१०६. **त्रयोदस अखिर छद**—त्रयोदशाक्षरा वृत्ति । **करणसु**—दो दीर्घ मात्रासे । **वखाण**—वर्णन कर ।

१०७. **राघौ**—श्री रामचद्र । **जपणरी**—जपनेकी । **ढील**—विलब, देरी । **म**—मत, नही । **देवा**—देवता । **दैंता**—दैत्यो । **मानव**—मनुष्य । **नागा**—नाग, सर्प । **सह**—सब । **दाखै**—कहते हैं । **सामी**—स्वामी । **सतधारी**—सत्य या शक्तिको धारण करने वाला । **थासी**—होगी । **आ**—यह । **देही**—शरीर । **धन**—धन्य-धन्य । **गाया**—गाने पर । **जण**—जिसको । **थारी**—तेरी ।

१०८ **तडता** (तडिता)—बिजली । **पळकौ**—चमक । **पटपीततणौ**—पीताम्बरका ।

धनु सायक पांण सुभायक धारै ।
रघुनायक लायक संतसु तारै ॥ १०८

दूहौ

छंद भुजंगी पर लघू, अेक वधै सौ कंद ।
पंकावळि यक गुरु छ लघु, बि भगण कहत फुणिंद ॥ १०९

छंद कंद (य य य य ल)

नरांनाथ सीतापती रांम जै नांम ।
सत्रां भंज लाखां भुजां पांण संग्रांम ॥
महाबाह बांणावळी कूंण जे मीढ ।
अखां रांम छै रांम राजेस ही ईढ ॥ ११०

छंद पंकावळी (ग छ ल भ भ)

धांनुख-धर कर पंकज धारत ।
सेवग अगणत काज सुधारत ॥
जांमण मरणतणौ भय भंजण ।
राघव समर सिया मन रंजण ॥ १११

दूहौ

सम पद दुज सगण जगण, करण अंत निरधार ।
दुज भगण रगण यगण, विसम अजास विचार ॥ ११२

---

१०८ घनु–धनुष । सायक–बाण । पांण (पाणि)–हाथ । सुभायक–शोभा देने वाला, सुदर । तारै–उद्धार करते हैं ।

१०९ बि (द्वि)–दो । फुणिंद–शेषनाग ।

११०. भज–नाश करता है, नाश करने वाला । महाबाह–महाबाहु, बडी-बडी भुजाओ वाला, समर्थ । बांणावळी–धनुर्विद्यामे प्रवीण । कूण–कौन । जे–जिसके । मीढ–समान, समानता । अखा–कहता हूँ । ईढ–प्रतिस्पर्द्धा ।

१११ धानुख-धर–धनुषधारी । कर–हाथ । पकज–कमल । अगणत (अगणित)–अपार । काज–कार्य । सुधारत–सुधारता है । जामण–जन्म । भजण–मिटाने वाला । समर–युद्ध । सिया–सीता । रंजण–प्रसन्न करने वाला ।

११२ दुज–चार लघु मात्राका नाम । करण–दो दीर्घ मात्राका नाम ।

छंद अजास
(विषम-पद ४ ल स ज ग ग , सम-पद ४ ल.भ र.य)

गढ कनक जिसा अगंज गाहै, सुर नर नाग महेस सा सराहै ।
कुळ-तरण जनां सिहायकारी, धनुसर पांण रहै सधीरधारी ॥ ११३

अथ चतुरदस अखिर छंद वरणण, जात सक्करी

दूहौ

कहि वसंत तिलका त,भ ज दोय करण जिण अंत ।
आद अंत गुरु मध्य लघु, बारह चक्र लसंत ॥ ११४

छंद वसंततिलका (त भ ज.ज ग ग)

सारंगपांण जय रांम तिलोकस्वांमी ।
भूपाळ-भूप भुजडंड प्रचंड भांमी ॥

---

११३ कनक–स्वर्ण, सोना । अगज–जिससे कोई जीत न सके, अजयी । गाहै–नष्ट कर देता है, ध्वश कर देता है । सुर–देवता । महेस–महादेव । सराहै–प्रशसा करते हैं, स्तुति करते है । कुळ-तरण (तरकुल)–सूर्यवशी । सिहायकारी–सहायता करने वाला । सधीरधारी–धैर्यवान ।

नोट--छद अजासके जो लक्षण ग्रथकर्त्ताने दोहेमे दिये है उनसे उदाहरण नही मिलता ।

११४. चतुरदस अखिर छद–चतुर्दशाक्षरावृत्ति । सक्करी–शक्कर या शक्वरी । चौदह अक्षरो वाले छदोकी सज्ञाके अतर्गत निम्नलिखित वर्णवृत्त सस्कृत साहित्यमे है, उनमेसे ग्रथ-कर्त्ताने सिर्फ उपर्युक्त दो वर्णवृत्तोका ही उल्लेख किया है । वे वर्णवृत्त ये है—वसत-तिलका, असबाधा,अपराजिता,प्रहणकलिका, वासती, मजरी, कुटिल, इन्दुवदना, चक्र, नादीमुख, लाली तथा अनद । उपर्युक्त वर्ण वृत्तोमे वसततिलकाको कवि-समाजमे अधिक महत्त्व दिया गया है । वैसे प्रस्तार-भेदसे चौदह अक्षरो वाले छदोकी कुल सख्या १६३८४ होती है । त–तगण । भ–भगण । ज–जगण । दोय–दो । करण–दो दीर्घ मात्राका नाम । ग्रथकर्त्ताने चक्रछदका लक्षण लिखते समय अपनी प्रखर बुद्धिसे सिर्फ यह लिख दिया कि जिसके आदि और अतमे दीर्घ वर्ण और मध्यमे बारह लघु वरण हो सो भी अति सुदर लक्षण है । इस छदमे सात-सात वर्ण पर यति होती है ।

११५ सारग-पाण (सारगपाणि)–विष्णु, श्री रामचन्द्र भगवान । तिलोकस्वामी–त्रिलोक-पति । भूपाळ-भूप–राजाओका राजा, सम्राट । भामी–बलैया, बलैया लेता हूँ । न्यौछावर होता हूँ ।

भूतेस चाप छिनमेक चढाय भंज्यौ।
राजाधिराज सिय मांनस कंज रंज्यौ॥ ११५

छंद चक्र

(ग., १२ ल ,ग अथवा भ न.न.न ल ग) ७,७

रांम भजन विण अहळ जनम रे।
नांम समर पय सिर नित नम रे॥
मांस असत तन चरमसु मळ रे।
स्रीवर रट रट रसण सफळ रे॥ ११६

अथ पनरह अखर छंद वरणण, जात अतिसक्वरी

दूहौ

गुरु लघु क्रम आखिर पनर, सौ चांमर सुखकंद।
बि नगण २ करण १ बि रगण २ गुरु कहै सालिनी छंद॥ ११७

छंद चांमर (र ज र ज.र)

कौड़ दैत भंज संज, पांण चाप सायकं।
नागराज भ्रात बंस, मीत सीतनायकं॥
देवराट कीत खाट, नाट बोल ना दखं।
रे नरेस राघवेस, गावजै भजै रिखं॥ ११८

---

११५ भूतेस–महादेव, शिव। चाप–धनुष। छिनमेक–एक क्षण। भज्यौ–तोडा। सिय–सीता। मानस (मानस)–चित्त, हृदय, मन। कज–कमल। रज्यौ–प्रसन्न किया।

११६ अहळ (अफल)–निष्फल, व्यर्थ। समर–स्मरण कर। पय–चरण। नित–नित्य, सदैव। असत (अस्थि)–हड्डी। चरमसु–चमडी। मळ–मैल, विष्टा। स्रीवर (श्रीवर)–विष्णु, श्रीरामचद्र। रसण (रसना)–जिह्वा, जीभ।

११७ पनरह अखर छद–पचदशाक्षर वृत्ति। पन्द्रह वर्णोंके वृत्तोकी सज्ञा अतिशक्वरी कही जाती है जिसके अतर्गत कुल वृत्त प्रस्तार भेदसे ३२७६८ तक हो सकते हैं।

११८ कौड (कोटि)–करोड। दैत (दैत्य)–असुर। भज–नाश कर, सहार कर। सज–अस्त्र, शस्त्र, उपकरण। चाप–धनुष। सायकं–बाण। नागराज–शेषनाग, लक्ष्मण। भ्रात–भाई। मीत (मित्र)–सूर्य। सीतनायक–सीतापति, श्रीरामचद्र। देवराट–इन्द्र। कीत–यश। खाट–प्राप्त कर। नाट–नही। बोल–वचन। ना–नही। दखं–कहे कहते है। नरेस (नरेश)–यहा यह शब्द नरके लिये प्रयोग हुआ है, राजा। राघवेस (राघवेश)–श्रीरामचद्र। भजै–भजते है। रिख–ऋषि।

छंद सालिनी (न न ग र र ग)

महण मथण राघौ वाग संसार माळी ।
तिपुर घड़ण भंजै वाजन्तां हेक ताळी ॥
अहनिस भज तैनं आव संसार ओछी ।
छ-दरस यम आखै, जे बिना सब्ब छोछी ॥ ११९

दूहौ

सगण पंच भमरावळी, स ज दौ भ रह विवेक ।
सुकळ हंस चवदह लघू, रभस गुरु पद एक ॥ १२०

छद भ्रमरावली (स.स स.स.स)

कर साभ्रत रांम सुचाप सरं कळहं ।
दुगमं खळ सीस-दुपंच जिसास दहं ॥
रघुनायक धारत मौज सुचित्त रूड़ी ।
गढ लंक जिसा दत आपत हेक घड़ी ॥ १२१

छंद कलहस (स ज.ज भ र.)

रघुनाथ भंज दुपंच-माथ अभंग रे ।
जयवांन भूप अमांन आसुर जंग रे ॥

---

११९ महण (महार्णव)—सागर, समुद्र । मथण—मथन करने वाला । तिपुर—त्रिपुर, त्रिलोक । घडण—रचना, घडना, घडता है । भजै—नाश कर देता है । बाजता—बजने पर । हेक—एक । अहनिस—रात-दिन । तैनू—उसको । आव—आयु । ओछी—कम । छ-दरस (पडदर्शन)—न्याय मीमांसादि हिंदुओके पडदर्शन, या छ शास्त्र । यम—ऐसे । आखै—कहते हैं । जे—जिस । सब्ब—सर्व, सब । छोछी—व्यर्थ, निष्फल ।

१२० स—सगण । ज—जगण । भ—भगण । रह—रगण ।

१२१. कर—हाथ । साभ्रत—धारण करते है । सुचाप—सुदर धनुष । सर—बाण । कळह—युद्ध । दुगम—जबरदस्त, महान । खळ—असुर । सीस-दुपच—रावण । जिसास—जैसे । दह—नाश नाश करने वाला । सुचित्त—उदार चित्त । रूडी—बढिया, श्रेष्ठ । जिसा—जैसा । दत—दान । आपत—देते हैं, दे दिया । हेक—एक ।

१२२ भज—नाश करने वाला । दुपच-माथ—रावण । अभग—न भागने वाला । अमान—अपार । आसुर (असुर)—राक्षस । जग—युद्ध ।

जळधार तार गिरंद बंधरा पाज रे।
लिछमीस दास अनाथ राखरा लाज रे॥
मछराळ देव दयाळ ग्रीवसु म्यत रे।
'किसनेस' गाव सचाव सीत-कंत रे॥ १२२

छंद रभस

(१४ ल ग. अथवा न न न स.) ६,६

रविकुळ मुकट अघट रघुबर है।
सुरतर सर भर जिकरा सुकर है॥
हररा सकळ अघ कररा अमर है।
चव जस 'किसन' चवत थिर चर है॥ १२३

अथ सोळै अखिर छंद वरणण, जात अस्टि

दूहौ

भ ज स न र ह पनरह अखिर, निसपाळिका सु गाव।
लघु गुरु क्रम सोळह अखिर, सौ नाराज सुभाव॥ १२४

छंद निसपालिका (भ ज स.न र)

रांम सरखा नरप कोय यळ ना रजै।
छात्रपत रांम सम रांम करगां छजै॥

---

१२२ लिछमीस (लक्ष्मीश)–लक्ष्मीपति, विष्णु, श्रीरामचंद्र। दास–भक्त। मछराळ (मत्स्यावतार)–महान, जबरदस्त। ग्रीवसु–सुग्रीव। म्यत (मित्र)–मित्र। सचाव–उत्साहपूर्वक, उमंगपूर्वक। सीत-कंत (सीताकांत)–सीतापति, श्रीरामचंद्र भगवान।

१२३ रविकुल (रविकुल)–सूर्यवंश या सूर्यवंशी। अघट–जिसके समान दूसरा न हो, अद्वितीय। सुरतर–कल्पवृक्ष। सर-भर–समान। जिकण–जिसका। सुकर–श्रेष्ठ हाथ। सकळ–सब। अघ–पाप। चव–कह। चवत–कहते हैं। थिर–स्थावर, अटल। चर–जंगम।

नोट—रभस छंदका दूसरा नाम शशिकला भी है।

१२४ सोळै अखिर छंद–षोडशाक्षरावृत्ति। अस्टि (अष्टि)–सोलह वर्णोंकी वर्ण-वृत्ति जिसके कुल भेद ६५५३६ तक हो सकते हैं।

१२५ सरखा (सदृश)–समान। नरप (नृप)–राजा। कोय–कोई। यळ–पृथ्वी। छात्रपत (छत्रपति)–राजा। सम–समान। करगा–हाथ। छजै–शोभा देता है।

कोड़ अघ ओघ जिण नांम अरधै कटै ।
रे 'किसंन' खांत कर क्यूं न तिणनै रटै ॥ १२५

अथ सौलै अखिर छंद व्रद्धिनाराज
(ज र ज र ज ग)

न रूप रेख लेख भेख तेख तौ निरंजणं ।
न रंग अंग लंग भंग संग ढंग संजणं ॥
न मात तात भ्रात जात न्यात गात जासकं ।
प्रचंड बाहु डंड रांम खंड नौ प्रकासकं ॥ १२६

दूहौ

पांच भगण गुरु अंत पद, सौ पद-नील सुछंद ।
गुरु लघु क्रम सोळह वरण, कहि चंचळा कव्यंद ॥ १२७

छंद पदनील (भ भ भ भ भ ग)

कौड़क तीरथ राज चिहूं दिस धाय करै ।
सौ लख कौड़ अखंड वडा व्रत जे सुधरै ॥
ज्याग महा असमेध धरादिक दांन जते ।
तौ पण रांम प्रमांण तणौ तिल जोड़ न ते ॥ १२८

---

१२५ अरधै—आधा । खात—विचार । तिण—उस ।

१२६. व्रद्धिनाराज—वृहद नाराच । भेख (भेष)—पहनावा । तेख—तीक्ष्णता, क्रोध । तौ—तेरा । निरजण—मायारहित, दोपरहित, परमात्मा । लग (लिंग)—चिन्ह । मात—माता । तात—पिता । गात (गात्र)—शरीर । जात—जाति । न्यात (ज्ञाति)—जाति । जासक—जिसके । खड—देश । नौ—नव ।

नोट—वृहदनाराच छदका दूसरा नाम पचचामर भी है । ग्रथकर्त्ताने इसके लक्षणमे प्रथम लघु फिर गुरु इस क्रममेसोलह वर्ण माने हैं ।

१२७ सौ—वह । पद-नील—छदके नाम । इस छदके अन्य नाम नील, अश्वगति, लीला और विशेपक भी मिलते है । चचळा—छदका नाम विशेप । इस छदका दूसरा नाम चित्र भी मिलता है । ग्रथकर्त्ताने प्रथम गुरु फिर लघु इस क्रमसे सोलह वर्णका प्रत्येक चरण माना है । कव्यद (कवीन्द्र)—महाकवि ।

१२८ कौडक—करोड । चिहू—चारो । दिस—दिशा । धाय करै—दौड करे, परिभ्रमण करे । जे—जो, अगर । ज्याग—यज्ञ । असमेघ—अश्वमेध यज्ञ । धरादिक—भूमि आदि । जते—जितने । तौ पण—तो भी । जोड—बराबर, समान । ते—वे ।

छद चचला (र.ज र.ज र ल)

देव देव दीन नाथ राज राज स्री दयाळ।
वासुदेव विस्वदेव वंदनीक नै विसाळ॥
नारसींध नार श्रौण नरांनाह नाभकंज।
रांमचंद्र राघवेस रूपरास रमा रंज॥ १२६

अथ सतरै वरण छद जात यिस्टी

दूहौ

जगण सगण जगणह सगण, यगण ध्वज जिण श्रंत।
सुजस रांम 'किसनौ' सुकव, प्रथ्वी छंद पढंत॥ १३०

छंद प्रथ्वी (ज स ज.स य,ल.ग)

महा सुगण रूप है सुचित सार आचारमें।
सखां कवण जोड़ जे, अघट आज संसारमें॥
यळा सह वदै यसौ सुजन रांम साधार है।
पुणां जस जिकै पढौ सुज कथा स आसार है॥ १३१

---

१२६ वासुदेव—वसुदेवके पुत्र, श्रीकृष्ण। विस्वदेव—ईश्वर। वदनीक—वदनीय। नै—ग्रौर। विसाळ—(विशाल) महान, वडा। नारसींघ—नृसिंहावतार। नरानाह—नरनाथ। नाभकज—नाभिमे जिसके कमल, विष्णु। रूपरास—रूपकी राशि। रमा—लक्ष्मी। रज—प्रसन्न करने वाला, सन्तुष्ट करने वाला।

नोट—चचला छदके तृतीय चरणमे छदोभग दोष है।

१३० सतरै वरण छद—सप्तदशाक्षरावृत्ति। जात यिस्टी—यहा पर मूल प्रतिमे यिस्टी लिखा मिला परन्तु यहा पर ग्रति ग्रस्टी या ग्रति यिस्टी शब्द होना चाहिए था। सत्रह वर्णोकी वर्ण वृत्तिका शुद्ध नाम ग्रत्यष्टि है जिसके ग्रन्तर्गत शिखरणी, हरिणी, पृथ्वी, मन्दाक्राता ग्रादि छद होते हैं जिनकी कुल सख्या १३१०७२ तक होती है। ध्वज—प्रथम लघु फिर गुरु मात्राका नाम। जिण—जिस। पढत—पढता है।

१३१ सुगण—(सगुण) सत्व, रज ग्रौर तम तीनो गुणो युक्त परमात्माका एक नाम। सार—साराश, ग्रस्त्र-शस्त्र, तलवार। ग्राचार—व्यवहार। सखा—कहते है। कवण—कौन। जोड—समान। जे—जिस। ग्रघट—ग्रद्वितीय। यळा (इला)—पृथ्वी। सह—सव। वदै—कहते हैं। यसौ—ऐसा। सुजन—श्रेष्ठजन, ग्रथवा स्वजन। साधार—रक्षक। पुणा—कहता हूं। जिकै—जिसका। ग्रासार—यह सार है, ग्रथवा ग्राश्रय है।

दूहौ

दुज ज भ त गुर पायप्रत, सौ माळाधर कत्थ।
ल गुरु पंच लघु पंच तस, सौ सिखरणी समथ्थ ॥ १३२

छंद मालाधर

(४ ल ज भ.ज त ग अथवा न.स ज म.य ल ग.)

नर जनम जे दियौ समर जांनकीनाथ सौ।
अज अहप ईस रे जपत है सदा गाथ जौं ॥
मत विलम तूं करै भजण रांम माहीप रे।
जप 'किसन' नांम जे जनम औ लियौ जीप रे ॥ १३३

छंद सिखरणी

(१ ल ५ ग न स भ ल ग अथवा य म न स भ ल ग.)

तवौ राघौ राघौ करम अघ दाघौ तनतणा।
महाराजा सीता-वल्लभ कुळ-मीता विण-मणा ॥
यरां जैता जंगां अडर यक-रंगां जग अखै।
सकौ गावौ जीहा अवस निस-दीहा अज सखै ॥ १३४

---

१३२ दुज—चार लघु मात्राका नाम। भ—भगण। ज—जगण। त—तगण। पायप्रत—प्रति चरण। सौ—वह। माळाधर—छंदका नाम। कत्थ—कह। तस—तगण, सगण। समथ्थ—समर्थ।

१३३ जे—जिस। समर—स्मरण कर। जानकीनाथ—सीतापति, श्री रामचन्द्र भगवान। सौ—उस, वह। अज—ब्रह्मा। अहप—(अहिप) शेषनाग। ईस—(ईश) महादेव। सदा—नित्य। गाथ—कथा। जौं—जिस। विलम—(विलम्ब) देरी। माहीप (महिपति, महिप)—राजा। जे—जिस, अगर। औ—यह। जीप—जीत, विजय कर।

१३४ तवौ (स्तवन)—स्तवन करो, यश-गान करो। अघ—पाप। दाघौ—जला दो, भस्म करो। तन—शरीर। तणा—के। सीता-वलभ (सीतावल्लभ)—सीताप्रिय, रामचद्र। कुळ-मीता (कुल+मित्र)—सूर्य वश, सूर्य वशका। विण-मणा—महान, अपार। यरा (अरियो)—शत्रुओ। जैता—जीतने वाला। अडर—निर्भय। यक-रगा—एक ही रगका, एक ही स्वभावका। अखै—कहता है। सकौ—सव, उस। जीहा—जीभ। अवस—अवश्य। निस-दीहा—रात-दिन। अज—ब्रह्मा। सखै—साक्षी देता है।

दूहौ

मगण भगण फिर नगण मुणि, तगण दोय फिर जोय।
करण एक अहराज कहि, मंदाक्रांता होय ॥ १३५

छंद मंदाक्रांता (म भ.न त त ग ग) ४, ६, ७

सीता सीतारमण हरही नेक संताप संतां।
मींता मींता सकुळ धर ही भेख लज्जा समंतां ॥
माधौ माधौ रसण जप ही भाग छै जेण मोटौ।
त्यांरा दासां सरब सुख रे आथरौ नांहि तोटौ ॥ १३६

दूहौ

नगण सगण मगणह रगण, सगण एक ध्वज अंत।
खगपत सुण अहपत अखै, हरिणी छंद कहंत ॥ १३७

छंद हरिणी (न स म र स ल ग)

भजन करणौ जीहा भूपां पती रघु भूपरौ।
बिरद धरणौ बंका रे कोट भांण सरूपरौ ॥
सुजन वित देणौ लेणौ क्रीत गाथ सधीर है।
हरण दुख व्है संतां मात-पिता रघुबीर है ॥ १३८

---

१३५ मुणि–कह कर। करण–दो दीर्घ मात्राका नाम। अहराज (अहिराज)–शेषनाग।

१३६ सीतारमण–सीताके साथ रमण करने वाला, श्री रामचद्र भगवान। हरही–दूर करेगा, मिटायेगा। नेक–थोडा। सताप–पीडा, कष्ट। माधौ–माधव, विष्णु, श्री रामचद्र। रसण–(रसना) जिव्हा, जीभ। भाग–भाग्य। छै–है। जेण–जिसका, जिससे। मोटौ–महान। त्यारा–उनके। दासा–भक्तो। आथरौ (अर्थस्य)–धनका। नाहि–नही। तोटौ–अभाव, कमी।

१३७ ध्वज–प्रथम लघु फिर दीर्घ मात्राका नाम। खगपत (खगपति)–गरुड। अहपत (अहिपति)–शेषनाग। कहत–कहते हैं, कहा जाता है।

१३८ जीहा–जिव्हा, जीभ। भूपा पती–(भूपपति) सम्राट। रघु–रघुवशी। भूपरौ–राजाका। बिरद (विरुद)–यश। धरणौ–धारण करने वाला। बका–बाकुरे, महान। कोट (कोटि)–करोड। भाण (भानु)–सूर्य। सरूपरौ–स्वरूपका। सुजन–सजन, स्वजन। वित–द्रव्य, धन-दौलत। देणौ–देने वाला। लेणौ–लेने वाला। क्रीत–कीर्ति। गाथ–कथा। सधीर–धैर्यवान, दृढ।

अथ अठारै वरण छंद, जात ध्रति

दूहौ

छ गुरु भगण मगणह सगण, मगण छंद मंजीर।
र स ज ज फिर भगणह रगण, सौ चरचरी सधीर॥ १३९

छंद मंजीर
(६ ग भ म स.म अथवा म म भ म स म.)

हाथी कीड़ी कांटे हेकण सौ तोलै, जग जांणै सारौ।
रंकां रावां जोड़े राखत, तै कीजै निबळां निस्तारौ॥
दीनां लंका जे हाथां न कजै दीधा जग सारौ जांणै।
वेदां भेदां धाता वीठळ वारंवार रटै वाखांणै॥ १४०

छंद चरचरी (र स ज ज भ र)

देव राघव दीन पाळ दयाळ वंछित दायकं।
नाग मांनव देव नांम रटंत सीय सुनायकं॥
माथ-पच्च दुयेण भंज अगज भूप महाबळं।
वंद तूं 'किसनेस' पात सुपाय जे जन वाछळं॥ १४१

दूहौ

पड़ै यगण खट चरण प्रत, क्रीड़ा छंद कहाय।
'किसन' सुकव अहपत कहै, रट कीरत रघुराय॥ १४२

---

१३९ अठारै वरण छंद–अष्टदशाक्षरावृत्ति। जात ध्रति–अठारह वर्णोके वृत्तोकी सज्ञा जिसमे हरिणी प्लुता, चित्रलेखा, मजीर आदि हैं और जिनकी सख्या २६२१४४ तक है। चरचरी–एक छद। इस छदका दूसरा नाम चचरी भी है।

१४० काटे–तराजूमे, तकडीमे। हेकण–एक। सारौ–सब। रका–गरीवा। रावा–राजाओ। जोडे–समान, बरावर। निस्तारौ–उद्धार। धाता–ब्रह्मा। वीठळ–विष्णु, ईश्वर।

१४१ वछित–इच्छित, अभीष्ट। दायक–देने वाला। रटत-रटते है। सीय सुनायक–सीतापति श्री रामचद्र भगवान। माथ-पच–रावण। दुयेण–दो, यहा दो हाथोसे तात्पर्य है। भज–नाश किया। पात–कवि। सुपाय–सुदर, श्रेष्ठ। जे–जो, जिसके। जन–भक्त। वाछळ–वात्सल्य।

१४२. प्रत–प्रति, हर एक। क्रीडा छद–इस छदका दूसरा नाम महामोदकारी भी है। अहपत (अहिपति)–शेषनाग।

छंद क्रीड़ा (य य य य.य.य)

रटौ जांम आठूं सदा हो जना चूंपसूं रांम रांमं।
महाबाह सीतापती राखणौ सेवतां संत सांमं॥
कटी तूण पांणं सरं चाप आमाप तेजं कळासै।
नरां नाथ सामाथ आंनेक ओघं अघं दैत नासै॥ १४३

अथ उगणीस अख्यर छद, जात अतिध्रति

दूहौ

मगण सगण जगणह सगण, तगण दोय गुरु एक।
सारदूळविक्रीड़तह, वरणौ छंद विसेक॥ १४४

छद सारदूल विक्रीड़त (म स ज स त त ग)

जैं जैं औध नरेस संत सुखदं स्रीरांम नारायणं।
सीतानाथ सुनाथ, दास करणं संसार सारायणं॥
देवार्धास रिखीस ईस अजयं ते सेव पारायण।
पायं कंज 'किसन्न' रक्खि सरणं आणंदकारायणं॥ १४५

---

१४३ जाम आठू–अष्टयाम, आठ पहर। जना–भक्त। चूंपसू-दक्षतासे, चतुराईसे। महाबाह (महाबाहु)–विशाल भुजा वाला। सीतापती (सीतापति)–श्री रामचन्द्र। राखणौ–रखने वाला। साम–स्वामी। कटी (कटि)–कमर। तूण–तर्कश, भाथा। पाण (पाणि)–हाथ। सर–वाण। चाप–धनुष। आमाप–अपार, असीम। सामाथ–समर्थ। आनेक–अनेक। ओघ–समूह। अघ–पाप। दैत–असुर, दैत्य। नासै–नाश करता है।

१४४ उगणीस अख्खर छद (ऊनविंशत्याक्षग वृत्ति)–उन्नीस अक्षरोके छद। छद जात अति-धृति (अतिधृति) उन्नीस वर्णोंके छदोकी सज्ञा जो कुल प्रस्तार भेद से ५२४२८८ तक होते हैं। विसेक–विशेष।

१४५ जै जै–जय-जय। औध-नरेस–अयोध्या नरेश, श्रीरामचद्र भगवान। सुखद–सुख देने वाला। सारायण–शरण देने वाला। देवाधीस (देवाधीश)–इन्द्र। रिखीस (ऋषीश)–महर्षि। ईस–शिव, महादेव। अजय (अज)–ब्रह्मा। सेव–सेवा। पारायण–पूर्ण। पाय–पैर, चरण। कज–कमल। आणद-कारायण–आनद करने वाला।

पुन अन्य च अपभ्रंस भाखा

सारदूल विक्रीड़त (म स ज स त त ग)

आस्चर्यं रघुनाथ भूप-महदं त्वनांमंमुच्चारणम् ।
जन्मं संचिदघोरघोर कळुसं नासं तमेकं-छिनम् ॥
ते अंभोरुह अंघ्रि एन सरणं प्राप्तं नांमांमीस्वरम् ।
तेसां विघ्नविलीयमांन तुरितं ध्वांतमिव भास्करम् ॥ १४६

दूहौ

अखिर गुणीसह अवर लघु, ग्यारहमौ गुरु होइ ।
छ नगण गुरु अंतह सु फिर, धवळ कहावै सोर ॥ १४७

छंद धवल

(१० लग ८ ल अथवा न न न ज न न ल)

कळह मझ गहत जद रांम धनु निज सुकर ।
हरत रिम कटक घण-माळ उर संझत हर ॥
खुलत रिख नयण सुण पंख पळचर खरर ।
डगमगत यर घुसत भाज परबत डरर ॥ १४८

---

१४६. महद–उत्सवदायक । त्वन्नाम–तेरा नाम । सचिदघोरघोर (संचित+अघोर+घोर)–संग्रह किये हुए महान भयंकर । कळुस–पाप । नास–नाश । तमेक-छिनम्–एक ही क्षण भरमे । ते–तेरा, तेरे । अंभोरुह–कमल । अंघ्रि–चरण । एन (अयन)–घर । प्राप्त–प्राप्त होकर । तेसा (तेषाम्)–उनका, उनके । विघ्न–बाधा, अड़चन । विलीयमान–नाश । तुरित–शीघ्र । ध्वांतमिव–अंधेरेके समान । भास्करम्–सूर्य ।

१४७ अखिर–अक्षर । गुणीसह–उन्नीस ।

१४८ कळह–युद्ध । मझ (मध्य)–मे । गहत–धारण करता है, करते हैं । जद–जब । सुकर–श्रेष्ठ हाथ । हरत–मिटाते हैं, मिटाता है । रिम–शत्रु । कटक–सेना । घण-माळ (शिर, मुख+माळ=माला)–रुंडमाला । संझत–धारण करते हैं । हर–महादेव । रिख–नारद ऋषि । पंख–पर, पक्ष । पळचर–आमिषहारी । खरर–आवाज, ध्वनि विशेष । डगमगत–डांवाडोल होते हैं, कम्पायमान होते हैं । यर (अरि)–शत्रु । घुसत–प्रवेश करते हैं । परबत–पर्वत, पहाड़ । डरर–भयसे ।

पुन अन्य विधि छद धवल
(न.न न.न न न.ग)

जिण पय सुरसरि अघहर सरित जनम है ।
करत मजन तिण जळ जन कटत अक्रम है ॥
बिबुध सकळ अहनिससु जपत सियबर है ।
तव नित 'किसन' रसन रघुबर सुरतर है ॥ १४९

दहौ

सगण तगण यगणाह भगण, सात गुरू पय पच्छ ।
अहपत खगपतसूं अखै, संभू छंद सुलच्छ ॥ १५०

छद शभू
(स त य.भ ७ ग अथवा स.त.य म भ ग)

जग माथै राजत औ जेतै हरि एहौ आनूंपा जापं ।
तितरै मां मांनव तूं त्रासे जमवाळी मांने धू तापं ॥
'किसनौ' यूं आखत आचांके, बहनांमी भांमी बाबा रे ।
करणारौ बारध छै केसौ, अध नांमे संतां ऊधारै ॥ १५१

अथ वीस अखिर छद वरणण जात क्रति
दूहौ

सगण जगण बे भगण सुण, रगण सगण ध्वज थाय ।
सकौ गीतिका गंडिका, वीस गुरू लघु पाय ॥ १५२

---

१४९ जिण–जिस । पय–चरण । सुरसरि–गगा नदी । अघहर–पापोको मिटाने वाली । सरित–नदी । मजन–स्नान । तिण–उस । कटत–कटते हैं । अक्रम–पाप । बिबुध–देवता । सकळ–सब । अहनिससु–रातदिनमे । सियबर–सीतापति, श्रीरामचद्र भगवान । तव–स्तवन कर । रसन–रसना, जीभ । सुरतर–कल्प-वृक्ष ।

१५० पच्छ–पश्चात, बादमे । अहपत–शेषनाग । खगपतसू–गरुडसे । सुलच्छ–अच्छे लक्षण ।

१५१ माथै–ऊपर, पर । राजत–शोभा देता है । एहौ–ऐसा । आनूपा (अनूप)–अनोखा । तितरै–तब तक । मा–मत । त्रासे–डरे । धू–निश्चय । ताप–भय । आखत–कहता है । बहनामी–बहुतसे नामो वाला, ईश्वर । भामी–न्यौछावर, बलैया । बाबा-ईश्वर । करणा (करुणा)–दया । बारध (वारिधि)–सागर । अध–आधा । नामे–नामसे । ऊधारै–उद्धार करता है ।

१५२ वीस अखिर छद–विंशत्याक्षरावृत्ति । वीस अक्षरोके छदोकी सज्ञा कृति मानी गई है जिसके अनुसार प्रस्तार भेदसे १०४८५७६ तक भेद होते हैं । ध्वज–प्रथम एक लघु फिर एक गुरुका नाम । थाय–हो । गडिका–एक वृत्तका नाम । पय–चरण ।

छंद गीतिका

(स ज ज भ र स ल ग) १२,८

करतार भू अधार केसव धार पांण सुधांनखं।
रघुनाथ देव समाथ राजत मां विसार स मांनुखं॥
जळ पाज बंध उतारजै कपि साज सेन सकाजयं।
रसना 'किसन्न'सु जांम-आठ उचार सौ रघुराजयं॥ १५३

छंद गल्लिका (र ज र ज र ज.ग.ल.)

रांम नांम आठ-जांम गाव रे सुपात एह देह सार।
और धंध फंद सौ अनाख रे न आखरे गणां नकार॥
औध-ईस जेण सीस आच रे थया सकौ सुनाथ थाय।
जेण पाय कंज लीध आसरौ जके जनंम जीत जाय॥ १५४

अथ अकवीस वरण छंद वरणण जात प्रक्रति

दूहौ

मगण रगण भगणह नगण, यगण तीन प्रति पाय।
वीस एक सोभित वरण, सौ स्रगधरा सुभाय॥ १५५

---

१५३ गीतिका—इस छंदके प्रथम चरणकी रचनामे छंद शास्त्रके नियमका निर्वाह नही हुआ। सुधानख श्रेष्ठ धनुष। समाथ—समर्थ। मा—मत। विसार—विस्मरण कर। स—उसको। मानुख—मनुष्य। रसना—जीभ। जाम-आठ (अष्ट याम)—आठो पहर। सौ—उस, वह।

१५४ गडका, गडिका गल्लिका छंद—रल्यका आदि इस छंदके अन्य नाम हिंदी व राजस्थानी भाषामे मिलते हैं। इसे छंद शास्त्रमे वृत्त भी कहा गया है। प्रथम गुरु फिर लघु इस क्रमसे वीस वर्णका यह वृत्त माना गया है। ऐसा ही लक्षण ग्रंथकर्त्ताने दिया है। आठ-जाम (अष्टयाम)—आठो पहर। सुपात (सुपात्र)—श्रेष्ठ कवि। एह—यह। सार—साराश, तत्त्व रूप। धध—धधा, कार्य, काम। फद—बधन, जाल। अनाख (अनाहक)—नाहक, व्यर्थ। औध-ईस—श्री रामचद्र भगवान। जेण—जिसके। आच—हाथ। थया—हुए। सकौ—सब, वह। पाय—चरण। कज—कमल। लीध—लिया। आसरौ—सहारा, आश्रय।

१५५ अकवीस वरण छंद—एक विंशत्याक्षरावृत्ति। इक्कीस अक्षरोके छंदकी सज्ञा प्रकृति कही जाती है जिसमे प्रस्तार भेदसे २०९७१५२ भेद होते हैं।

छंद स्रग्धरा (म र भ न य य य.)

जै राघौ राज राजं अमर नर अहं कीत जे जीह जापै ॥
आचारी झौक लागै छिनक मझ करां लंक सा दांन आपे ॥
धींगां जाड़ा मरोड़ै अडर कर उभै, बांण धांनंख धारै ।
तौनं जीहा रटतां जनम अघ हरै, दास ध्रू जेम तारै ॥१५६

दूहौ

भगण रगण दुजबर नगण, दोय भगण गुरु दोय ।
अहपत खगपतसं अखै, छंद नरिंद सकोय ॥ १५७

छंद नरिंद

(भ र ४ ल न भ.भ ग ग अथवा भ र.न न ज ज य)१३,८

धारण मांण पांण सर धनखह रांम बडा ब्रद धारै ।
आपण मोख दांन जस जग जिण, आठह-जांम उचारै ॥
सागर रूप सूरपण सरसत च्यार दसा मझ चावौ ।
गौ दुज पाळ तार निज जन जग गैंवर-तारण गावौ ॥ १५८

चौपई

आठ गुरु बारह लघू होय, दीपै जिण अंतै गुरु दोय ।
सौ कह हंसी छंद सकाज, जंपै नाग सुणौ खगराज साखै ॥१५९

---

१५६. जै–जय । अमर–देवता । अह (अहि)–नाग । कीत–कीर्ति । जीह–जीभ । जापै–जपते है । आचारी–उदार, दातार । झौक–धन्य-धन्य । छिनक–क्षण । मझ–मध्य । करां–हाथोसे । सा–समान । आपे–दे दिया । धींगा–जबरदस्त । जाड़ा–जबाडा, जड । मरोडै–मरोड देता है । उभै–दोनो । धानख–धनुष । तौन्–तुझको । जीहा–जीभ । अघ–पाप । दास–भक्त । हरै–मिटाता है । ध–भक्त ध्रुव । जेम–जैसे । तारै–उद्धार करता है ।

१५७ दुजबर–चार लघु मात्राका नाम । अहपत–शेषनाग । खगपत–गरुड । अखै–कहता है । नरिंद–नरेंद्र छद । सकोय–वह ।

१५८. पांण (पाणि)–हाथ । सर–बाण । धनखह–धनुष । आपण–देनेको । मोख–मोक्ष । आठह-जाम (अष्टयाम)–आठो पहर । सूरपण–शौर्य, वीरता । सरसत–सरसाता है । मझ–मध्य । चावौ–प्रसिद्ध, विख्यात । गैवर-तारण–गजका उद्धार करने वाला ।

१५९. दीपै–शोभा देता है । जंपै–कहता है । नाग–शेषनाग । खगराज–गरुड ।

छंद हसी (म म त न न न स ग) ८,१४

सारी वातां नीकौ सोहै, रघुबर जस सह जग यम साखै।
भाळौ रूड़ौ खोजै सेणा, भव ससि निगम अहम रवि भाखै॥
माधौ राघौ केसौ एहौ, समरण कर छिन-छिन सुख मूळं।
जाडा पापां दाहै जेही, तिलकण दहण अगण-मण तूळं॥१६०

दूहौ

सात भगण मदिरा वदै, गुरु सुंदरी कहंत।
सात भगण दो गुरु मिळै, मत्त गयंद मुणंत॥ १६१

छंद मदिरा (भ भ भ भ भ भ भ)

रांम अभंगम सोभत जंग धनू सर हाथ सुधारण।
रांम समाथ कहै जग गाथ तकौ सर पाथर तारण॥
रांम दयाळ अनास्रय पाळ अनेक अनाथ उधारण।
पारस रांम सरै सब कांम चवौ अठ-जांमसु चारण॥ १६२

---

१६०. नीकौ—उत्तम, श्रेष्ठ। सोहै—शोभा देता है। यम—ऐसे। साखै—साक्षी देता है। रूडौ—उत्तम। सेणा—सज्जन। भव—महादेव। ससि—चद्रमा। निगम—वेद। अहम—ब्रह्मा। रवि—सूर्य। माधौ—माधव। राघौ—राघव, श्रीरामचद्र। केसौ—केशव। एहौ—ऐसा। छिन-छिन—क्षण-क्षण। जाडा—घना, अधिक। दहण—जलाने वाला। अगण-मण—अगणित मन। तूळ—रूई।

नोट—हसी छदको इक्कीस अक्षरोके वृत्तोमे लिखा है परन्तु वास्तवमे यह वृत्त २२ वर्णका होता है।

१६१. वदै—कहते है। मुणत—कहते हैं।

१६२ अभगम—नही टूटने वाला। धनू—धनुष। समाथ—समर्थ। गाथ—कथा, वृत्तात। तकौ—वह, उस। सर—सागर, समुद्र। पाथर—पत्थर। तारण—तारने वाला, तैराने वाला। अनास्रय—जिसका कोई आश्रय न हो। पाळ—पालन करने वाला। उधारण—उद्धार करने वाला। सरै—सफल होते हैं। चवौ—कहो।

नोट—मदिरा छद २२ अक्षरका वर्ण वृत्त होता है जिसमे ७ भगणके बाद एक दीर्घ वर्ण होना आवश्यकीय माना गया है परन्तु यहा पर केवल सात भगण ही दिये गये हैं।

छंद सुदरी व्रज भाखा
(भ भ.भ भ.भ भ भ ग)

आसन स्यंघ घटा तन स्यांम, पटंबर पीतसु विद्युत है।
चाप सिलीमुख पांन विमोह सु बांम विभाग सिया जुत है ॥
त्यौं अरिहा सुत केकयकौ कर चौंर अनंत विनै क्रत है।
पाय पलौटत वात-तनै यह ध्यांन रघुब्बर राजत है ॥१६३

छंद मत्तगयद (भ भ भ भ भ भ भ ग ग)

गौतम नार सु पाहन तैं रज पाय लगे रघुनायक तारी।
पांमर जात पुलिंद जु बोरसु जेवत स्रीमुख बार न धारी ॥
हाथनतैं करि स्राध जटायुसु पायनकी रजके सहि झारी।
सौ रघुनाथ विसार भजै, अन तौ नर मूरख वात विगारी ॥१६४

छद चकोर लछण
चौपई

सात भगण गुरु लघु जिण अंत, तिणनं चंद चकोर तवंत ॥१६५

छंद चकोर (भ भ भ भ भ भ भ ग ल)

स्रीरघुनाथ अनाथ सिहायक दायक नौ निधि वंछित दांन।
रांवण से खळ घायक संगर माधव है सब लायक मांन ॥
पूरण ब्रीहम अखै अज ईस प्रथीप धरै धनु सायक पांन।
सौ सियारांम भज्यौं नहिं नेक जनंम ब्रथा जगमें जिहिं जांन ॥१६६

---

१६३ पटबर–पीत वस्त्र। विद्युत–विजली। चाप–धनुष। सिलीमूख (शिली-मुख)–वाण, तीर। पान–हाथ। बाम–बाया। सिया–सीता। जुत–युक्त। त्यौं–ऐसे ही। अरिहा–शत्रुघ्न। वात-तनै (वात तनय)–वायु-पुत्र हनुमान।

१६४ नार–नारी, स्त्री। पाहन–पत्थर। रज–धूलि। पुलिंद–एक प्राचीन असभ्य जाति। बार–देरी, विलब। विसार–भूल कर। अन–अन्य।

१६६. सिहायक–सहायक। दायक–देने वाला। नौ–नव। वछित–वाछित, अभीष्ट। घायक–मारने वाला। सगर–युद्ध। अज–ब्रह्मा। ईस–महादेव। प्रथीप–राजा। सायक–बाण, तीर। पान (पाणि)–हाथ। जिहिं–जिसका।

अथ चौवीस अखिर छद जात सस्कृति

दूहौ

आठ भगण किरीट कहि, आठ स दुमिळा थात।
आठ यगण पद परत सौ, महाभुजंगप्रयात ॥ १६७

छद किरीट (८ भ)

कौटिक तीरथ धाय करौ,
अरु कौटि करौ ब्रत देह बिथा करि।
कौटिक ज्याग करौं,
असमेध रु कौटि करौ गवदांन दुजेसर ॥
कौटिक जोग-अठंग सधौ,
अरु कौटि तपौ तप नेम धराबर।
ये 'किसना' सुपने न कहूं,
यक स्री रघुनायक नांम बराबर ॥ १६८

छद दुमिला (८ स)

जर नैन दियौ जननी,
जठरा हरि धाय कै आय सिहाय कियौ।
जनम्यौ जबते जिन पोख,
रख्यौ तन आस्रय तौखते टारि लियौ ॥
तरुनाईमें आपहि ईस भयौ,
जगदीसकूं मूरख भूलि गियौ।

---

१६७ चौवीस अखिर छद—चतुर्विशत्याक्षरावृत्ति। इस वृत्तिका शुद्ध नाम सस्कृति भी है जिसके अतर्गत १६७७७२१६ वृत्त प्रस्तार-भेदसे बनते है। स—सगण। थात—होता है।

१६८ कौटिक—करोड। कौटि—करोड। बिथा—कष्ट। ज्याग—यज्ञ। असमेध—अश्वमेध। गवदान—गौ दान। दुजेसर (द्विजेश्वर)—महर्षि, ब्राह्मण। जोग-अठग (अष्टाङ्ग योग)—अष्टाङ्ग योग। सधौ—साधन करो। यक—एक।

१६९ जठरा—जठर, गर्भ। पोख—पालन-पोषण। तरुनाई—युवावस्था। ईस—समर्थ।

'किसना' भजि रांम सियावरकौ,
जिन चांच बनायके चूंन दियौ ॥ १६९

छंद पुनरपि दुमिला (८ स)

मुख मंगळ नांम उचार सदा तन के अघ ओघन दाघव रे।
हनमंत बिभीखन भांन तनै जिन कीन वडे जन लाघव रे॥
भुजगेस महेस दुजेस रिखी नित पै रज चाहत माधव रे।
तजि आंन उपाय सबै 'किसना' भज राघव राघव राघव रे ॥१७०

छंद पुनरपि दुमिला (८ स)

बयकूंट बिलासनकौ तजि के बध कौन चहैं जमपासनकी।
म्रगराज पळासन त्यागनके चित हूंस धरौ नहि घासनकी॥
कबहू नहि मंगत और पिया तजि संगत गौर ब्रखासनकी।
रघुनाथ जु रावरे दासनके चित आसन आंन उपासनकी ॥१७१

छंद पुनरपि दुमिला (८ स)

हम कीन अनेक गुन्हैं हरिजू तुम एक न लेख उतारिएजू।
हम पापि महा जिद काहे करै, ब्रिद रावरकी पर पारिएजू॥
करुनामय राघव जांनकीवल्लभ ए विनती उर धारिएजू।
गुन छोडि हमारि ये बावरि बांनकौ रावर ओर निहारिएजू ॥१७२

---

१६९ चून (चूर्ण)–भोजन।

१७० बिभीखन–विभीषण। कीन–किया। भुजगेस–शेषनाग। महेस–महादेव। दुजेस (द्विजेश)–महर्षि। रिखी–ऋषि। आन–अन्य।

१७१ बिलासन–विलास करने वाला। बध–बधन। म्रगराज (मृगराज)–सिंह। पळासन–आमिषहारी। हूस–अभिलाषा, इच्छा।

१७२ कीन–किये। गुन्हैं–अपराध। पर–प्रतिज्ञा, मर्यादा। बान–वाणी। ओर–तरफ। निहारिएजू–देखए।

छंद महाभुजगप्रयात (८ य.)

नमौ रांम सीतावरं औधनाथं समाथं महाबीर संसार सारं।
अनद्दं अघट्टं अरोड़ं अगंजं अनंमं अछेहं अरेहं उदारं॥
अनेकं असंकं अलटं अरेसं खगां पांण आजांणबाहू खपावै।
गहीरं सधीरं रघूराज बीरं गरीबं निवाजं कवी क्यौं न गावै॥१७३

अथ वरण उपछंद वरणण तत्र आद सालूर छंद तिण लछण वरणण

दूहौ

एक करण दुजबरसु खट, सगण अंत दरसाय।
पिंगळ मत अहपत पुणै, सौ सालूर कहाय॥ १७४

छंद सालूर
(ग ग २४ ल.स. अथवा त+८न+ल.ग)

पापोघ हरत अत जन चितवत।
तिन हरख करत दुख हरत हरी॥
सीतावर जसधर सुमति सदन सुभ्र।
कळुख सघन वन दहन करी॥

---

१७३ **औधनाथ**—अयोध्यानाथ, श्रीरामचद्र भगवान। **समाथ**—समर्थ। **अनद्द**—अनहद। **अघट्टं**—अद्वितीय, अपार। **अरोड़**—जबरदस्त। **अगज**—अजयी। **अछेह**—अपार। **अरेह**—निष्कलक, पवित्र। **असक**—शका या भयरहित। **अरेस**—शत्रु। **पाण**—प्रभाव, प्रताप। **आजाणबाहू**—आजानबाहु। **खपावै**—नाश करता है। **गहीर**—गभीर। **सधीर**—धैर्यवान।

नोट—ग्रथकर्त्ताने अपने ग्रथमे माया छद प्रकरणमे छद, उपछद और दण्डका भेद अति सक्षेपमे बतलाया है। वहा पर लिखा है कि २४ मात्राका छद, २४ से २६ मात्रा तक उपछद और छद और उपछदके मेलसे दण्डक छद बनता है। यहा पर वर्ण छदोमे उदाहरणमे जो उपछद दिए हैं— वे वास्तवमे दण्डक वृत्तोके अतर्गत ही आते है। दण्डकवृत्तका लक्षण यही है कि जिस वर्ण वृत्तमे प्रत्येक पदमे २६ वर्णसे अधिक वर्ण हो वह वृत्त दण्डक कहा जायेगा। वे दण्डक वृत्त भी दो प्रकारके माने गये है—एक साधारण दण्डक जो गणवद्ध होते है, दूसरे मुक्त दण्डक जो गणोके वधनसे मुक्त रहते हैं।

१७४ **करण**—दो दीर्घ मात्राका नाम। **दुजबर**—चार लघु मात्राका नाम। **खट** (षट)—छ। **अहपत** (अहिपति)—शेपनाग। **पुणै**—कहता है।

१७५ **पापोघ**—पापोका समूह। **हरत**—मिटाता है। **सदन**—घर। **कळुख** (कलुप)—पाप। **सघन**—घना।

सारंग समथ सर सझत सुकर जुध ।
असुर दसह-सिर अडर जरी ॥
सौ रांम 'किसन' कित्र समर समरि ।
जिहिं बिजय जिगन करि सियहि बरी ॥ १७५

दूहौ

सौळह पनरह अखिर पर, होय जठै विसरांम ।
यकतीसाखिर अंत गुरु, निहचै मनहर नांम ॥ १७६

छंद मनहर
छंद इकतीसौ कवित्त

कपटी कळंकी कूर कातर कुचाळ कोर,
'किसन' कहत कैसौ कळही अकांम हूं ।
बैंडौ हूं बकौरौ हूं बुरौ हूं बेसहूर बादी,
निलज निमोही नाथ निपट निमांम हूं ॥
जसहीन जुलमी जनात जीव जातनाकौ,
जुगति बिनांही झखौ झूठ जांम जांम हूं ।
गरुरके गांमी सुनौ रांमचंद्र सांमी,
गाढौ गरीबी गुनाही तौ हूं रावरौ गुलांम हूं ॥ १७७

अन्य कवित्त

जांनुकी पुकारै जातुधांनकी बिनास काजै,
आये बेग जलपै गिरंदनकी पाजके ।

---

१७५. सारग–धनुष । समथ–समर्थ । दसह-सिर–रावण । जिगन–यज्ञ । सिय–सीता । बरी–वरण किया, पाणि-ग्रहण किया ।

१७६ अखिर–अक्षर । जठै–जहा । विसराम–विश्राम । यकतीसाखिर–इकतीस अक्षर । निहचै–निश्चय ।

१७७ कातर–कायर । कुचाळ–बुरी चाल चलने वाला । अकाम–बिना मतलबका, व्यर्थका । बैंडौ–उद्दण्ड । बकौरौ–वातूनी, वाचाल । बादी–जिद्दी । निपट–बहुत । निमाम–मर्यादाहीन । जातना–यातना । गरुर–गरुड । सामी (स्वामी)–मालिक । गाढौ–गहरा । गुनाही–गुनहगार ।

१७८ जानुकी–सीता । जातुधांन–राक्षस । गिरदन–पर्वत । पाज–सेतु, पुल ।

टेर प्रह्ळादकी सुनत नरस्यंघ रूप,
प्रगटे असंभ त्यौंही खंभते गराजके ॥
बाहनें तियाग के ऊबाहने पगन धाये,
बाहरकौ जाहर रटत गजराजके ।
'किसन' कहत रघुराज ढील कौन काज,
मेरी लाज राखिबौ भुजन माहाराजके ॥ १७८

छंद पुनः कवित्त

माया परिहरि रे पकरि रे चरन गुरु,
जर रे कळुख पुंज अक्रत न कर रे ।
अंतकते डर रे न धर रे सुदेह नित,
कर रे सुक्रम सतसंगमें विचर रे ॥
मरत अमर रे सु कौन तुव नर रे,
पै स्रीमतको रर रे सु प्रेम द्रग भर रे ।
तर रे जगत सिंधु पर रे चरन कंज,
धर रे हियेमें ध्यांन राघव समर रे ॥ १७९

छंद पुनः कवित्त

अक्रत करन कौन लावत है बार झूठी,
करत लबार बार बार आठूं जांममें ।
तन करतारकौ विचार हू न करै नेक,
बांधत कुटंबके बिटंब नेह दांममें ॥

---

१७८ नरस्यघ—नृसिंहावतार । असभ—असभव । खभ—स्तभ । गराजके—गर्जना करके । ऊबाहने— नगे पैर । वाहर—रक्षा । ढील—विलम्ब, देरी ।

१७९ कळुख—(कलुष) पाप । पुज—समूह । अक्रत—दुष्कर्म, पाप । अतक—यमराज । सुक्रम—श्रेष्ठ कार्य, पुण्य कर्म । अमर—देवता । रर रे—स्मरण कर । सिधु—सागर, समुद्र । कज—कमल ।

१८० वार—समय । लवार—असत्यवादी, झूठा । बिटब—प्रपच । नेह—स्नेह । दाम—रुपया, पैसा ।

स्वारथके काज जळ घांम सीत सहै,
नित रहत बिलंबी के अनुरूप बांममें।
एरे मन मेरे तेरे हितकी कहत हूं मैं,
तजि रे अन्हेरे कांम दे रे द्रग रांममें॥ १८०

छंद पुनः कवित्त

मूत याकौ मूळ च्यार भूतते सथूळ कूंत,
गूंथ दुख सहिके अभूत पूत जायेकौ।
हाडनकी माळा मांस छाळाते लपेटी भरी,
मळके मसाला ताळा पवन लगाये कौ॥
बिटचार आखर बिराज्यौ ऐसे पिंजरामें,
अंत उडि जेहैं पंछी बेद भेद गाय कौ।
पर उपगार केबौ देबौ कछु दांन,
सीताबर भजि लेबौ फळ पैबौ देह पाय कौ॥ १८१

छंद पुनः कवित्त

पाय जुवराज मंद अंध दुरजोधन सौ,
भयौ मतिमंद रिद फंद कर केतोई।
'किसन' कहत सिर धूंत बिदुर संत,
मुख भयौ बंध द्रोन भीखम सहे तोई॥
पांचूं पूत पंडके पटकि बैठे हिम्मतकौ,
चूकि गौ छभाकौ भवतव्य बस चेतोई।

१८० घाम–गर्मी। सीत–सर्दी। बिलबी–सलग्न, अनुरूप, अनुकूल, समान, उपयुक्त। बाम–स्त्री। अन्हेरे–अन्य, अनुचित। द्रग–नेत्र, नयन।

१८१ मूत–मूत्र। याकौ–इसका। भूतते–आकाश, पवन, अग्नि, जल, पृथ्वी आदि। सथूळ–स्थूल। कूत–मान कर, समझ कर। अभूत–अनोखा। छाळा–चमडी। बिटचार–ग्राम-शूकर।

१८२ द्रोन–द्रोणाचार्य। भीखम–भीष्मपितामह। पूत–पुत्र। पंड–पाडु। छभा–सभा। भवतव्य–भवितव्य। चेतोई–ज्ञान, चेतना।

द्रौपदीकी लाज ब्रजराज जौ न राखै तौ,
गुलांम दूसासन तौ कलांम छीन लेतोई ॥ १८२

छंद पुनः कवित्त

गंगके सुथांन नख करत प्रकास भांन,
रहत सदीव उर मधि पंचमाथके।
पापहारी प्रगट अहल्याके उधारी सिर,
मंडन सिखारी बनचारिनके साथके॥
कोमळ बिमळ कोकनदसे अरुन जे,
तलासे जुत कुंकम सुगंध रमा हाथके।
अकरम नास मेरे हिये बसिबौ करौ,
वे धरमनिवास ऐसे पद रघुनाथके॥ १८३

दूहौ

सोळह सोळह अखिर पर, है विसरांम हमेस।
अंत लघु घण अखिरी, वरणव छंद विसेस॥ १८४

छंद घणाखिरी व्रज भाखा कवित्त

केसव कमळ नैन संत सुख देन संभू,
भूमि पार भजतै अनेक भांत टार भय।
निपट अनाथनके नाथ नरस्यंघ नांम,
नरक निवारन नरेस्वर निपुन नय॥

---

१८२ कलाम–वाक्य, वचन।

१८३. सदीव–सदैव। मधि–मध्यमे। पचमाथ–महादेव, हनुमान। पापहारी–पापको मिटाने वाला। उधारी–उद्धार करने वाला। कोकनद–लाल कमल। अरुन–लाल।

१८४ अखिर–अक्षर। विसराम–विश्राम। घण अखिरी–घनाक्षरी नामक कवित्त। घणाखिरी–घनाक्षरी।

१८५ भात– भाति, प्रकार। नरस्यंघ–नृसिहावतार। निपुन–निपुण, चतुर, दक्ष। नय–नीति।

'किसन' कहत करुनाके निध कौसलेस,
परत सुरेस भुजगेस औ रिखेस पय।
सियानाथ बखतन काज जन लाज रख,
जग सिरताज माहाराज रघुराज जय ॥ १८५

चौपई

तेरै कोड़ बीयाळी लाख, सतरै सहंस सातसै साख।
वळ छावीस कहै विख्यात, जांण छवीस वरण छंद जात ॥१८६

अरथ

एक वरणसू लगाय छाईस वरण छदरी अतरी जात छै। यथा—१३००००००० तेरै कोड ४२००००० बीयाळीस लाख १७००० सतरै हजार ७०० सातसै २६ छाईस। तेरै करोड बीयाळीस लाख सतरै हजार सात सौ छाईस अतरी छवीस वरण छदकी जात छै।

दूहा

जपिया 'किसने' रांम जस, एम वरण उपछंद।
अघ आंमय करसी अळग, नहचै दसरथ नंद ॥ १८७
संमत अठारौ असीयौ, चौथ तिथ सुद माह।
बुधवार जिण दिन जनम, लियौ ग्रंथ सुभ लाह ॥ १८८

इति स्री रघुवरजसप्रकास पिंगळ ग्रथ आढा किसना विरचिते वरण छद वरण उपछद नाम वरण व्रत्ति सपूरण।

---

१८५ सुरेस—इद्र। भुजगेस—शेषनाग। रिखेस—महर्षि। पय—चरण, पैर।

१८६ बीयाळी—बयालिस। छावीस—छब्बीस। छवीस—छब्बीस। छाईस—छब्बीस। बीयाळीस—बयालिस।

१८७ आमय—रोग। नहचै—निश्चय। नंद—पुत्र।

१८८. समत अठारौ असीयौ—स० १८८०। चौथ—चतुर्थी। तिथ—तिथि। सुद(सुदि)—शुक्ल। माह—माघ मास। लाह—लाभ।

अथ गीत छंद वरणण

दूहा

हीमत कर भज भज हरी, गांडू मत गींधाय ।
धींग सदा करणौ धणी, संतांतणी सिहाय ॥ १

सुणिया नह तजता स्रवण, भजतानै भगवांन ।
मीरां स्री अंगसें मिळी, मनां रळी धर मांन ॥ २

सोरठौ

पेट हेक कज पात, मेट सोच संसौ म कर ।
रे संभर दिन रात, नांम विसंभर नारियण ॥ ३

अथ गीत लछण

गीत ओटपा घाटरा बांका अनै त्रिबंक ।
गीत अनोखा गोखरा सूधा बणै सणंक ॥
भूप रचेता भीतड़ां ईसर नीमंधी आव ।
गाई तिणसूं गीतड़ां, अधक आव अहराव ॥ ४

सोरठौ

कसै पथर कमठांण, एक ठौड परठै इळा ।
मुख मुख नीम मंडांण, तिणसूं न डगै गीतड़ा ॥ ५

---

१ गाडू–मूर्ख, कायर । गींधाय–मनके बुरे भाव प्रकट कर, बदबू देना । धींग–समर्थ । सतातणी–सतोकी । सिहाय–सहायता ।

२ स्रवण (श्रवण)–कान । रळी–आनद ।

३ हेक–एक । कज–लिए । पात (पात्र)–कवि । सोच–चिंता । ससौ (सशय)–शक, सन्देह । म–मत । सभर–स्मरण कर । विसभर–विश्वम्भर, ईश्वर । नारियण–नारायण ।

४ ओटपा–अद्भुत, विचित्र । घाट–रचना । बाका–वक्र । अनै–और । त्रिबक–टेढा, कठिन । रचेता–रचने वाला, बनाने वाला । भींतडा–भवन । ईसर–ईश्वर । नीमधी–रची, बनाई । आव–आयु, उम्र । गाई–वर्णनकी । तिणसू–उससे । गीतडा–काव्यो, छदो । अधक–अधिक । आव–आयु । अहराव–शेषनाग ।

५. कसै–कसे जाते है । बधनसे दृढ करनेकी क्रिया । कमठाण–मकान आदि बनानेका बडा कार्य । परठै–रचते है, बनाते हैं । इळा–पृथ्वी । मडाण–रचना ।

अथ गीतका-अधिकारी कवि

गीतकी भाखा वरणण

दूहौ

अधिकारी गीतां अवस, चारण सुकवि प्रचंड ।
कौड़ प्रकारां गीतकी, मुरधर भाखा मंड ॥ ६

अथ अगण दधखिर दोस हरण

दूहौ

वैणसगाई वरणियां, अगण दधखर खैर ।
थई सगाई जेण थळ, वळै न रहियौ वैर ॥ ७

अथ गीताकी नव उक्ति, ग्यारै जथा, ग्यारै दोस ।
दस वैणसगाई नाम लछण उदाहरण वरणण

दूहौ

उकतसु नव ग्यारह जथा, दोख अग्यारह दाख ।
वयणसगाई दसह विध, भांणव रूपग भाख ॥ ८

---

६ अधिकारी—योग्यता या क्षमता रखने वाला, उपयुक्त पात्र । अवस—अवश्य । प्रचड—महान । मड—रचना ।

७ अगण—छद शास्त्रमे चार अशुभ गण जिनके नाम क्रमश जगण, तगण, रगण और सगण हैं । छदके आदिमे इनका रखना अमागलिक माना गया है । दधखिर (दग्धाक्षर)—छद-रचनामे प्रथम प्रयोग न किए जाने वाले वे अक्षर या वर्ण जिनका छदोमे प्रथम उपयोग अमागलिक माना गया है । वैणसगाई—वर्ण-मैत्री । डिंगल भाषामे गीत छदोकी रचनाका एक नियम विशेष जिसमे जिस वर्णसे जो पद (चरण) शुरू होता है वही वर्ण पदकी समाप्ति पर समाप्तिके अन्तिम चार वर्णोमे कही न कही अवश्य लाया जाता है । इस प्रकारकी वर्ण-योजनासे छद शास्त्रमे जो दग्धाक्षर व अशुभ गण माने गए है, अगर वे छद-रचनामे आ जाये तो वैण-सगाई होनेसे उनका दोप नही लगता । दधखर—दग्धाक्षर । खैर—कुशल-क्षेम । थई—हुई । सगाई—सबध, रिश्ता । जेण—जिस । थळ—स्थान । वळै—फिर । वैर—शत्रुता, दुश्मनी ।

८. उकत—डिंगल छद-रचनाका एक रचना नियम विशेष । जथा—डिंगल गीतोकी रचनाका एक नियम विशेष जिसमे कही तो यह अलकारके रूपमे प्रयुक्त होता है और कही रीतिके रूपमे । दोख (दोष)—काव्यके गुणोमे कमी लाने वाली साहित्य सबधी बाते । दाख—कह । भाणव—चारण कवि, कवि । रूपग—डिंगलका गीत छद । भाख—कह ।

छंद नव उक्ति नाम

कवित्त छप्पै

सनमुख पहली सुद्ध १ दुई गरभित सनमुख दख २ ।
परममुख सुद्ध प्रसिद्ध ३ अनै गरभित परमुख अख ४ ॥
सुद्ध परासुख सरस ५ परामुख गरभित होई ६ ।
सुद्ध स्रीमुख सातमी ७ सुकवि स्रीमुख संजोई ८ ॥
उचरजै नमी मिस्रित उकति ९ पलटै पयरण दवाळ प्रति ।
रघुनाथ सुजस गावरण रहस, अखी 'किसन' नव विध उकत ॥ ९

वारता

कैहवा-वाळा प्रसगीरै मनमुख कवि कहै सौ सुद्ध सनमुख उक्ति कहावै ।

अथ सुद्ध सनमुख उक्ति उदाहरण

दूहौ

दससिर खळ मारण दुसह, हाथी तारण हाथ ।
क्रपा रूप 'किसनौ' कहै, निमौ भूप रघुनाथ ॥ १०

वारता

सनमुख अन्योक्ति कर कहणौ सौ गरभित सनमुख उक्ति कहावै, और ऊपरै कहे नै आपरा मननै समभावजै सौ गरभित सनमुख उक्ति कहावै ।

अथ गरभित मनमुख उक्ति उदाहरण

दूहौ

उचरै आळ-जंजाळ अै, व्रथा करै बकवाद ।
निज मन 'किसना' अहनिसा, अवधेसर कर याद ॥ ११

---

९ दुई–द्वितीय, दूसरी । अनै–और । अख–कह । उचरजै–कहिए । वयण–वचन । दवाळ–डिंगल गीतका चार चरणका समूह । रहस–रहस्य । अखी–कही । कैहवा-वाला–कहने वाला । प्रसगी–वह जिसके विषयमे प्रसग चले, सम्बन्धी ।

१० दससिर–रावण । खळ–राक्षस । दुसह–महा भयकर । उचरै–कहता है, वर्णन करता है । आळ-जजाळ–व्यर्थका बवडर । अहनिसा–रात दिन । अवधेसर–श्रीरामचद्र भगवान ।

दूहौ

साठ सहस सुत सगररा, नहचै मुवा निकांम ।
तै धन ग्रीध जटाय तं, रिण रहियौ छळ रांम ॥ १२

वारता

जीनै रूपग कहै जीसू अपूठौ कहीजै सौ सुद्ध पर मुख उक्ति कहावै, औररौ जस और प्रतसू भाखण करणौ सौ सुद्ध परमुख उक्ति।

अथ सुध परमुख उक्ति उदाहरण

सोरठौ

जीपे दससिर जंग, समंदां लग दीपै सुजस ।
ऊ रघुनाथ अभंग, जन पाळग समराथ जग ॥ १३

वारता

परमुख उक्तिनै अन्योक्तिरी कर कहणौ सौ गरभित परमुख उक्ति कहावै ।

अथ गरभित परमुख उक्ति उदाहरण

दूहा

हर समरौ होसी हरी, जीते जमरौ जंग ।
कर उदिम रोलंब करै, भमरौ कीटी भ्रंग ॥ १४
जिणनूं जांण अजांणरौ, ईखौ भेद अभंग ।
लाठी खर ऊपर लगत, पूजै जगत पमंग ॥ १५

वारता

कवि विना वरणनीय नै पैली पैलानै कहै सौ सुद्ध परामुख उक्ति कहावै ।

---

१२. नहचै–निश्चय । निकाम–व्यर्थ । रिण–युद्ध । छळ–लिए । जींनै–जिसको । रूपग–गीत छंद । जींसू–जिससे । अपूठौ–उलटा । और–अन्य, दूसरा । प्रत–प्रति, लिए । भाखण–भाषण ।

१३ जीपे–जीत कर । दससिर–रावण । जग–युद्ध । लग–पर्यन्त, तक । दीपै–शोभा देता है । पाळग–पालन करने वाला । समराथ–समर्थ ।

१४ जग–युद्ध । उदिम–उद्यम, उद्योग । रोलब–भौंरा । भमरौ–भौंरा । कीटी–छोटा कीटाणु । भ्रग–भौंरा ।

१५ जिणनू–जिसको । अजाणरौ–अज्ञानका । ईखौ–देखो । खर–गधा । पमग–घोडा ।

अथ सुद्ध परामुख उक्ति उदाहरण

दूहौ

समपी लंका सोवनी, दीन भभीखण दांन ।
जेण रांम उज्जळ सुजस, जंपै सकळ जिहांन ॥ १६

वारता

सकळ नाम सिवरौ है सौ सिवप्रत पारबती बचन छै। पैलौ पैलानै कहै सौ परामुख उक्त जिण राम सौ परमुख उक्त अदभुतरस, पारबतीरौ बयण सौ परामुख उक्त नै सिवप्रत सभाखण ।

वारता

परामुखमे सनमुखरी छाया नीसरै सौ गरभित परामुख उक्ति कहावै ।

अथ गरभित परामुख उक्ति उदाहरण

दूहौ

हर जैरै कच-कूप मह, वसै कौड़ ब्रहमंड ।
केम प्रभू मावै तिके, परगट कीड़ी पिंड ॥ १७

वारता

सातमी सुद्ध स्रीमुख नाम उक्ति जठै परमेस्वरकौ वचन तथा कोई देवताकौ, तथा राजाकौ वचन तथा नाग वचन, सौ सारा रूपगमे एक निव है सौ सुद्ध स्रीमुख उक्ति कहावै ।

अथ सुद्ध स्रीमुख उक्ति उदाहरण

दूहौ

हूं आखूं नय वयण हिक, सांभळ भरथ सुजांण ।
करणौ तौ मौ अवस कर, पितचौ हुकम प्रमांण ॥ १८

---

१६ समपी–दी । सोवनी–स्वर्णकी । दीन–गरीव । भभीखण–विभीषण । सकळ–समस्त, सब अथवा महादेव, शिव । जेहान–ससार । पैलौ–पहिला या दूसरा । प्रत–प्रति । सभाखण–सभाषण ।

१७ हर (हरि)–विष्णु । जैरै–जिसके । कच-कूप–रोम-कूप, रोम-छिद्र । मह–मे । ब्रहमंड–ब्रह्मांड । केम–कैसे । तिके–वे । परगट–प्रकट । पिंड–शरीर ।

१८. हू–मै । आखू–कहता हूँ । नय–नीति । वयण–वचन । हिक–एक । साभळ–सुन । भरथ–भरत । सुजाण–चतुर । पितचौ–पिताका ।

वारता

आठमी कवि-कल्पित स्त्रीमुख उक्ति कहावै, जिणमे कवियण नै स्त्रीमुखरौ वयण दोनूई नीसरै ।

वारता

स्त्रीरामजीरौ बचन लछमणप्रतिनै यू कहियौ—अवधेस कवियण दोनू भेळा छै ।

अथ कवि कल्पित स्त्रीमुख उक्ति उदाहरण

दूहौ

कोपै तूं मौ राज कज, सांभळ वायक सेस ।
गरवां मत ग्रहियौ नहीं, यूं कहियौ अवधेस ॥ १९

वारता

नवमी मिस्रत उक्ति जठै गीत कवित्त छदादिकमे तुक-तुक प्रति तथा दवाळा दवाळा प्रति वचन पलटै, सौ मिस्रित उक्ति कहावै ।

अथ मिस्रित उक्ति उदाहरण

सोरठौ

वांण सराहै वांण, खाग सराहै समर खळ ।
मौज उभ्भळ महरांण, सारा है रघुबर सुकव ॥ २०

इति नव उक्ति निरूपण ।

अथ अग्यारह प्रकार डिंगलकी जथा निरूपण

अथ अग्यारह जथा नांम छद चंद्रायण

विधांनीक सर सिर फिर वरण वखांणजै ।
अहिगत आदसु अंत सुध पिण आंणजै ॥

---

१८ कवियण—कविजन, कवि । दोनूई—दो ही ।

१९ मौ—मेरे । कज—लिए । सांभळ—सुन । सेस—लक्ष्मण । अवधेस—श्री रामचन्द्र ।

२० दवाळा—गीत छदके चार चरणका समूह । वाण—वाणी । वाण—सरस्वती या पडित । खाग—तलवार । समर—युद्ध । खळ—शत्रु । मौज—उदारता, दान । ऊभ्भळ—तरग, लहर । महराण (महार्णव)—सागर । सारा है—प्रशसा करते हैं । निरूपण—निर्णय, विचार ।

२१. ग्यारह जथाओके नाम—विधानीक, सर, सिर, वरण, अहिगत, आद, अत, सुध, अधिक, न्यून और सम । पिण—भी ।

अधिक न्यून सम नांम अग्यारह उच्चरै ।
'किसन' जथा श्रै डिंगळ कवि आरै करै ॥ २१

वारता

प्रथम तौ विधानीक जथा कहावै जठै विधानीक तिसर गीत वर्णै सौ ।

अथ विधानीक नामा जथा उदाहरण

गीत सुपंखरौ

जात विधानीक तिसर गीत

वंसी ऐराकरां छ-भाख पैराकरां खड़गवाहां ,
जोस मेधा आखरां आसुरां भंज जंग ।
मोड़ाकरां नायबां-वाकरां अरांतोड़ा मनैं ,
साकुरां आखरांजोड़ा ठाकुरां स्रीरंग ॥
अछेहां पै धाव सिधां सभाव पटैत अंगां ,
कछ अंबा भांण कुळां अरेहां सकांम ।
दौड़ बाद जीपणां लूणचै काज भंजे देहां ,
रेवंतां नीपणां सूरां रंजै अेहां रांम ॥
तेजरा जळोधां वाक अरोधां विरोधां तीखा ,
तातां पै निघातां जंगी होदां तेग ताव ।

---

२१ आरै करै–स्वीकार करते हैं ।

२२ वसी–वशका । ऐराकरा–नस्ल विशेपके घोडो । छ भाख–छ भापाओ । पैराकरा–पार करने वाले । खडगवाहा–योद्धाओ । मेधा–स्मरण रखनेकी शक्ति, धारण शक्ति, धारणा शक्ति । आसुरा–शत्रुओको, राक्षसोको । भज–सहार करते है । जग–युद्ध । मोडाकरा–नस्ल विशेपके घोडे । नायवा-वाकरा–कवि । अरातोडा–शत्रुओका नाश करने वाले । साकुरा–घोडा । आखराजोडा–कवि । ठाकुरा–योद्धाओ । स्रीरग (श्री रग)–विष्णु, श्री रामचद्र । अछेहा–बहुत । धाव–दौड । सिधां–सिद्धा । पटैत–योद्धा । कछ–देश विशेप जहाके घोडे प्रसिद्ध होते हैं । अबा–देवी, शक्ति । भाण–सूर्य । अरेहा–शत्रुओको मारने वाले, अथवा निष्कलक । दौड–शीघ्र गमन या गति । वाद–शास्त्रार्थ । जीपणा–जीतने वाला । लूणचै–नमकके । भजे–नाश करते हैं । रेवता–घोडो । नीपणा–रचियो । सूरा–योद्धाओ । रजे–प्रसन्न होता है । अेहां–ऐसो पर । जळोधा (जलधि)–सागर । वाक–वाणी । तीखा–तेज । ताता–तेज स्वभाव, चचल । निघाता–प्रति वेग । जंगी–बडा । होदा–हाथीकी पीठ पर रखनेकी अमारी । तेग–तलवार । ताव–जोश ।

बेग ऐण रोधां बैण सबोधां सक्रोधां बंदै ,
वाजंदां कब्यंदां जोधां इसां औधराव ॥
सींधुरां ढहाड़ सं बां दहाड़ बिभाड़ सत्रां ,
धाव सिघ्र बिरदाई प्रवाड़ धरेस ।
तुरंगां कब्यंदां बांबराड़ भड़ां रांम ताखा ,
निखंगां रीझणा धाड़ जांनकी नरेस ॥ २२

वारता

दूजौ सर नामा जथा सौ गीतरा दूहारी तीन तुकमे तौ और वात वरणै नै च्यार ही दूहांरी चौथी तुकमे कहै सौ वात निभी चाहै । आगै सात साणौरा महैं वेलियौ साणौर गीत छै जौ महैं चरणारब्यदारौ नाम च्यार ही दूहारी चौथी तुकमे साबत निभ्यौ छै सौ देख लीज्यौ ।

अथ सरजथा उदाहरण

गीत वेलियौ सांणौर

औयण जे रांम सिया नित अरचै ,
सुज चरचै सिव भ्रहम सकाज ।
जग अघहरण सुरसरी जांमी ,
राजतणां चरणां रघुराज ॥ २३

वारता

तीजौ सिर नामा जथा कहावै जठै प्रमांणिक चौसरसू लगाय नै प्रमाणीक सत सर ताई रूपग लखौ छै सौ अगाडी रूपगमे है, सत सर सुधी साणौर कह्यौ छै सौ देख लीज्यौ ।

---

२२ बेग–गति । ऐण–हरिण । बैण–बचन । सबोधा–ज्ञान वाला । वाजदा–घोडा । कब्यदा–कवियो । जोधा–योद्धाओ । औधराव–श्री रामचद्र भगवान । सींधुरा–हाथियो । ढहाड–गिराने वाला । सूबा–कृपणो । दहाड–गर्जना, घोर ध्वनि । बिभाड–सहार करने वाले । सत्रां–शत्रुओ । धाव–दौड । बिरदाई–बिरुद वाले । प्रवाड–शाका । धरेस–धारण करने वाले । तुरगा–घोडो । कब्यदा–कवियो । बावराड–जबरदस्त । ताखा–महान, जबरदस्त । निखग–वह जो किसीका प्रभाव या रौब न मानता हो परन्तु कर्त्तव्यपरायण हो, निशक । रीझणा–प्रसन्न होने वाले । धाड–धन्य-धन्य । महैं–मे, अदर । चरणारब्यदा (चरणारविंद)–कमल-चरण ।

२३ औयण–चरण । सुज–वह । भ्रहम–ब्रह्मा । सुरसुरी–गगा । जामी–पिता, जनक । राजतणां–आपके, श्रीमानके । रूपग–गीत (छद) ।

अथ सिर नामा जथा उदाहरण

सुद्ध सांणौर सतसर गीत

अडग तेज अणथघ सरद, ध्यांन स्रुत आसती ,
नीम वर कार कळ जोग तप नांम ।
थिर प्रभा नीर पय यंद बुध नीत थट ,
मेर रवि समंद चंद भव भ्रहम रांम ॥ २४

अथ चौथी वरण नाम जथा कहावै ।

वारता

चौथी वरण नाम जथा कहावै, जिण महै नखसू लगाय सिख ताई, तथा सिखसू लगाय नख ताई वरणण होवै सौ यण ग्रथ मधे बावीस जातरा छप्पै वरण्या जठै एक तौ समवळ विधान छप्पै देख लीज्यौ। दूजौ बावीस छप्पैमे स्त्री प्रतै विधानीक छप्पै ।

अथ वरण जथा उदाहरण

समवल विधांन छप्पै

नयणकंज सम निपट, सुभत आंनन हिमकर सम ॥ २५

इत्यादि दुतीय विधांनीक छप्पै

तुक

सेस इंदु म्रग दीप, जांण कोकिल म्रगपति गज ।
बेणि बदन चख नाक, बोल कटि जंघ चाल सज ॥ २६

वारता

पाचमी अहिगत नाम जथा कहवै, जिण गीतरी आदरी तुकरा आदमे जो पदारथ कहै, जिणरी सबध तुकरा अंतमे नीसरै वचै और वात वरणै सापरीगत ज्यू रूपगरा वरणणरी वक्रगति होय सौ अहिगत नाम जथा कहावै ।

---

२४ अडग—न डिगने वाला, अटल । अणथघ—जिसका थाह न हो, अपार । स्रुत (श्रुति)—वेद । आसती—आस्तिकत्व । कार—मर्यादा, सीमा । कळ—कला (चद्रकला) । जोग—योग । तप—तपस्या । थिर—स्थिर । प्रभा—काति । पय—समुद्र । यद—इन्द्र । बुध—वुद्धि । नीत—नीति । थट—है । मेर—सुमेरु पर्वत । रवि—सूर्य । समद—समुद्र । भव—महादेव । भ्रहम—ब्रह्मा ।

नोट—सिर जथाके उदाहरणका गीत सतसर अगाडी मय अर्थके दिया गया है, उसे पढ कर पाठक समझें ।

अथ अहिगत जथा उदाहरण

साणौर गीत

सिव देवां इंद्र सिध सिध राजां ,
है ग्रह रवि, रविचो है राज ।
तरसुर सरित गंग तरराजं ,
राजां सह सरहर रघुराज ।।
कनक करग धातां हिम करगां ,
रति-पति गरुड़ खगां सारूप ।
दधां विधाता दुजां खीर-दध ,
भूपां सिधां जांनुकी भूप ।।
गिरां हणू रुद्रां सोव्रनगिर ,
गाथां रुघ वेदां हरि गाथ ।
कोटां गणं गजानन लंका ,
नृपां सिरोमण सीतानाथ ।।
भारथ लखण सेस अह भायां ,
सुकवि दुति धारां सुकवियां डुडंद ।
लिछमीवर भगतां धू लायक ,
नायक जगत दासरथ नंद ।। २७

वारता

छठी आद जथा कहावै सौ पहलरा दवाळामे कहै सौ सारा दवाळामे कहणौ जिण जायगा थाणा-बध वेलियौ रूपग गीत वणै सौ इण रूपग माहै अगाडी जागडौ प्रहास थाणा-बध वेलियौ गीत छै सौ देख लीज्यौ । सात साणौरा महै छै ।

---

२७ तरसुर—कल्प-वृक्ष । सरित (सरिता)—नदी । गग—गगा नदी । कनक—सोना, स्वर्ण । धाता—धातुओमे । हिम—स्वर्ण, सोना । रति-पति—कामदेव । दधा (उदधियो)—समुद्रो । विधाता—ब्रह्मा । दुजा (द्विजो)—ब्राह्मणो । खीर-दध (क्षीर उदधि)—क्षीर-समुद्र । गिरा (गिरियो)—पर्वतो । हणू—हनुमान । सोव्रनगिर—स्वर्णगिरि, सुमेरु पर्वत । गाथा—कथाओ । रुघ—ऋग्वेद । गाथ—कथा । सिरोमण—शिरोमणि । डुडद—सूर्य, भानु । दवाळा—गीत छदके चार चारणोका समूह । जायगा—जगह, स्थान ।

अथ आद जथा उदाहरण

थाणबध वेलियौ गीतरौ दूहौ छै

गीत

सरण वखांणै जगत चित विखांणै जेम सिंध,
मौज किव वखांणै चंदनांमा।
बुध गिरा रांम हथवाह रिम वखांणै,
वखांणै काछदढ़पणौ बांमा ॥ २८

वारता

सातमी अत नामा जथा कहावै, जठै चौटीबध रूपग वणै। जौ रूपग सारामे वरणन करै सौ अतग दवाळामे कहणौ, सौ इण ग्रथरै आद बावीस कविता मध्ये चौटीबध कवित छै सौ देख लीज्यौ, यूही गीत जाणज्यौ।

अथ अत जथा उदाहरण चौटीबध

छप्पै

सूरजपणौ सतेज, स्रवण यम्रत हिमकर सम ॥ २९

वारता

आठमी सुध नामा जथा कहावै, सौ जठै रूपगरी एक राह निभै, पैहला दूहारी पैहली तुकमे भाव सौ च्यार ही दूहारी पैहली तुकमे भाव। पैल्हारी दूजी तुकमे भाव सौ सारा दूहारी दूजी तुकमे भाव। पैलारी तीजी तुकमे भाव सौ सारा दूहारी तीजी तुकमे भाव। पैलारी चौथी तुकमे भाव सौही दूजा दूहारी चौथी तुकमे भाव होय सौ सुध जथा कहावै सौ यण रूपगमे आगै घीडादमौ गीत छै सौ देख लीज्यौ।

---

२८ दूहौ—गीत छदके चार चरणका समूह। वखाणै—वर्णन करते हैं। प्रशसा करते हैं। सिंध—(सिंधु) समुद्र। मौज—उदारता। चदनामा—यश, कीर्ति। बुध—पडित। गिरा—वाणी। हथवाह—हाथसे किया जाने वाला शस्त्र-प्रहार। रिम—शत्रु। काछ-द्रढ-पणौ जितेन्द्रियता। सयमशीलता। बांमा—स्त्री। यूही—ऐसे ही।

२९ स्रवण—श्रवण। यम्रत—अमृत। हिमकर—चद्रमा। सम—समान। जठै—जहा। रूपग—गीत छद, काव्य। कहावै—कही जाती है। यण—इस।

अथ सुद्ध जथा उदाहरण

घोड़ादमौ गीत

राघव गह पला कीर कह पै रज ,
सिला उडी जांणै जुग सारौ ।
जीवन जगत कुटंब दिस जोवौ ,
पग धोवौं तौ नाव पधारौ ॥ ३०

वारता

नवमी अधिक नांमा जथा कहावै, जठै रूपगमे अधिकासूअधिकौ वरणण होवै, एक तौ फलाणासू फलाणौ अधिकौ यू होय हर दूजी गणना क्रमसू होय । एक दोय तीन च्यार पाच इत्यादिक क्रमसू दो भातकी अधिक जथा ।

अथ अधिक जथा उदाहरण

सोरठौ

रट नर अधिका राज, राजां अधिका सुर रटै ।
सुरां अधिक सुर राज, अवधेसर सुरपत अधिक ॥ ३१

वारता

दूजी यण ग्रथरा बावीस छप्पै मध्ये नीसरणीबध नाम छै छप्पैमे देख लीज्यौ, अधिक क्रम छै सौ देख लीज्यौ ।

नीसरणीबध छप्पै कवित्त

एक रमा अहनिसा, दोय रवि चंद त्रिगुण दख ।
च्यार वेद तत पंच, सुरत छह सपत सिंध सख ॥ ३२

---

३० गह–पकड कर । पला–अंचल । कीर–धीवर, नाविक । पै–चरण । जुग–ससार । सारौ–समस्त । दिस–तरफ । अधिकासू अधिकौ–अत्यधिक । अधिकौ–अधिक । यू–ऐसे ।

३१ राज–राजा । सुर–देवता । सुरराज–इन्द्र । अवधेसर–श्री रामचद्र महाराज । सुरपत–इन्द्र । यण–इस ।

३२ सपत–सप्त, सात । सिंध–(सिंधु) समुद्र ।

इत्यादिक अधिक जथा दुविधि

वारता

दसमी सम नामा जथा कहावै, जिण महै अभेद सम रूपग वरणै, तथा मवि-सय सावयव रूपकालकार वरणै, तथा वागेटौ, जागेटौ, नागेटौ, वादेटौ, रूपग गीत वरणै सौ सम जथा कहावै। इण उदाहरणरा दूहा माफक गीत कवित्त नीसाणी छद जाण लीज्यौ।

अथ सम जथा उदाहरण

दूहौ

अवधि गगन बाजी अयण, सयण कुमुद सुख साज।
जस कर सिय रोहिणी जुकत, रांमचंद्र महराज॥ ३३

वारता

अठै अधिक न्यून ही छै। स्री रामचद्रजीनै हर चद्रमानै समान वरण्या छै, जीसू सम जथा जाणज्यौ।

वारता

अग्यारमी न्यून नामा जथा कहावै, सौ आगै सुध नामा आठमी जथा कही जीनै क्रम भग कर अस्तव्यस्त कर कहणी सौ न्यून जथा जाणज्यौ। पण रूपग मध्ये घडउथल्ल नामा गीत छै। पैल्हा दूहारी पैली दोय तुकांरौ धरम तौ तीन दूहामे नही छै, हर पाछला दूहारौ धरम आगला दूहामे नही जीसू क्रम भग छै। अस्तव्यस्त पद छै, जीसू न्यून जथा छै।

अथ न्यून जथा उदाहरण

घड़उथल्ल गीत

जम लग कठै भै सीस जियां,
तन दासरथी नित वास तियां।
तन दासरथी नह वास तियां,
जम लगसी माथै जोर जियां॥ ३४

इति ग्यारह जथा सपूरण

---

२३ जिण—जिस। महै—मे। अभेदसमरूपग—अभेदसम रूपकालकार। सावयव रूपकालकार—रूपकालंकारका एक भेद विशेष।

३३ सयण—सज्जन। सिय—सीता। जुकत—युक्त। हर—और। जीसू—जिससे।
३४ कठ—कहा। भै—डर, भय। माथै—ऊपर। जिया—जिनके।

अथ गीताका एकादस दोख निरूपण

छप्पै कवित्त

उकतसु सनमुख आदि निभै नह जिकौ अंध १ ।
निज वरणै भाख विरोध सही छबकाळ दोख सुज २ ॥
नह व्है जात पित नांम हीण दोखण सौ कहियै ३ ।
वरण होय विसुध निनंग दोखण ते नहियै ४ ॥
पद छंद भंग सौ पांगळौ ५ अधिक ओछ कळ ऊचरै ।
वेलिया खुड़द विच जांगड़ौ वणै सजात विरुद्ध रे ६ ॥
अरथ होय आमंझ अपस ७ सौ दोख उचारत ।
जथा निभै नह जेण नाळछेदक निरधारत ॥
तिकौ दोख पख तूट जोड़ कच्ची जिण मांझळ ।
सुभ आखर मुड़ असुभ लखावै वधिर १० जिकौ वळ ॥
यक आद अंत वाळौ अखिर करै अमंगळ सोमकर ।
अगीयार दोख कवि आखिया अे निवार रूपग ऊचर ॥ ३५

अथ अधादिक एकादस दोख उदाहरण कथन

छप्पै कवित्त

कहियौ मैं के कहूं किसूं अंधौ तै कहियौ ।
लिता पांन धनंख रांम छबकाळौ लहियौ ॥
अज अजेव जग ईस निमौ तैं हीण दोख निज ।
रत नदीतरत कवंध सार इम चली निनंग सुज ॥

---

३५. निभै–निभता है । जिकौ–वह । अघ–एक साहित्यिक दोषका नाम । भाख–भाषा । छबकाळ–एक साहित्यिक दोषका नाम । सुज–वह । पित–पिता । हीण दोखण–एक साहित्यिक दोषका नाम । निनग–एक साहित्यिक दोषका नाम । पागळौ–एक साहित्यिक दोषका नाम । ओछ–कम । कळ–मात्रा । आमूझ–वह जो कठिनतासे समझमे आवे । अपस–एक साहित्यिक दोषका नाम । नाळछेदक–एक साहित्यिक दोषका नाम । तिकौ–वह । पखतूट–एक साहित्यिक दोषका नाम । जोड–काव्य-रचना । माझळ–मध्यमे । वधिर–एक साहित्यिक दोषका नाम । वळ–फिर । अमगळ–एक साहित्यिक दोषका नाम ।

३६ छबकाळौ–छबकाळ, दोषका एक नाम ।

कवि छंदोभंग पंग कह तुक धुर लछण तोरमें ।
जात विरुध जांगड़ारौ दूहौ वर्णौ लघू सांणोरमें ॥ ३६

विस्णु नांम कुळ विस्णु विस्णु सुत मित्र अपस वद ।
कच अहिमुख ससि लंक स्यंघ कुच कोक नाळ छिद ॥
मनख्या मत विललाय गाय प्रभुजी पख तूटल ।
रांमण हणियौ रांम गूह खाधौ तारक खळ ॥
यण भांत कहै बहरौ यळा महपतमें पय रांम रे ।
तुक एण अमंगळ आद अंत कवियण विध गुण नह करे ॥ ३७

अथ ग्यारह दोख छप्पै अरथ

कहियौ मै अती सन्मुखादिक नव उक्ति कही ज्या महली एक ही उक्तिरी रूप निभै नही, उक्तिरी ठीक पडै नही सौ अध दोख । कहियौ मै के कहू किसू, अठै कवि वचन छै कै कोई और वचन छै, कै देव नर नाग वचन छै कै मानसी विचार छै, अठै वचनरी खबर नही, सदेह छै, उक्तिरौ रूप रुळियौ छै । सनमुख छै कै परमुख छै, कै परामुख छै, कै स्रीमुख छै, कै गरभित छै, कै मिस्रित छै । अठै काई निस्चय नही जिणसू अध दोख छै । १

भाखा विरुद्ध सौ छबकाळ दूखण कहावै । लिता, पान, धनख राम । लिता पजाबी भाखा छै । पान ब्रज भाखा छै । राम देस भाखा । अठै तीन भाखा सामल, जिणसू छबकाळ दोख छै । २

जातरौ पितारौ मुदौ जाहर न होवै सौ हीण दोख कहावै । अज अजेव जगईस नमौ । अठै अज सिवनै कह्यौ कै विस्णु नै, दोई अजेव दोई जगतरा ईस छै, या दोयाईरै जात किसो नै मा वाप किसा, फेर अजन्मारै मा बापरौ लेखौ काई ठीक नही, नामरौ पण ठीक नही । जिण तावै हीण दोख हुवौ । ३

---

३६ पग–पागळा नामक एक साहित्यिक दोपका नाम ।

३७ नाळ छिद–नाळ छेद नामक साहित्यिक दोषका नाम । पख-तूटळ–वह जिसका पक्ष खडित हो–एक साहित्यिक दोपका नाम । खाधौ–ध्वंश किया, मारा । तारक–तारकासुर नामक राक्षस । बहरौ–एक साहित्यिक दोपका नाम ।

१ ज्या–जिन । महली–अन्दरकी । ठीक–ज्ञान, पता । कै–या, अथवा । मानसी–मनुष्य सम्बन्धी । रुळियौ–नष्ट हुआ ।

२ दूखण–दोप । सामल–साथ ।

बिना ठिकांणै विकळ वरणण होय सौ निनग दोख तथा नग्न दोख । पैंली कहवारी वात पछै वरणै, पछै वरणवारी वात पैहली वरणै'सौ विकळ वरणण 'वाजै ज्यू अठै रत नद तिरत कबध सार इम चली । पैहली तरवार चालै जद लोही आवै, जद नदी वहै, अठै पैहलो लोहीरी नदी वरणी, फिर कबध वरण्या, जठा पछै तरवार चली कही, ठिकाणाचूक वरणण छै, जीसू निनग दोख हुवौ । ४

छद भागै सौ छदभग, पागुळौ दोख कहावै । तुक कवि छदोभग कह, इण तुकमे एक मात्रा घाट छै । गगा कका विचै ससौ चाहीजै, छप्पैरी नवमी तुकरै तथा पाचमी तुकरै पूरबार्घमे पनरै मात्रा चाहीजै सौ अठै चवदै मात्रा छै । एक मात्रा कम छै । छद भागौ जीसू छदभग पागळौ दोख हुवौ । ५

जात विरोध सौ लघु साणौर मही गीत ४ वेलियौ सुहणौ खुडद भेद भेळा होवै पिण जागडौ भेळौ न हुवै । जागडारौ दूहौ वणै सौ जात विरोध (दोख) हुवौ । ६

जठे अमूभयौ अरथ होय दस्टकूट गूढा ज्यू क्लिस्टारथ ज्यू महाकस्टसू अरथ होय सौ अपस दोख कहावै ज्यू विस्णु नाम कुळ विस्णु विस्णु सुत मित्र । इति विस्णुकौ नाम हरीनै हरी नाम सूरजकौ जीसू सूरजका वसका रांमचद्र सूरज छै। फेर विस्णुको हरी नाम नै हरी नाम सूरजको जीसू सूरजका सुत सुग्रीवका मित्र स्री रामचद्र इसी तरै महा कस्टसू अरथ होय सौ अपस दोख कहावै । ७

जी रूपगमे विधानीक आदि नव जथा नही निभै सौ नाळ छेद नांम दोख कहावै, कच अहि मुख ससि स्यघ लक कुच कोक नाळ छिद, चोटी कही मुख कह्यौ कमर कही नै पछै कुच कह्या, जीसू क्रम भग हुवौ, चौथी वरण नामा जथा जठै सिख नखकै वरणण होय सौ अठै निभी नही । जीसू नाळ छेद दोख हुवौ । ८

जिण रूपगमे पतळी जोड होय सौ पख तूट दोख कहावै, मनख्या मत विललाय गाय प्रभूजी पख तूटल । अरथ मनख्या पद कची जोड ग्रामीण विलोवडी, विललाय चौपद । गायक चौपद प्रभूजी प्रभूपद ठीक पिण जीकारासू यौ पण कचौ । इसी कची पतळी जोड जी रूपगमे होय सौ पख तूट दोख कहावै । ९

---

३ मुवौ–ज्ञान । दोयाई–दोनो ही ।

४ ठिकाणौ–स्थान ।

५ घाट–कम ।

७ अमूझ्यौअरथ–कविता या गद्यका वह अर्थ जो आसानीसे समझमे न आ सके, दृष्टकूट अर्थ । द्रस्टकूट–दृष्टकूट । क्लिस्टारथ–क्लिष्टार्थ ।

८ जीं–जिम । रूपग—गीत छद या काव्य ।

सुभवायक है, सौ मुड नै पाछौ असुभ मालम हुवै सौ बहरौ दोख कहावै। रामण हणियौ राम, गूह खाधौ तारक खळ, हणियौ पद राम रावण सब्द विचै छै सौ दुवासू अरथ लागै छै, राम हणै या रामण हणै। राम रामणनै हण्यौ कै रामण रामनै हण्यौ, निरधार नही, तारकासुर दैतनै, गूह नाम स्वामी कारतिकरौ छै सौ तारक खळ दुस्टनै स्वामी कारतिक खाधौ। जुधमे विनास कियौ अरथ छै, जीकौ सुभपणौ मुडै नै असुभ अरथ मालम होवै छै। गूह खाधौ इसौ ग्लाण सब्दारथ असुभ भासै छ जीसू बहरौ दोख छै, तथा कोई कवि सीगमड पिण इण दोखनै कहै छै। १०

रूपगरी आदरी तुकरौ आद अखिर नै रूपगसू पूरण होय जिण अतरी तुकरौ अतरौ आखिर मिळाया असुभ अरथ प्रगटै सौ अमगळ दोख कहावै छै। ज्यू महपतमे पय राम रै। अण तुकरौ आदरौ मकार अतरौ रैकार भेळा किया मरै। यसौ असुभ सब्द भासै छै जिणसू अमगळ नाम दोख हुवौ। ११

इति एकादस प्रकार दोख सपूरण।

अथ नीसाणी त्रिविधि वैण सगाई नाम लछण उदाहरण

दूहौ

वयण सगाई तीन विधि, आद मध्य तुक अंत।
मध्य मेल्ल हरि मह महण, तारण दास अनंत॥ ३८

वारता

दूहारी पैहलीरी दोय तुकामे तुकरा आद अखिररौ तुकतरा आद अखिरसू सबध जिणसू वैण सगाई हुई।१। सौ यधक कहीजै। दूहारी तीजी तुकमे मध्य मेळ वयण सगाई हुई सौ समवैण सगाई।२। दूहारी चौथी तुकमे अत वयण सगाई, सौ न्यून वैण सगाई।३। आदरौ अखिर तुकतरा अखिर हेठै आवै सौ तौ उतिम वैण सगाई।१। आदरौ अखिर तुकतरा दोय अखिरा हेठै आवै सौ मध्यम वैण सगाई हुवै।२। आदरौ अखिर तुकतरा तीन अख्यरा नीचै आवै सौ मध्यम वैण सगाई हुई।३। नै आदरौ अखिर तुकतरा च्यार अखिरा हेठै आवै सौ अधमाधम वैण सगाई कहीजै।४। अठा सवाय सौ निकमी सिथळ वयण छै।

---

१० दुवा—दोनो। हण्यौ—मारा, सहार किया। खाधौ—भक्षण किया, ध्वंश किया। निरधार—निश्चय। ग्लाण—ग्लानी।

३८ महमहण (विष्णु)—ईश्वर। यधक—अधिक। अखिर—अक्षर। हेठै—नीचे। उतिम—उत्तम, श्रेष्ठ। वयण—वर्ण मैत्री, वयण सगाई।

अथ उतिम मध्यम अधिम अधमाधम च्यार प्रकार वैण सगाई उदाहरण

सोरठौ

लेणा देणा लंक, भुजडंड राघव भांमणौ।
आपायत अणसंक, सूर दता दसरथ तणा ॥ ३६

वारता

पैली तुकमे उतिम ।१। दूजी तुकमे मध्यम ।२। तीजी तुकमे अध्यम ।३। चौथी तुकमे अधमाधम ।४। अै च्यार वैण सगाई। तीन आगै कही इण प्रकार सात वैण सगाई कही। पैला दूहामे आद वैण सगाई कही सौ नै दूजा दूहामे उतिभ वैण सगाई कही सौ एक गिणा तौ छ भेद नै जुदी दोय गिणा तौ सात भेद छै। इण प्रकार वैण सगाई समझ लीज्यौ।

अथ सावरणी अखिरारी अखरोट वैण सगाई वरणण

नीसांणी

आ ई उ ए य व यता मित वरण मुणीजै।
ज झ ब व प फ न ण ग घ बि ब ह अै मित्र अखीजै।
त ट ध ठ द ड च छ सुकवते गत जुगम गिणीजै।
अकाराद जुग जुग अखर अखरोट अखीजै।
अधिक अनै सम न्यूंन ऐ त्रहुं भेद तवीजै ॥ ४०

उदाहरण

आद अखिर सौ अंतमें खुल अधिक सखीजै।
अधिक खुलै तद बे अधिक सम तिकौ सहीजै।
ज झ ब वाद १ क्रम २ न्यूंन अै अछरोट कहीजै ॥ ४१

---

३६ भामणं–वलैया, न्यौछावर। आपायत–शक्तिशाली, समर्थ। अणसक–निर्भय, निशक। दता–दातार। तणा (तनय)–पुत्र। तुक–पद्यका चरण।

४०. सावरणी–सवर्ण। अखरोट–राजस्थानी (डिंगल) साहित्यमे वयण सगाईका ही एक भेद जहाँ पर मित्र वर्णसे या जुगम (युग्म) अक्षरका युग्म अक्षरमे यथास्थान मेल हो। अखिरारी–अक्षरोकी। यता–इतने। मित–मित्र। वरण (वर्ण)–अक्षर। मुणीजै–कहे जाते हैं। अखीज–कहे जाते हैं। जुगम (युग्म)–दो, जोडा। गिणीजै–गिने जाते हैं। जुग (युग)–दो। अखीज–कहे जाते है। अनै–और। तवीजै–कहे जाते हैं।

४१ सखीजै–साक्षी दी जाती है। अछरोट–अखरोट।

अथ अकारादिक वकारात अधिक मित्र अखरोट उदाहरण

दूहौ

अवधि नगररै ईसरा, एहा हाथ उदार ।
यण सरणागत वासतै, दीध लंक सुदतार ॥ ४२

सम अखरोट उदाहरण कवित्त

जस कज करै झळूस वाज गजराज वडाळा ।
पह दे पीठ अफेर गहर रघुनाथ सिघाळा ॥
नृपत रूप मघवांण,

अथ न्यून अखरोट ।

तसां वरसण द्रब अट्टळ ।
धमचा कां ढींचाळ डौळ खग झाट लखा दळ ॥
चौरंग उरस चाचर छिबै हर अज पूरण हूंसरौ ।
महाराज रांम सम महपती दांन खाग कुण दूसरौ ॥ ४३

अरथ

पैला दूहामे तौ वैंण सगाई । आद मध्य तुकात तीन कही ज्यानै हीज अधिक सम न्यून जाणजै ।१। दूजा दूहामे उतम मध्यमादिक च्यार प्रकार कही ।२। फेर नीसाणीमे सावरणी अख्यरारी अखरोट कही सौ पैला दूहामे तौ अकारादि वकारात कही सौ अधिक । पछै कवितरी पाच तुकामे जकारादि णकारात सम अखरोट कही, फेर छप्पैरी च्यार तुकमे तकारादि छकारात न्यून वरण मित्र तथा वैण सगाई, तथा अखरोट कही सौ समझ लीज्यौ । दस प्रकार छै—आद १ मध्य २ अत ३ उतिम ४ मध्यम ५ अध्यम ६ अधमाधम ७ अधिक ८ सम ९ न्यून १० ।

इति दस वैण सगाई वरणण ।

---

४३ झळूस—जलसा । वाज—घोडा । गजराज—हाथी । वडाळा—बडा । पह (प्रभु)—राजा । गहर—गंभीर । सिघाळा—श्रेष्ठ । मघवांण—इन्द्र । तसा—हाथी । वरसण—वर्षा करने वाला, दान देने वाला । अट्टळ—निरतर । ढींचाळ—हाथी । चौरग—युद्ध । उरस—आसमान । चाचर—शिर । हर—महादेव । अज—ब्रह्मा । हूस—अभिलाषा । ज्यानै—जिनको । हीज—ही ।

अथ गीताका नाम निरूपण

दूहौ

पढ वसंतरमणी १ प्रथम, मुण जयवंत २ मुणाळ ३ ।
आदगीत त्रय अक्खिया, खगपत अगै फुणाळ ॥ ४४

पुनरपि सात साणौरका नाम कथन

छप्पै

सुध १ वडौ सांणौर २ समझ दूसरौ प्रहासह ३ ।
वळ तीजौ वेलियौ खुड़द चौथौ सर रासह ५ ॥
सुज पंचम सूहणौ छठौ जांगड़ौ सुछज्जत ६ ।
सोरठियौ सातमौ ७ विहद मुखकत वज्जत ॥
त्रय दुहै मांझ छपय सपत आद गीत अह अखीया ।
अन मिळै गीत यांसु अवस भांत नदी दध भखीया ॥ ४५

अन्य प्रकार गीत नाम कथन

दूहौ

सांणौरांसूं गीतके, अन छंदां होय ।
बेछंदां मिळ गीतके, वरणूं नांम सकोय ॥ ४६

अथ पुनरपि गीत नाम कथन

छद बेअख्यरी

स्री गणराज सारदा सुखकर ।
बगसौ सुमत रांम सीताबर ॥

---

४४ निरूपण—निर्णय, विचार। मुण—कह। अक्खिया—कहे। खगपत—गरुड़। फुणाळ—शेषनाग।

४५ वळ—फिर। सुज—फिर। सूहणौ—सोहणौ नामक गीत छद। सुछज्जत—शोभा देता है। अह—शेषनाग। अखीया—कहे। अन—अन्य। यासू—इनसे। अवस—अवश्य। दध (उदधि)—समुद्र। भखीया—कहे।

४६ सकोय—सब।

४७ गणराज—श्री गणेश। सारदा—सरस्वती। बगसौ—प्रदान करो, दो। सुमत (सुमति)—श्रेष्ठ मति, सुबुद्धि।

पिंगळ नाग क्रपा जौ पाऊं ।
गीत नांम दीठा जं गाऊं ॥
गीत अपार अगम जग गावै ।
दीठा जेण जिता दरसावै ॥ ४७

अथ फेर गीताका नाम कथन

छंद बे अख्यरी

विधांनीक १ पाडगती २ त्रेवड ३ ।
वंकौ ४ त्रबंकड़ौ ५ सुकवी धड़ ॥
चौटी-बंध ६ मुगट ७ दौढौ ८ चव ।
सावझड़ौं ९ हंसावळ १० सूत्रव ११ ॥
गजगत १२ त्रिकुटबंध १३ मुड़ियल १४ गण ।
तिरभंगौ १५ एक अखर १६ भांण १७ तण ॥
भण अड़ीयल १८ झमाळ १९ भुजंगी २० ।
चौसर २१ त्रिसर २२ रेणखर २३ रंगी २४ ॥
अट्ठ २५ दुअट्ठ २६ बंधअहि २७ अक्खव ।
सुपंखरौ २८ सेलार २९ प्रौढ ३० तव ॥
विडकंठ ३१ सीहलोर ३२ सालूरह ३३ ।
भमर-गुंज ३४ पालवणी ३५ भूरह ३६ ॥
घणकंठ ३७ सीह ३८ वगा उमंगह ३९ ।
दूणौगोख ४० गोख ४१ परसंगह ॥
प्रगट दुमेळ ४२ गाहणी ४३ दीपक ४४ ।
सांणोरह ४५ संगीत ४६ कहै सक ४७ ॥
सीहचलौ ४८ अर अहरनखेड़ी ४९ ।
भणिया नाग गरुड़ सांभेड़ी ॥

---

४७ पिंगळ नाग—शेषनाग । दीठा—देखे । जूं—जैसे । गाऊ—वर्णन करू ।

ढोलचाळौ ५० धड़उथल ५१ रसखर ५२ ।
चितविलास ५३ कैवार ५४ सहुचर ॥
हिरणझंप ५५ घोड़ा दम ५६ मुड़ियल ५७ ।
पढ लहचाळ ५८ भाखड़ी ५९ अणपल ॥
वळै हेकरिण ६० धमळ ६१ वखांणां ।
पढ काछौ ६२ गजगत ६३ परमांणां ॥
भाख ६४ गीत फिर अरधभाख ६५ भण ।
मांगण जाळीबंध ६६ रूपक मुण ॥
कहै सवायौ ६७ सालूरह ६८ किव ।
त्रीबंकौ ६९ धमाळ ७० फेर तव ॥
सातखणौ ७१ ऊमंग ७२ इकअखर ७३ ।
यक अमेळ ७४ बे गंजस ७५ भमर ७६ ॥
कवि चौटियौ ७७ मंदार ७८ लुपतझड़ ७९ ।
त्रीपंखौ ८० व्रध ८१ लघू ८२ सावझड़ ८३ ॥
दुतिय झड़मुकट ८४ दुतिय सेलारह ८५ ।
आटकौ ८६ मनमोह ८७ विचारह ॥
ललितमुकट ८८ मुकताग्रह ८९ लेखौ ।
पंखाळौ ९० अै गीत परेखौ ॥
वसंतरमण ९१ आद कव वतावै ।
गीत निनांण नांम गिणावै ॥
सुणिया दीठा जिके सखीजै ।
विण दीठा किण भांत वदीजै ॥
रांम सुजस भणतां रघुराई ।
देसी असुधां सुध दिखाई ॥ ४८

अथ गीत वरण्या तत्रादि वसतरमणी नामा गीत लछण

दूहौ

आद पाय उगणीस मत, बीजी सोळ वखांण ।
अंत भगण जिण गीतनं, वसंतरमणि बखांण ॥ ४९

अथ गीत वसतरमणी नाम सावझडौ उदाहरण

गीत

कर कर आदमें हिक नगण सुभंकर ।
धुर उगणीस मत्त नहचै धर ॥
बे लघु होय तुकंत बराबर ।
सुसबद रांम कहै मझ सुंदर ॥
गीत वसंत रमण किव गावत ।
सोळह पद-प्रत मात सुभावत ॥
पात जकौ जग सोभा पावत ।
रच सावझड़ौ रांम रिझावत ॥
मांझ रदा भासै कौसत-मण ।
भुज आजांन आसुरां भांजण ॥
वण अगु लात उवर विसतीरण ।
तण दासरथ धनौ जन तारण ॥
साझै पय बंदगी सुरेसर ।
जस प्रभणै अह सिंभ दुजेसर ॥

---

५०. हिक–एक । सुभकर–श्रेष्ठ । धुर–प्रथम, प्रारम्भमे । मत्त–मात्रा, कला । नहचै–निश्चय । सुसबद–यश, कीर्ति । मझ–मध्य, मे । किव–कवि । गावत–वर्णन करता है । पद-प्रत–प्रतिपद, चरण । सुभावत–सुन्दर लगती है । जकौ–वह जो । सोभा–कीर्ति । पावत–प्राप्त करता है । रिझावत–प्रसन्न करता है । कौसत-मण (कौस्तुभमणि)–पुराणानुसार एक रत्न जो समुद्र-मथनके समय मिला था और जिसको विष्णु अपने वक्ष-स्थल पर धारण करते हैं । आसुर–असुर राक्षस । भाजण–नाश करनेको, नाश करने वाला । तण (तनय)–पुत्र । धनौ–धन्य-धन्य । जन–भक्त । तारण–उद्धार करने वाला । साझै–करते हैं । पय–चरण । बदगी–सेवा, टहल । सुरेसर–इन्द्र । प्रभणै–वर्णन करते हैं । अह–शेषनाग । सिभ–शभु, महादेव । दुजेसर–द्विजेश्वर, महर्षि ।

'किसन' कहै कर जोड़ कवेसर ।
नमो रांम रघुवंस नरेसर ॥ ५०

अथ मृणाळ नाम गीत सावझड़ौ लछण

दूहौ

आद चरण अट्ठार मत, सोळह अवर सचाळ ।
जांण सगण तुक अंत जिण, मुण सौ गीत मुणाळ ॥ ५१

अथ मुणाल नांम गीत उदाहरण

घैघींगर कदम आवळा धरतौ ।
झड़ वरसात जेम मद झरतौ ॥
सुज आयौ जळ पीवण सरतौ ।
करणी जूथ बीच सुख करतौ ॥
मैंगळ कुटंब सहत उनमतरै ।
आब हिलोळ चोळ की अतरै ॥
धूंम सुणै चख आग धकतरै ।
जाजुळ ग्राह जागीयौ जतरै ॥
चख मिळ बिहूं हुवौ चख-चड़बौ ।
जोम अथाग जाग उर जुड़बौ ॥

---

५०. कवेसर—कवीश्वर ।

५१ आद—आदि, प्रथम । अट्ठार—अठारह । मत—मात्रा । अवर—अपर, अन्य । जिण—जिस । मुण—कह ।

५२ घैघींगर—हाथी । आवळा—विकट । धरतौ—चरण रखता हुआ । झड़—छोटी-छोटी बूंदकी निरंतर होने वाली वर्षा । जेम—जैसे । झरतौ—टपकता हुआ, श्रवता हुआ । सुज—वह । सरतौ (सरिता)—नदी । करणी—हथनी । जूथ—यूथ, झुण्ड । करतौ—करता हुआ । मैंगळ—हाथी । सहत—सहित । उनमत—उन्मत्त, मस्त । आब—जल । हिलोळ—विलोडित कर । चोळ—क्रीडा । अतरै—इतनेमे । धूम—कोलाहल । चख (चक्षु)—नेत्र । आग—अग्नि । धकतरै—प्रज्वलित होते हैं । जाजुळ—भयंकर । जतरै—जितनेमे । बिहूं—दोनो । चख-चड़बौ—कोपसे लाल नेत्र । जोम—जोश, आवेग । अथाग—अपार । जुड़बौ—भिडना, टक्कर लेना ।

बिहुं वां नह सूधौ बाहुड़बौ ।
भारथ हुवौ ग्राह गज भड़बौ ॥
कर प्रब सहंस बरस भारथकौ ।
जोर टूट बीछड़बौ जुथकौ ॥
सुज बळ बध जळ ग्राह समथकौ ।
थळचारी जिण हूं गज विथकौ ॥
चौवळ ग्राह तंत गज चरणां ।
जकड़ डबोचण खंच जबरणां ॥
बे ग्रांगुळ जळ सूंड उबरणा ।
करी करी हरिहूंता करणा ॥
दीन पुकार स्रवण सुण हसती ।
तज कमळा पाळा करत सती ॥
ग्रातुर चक्र ग्राह हण ग्रसती ।
हरि ग्रह हाथ तारियौ हसती ॥
ग्रसरण दीन दुखित ऊपरौ ।
धू धारण झेलौ गिरधररौ ॥
कीजंतां ऊपर निज कररौ ।
विरद हुवौ जुग जुग रघुबररौ ॥ ५२

---

५२ बिहुवा–दोनो। सूधौ–सीधा। बाहुडबौ–वापिस मुडना, वापिस ग्राना या होना। भारथ–युद्ध। भडबौ–टक्कर, टक्कर लेना। प्रब– पर्व। वीछडबौ–दूर होना। जुथ (यूथ)–झुण्ड। समथ–समर्थ। थळचारी–स्थलचारी। जिण–जिस। हू–से। विथकौ–व्यथा-पूर्ण, पीडित, दुखी। चौवळ–चारो ग्रोर। तत–ततु। जकड–बाघ कर। डबोवण–डुबानेको। खच–खीच कर। जबरणा–जबरदस्तीसे, बलात्। बे (द्वे)–दो। ग्रागुळ–उगली। उबरणा–बची। करी–हाथी। करी–की। हरिहूता–ईश्वरसे। करणा (करुणा)–ग्रार्त, पुकार। दीन–ग्रार्त, करुणापूर्ण। स्रवण–कान। हसती–हाथीकी। कमळा–लक्ष्मी। पाळा–पैदल। ग्रातुर–तेज। हण–मार कर। ग्रसती–दुष्ट। धू-धारण–निश्चय। झेलौ–सहारा, मदद।

दूहौ

धुर उगणीसह कळहधर, अन तुक सोळह ठाह ।
गण जिण अंतह करण गण, सौ जयवंत सराह ॥ ५३

अथ गीत जयवत सावभडौ उदाहरण

गीत

तीकम पाळगर जन देवतरौ सौ ।
रात दिनां मुख नांम ररौ सौ ॥
समण त्रास कीनास सरौ सौ ।
भारी राघवतणौ भरोसौ ॥
जोय ग्रीध कपि कारजि सारै ।
दे द्रग सवरी गौहद सारै ॥
थूं विसवास राख मन थारै ।
सांमळियौ जन नौज विसारै ॥
गाढौ प्रसन रहै जस गायां ।
बाधारै ईजत बिरदायां ॥
ऊगै नहीं अरक दिन आयां ।
सीताबर भूलै सरणायां ॥
पर प्रहळादतणी प्रतपाळी ।
वळ धू अखी कियौ वनमाळी ॥

---

५३ **धुर**–प्रथम । **उगणीसह**–उन्नीस । **कळह**–मात्रा, कला । **अन**–अन्य, दूसरी । **ठाह**–रख । **करण**–दो दीर्घ मात्राका नाम । **सराह**–प्रशसा कर ।

५४ **तीकम** (त्रिविक्रम)–विष्णु, ईश्वर । **पाळगर**–पालनकर्ता । **जन**–भक्त । **देवतरौ**–देवताका । **ररौ**–र अक्षर जो राम नाममे प्रथम आता है । **भारी**–वडा, महान । **राघवतणौ**–रामचद्रका । **भरोसौ**–विश्वास । **सवरी**–भिल्लनी । **गौहद**–गुह नामक निषादराज जो रामका भक्त था । **थू**–तू । **विसवास**–विश्वास । **थारै**–तेरे । **सामळियौ**–श्रीकृष्ण । **नौज**–नही । **विसारै**–भूलता है, विस्मरण करता है । **गाढौ**–गहरा, पूर्ण । **प्रसन**–प्रसन्न, खुश । **अरक** (अर्क)–सूर्य । **सीताबर**–श्रीरामचद्र । **सरणाया**–शरणमे आए हुए, भक्त । **पर**–प्रण, प्रतिष्ठा, मान, इज्जत । **प्रहळादतणी**–भक्त प्रह्लादकी । **प्रतपाळी**–पालनकी, निभाई । **वळ**–दैत्यराज वलि । **धू**–भक्त ध्रुव । **अखी**–अमर । **वनमाळी**–श्रीकृष्ण ।

तीकम करै तीसरी ताळी ।
वाहर नाथ अनाथां वाळी ॥ ५४

अथ वडा साणौर आद सप्त गीत निरूपण

अथ गीत वडा साणौर लछण

चौपई

धुर तुक कळ तेवीसह धार, विखम वीस सम सतर विचार ।
लघु गुरु मोहर क दु गुरु मिळाय, सौ प्रहास सांणौर सुभाय ॥ ५५
वीस विखम तुक सम दस आठ, पात गुरु लघु मोहरै पाठ ।
समझ सुध सांणौर सकोय, जिण मोहरै गुरु लघु कवि जोय ॥ ५६
सुज मिळ सुध प्रहास सुजांण, वडौ जिकौ सांणौर वखांण ॥ ५७

वारता

कठे'क लघु तुकत दवाळौ कठे'क गुरु तुकत दवाळौ आवै । सुद्ध नै प्रहास साणोररा दवाळा भेळा आवै सौ वडौ साणोर कहावै ।

अथ गीत वडौ साणौर उदाहरण

गीत

करी चूर कुळ सुभावहूंत सादूळ कह,
विधु नखित्र सोभ भरपूर वरसै ।
कमळ-भवहूंत कहजै दूजां नूर कुळ,
सूर कुळ दासरथहूंत सरसै ॥

---

५४ तीकम (त्रिविक्रम)—श्रीकृष्ण, विष्णु । वाहर—रक्षा ।

५५ निरूपण—विवेचन, निर्णय, विचार । धुर—प्रथम, पहिले । तुक—पद्यका चरण । कळ—मात्रा । तेवीसह—२३ । धार—रख । विखम—विषम । सतर—सतरह ।

५६ मोहरै—पद्यके द्वितीय और चतुर्थ चरणोंके अंतिम अक्षरोंका मेल ।

५७ सकोय—सब । कठे'क—कहीं ।

५८ करी—हाथी । चूर—ध्वंश, नाश । सार्दूळ (सार्दूल)—सिंह । विधु—चंद्रमा । नखित्र—नक्षत्र । सोभ—कांति, दीप्ति । कमळ-भवहूंत—ब्रह्मासे । दूजा (द्विजा)—ब्राह्मणों । सूर कुळ—सूर्यवंश, वीर पुरुषोंका वंश । दासरथहूंत—श्रीरामचंद्रसे । सरसै—शोभा पाता है ।

सिधां-सुत गंग अणभंग साहसीयां ,
मुज अजन सिधा यर नसियां साथ ।
हर दियै आब थट सिधां आहंसियां ,
निपट रवि-वंसियां आब रघुनाथ ॥
सह तरां रूप कळविरछ अखै सकळ ,
थरू दुत मेर सिखरां अथाघौ ।
नगां आकरतणौ रूपहर मणी निज ,
रूप कुळ दिवाकरतणौ राघौ ॥
सुरा-सुर नाग नर अडग राखण सरण ,
धरण धानंख दुखहरण सुख-धांम ।
सूर कु हेळक दुत करण अचरज किसूं ,
राज त्रिभुवण प्रभा करण रघु-रांम ॥ ५८

अथ सुद्ध साणौर गीत लछण

दूहा

तेवीसह मत पहल तुक, बी अठार ती बीस ।
चौथी तुक अठार चव, लघु गुरु अंत लहीस ॥ ५९
बीस अठारह क्रम अवर, दूहां मांझळ दाख ।
गीत सुध सांणौर गण, सौ अह-पिंगळ साख ॥ ६०

वारता

सुध साणौररै पैली तुक मात्रा २३, तुक दूजी मात्रा १९, तुक तीजी मात्रा बीस, तुक चौथी मात्रा १८, पछै दूजा साराई दूहारी पैली तुक मात्रा बीस, दूजी तुक मात्रा १८ होवै ।

---

५८ निपट–बहुत, अधिक । आब–काति, दीप्ति । सह–सब । तरा–तरुओ, वृक्षो । कळविरछ–कल्पवृक्ष । अखै–कहते हैं । सकळ–सब । मेर–सुमेरु पर्वत । अथाघौ–वह जिसकी सीमाका थाह न हो, बहुत, बहुत ऊचा । दिवाकरतणौ–सूर्यका, भानुका । राघौ–श्रीरामचद्र भगवान । अचरज–आश्चर्य । प्रभा–काति, दीप्ति ।

५९ मत–मात्रा । पहल–प्रथम । बी (द्वि)–दूसरी । ती–तीसरी । चव–कह ।

६० दूहा–गीत छदके चार चरणोका समूह । मांझळ–मध्य, मे । दाख–कह । अह-पिंगळ–शेषनाग । साख–साक्षी ।

गीत सुध साणीर उदाहरण (गीत जात सतसर)

गीत

अडग तेज अणथघ सरद ध्यांन स्रुति आसती ,
नीस वर कार कळ जोग जप नांम ।
थिर प्रभा नीर पय थंद बुध नीत थट ,
मेर रवि समंद चंद भव भ्रहम रांम ॥
भूमंडळ पाज नभ सिखर पुर उवर भव ,
गुरत दुत गहर मुद कोप छिब गाथ ।
रिख रिखी रिख उदध भ्रिहम कज दासरथ ,
नाग खग दध हरी हर बिरंचनाथ ॥
देव चक्र हंस दध सिद्ध दुज जन अनंद ,
स्रंग ग्रह कंभ गण विप्र अवनीस ।
सद्रढ आतप अथग हेम सिध मेघ सत ,
अद्र हरि सिंध निसय सिव दुहित ईस ॥
विवुध कंज मीन तर भूप जग सेवगा ,
अभै मुद सुख अनंद वर अखय आथ ।
हेम गिर भांण दध चंद स्रब भ्रहम ,
हूं निज जनां पाळगर अधिक रघुनाथ ॥ ६१

अथ अरथ

सुध साणीर गीतरै आदरी तुक मात्रा २३ तेवीस होवै । तुक दूजी मात्रा १८ अठारै होवै । तुक तीजी मात्रा २० बीस होवै । तुक चौथी मात्रा १८ अठारै होवै । गीतके अतमे लघु होवै, और दूहा मात्रा पैली तुककी मात्रा २०, तुक दूजी मात्रा १८, तुक तीजी मात्रा २०, तुक चौथी मात्रा १८ ई प्रकार होवै सौ सुध साणीर गीत कहीजै । यौ गीतकौ सचौ अब गीतकी सतसर जात छै जीसू अरथ लखा छा ।

६१ सतसर—वडो साणोर, प्रहास साणोर आदि गीतोकी सज्ञा विशेष । हूं—से ।

पहला दूहाकौ अरथ

सुमेर १। सूरच २। समुद्र ३। चद्रमा ४। सिव ५। ब्रह्मा ६। हर सातमा। श्रीरामचद्र १। सुमेरकौ अडगपणौ १। सूरचकौ मतेजपणौ २। समुद्रकौ अथगपणौ ३। चद्रमाकौ सीतळपणौ ४। सिवकौ ध्यानपणौ ५। ब्रह्माकौ वेद-धारणपणौ ६। श्रीरामचद्रकौ आस्तीकपणौ ७। १ सुमेरकी नीम द्रढ। सुरजकौ वर द्रढ। समदकी कार द्रढ। चंद्रमाकी कळा द्रढ। सिवकौ जोग द्रढ। ब्रह्माकौ तप द्रढ। रामचद्रकौ नाम नहचळ २। सुमेर २। सुमर थिरपणानै धारण करै। सूरच प्रभानै धारै। समुद्र जळनै धारै। चद्रमा अम्रत धारै। सिव चंद्रमा धारै। ब्रह्मा बुध धारै। श्रीरामचद्र नीत धारै। ३

दूजा दूहाकौ अरथ

सुमेर जमी पर रहै। सूरच मडळमे रहै। समद पाजमे। चद्रमा आसमानमे रहै। सिव सिखर कैळास रहै। ब्रह्मा ब्रह्मलोकमे रहै। श्री रामचद्र सिवका ह्रदामे रहै।१। सुमेरकी गुरता। सूरजकी दुती। समदकौ गहरापणौ। चद्रमाकौ आणदपणौ। सिवकौ कोप। ब्रह्माकी खिमा। रामचद्रजीकी जस गाथा। सुमेरकौ पिता कस्यप रिखी। सूरचकौ पिता कस्यप। समदकौ पिता कस्यप। चद्रमाकौ पिता समंद। सिवकौ पिता ब्रह्मा। ब्रह्माकौ पिता कमळ। रामचद्रजीकौ पिता राजा दसरथ। ३

तीजा दूहाकौ अरथ

सुमेर देवतानै सुखदाई। सूरच चकवानै। समद हंसानै। चद्रमा कुमोदनीनै। सिव सिधानै। ब्रह्मा ब्राह्मणानै। स्री रामचद्र सतानै सुखदाई।१। सुमेर परवताकौ राजा। सूरच ग्रहाकौ राजा। समुद्र जळकौ। चद्रमा रिखभकहता तारागण छत्राकौ। सिव गणाकौ। ब्रह्मा द्विजाकौ। स्री रामचद्र राजाकौ राजा।२। सुमेरकौ सुद्रढपणौ। सूरचकौ तप। समुद्रकौ अथगपणौ। चद्रमाकौ सीतळपणौ। सिवकौ सिद्धपणौ। ब्रह्माकौ मेधाबुधपणौ। स्री रामचद्रकौ सतपणौ। ३

---

१ **ब्रह्मा**–ब्रह्मा। **हर**–और। **अडगपणौ**–स्थिरत्व या अटलत्व। **तेजपणौ**–तेजस्व। **अथगपणौ**–असीम, गहराई। **सीतळपणौ**–शीतलता, शैत्य। **आस्तीकपणौ**–आस्तिकता। **कार**–मर्यादा। **ब्रह्माकौ**–ब्रह्माका। **नहचळ**–निश्चल, अटल। **थिरपणा**–स्थिरत्व। **नीत**–नीति।

२ **पाज**–मर्यादा, सीमा। **ह्रदा**–हृदय। **गहरापणौ**–गहराई। **आणदपणौ**–आनद। **खिमा**–क्षमा।

३ **सुखदाई**–सुख देने वाला। **ब्राह्मणानै**–ब्राह्मणोको।

चौथा दूहाकौ अरथ

सुमेर विवुध देवतानै अभै दै । सूरज कमळानै मोद दे । समुद्र मीनानै सुख दै । चद्रमा रूंख अठार भार वनास्पतीका रुखानै आणद दै । सिव राजानै वर दै । ब्रह्मा जगतनै अखै बर दै । स्री रामचद्र सतानै आथ दै । दोई तुकाकी अरथ भेळौ ।२। सुमेर १ । सूरज २ । समद ३ । चद्रमा ४ । सिव ५ । ब्रह्मा ६ । या छ ही देवता वचै स्री रामचद्रमे सतासू दीनदयाळपणौ सरणाई साधारपणौ अधिक । इति अरथ । ४

अथ गीत दूजा प्रहास साणौररौ लछण

दूहौ

धुर तुक मत वेवीस धर, सतर बीस सतरास्य ।
वीस सतर गुरु अंत बे, सौ जांणजै प्रहास ॥ ६२

अरथ

पैली तुक मात्रा २३ । दूजी तुक मात्रा १७ । तीजी तुक मात्रा २० । चौथी तुक मात्रा १७ । तुकात दोय गुरु अखिर आवै, पछै सारा दूहा मात्रा पैली तुक २० । दूजी तुक मात्रा १७ । तीजी तुक मात्रा २० । चौथी तुक मात्रा १७ होवै जिण गीतरौ नाम प्रहास साणौर कहै छै ।

अथ गीत प्रहास साणौर उदाहरण
थाणवध बेलियौ जिणमे आद जथारौ वरण छै।

गीत

सरण वखांणै जगत चित वखांणै जेम सिध ,
मौज किव वखांणै चंदनांमा ।
बुध गिरा राम हथवाह रिम वखांणै ,
वखांणै काछद्रढपणौ बांमा ॥

---

४. विवुध–देवता । अभै–अभय, निर्भयता । दै–देता है । मोद–आनद । मीना–मच्छियो । अखै–अक्षय । आथ–धन, दौलत । भेळौ–साथ । या–इन । वचै–अपेक्षा । सरणाई-साधारपणौ–शरणमे आए हुएकी रक्षा करनेका कर्त्तव्य ।

६३. मौज–दान । किव–कवि । चदनामा–यश, कीर्ति । बुध–पडित । गिरा–वाणी । हथवाह–शस्त्र-प्रहार । रिम–शत्रु । वखाणै–प्रशसा करते हैं । काछदृढ–जितेन्द्रियता, सयमशीलता । वामा–स्त्री ।

कोपियां बाळ सुगरीव छंडे कळह,
घरोघर भटकियौ विपत घायौ।
पांण ग्रह रांम कहि मित्र अपणावतां,
पय सरण आवतां राज पायौ॥
बन पिता हुकम जुत सिया चवदह बरस,
एक आसण सयन जोग जगीयौ।
धण बिनां चलै मन रांम सह त्रिया धन,
द्रढ मदन ताप मन निकूं डिगीयौ॥
अंजसै कनक भूखण पहर नृप अवर,
कनकमें विधाता त्रकुट कीधी।
लहर हिक सरण हित भभीखण रंक लख,
दांन गढ लंक अणसंक दीधी॥
स्रुत सम्रत छंद खट पंच नव संपूरण,
भेदगर च्यार दस बोध भाळी।
अरथ जुत बोलबौ हेळ बीजा 'अजा',
वेळ अम्रततणा उदधवाळी॥
दासरथ सुजस नव खंड जाहर दुभ्फल,
करां भुजदंड वाखांण केहा।

---

६३ बाळ—वालि बदर। कळह—युद्ध। घरोघर—प्रत्येक घर। भटकियौ—भ्रमण किया। घायौ—पीडित, दुखी। पाण—हाथ। अपणावता—अपना बनाने पर। पय (पाद)—चरण। पायौ—प्राप्त किया। जुत—युक्त। सिया—सीता। सयन—सोना। धण—अर्द्धांगिनी। सह—साथ। त्रिया—स्त्री। मदन—कामदेव। निकू—नही। अजसै—गर्व करते है। कनक—स्वर्ण, सोना। भूखण—आभूषण। अवर—अन्य। विधाता—ब्रह्मा। त्रिकुट—लका स्थित एक पर्वत अथवा लकाका एक नाम। कीधी—की, किया। भभीखण—विभीषण। रक—गरीब। लख—देख कर। अणसक—निशक। दीधी—दी। स्रुत (श्रुति)—वेद। सम्रत—स्मृति। भेदगर—भेद जानने वाला, भेदका पता लगाने वाला। बोध—विद्या। भाळी—देखी। वेळ—तरग, लहर। उदध (उदधि)—सागर। दासरथ—श्रीरामचद्र भगवान। जाहर—जाहिर। दुभ्फळ—वीर। केहा—कैसा।

जुधां टंकारिया धनख राघव ज तैं ।
जारिया दुसह दहकंध जेहा ॥
पाय वय जोर बुध रूप नृपता प्रसिध ,
नयण लख छटा नाता अनाता ।
जांनुकी विना तरणी अवर जिकांनू ,
मुणी बेटी वहन काय माता ॥
देखतां छहूं बिध 'सगर' 'हरचंद' दुवा ,
सौगुणौ अधिक अहनिस सुभावै ।
रांम असरण सरण भूप गुण राजरां ,
पार सीतारमण कमण पावै ॥ ६३

गीत छोटा साणोर लछण

दूहा

कहजै गुरु मोहरा कठै, वण कठैक लघुवंत ।
सुज छोटौ सांणोर सौ, कवि मत ग्रंथ कहंत ॥ ६४
भेद च्यार जिणरा भणौ, आद वेलियौ अक्ख ।
कवी सोहणौ २ खुड़द ३ कह, वळ जांगड़ौ ४ विसक्ख ॥ ६५

अथ गीत मिस्र वेलिया लछण

दूहौ

समिळ वेलियौ सोहणौ, सभ्फ फिर खुड़द समेळ ।
मिस्र वेलियौ कवि मुणौ, भळ जांगड़ौ न भेळ ॥ ६६

---

६३ टकारिया–धनुपकी प्रत्यचा चढाई या प्रत्यचाकी ध्वनि की । दुसह–शत्रु, दुष्ट । दहकध–रावण । जेहा–जैसा । छटा–शोभा, सुन्दरता । जानुकी–जनक पुत्री, सीता । अवर–अन्य, दूमरी । जिकानू–जिनको । मुणी–कही । काय–या, अथवा । सगर–सूर्यवशी राजा मगर । हरचद–सूर्यवशी राजा हरिश्चद्र । दुवा–दूसरा, वशज । अहनिस–रातदिन । कमण–कौन । पावै–प्राप्त करता है ।

६४ कहजै–कहिए । मोहरा–छदके द्वितीय तथा चतुर्थ चरणके अन्तिम शब्दो या अक्षरोका परस्पर मेल, तुकवदी । कहत–कहते हैं ।

६५ वळ–फिर, और ।

६६. समिळ–साथ । मुणै–कहता है । भळ–फिर । भेळ–मिला, मिश्रित कर ।

अरथ

वेलियौ १ । सोहणौ २ । खुडद ३ । तीन ही गीत भेळा वणै जिण गीतरौ नाम मिस्र वेलियौ कहीजै । या भेळौ जागडारौ दूहौ वणै नहीं नै वणै तौ जात-विरोध दोस कहीजै । यू सारौ समझ लेणौ ।

अथ गीत मिस्र वेलियौ उदाहरण

गीत

बूडंतौ सरवर फील उबारे,
गुणतै बेद उचारै गाथ ।
धना नांम दे सदना उधारे,
नेक जनां तारे रघुनाथ ॥
गणका अजामेळ सवरीगण,
दुख अघ ओघ मिटाय दिया ।
किता अनाथ सुनाथ कृपा कर,
कोसळराज-कुंवार किया ॥
सीता हरण भभीखण रिवसुत,
लख जटाय कोसिक मिथळेस ।
हेर हेर लज रखी, हुलासां,
धणियप कर दासां अवधेस ॥
रख जन अभै त्रास जम हरणा,
सुज ऊबरणा जगत सहै ।

---

६७ बूडतौ–डूबता हुआ । सरवर–सरोवर, तालाब । फील (स० पील)–हाथी । उबारे–बचाया । धना–एक हरि-भक्तका नाम । नामदे–एक भक्तका नाम । सदन–घर । गणका–एक वेश्या जो ईश्वरकी परम भक्त थी । अजामेळ–अजामिल नामक एक कन्नौज निवासी ब्राह्मण जिसने आजीवन न तो कोई पुण्य कार्य किया और न ईश्वराधन । इसके पुत्रका नाम नारायण था । कहते हैं कि मत्युके समय इसने अपने पुत्रको नाम लेकर बुलाया जो कि भगवानके नामका पर्याय था और इसीसे इसकी सद्गति हो गई । सवरी–शबरी, भिल्लनी जो राम-भक्त थी । अघ–पाप । ओघ–समूह । किता–कितने । भभीखण–विभीषण । रिवसुत (रविसुत)–सुग्रीव । जटाय–जटायु नामक गिद्ध । कोसिक–विश्वामित्र । मिथळेस–राजा जनक । धणियप–स्वामित्व, कृपा, महरबानी । त्रास–भय ।

संपी सरम चरण तौ सरणा ,
करणानिध किव 'किसन' कहै ॥ ६७

गीत वेलिया साणौर लछण

दूहा

मुण धुर तुक अठार मत, बीजी पनरह बेख ।
तीजी सोळह चतुरथी, पनरह मता पेख ॥ ६८
सोळह पनरह अन दुहां, गुरु लघु अंत बखांण ।
कहै ऐम सुकवी सकळ, जिकौ वेलियौ जांण ॥ ६९

अरथ

जिण गीतरै पैहली तुक मात्रा १८ होय, दूजी तुक मात्रा १५ होय, तीजी तुक मात्रा १६ होय, चौथी तुक मात्रा १५ होय। दूजा सारा दूहा मात्रा १६।१५।१६।१५। तुकके अत आद गुरु अत लघु आवै, जिण गीतरौ नाम वेलियौ साणौर कहीजै ।

अथ गीत वेलिया साणौररौ उदाहरण

गीत

ओयण जे रांम स्रीया नित अरचै ,
सुज चरणौ सिव ब्रहम सकाज ।
जग अघ हरण सुरसुरी जांमी ,
राज तणा चरणां रघुराज ॥
धाय मुनेस सेस सिर धारै ,
निज सिर जिकां सुरेस नमाय ।

६७ करणानिध–करुणानिधि । किव–कवि ।

६८ मुण–कह । धुर–प्रथम । अठार–अठारह । मत–मात्रा । बीजी–दूसरी । बेख–देख । तीजी–तीसरी । चतुरथी–चौथी । मता–मात्रा । पेख–देख ।

६९. अन–अन्य । बखाण–कह ।

७० ओयण–चरण । स्रीया (श्री)–लक्ष्मी, सीता । अरचै–पूजा करती है । हरण–मिटाने वाला । सुरसुरी–गगा नदी । जामी–पिता । मुनेस (मुनीश)–महर्षि । सुरेस–इन्द्र ।

जोतसरूपतणा आगर जस,
पोत रूप भव सागर पाय ॥
गायब अरच चींतव सुख गेहां,
मत छोडै नेहा मतमंद ।
जग दुख हरण सरण जग जेहा,
ऐहा रांम चरण अरब्यंद ॥
नाथ अनाथ दासरथ नंदण,
स्री रघुनाथ 'किसन' साधार ।
कदम पखी अपखी ज्यां काळा,
अबखी पुळवाळा आधार ॥ ७०

अथ चौथा सूहणा साणौरकौ लछण

दूहौ

धुर तुक मह अठार मत, चवद सोळ चवदेण ।
सोळ चवद लघु गुरु मोहर, जांण सोहणौ जेण ॥ ७१

अरथ

धुर कहता पहली तुक मात्रा १८ अठारै होवै। दूजो तुक मात्रा १४ चवदै होवै। तीजी तुक मात्रा १६ सोळै होवै। चौथी तुक मात्रा १४ चवदै होवै। पछै दूजा दूहा मात्रा १६ सोळै १४ चवदै ईं क्रम होवै जीके आद लघु अंत गुरु तुकात होवै जी गीतकौ नाम सोहणौ साणौर कहै छै।

---

७०. **जोतसरूपतणा**–ज्योतिस्वरूपका। **आगर**–घर। **पोत**–नौका, नाव। **भव**–ससार। **अरच**–पूजा कर। **चींतव**–स्मरण कर। **नेहा**–स्नेह। **मतमद** (मतिमद)–मूर्ख। **हरण**–हरने वाला। **जेहा**–जैसा। **ऐहा**–ऐसा। **अरब्यद** (अरविंद)–कमल। **दासरथ**–दसरथ। **नदण**–पुत्र। **साधार**–रक्षक, सहारा। **पखी**–वह जिसका कोई पक्ष करने वाला हो। **अपखी**–वह जिसका कोई पक्ष करने वाला न हो। **अबखी**–विषम, कठिन। **पुळ**–समय।

७१. **धुर**–प्रथम। **तुक**–पद्यका चरण। **मह**–मे। **अठार**–अठारह। **मत**–मात्रा। **चवद**–चौदह। **चवदेण**–चौदहसे। **मोहर**–पद्यके द्वितीय और चतुर्थ चरणका परस्पर मेल। **जेण**–जिससे। **दूजी**–दूसरी। **तीजी**–तीसरी। **पछै**–पश्चात। **दूजा**–दूसरा। **ई**–इस। **जींके**–जिसके। **जीं**–जिम।

अथ सोहणा गीत उदाहरण

गीत

पंचाळी बेर बधायौ पल्लव करतां टेर सिहाय करी ।
समरथ भीखम पैज साहियौ हाथ चरण रथतणौ हरी ॥
तैं मुख कमळ सदांमा तंदुळ पाया बिलकुल भरे पुसी ।
बिदुरतणी भगती हित बाधा खाधा केळा छोत खुसी ॥
गोपी चित राचियौ गोब्यंद ब्रंदावन नाचियौ बळी ।
धरियौ पद चौरस गिरधारी गौरस कारण गळी गळी ॥
समरथ विरुद लोक अहं सांमी पुणां भांमी समथ्थपणौ ।
जन सादवियौ अंतरजांमी घणनांमी आसनौ घणौ ॥ ७२

अथ पाचमा गीत पूणिया साणौर नै जागडा साणौर लछण

दूहौ

दै मत्ता धुर आठ दस, बार सोळ मत बार ।
गिण तुकंत जिण दोय गुरु, औ जांगड़ौ उचार ॥ ७३

अरथ

जिण गीतरै पैहली तुक मात्रा अठारै होय । तुक दूजी मात्रा बारै होय । तुक तीजी मात्रा सोळै होय । तुक चौथी मात्रा बारै होय । पछै दूजा दूहा मात्रा तुक पैहली सोळह । तुक दूजी मात्रा बारै । तुक तीजी मात्रा सोळै । तुक चौथी मात्रा बारै । सोळै बारै ईं क्रमसूं होय । तुकातमे दोय गुरु आखिर आवै जी गीतकौ नाम पूणियौ साणौर कहीजै नै यण पूणियानै जागडौ पण कहै छै ।

---

७२ पचाळी–द्रोपदी । वेर–समय । वधायौ–वढाया । पल्लव–चीर, अचल । टेर–पुकार । मिहाय–सहायता । भीखम–भीष्मपितामह । पैंज–प्रण । साहियौ–धारण किया । सदामा–सुदामा । तदुळ–चावल । पाया–भोजन किये, खाये । पुसी–पसर । हित–लिये । खाधा–खाये । छोत–छिलका । रचियौ–रग गया, लीन हुआ । गोव्यद–गोविंद । वळी–फिर । गोरस–दूध, दही । कारण–लिये । गळी–वीथि । पुणा–कहता हू । भांमी–न्योछावर, बलैया । समथ्थपणौ–समर्थत्व । सादवियौ–पुकारा, दुखमे याद किया । घणनामी–जिसके अनेक नाम हो । आसनौ–आश्रय, सहारा । घणौ–बहुत, अधिक ।

७३ दै–देते हैं । मत्ता–मात्रा । धुर–प्रथम, प्रारभमे । वार–बारह । सोळ–सोलह । मत–मात्रा । वार–बारह ।

अथ गीत पूणियौ तथा जागड़ौ साणौर उदाहरण

गीत

कैटभ मधु कुंभ कबंध कचरिया, संख संभ सारीसै ।
खळ अवगाढ अनेकां खाया, दाढ पीसतौ दीसै ॥
रांमण इंद्रजीत खर दूखर, गंजे कूण गिणावै ।
खांत लगे केता खळ खाधा, वळै दांत वहजावै ॥
हरणकस्यप हैमुख हरणायख, खाधा के फिर खासी ।
तोपण भूख न गी तिण ताबौ, बाबौ खाय उबासी ॥
प्रसण मार रख संत सहीपण, राघव जीपण राड़ा ।
निज हेकल धापियौ न दीसै, जे खळ पीसै जाड़ा ॥ ७४

अथ छठौ गीत सोरठियौ साणौर जीकौ लछण

दूहौ

मत अठार धुर तुक अवर, दस सोळह दस देह ।
सोळह दस अन अंत लघु, जप सोरठियौ जेह ॥ ७५

---

७४ **कैटभ**–मधु नामक दैत्यका छोटा भाई जिसका विष्णुने सहार किया । **मधु**–कैटभ नामक दैत्यका अग्रज जो श्रीकृष्ण द्वारा मारा गया था । **कुभ**–रावणका भाई कुभकर्ण । **कबध**–एक असुरका नाम जिसका सहार रामचद्रजीने किया था । **कचरिया**–ध्वश किये । **सख**–एक असुरका नाम । **सभ**–एक असुरका नाम । **सारीसै**–समान । **अवगाढ**–शक्तिशाली । **खाया**–सहार किये, ध्वश किये । **दाढ पीसतौ**–क्रोधमे दातोको कटकटाता हुआ, दात पीसता हुआ । **रामण**–रावण । **इद्रजीत**–रावणका पुत्र मेघनाद । **खर**–एक राक्षसका नाम जो रावण तथा सूर्पणखाका भाई कहा जाता है । **दूखर**–एक राक्षसका नाम । **गंजे**–नाश किये, पराजित किये । **कूण**–कौन । **गिणावै**–गिना सकता है । **खात**–ध्यान । **केता**–कितने । **खाधा**–नाश किये, ध्वश किये । **वळै**–फिर । **दात वहजावै**–दाँतोको क्रोधमे टकराते हुए ध्वनि करता है, क्रोध प्रकट करता है । **हरणकस्यप**–हिरण्यकशिपु, एक दैत्यराज जो प्रह्लादका पिता था । **हैमुख**–हयग्रीव भागवतके अनुसार एक विष्णुके अवतारका नाम, इनका वध विष्णुने मच्छावतार लेकर किया और वेदोका उद्धार किया । **हरणायख**–हिरण्याक्षक नामक असुर जो हिरण्यकशिपुका भाई था । **के**–कई । **खासी**–ध्वश करेगा, नाश करेगा । **तोपण**–तो भी । **बाबौ**–ईश्वर । **उबासी**–जभाई । **प्रसण**–पिशुन, दुष्ट । **रख**–ऋषि । **सत**–साधु । **सही**–कुशल । **जीपण**–जीतने वाला । **राडा**–युद्ध । **हेकल**–एक, अकेला । **धापियौ**–अघाया । **पीसै जाडा**–क्रोधमे दाँत टकराता है ।

७५ **मत**–मात्रा । **अठार**–अठारह । **धुर**–प्रथम । **देह**–दे, दीजिए । **अन**–अन्य । **जेह**–जिसको ।

अरथ

जिणरै आदरी तुक मात्रा अठारै होय, तुक दूजी मात्रा दस होय। तुक तीजी मात्रा सोळह होय। तुक चौथी मात्रा दस होय। दूजा साराई दूहामे पैली तुक मात्रा सोळै। चौथी तुक मात्रा दस। इण क्रम होवै। तुकत लघु आखिर होवै जी गीतकौ नाम सोरठियौ साणौर कहीजै।

अथ गीत सोरठिया साणौरकौ उदाहरण

गीत सोरठियौ

आलम हाथरौ रघुनाथ अचरिज, अवध भूप असंक।
दिल गहर दीधी सरण हित दत, लहर हेकण लंक॥
भभीखण सरण आय भूधर, महर कर मनमोट।
धुरधमळ स्रवियौ धनख-धारण, कनकवाळौ कोट॥
भयभीत कंपत सीसदस भय, दीन देख निदांन।
अवधेस दाटक दियौ आचां, दुरंग हाटक दांन॥
निरवह 'किसना' सरम नहचै, असुर दहण असेस।
सारवा दासां कांम समरथ, निमौ रांम नरेस॥ ७६

अथ सातमौ गीत खुडद छोटौ साणौर लछण

दूहौ

धुर मत्ता अठार धर, त्रदस सोळ त्रदसेण।
दु लघु अंत सांणौर लघु, जप खुड़द किव जेण॥ ७७

---

७५. आदरी–प्रारम्भकी। दूजी–दूसरी। तीजी–तीसरी। दूजा–दूसरे। साराई–सब ही। दूहा–द्वालो, गीत छंदके चार चरणके समूहो। इण–इस। आखिर–अक्षर। जीं–जिस।

७६. आलम–संसार, ईश्वर। अचरिज–आश्चर्य। गहर–गंभीर। दीधी–दे दी। हेकण–एक। भभीखण–विभीषण। भूधर–ईश्वर। महर–कृपा। मन मोट–उदार। धुर-धमळ–अग्रगामी। स्रवियौ–दान दिया। धनख-धारण–धनुषधारी, श्रीरामचंद्र भगवान। कनक–सोना। सीसदस–रावण। दाटक–महान। आचां–हाथों। हाटक–स्वर्ण, सोना। सारवा–सफल करनेको, सिद्ध करनेको। दासा–भक्तो।

७७. मता–मात्रा। त्रदस–तेरह। सोळ–सोलह। त्रदसेण–तेरह। किव–कवि। जेण–जिस।

अरथ

जीके आद तुक मात्रा अठारै होय। दूजी तुक मात्रा तेरै होय। तीजी तुक मात्रा सोळै होय। चौथी तुक मात्रा तेरै होय। पछळा दूहा पैली सोळै मात्रा। पछै तेरै मात्रा, फेरे सोळै, फेर तेरै ईं क्रमसू होवै। तुकात दोय लघु होवै जी गीतकौ नाम छोटौ साणौर हसमग कहीजै।

अथ गीत खुडद साणौर हसमग उदाहरण

गीत खुड़द छोटौ सांणौर

स्रीधर स्रीरंग सियावर स्रीपत, करणाकर कारण-करण।
व्रज नायक विसवेस विसंभर, घणनांमी आणंदघण॥
नरहर नागनाथ नारायण, गोब्यंद गौप्रिय गोपवर।
धराधीस धानंख गिरधारी, कमळाकंत सकमळकर॥
विमळानन विबुधेस विहारी, संख चक्र धारी सुमण।
भव तारण भूधर भय भंजण, हिरणगरभ त्रय ताप हण॥
नायक रमा नयण कज नरवर, सुखदायक निज जन सयण।
भगत-विछळ मन महणसुभायक, निमौ सुधा स्रायक नयण॥ ७८

इति सात साणौर गीत सपूरण

---

७७ जींके–जिसके। आद–आदि, प्रथम शुरूका। पछळा–पश्चातके। पछै–बादमे। ईं–इस। जीं–जिस।

७८ स्रीधर–विष्णु, श्रीरामचंद्र भगवान। स्रीरग–विष्णु। सियावर–सीतापति। स्रीपत (श्रीपति)–विष्णु। करणाकर–करुणा करने वाला। कारण-करण–कारण और करने वाला। विसवेस–विश्वेश। विसभर–विश्वभर। आणदघण–आनन्दघन। नरहर–नृसिंहावतार। नागनाथ–नागको नाथने वाला, श्रीकृष्ण। गोब्यद–गोविंद। गौप्रिय–गोवल्लभ। गोपवर–गोपीपति। धराधीस–धराका स्वामी। धानख–धनुषधारी, श्रीरामचद्र। कमळाकत–कमलापति, विष्णु। सकमळकर–वह जिसके हाथमे कमल-पुष्प हो, विष्णु। विमळानन–विमल-मुख। विबुधेस–देवताओंके स्वामी, विष्णु, इन्द्र। सुमण–श्रेष्ठ मणि, यहा कौस्तुभमणिसे अर्थ है। भव–ससार। भूधर–ईश्वर। भंजण–नाश करने वाला, मिटाने वाला। हिरणगरभ–हिरण्यगर्भ, वह प्रकाश रूप या ज्योतिर्मय पिंड जिससे ब्रह्मा और समस्त सृष्टि प्रकट हुई है। त्रय–तीन। ताप–सकट, कष्ट। हण–मिटाने वाला, नाश करने वाला। नायक–पति। रमा–लक्ष्मी। नयण–नेत्र। कज–कमल। सुखदायक–सुख देने वाला। जन–भक्त। सयण–सज्जन। भगत-विछळ–भक्तवत्सल। महण (महार्णव)–सागर। सुभायक–सुरुचिकर, सुन्दर। सुधा–अमृत। स्रायक–टपकने या टपकाने वाला, श्रवने वाला।

अथ अन्य प्रकार गीत जात वरणण

वारता

विधानीक गीत वडौ साणौर होवै । विधान कहौ भावै सर कहौ सौ छ सर सत सर तौ लघु साणौर होवै नही । वडौ साणौर होवै सो ई ग्रथमे प्रथम सतसर तथा सप्त विधानीक गीत कह्यौ छै सौ देख लीज्यौ ।

इति विधानीक विधि सपूरण ।

अथ पाडगत, पाडगती वरणण छद लछण

दूहा

धुर तुक अखिर अठार धर, चवद सोळ चवदेस ।
सोळ चवद अन अंत लघु, सौ सुपंखरौ सुदेस ॥ ७९

गुणी सुपंखरा गीतमें, वरणण नृत्य वखांण ।
कहियौ धुर पिंगळ सुकव, जिकौ पाड़ गति जांण ॥ ८०

अथ पाडगती सुपखरा उदाहरण

गीत

दड़ी पड़ंतां द्रहामें चढे भांकियौ कदंब डाळ ,
नीर थाघे अथाघ चडंतां वाद नार ।
खेल्ह बाळव्रंदरै करंतां लगाड़ियौ खेटौ ,
काळी नाग जगाड़ियौ नंदरै कंवार ॥

---

७८ भावै–चाहे । ई–इस ।

७९. पाडमत, पाडगती–सुपखरा, त्रिवड आदि गीतोकी सज्ञा विशेष । धुर–प्रथम । तुक–पद्यका चरण । अखिर–अक्षर । अठार–अठारह । चवद–चौदह । सोळ–सोलह । चवदेस–चौदह । अन–अन्य । सौ–वह । सुपखरौ–गीत छदका नाम, कही-कही सुपखरौ भी लिखा मिलता है ।

८० गुणी–कवि, पडित ।

८१. दडी–गेंद । द्रहामे–नदीमे, अधिक जल या गहराईके स्थानमे । भांकियौ–छलाग भरी, कूदा, उछल कर ऊपरके पदार्थको पकडा । डाळ–टहनी । थाघे–थाह लिया । अथाघ–अथाह, अपार । खेल्ह–खेल । बाळव्रदरै–बाल-समूहके । खेटौ–छलाग । कवार–कुमार ।

फैल क्रोध चसमां कराळां आग-झाळा फुणां ,
ताळा दै भुजाळा त्यूं गुपाळा तीरवांन ।
विरदाळा सिघाळा अड़ाळा जोध चाळाबंध ,
जूटा बिहुं काळा नै बिचाळा जोरवांन ॥
कदंमां करगां घाव दाव व्है अभूतकारा ,
उडै फूतकारा विखां फुणांरा अमाव ।
जंद हरी बंध काळीसं घणा जोड़िया जकै ,
संध संध विछौड़िया नदरै सुजाव ॥
महा भुजंगेसनाथ समाथ खंडियौ मांण ,
खंभ ठौर भराथ तंडियौ जैत-खंभ ।
दंडियौ अदंड नीर उचाटां मिटाय डहे ,
रंजे मित्र फुणाटां मंडियौ नाटारंभ ॥
धू धू कटां ध्रुकटां ध्रुकटां धू धू कटां धार ,
ता धिंना ता धिंना धिन्ना ता धिन्ना सुताळ ।
ताथेई ताथेई थेई थेई थेई ताता ,
गतां लै अहेस माथा नंदरौ गवाळ ॥

---

८१ **चसमा** (चश्मा)–नेत्र । **कराळा**–भयकर, भयावह । **आग-झाळा**–अग्निकी लपट । **ताळा**–ताली, करताली । **त्यू**–तैसे । **गुपाळा**–ग्वाले । **तीरवांन**–तट पर खडे । **विरदाळा**–विरुदधारी, यशस्वी । **सिघाळा**–श्रेष्ठ । **अडाळा**–अडने वाला । **चाळाबंध**–लडने वाला, उत्पाती । **जूटा**–भिडे । **बिहु**–दोनो । **जोरवांन**–शक्तिशाली । **कदंवां**–चरणो पैरो । **करगा**–हाथो । **घाव**–प्रहार । **दाव**–पेतरा । **अभूतकारा**–अभूतपूर्व अनोखा । **फूतकारा**–सर्पके मुखकी आवाज । **विखा**–विषो । **अमाव**–अपार । **सध**–सधि । **बिछोडिया**–दूर किया । **सुजाव**–पुत्र । **भुजगेसनाथ**–कालीनाग । **समाथ**–समर्थ । **खडियौ**–खडित किया, मिटाया । **माण**–गर्व, मान । **खभ**–भुजा, बाहुमूलके ऊपरका भाग, कधा । **ठौर**–ठोक कर । **भराथ**–युद्ध । **तडियौ**–जोशपूर्ण आवाजकी । **जैत-खभ**–विजयी, विजयस्तभ । **अदड**–जिसे कोई दड न दे सकता हो । **उचाटां**–चिंता, भय । **रजै**–प्रसन्न कर । **फुणाटा**–सर्पके फनो । **मडियौ**-रचा, किया । **नाटारभ**–नृत्य, नाच । **गता**–वाद्योके बजानेकी प्रणाली विशेष या नृत्यकके नृत्यकी गति विशेष । **अहेस**–अहीश नागराज ।

रंमां-झंमां रंमां झंमां रंमां झंमां झंमां रंमां ,
ठमंकां रमंकां झंका रमंकां ठमंक ।
पाड़गती गीत राधा रंजणा पयंपै प्रथी ,
नाग धू संजणा निमौ संगीत निसंक ॥ ८१

अथ त्रिवड तथा हेलो नाम गीत लछण

दूहा

आठ तीस मत पूबअध, उतरारध अठतीस ।
तुक विहुंवै अध तेवड़ी, तेवड़ गीत तवीस ॥ ८२
पहली दूजी तुक मिळै, तीजी छठी मिळंत ।
मिळ चौथीसूं पंचमी, जस रघुनाथ जपंत ॥ ८३

अरथ

जी गीतके अठतीस मात्रा पूरबारध होय अर अठतीस ही मात्रा उतरारध होय । समान दो ही अरथ होय । तीन तुक पूरबारध होय, तीन तुक उतरारध होय । तेवडी तुका होय । सारा दूहामे तुक छ होय । पैली तुककौ तुकात तौ दूजी तुकसू मिळै । तीजी तुक छठी तुकसू मिळै । चौथी तुक पाचमी तुकसू मिळै । तेवडी तुका हर तेवडोई तुकातकी मिळाप जीसू गीतकौ नाम तिवड अत लघु कहीजै । कोई कवि इण गीतनै हेलो पिण कहै छै ।

अथ त्रिवड तथा हेलो नाम गीत उदाहरण

गीत

रांम असरण सरण राजै ।
भेटियां दुखदुंद भाजै ॥

---

८१. रमा-झमा–चलने या नृत्यके समय आभूषणोकी होने वाली ध्वनि । ठमका–चलते समय या नृत्यके समय पैर रखनेका ढग विशेष । रजणा–प्रसन्न करने वाला । पयपै–कहता है, कहतो है । धू–शिर, मस्तक । सजणा–करने वाला ।

८२. आठतीस–अडतीस । पूबअध–पूर्वार्द्ध । विहुंवै–दोनोमे । तेवडी–तिगुनी, तीन तहका । तवीस–कहा जायेगा, कहा जाता है ।

८३ दूजी–दूसरी । मिळत–मिलती है । जपत–जपता है, जपा जाता है । जौं–जिस । अर–और । मिळाप–मिलना । जीसू–जिससे । पिण–भी ।

८४ राजै–शोभा देता है । भेटिया–मिलने पर । दुखदुंद–दुख-द्वन्द । भाजै–मिट जाते है ।

देव दीन दयाळ ।
निरवहै व्रत हेक नारी, धींगपांण धनंखधारी ।
प्रगट संतां पाळ ॥

चुरस मारग नीत चालै, घाव भागां निकं घालै ।
समरसं रस धीर ॥
वीरवर दासरथ-वाळौ, कळह आसुर अंत काळौ ।
बिरद धारण बीर ॥

छत्रपत अनी मांण छंडै, खत्र रख हर चाप खंडे ।
जांनकीवर जेण ॥
राय हर पण जनक राखै, सूर ससि रिख देव साखै ।
मुणै जस प्रथमेण ॥

तोयधी गिरराज तारे, प्रगट कर कपि सेन पारे ।
रची लंका राड़ ॥
दसाणण घणराव दाहे, गहर कुंभ अरोड़ गाहे ।
धींग राघव धाड़ ॥ ८४

---

८४. निरवहै–निभाता है । धींगपांण–समर्थ, शक्तिशाली । धनखधारी–धनुषको धारण करने वाला । पाळ–पालक, रक्षक । चुरस–श्रेष्ठ । नीत–नीति । घाव–प्रहार, वार । निकू–नही । समरसू–युद्धसे । दासरथ-वाळौ–दशरथका । छत्रपत–छत्रपति, राजा । अनी–अन्य । माण–गर्व, मान । छडै–छोड देते हैं । चाप–धनुष । खडे–खडित किया । पण–प्रण । सूर–सूर्य ।. ससि–चद्रमा । रिख–ऋषि । साखै–साक्षी देते हैं । मुणै–कहते हैं, वर्णन करते हैं । प्रथमेण–पृथ्वी, ससार । तोयधी (तोयधि)–समुद्र, सागर । गिरराज–पर्वतराज । कपि–वदर । सेन–सेना, फौज । राड़–युद्ध । दसाणण–दसानन, रावण । घणराव–मेघनाद, इन्द्रजीत । दाहे–सहार किया । गहर–महान, गभीर । कुभ–रावणका भाई कुभकर्ण । अरोड–जवरदस्त, शक्तिशाली । गाहे–ध्वश किया । धींग–समर्थ । धाड–धन्य ।

अथ वकगीत वरण छद लछण

दूहौ

च्यार जगणकी एक तुक, वरण छंद निरधार ।
चौ तुक मोती दांम मिळ, वंक गीत सु विचार ॥ ८५

अरथ

जो गीतरी एक तुकमे च्यार जगण होय, च्यार ही तुकमे बारै बारै अखिर होय । तुक प्रत च्यार जगण होय । अत लघु होय । मोतीदाम छदकी च्यार तुककौ एक दूहौ होय, जीनै वकनामा गीत कहीजै ।

अथ वक गीत उदाहरण

गीत

न रूप न रेख न रंग न राग,
अपार न पार निधार अधार ।
अलेख अदेख अतेख अभेख,
अतारस तार सुसार असार ॥
अरेस असेस दहेस अभंग,
धरेस सुरेस नरेस सधीर ।
अगेड़ अमोड़ अवीह् अलार,
निवाह् अथाह् चढै कुळ नीर ॥
मनीत मर्कीत मजीत सराह्,
नमाथ तिराथ गिंद समंद ।

८५ बारै–बारह । अखिर–अक्षर । प्रत–प्रति ।
८६ [illegible] धरेस–[illegible] । सुरेस–इन्द्र । नरेस–राजा । [illegible] । ममाथ–[illegible] ।
[illegible]

रात दिवस भज रांम नरेसर,
पात राख नहचौ मन पूरौ ।
धूधारण कारण लख धूरौ,
उधारणरौ किसौ अणूंरौ ॥
के जम नांम तणौ तन सज कर,
मै जमहूं डर डर मत भाजै ।
किया सुनाथ हाथ ग्रह केतां,
वीठळनाथ अनाथां वाजै ॥
जम दळ वटपाड़ौ वह जासी,
थासी नहीं विगाड़ौ थारै ।
जगपत निस दिन नांम जपंतां,
संता सारा काज सुधारै ॥ ८८

अथ गीत चौटियाळ लछण

दूहौ

सुज प्रहास सांणौररै, दस मत अरध सिवाय ।
मेल दोय पूरब उतर, चौटियाळ गुण चाय ॥ ८९

अरथ

चौटियाळ गीत प्रहास साणौर होवै, जीके आधा गीतके आधा दूहा सिवाय दस मात्राकी एक तुक पूरवारधमे सिवाय होवै । एक तुक उतरारधमे दस मात्राकी सिवाय होवै । पूरवारध अर उतरारधमे दोय मेळ तुकात होवै । पैली तुकातकै, अत दो गुरु होवै । दूजा तुकातकै अत रगण होवै । पैली तुक मात्रा २३, तुक दूजी मात्रा १७, तुक तीजी मात्रा १०, तुक चौथी मात्रा २०, तुक पाचमी मात्रा १७, तुक छठी

---

८८ नरेसर–नरेश्वर । नहचौ–धैर्य । पूरौ–पूर्ण, पूरा । किसौ–कौनसा । अणूंरौ–अभाव कमी । ग्रह–पकड़ कर । केता–कितनोंको । वीठळनाथ–स्वामी, ईश्वर । वाजै–पुकारा जाता है ।

८९ मत-मात्रा । अरध–आधा । सिवाय–अतिरिक्त, विशेष । गुण–गीत छन्द । चाय–चाह । जीकै–जिसके ।

मात्रा १० पछै दूजा सारा दूहा मात्रा बीस, सत्रै, दस, बीस, सत्रै, दस ईं तरै तुका होवै जी गीतकौ नाम चौटियाळ गीत कहीजै ।

अथ चौटियाळ गीत उदाहरण

गीत

महाराज आजांनभुज रांम रघुवंसमण,
राड़ रिम जूथ अवनाड़ रोहै,
गढां गह गंजणा ।
वार निरधार आधार आधार आलम वणौ,
सरण साधार जिण विरद सोहै,
भिड़े दळ भंजणा ॥
जांनकीनाथ समराथ जाहर जगत
चुरस धमचक रचण वीरचाळा,
वसे खेत वीरती ।
ताखड़ा जोध आरोड़ दसरथतणा,
कीजिये किसौ नृप जोड़ काळा,
कहै जग कीरती ॥
सूरकुळ मुकट अणघट अनट जीह सुज,
वयण मुख दाखिया अंक वेहा,
दया जन दक्खणा ।

---

८९. सत्रै–सतरह । ईं–इस । तरै–तरह, प्रकार । जीं–जिस ।

९० आजान भुज–आजानुबाहु । रघुवसमण–रघुवशमणि । राड–युद्ध । रिम–शत्रु । जूथ–यूथ, समूह । अवनाड–जबरदस्त, नही मुडने वाला । रोहै–ध्वश करता है, सहार करता है । गह–गर्व । गजण–जीतने वाला, मिटाने वाला, नाश करने वाला । वार–समय । आलम–ससार, ईश्वर । सरण-साधार–शरणमे आये हुयेकी रक्षा करने वाला । भिडे–भिड कर, युद्ध कर । भजणा–पराजित करने वाला । समराथ–समर्थ । चुरस–महान । धमचक–युद्ध । वीरचाळा–वीरोका कार्य, वीरोका चरित्र । वीरती–शौर्य, वीरता । ताखडा–तेज । जोध–योद्धा । किसौ–कौनसा । जोड–बराबर । काळा–महावीर, योद्धा । कीरती–यश । सूरकुळ–सूर्यवश । अणघट–अपार । अनट–नही नटने वाला । जीह–जीभ, जिव्हा । वयण–वचन । दाखिया–कहे । वेहा–विधाता, ब्रह्मा ।

सामरथ भभीखण रंक राखै सरणा,
तसां आपण सुदत लंक तेहा,
रजवट्ट रक्खणा ॥
अवधरा धणी रिण सीह भंजण असह,
लीह संतांतणी निकं लोपै,
भणै किव भेदमें ।
तई सामाथ प्रभ बंधु दीनांतणा,
अनाथां नाथ भुज बिरद ओपै,
वणै कथ वेदमें ॥ ९०

अथ गीत लैहचाळ अथवा लहचाळ लछण

चौपई

कळ दस धुर फिर आठ सकांम ।
मझ तुक विखम दोय विसरांम ॥
सम अठ अंत रगण जीकार ।
चतुर गीत लैहचाळ उचार ॥ ९१

अरथ

पैली तुक मात्रा १८ होय । दोय विसराम पैली मात्रा १० दूजौ मात्रा आठ पर, ऊही तुक तीजी विखम मात्रा विसराम मोहरा होय । गुरु लघुकौ नेम नही । तुकात तुक सम दूजी चौथी जीकै मात्रा पनरह आठ मात्रा पछै रगण पछै जीकार सवद होय । यू दूजी चौथी तुक होय । यण प्रकार सरव दवाळा होय, जिण गीतरौ नाम लहचाळ कहीजै ।

---

९० सामरथ–समर्थ । भभीखण–विभीषण । तसा–हाथो । आपण–देने वाला । तेहा–तैसा, वैसा । रजवट्ट–क्षत्रियत्व, शौर्य । रक्खणा–रखने वाला । रिण–रण, युद्ध । भजण–नाश करने वाला, मिटाने वाला । असह–शत्रु । लीह–रेखा, मर्यादा । सतांतणी–सतोकी । सामाथ–समर्थ । विरद–विरुद । ओपै–शोभा देता है । कथ–कथा, वृत्तांत ।

९१ मझ–मध्य । विखम–विषम । विसराम–विश्राम । अठ–आठ । ऊहीं–ऐसे ही । मोहरा–तुकबंदी । नेम–नियम । यू–ऐसे ही । यण–इस ।

अथ गीत लैहचाळ उदाहरण

गीत

निरधार निवाजण भै अघ भांजण ,
सेवग तार सधीर सौ जी ।
दुख देवां दहण दैत दपट्टण ,
बीर निकौ रघुबीर सौ जी ॥

म्रगनैण सिया मन रूप सुरंजन ,
कौटिक कांम सकांम सौ जी ।
दुनियां बरदायक सेव सिहायक ,
रैण किसौ नृप रांम सौ जी ॥

निज कोसळ नंदण देवत वंदण ,
धारण पांण धनंखरौ जी ।
सभ्भ कुंभ सकारण रांवण मारण ,
लेण भुजां बळ लंकरौ जी ॥

जन सोच बिभंजण प्राचत पंजण ,
दांन अभैवर देणरौ जी ।
'किसना' निसचै कर राच सियाबर ,
जांण भरोसौ जेणरौ जी ॥ ६२

६२ निरधार–जिसका कोई सहारा या आश्रय न हो । निवाजण–प्रसन्न होने वाला । भै–भय । अघ–पाप । भांजण–नष्ट करने वाला । सधीर–धैर्यवान । दहण–नाश करने वाला । दैत–दैत्य । दपट्टण–ध्वश करने वाला । सेव–सेवा, सेवक । सिहायक–सहायक । रैण–भूमि । किसौ–कौनसा । नदण–पुत्र । वदण–वदनीय । पाण (पाणि)–हाथ । कुभ–रावणका भाई कुभकर्ण । विभजण–मिटाने वाला । प्राचत–पाप । पजण–नष्ट करने वाला, मिटाने वाला । निसचै–निश्चय । राच–लीन हो जा । सियाबर–श्री रामचन्द्र । भरोसौ-विश्वास । जेण–जिसका ।

अथ गीत गोख लछण

दूहौ

धुर तुक मत तेवीस धर, अवर वीस लघु अंत ।
चौथी तुक बे वीपसा, कवि ते गोख कहंत ॥ ९३

अरथ

चौथी तुकमे दो वीपसा होय । मात्रा प्रमाण कहा छा । आद पैलरी तुक मात्रा तेवीस होय । पाछली पनरैई तुका मात्रा वीस वीस होय । तुकात लघु अखिर आवै, अथवा नगण आवै, जी गीतनै गोख कहीजै । एक सबदनै दोय वार कहै सौ वीपसा कहावै ।

अथ गीत गोख जात सावझडाकौ उदाहरण

गीत

तनै कहं समझाय मतमंद जग फंद तज ।
अरप तन मन सुध न वेग सुणसी अरज ॥
उभै साचा अखर कहै रिख सिंभ अज ।
हरी भज हरी भज हरी भज हरी भज ॥
लछीरा चहन घण वीज वाळी लपट ।
क्रोध ममता नता मूढ तज रे कपट ॥
झौड़ मत कर अवर काळ लेसी झपट ।
रांम रट रांम रट रांम रट रांम रट ॥
काटसी घणा अघ ओघवाळा करम ।
बेध नह सके जम पहर इसड़ौ वरम ॥

---

९३. धुर–प्रथम । मत–मात्रा । वीपसा (वीप्सा)–एक शव्दालकार जिसके अर्थ या भाव पर वल या शक्ति लगाने से होने वाली शव्दावृत्ति । कहत–कहते है । पाछली–पीछे की, वाद की । जीं–जिस ।

९४ तनै–तुझको । मतमद (मतिमद)–मूर्ख । फद–जाल । रिख–ऋपि । सिंभ–शभू, शिव । अज–व्रह्मा । लछीरा–लक्ष्मीके । चहन–चिन्ह । घण–वादल । वीज–विजली । लपट–चमक । काळ–यमराज । घणा–वहुत । अघ–पाप । ओघ–समूह । नह–नही । जम–यमराज । इसडौ–ऐसा । वरम–कवच ।

सही अगुलता उर संप जिणनै सरस ।
पढ परम पढ परम पढ परम पढ परम ॥
उदर दीधौ जिकौ पूरसी जळ असन ।
वणौ छिब घणौ पटपीत पहरण बसन ॥
करे चित खांत निस दिवस रट रे 'किसन' ।
सीकिसन सीकिसन सीकिसन सीकिसन ॥ ९४

पण झड मुगटनै रुगनाथ रूपग मध्ये गोख नाम लख्यौ छै । कोईक जघ-खोडौ पिण कहै छै ।

अथ गीत चितईलोळ लछण

दूहौ

किव सोरठिया गीतके, अधिक दोय तुक आंण ।
चवद चवद मत दोढसौ, चितईलोळ पहचांण ॥ ९५

अरथ

सोरठिया गीतरै पहली तुक मात्रा अठारै। दूजी तुक मात्रा अठारै। तीजी तुक मात्रा सोळै । चौथी तुक मात्रा दस होवै। पछै सारा दूहा मात्रा सोळै दस होवै । जी सोरठियाकै सिरै जाता चवदै चवदै मात्राकी दोय तुका सवाय होवै जी गीतकौ नाम दोढौ कै छै तथा कोई कवि चितईलोळ कै छै। तुकात लघु होवै । छ तुका होवै । चौथी तुकरा तुकातरी आव्रत उलट पढवासू पाचमी तुक होय । क्यूक छठीमे पण आभास चौथी तुककौ होय सौ दोढौ ।

अथ गीत चितईलोळकौ उदाहरण

गीत

दीनां पाळगर धन सुतन दसरथ ,
सकज सूर समाथ ।

---

९४ परम–ईश्वर । उदर–पेट । दीधौ–दिया । जिकौ–वह । असन–भोजन । छिब–शोभा । पटपीत–पीताम्वर । वसन–वस्त्र । खात–विचार । सी–श्री ।

नोट–मूल प्रतिमे लिखा मिला है कि 'पण-झड मुगटनै रुघनाथरूपगमे गोख नाम लिख्यौ छै, कोईक जगखोडौ पिण कै छै' परन्तु यह लिखावट बिलकुल अशुद्ध है, गोख गीतके लक्षण रघुवरजनप्रकास और रघुनाथरूपकमे समान ही है ।

९५ किव–कवि । चवद–चौदह । मत–मात्रा । आव्रत–आवृत्ति । क्यूक–कुछ । पण–भी ।

९६. दीना–गरीबो । पाळगर–पालनकर्त्ता । धन–धन्य । सुतन–पुत्र । सूर–वीर । समाथ–समर्थ ।

रिणखेत भंजण सकुळ रांवण,
नेत-बंध रघुनाथ ।
तौ रघुनाथ रे रघुनाथ,
रविकुळ आभरण रघुनाथ ॥
तन स्यांम सघण सरूप ओपत,
सुपट बीज सकाज ।
रिम कोट हण जन ओट रक्खण,
मोट मन महराज ।
तौ महराज रे महराज,
माहव मोट मन महराज ॥
हक-बगां लाखां असुर हरणौ,
जुधां करणौ जैत ।
चाढणौ कुळ जळ दळद चौजां,
बाढणौ बिरदैत ।
तौ बिरदैत रे बिरदैत,
बिरदां धारणौ बिरदैत ॥
बळ थकां अबखी बखत बेली,
तवै जगत तमांम ।

---

९६. भजण–व्वश करनेको । नेत-वध–अपना स्वयका झंडा रखने वाला । आभरण–आभूषण । सरूप–स्वरूप । ओपत–शोभा देता है । सुपट–सुन्दर । वीज–विजली । रिम–शत्रु । कोट–गढ अथवा करोड । ओट–शरण । मोट मन–उदार चित्त । माहव–माधव, विष्णु, श्रीरामचंद्र । हक-वगा–युद्ध होने पर । हण्णौ–मिटाने वाला व्वश करने वाला । फरणौ–करने वाला । जैत–विजय, जीती । चाढणौ–चढाने वाला । जळ–कांति, दीप्ति । दळद–दारिद्रय, कगाली । चौजा–उदारता । वाढणौ–काटने वाला । विरदैत–विरुदधारी, यशस्वी । धारणौ–धारण करने वाला । वळ–शक्ति । थका–थकने पर । अवखी–कठिन, दुरूह । वेली–सहायक, मित्र । तवै–स्तुति करता है, वर्णन करता है । तमाम–सम्पूर्ण ।

नित 'किसन' कवि रट नांम निरभै ,
रसन स्री रघुरांम ।
तौ रघुरांम रे रघुरांम ,
रजवट धारियां रघुरांम ॥ ९६

अथ गीत पालवणी तथा दुमेळ सावझड़ा लछण

दूहौ

ग ल अनियम उगणीस धुर, अन तुक सोळह आंण ।
पालवणी चव तुक मिळै, दुमिल दुमेळ वखांण ॥ ९७

अरथ

पैह्ली तुक मात्रा उगणीस बाकीरी पनरैई तुकां मात्रा सोळै सोळै होय । तुकात गुरु लघुरौ नेम नहीं । तुक च्याररा मो'रा मिळै सौ पालवणो कहीजै नै दौ दौ तुकरा मोहरा मिळै सौ दुमेळ सावझड़ौ कहीजै ईंके मध्य अतमेळ किया-थका यौ ही त्रबकडौ कहीजै ।

अथ पालवणी उदाहरण

गीत

सिया वाहर समर दसाणण साझा ,
व्रवी उछाहर दीन निवाजा ।
दीठां थाहर कनक दराजा ,
रीझ खीज जाहर रघुराजा ॥
साझण जुधां वीसभुज आसुर ,
दीन निवाजण अनुज सहोदर ।

---

९६. रसन–जिव्हा । रजवट–क्षत्रियत्व, शौर्य ।

९७ ग–गुरु । ल–लघु । उगणीस–उन्नीस । धुर–प्रथम । अन–अन्य । आंण–ला, लाकर । चव–चार । दुमिळ–जहा दो चरण मिलते हो । मो'रा–तुकबदी । मोहरा–तुकबदी । ईंके–इसके । किया-थका–करने पर । यौ–यह ।

९८ वाहर–रक्षा । समर–युद्ध । दसाणण–रावण । साझा–सहार किया, मारा । व्रवी–दे दी, दान दी । उछाहर–उमग । निवाजा–प्रसन्न होकर । दीठा–देखने पर । थाहर–गढ, किला । कनक–स्वर्ण, सोना । दराजा–महान, बडा । रीझ–प्रसन्नता । खीज–कोप । जाहर–जाहिर, प्रसिद्ध । साझण–मारनेको, सहार करनेको । वीसभुज–रावण । आसुर–असुर, राक्षस । दीन–गरीब । निवाजण–प्रसन्न होकर । अनुज–छोटा भाई । सहोदर–भाई ।

बोलै साख त्रिकुट लिछमीबर ,
उमंग रीसवाळौ अवधेस्वर ॥
मथ रिण उदध मांण दसमथका ,
आपण सरण भभीखण अथका ।
सोब्रन गढ जस ओप समथका ,
क्रपा कोप आखै दसरथका ॥ ९८

अथ गीत दुमेळ सावझड़ी उदाहरण

गीत

जिण मुख जोवतां दुख प्राचत जावै ।
थरू आथ घर नवनिध थावै ॥
नांम लियां जम-किंकर नासै ।
सौ राघव संकर उर वासै ॥
बीर जगत अखिया रघुबीरा ।
साचै दिल भखिया सवरीरा ॥
दुल्लभ देव रिखां बिरदाळौ ।
बल्लभ जनां दासरथवाळौ ॥
तिण रघुनाथ वहत मग तारी ।
निज पग रजहूंता रिख नारी ॥

---

९८ साख—साक्षी । त्रिकुट—लका । लिछमीवर—विष्णु, श्रीरामचद्र । अवधेस्वर—रामचद्र । मथ—मथन कर । रिण—युद्ध । उदध (उदधि)—सागर समुद्र । माण—मान, गर्व । दसमथका—रावणका । आपण—देने वाला । भभीखण—विभीषण । अथका—धन-दौलतका । सोव्रन—सुवर्ण, सोना । समथका—समर्थका । आखै—कहते हैं ।

९९ प्राचत—पाप, दुष्कर्म । थरू—अटल, स्थिर । आथ (अर्थ)—धन-दौलत । थावै—होते हैं । जम-किकर—यमराजका दूत । नासै—भग जाते हैं । वासै—निवास करता है, बसता है । भखिया—खाये, भक्षण किये । सवरीरा—शवरीके, भिल्लनीके । दुल्लभ—दुर्लभ । रिखा—ऋषियो । विरदाळौ—विरुदधारी । वल्लभ—प्यारा । जना—भक्तो । दासरथवाळौ—दशरथका पुत्र, श्रीरामचद्र भगवान । तिण—उस । वहत—चलते हुए । मग—मार्ग । तारी—उद्धार किया । रजहूता—धूलिसे । रिख—ऋषि ।

भारथ खळ जाड़ा भानंखी ।
घाड़ा एक बीर धानंखी ॥
लंका मार दसाणण लेणौ ।
दांन भभीखण सेवग देणौ ॥
तोटौ केम रहै घर त्यांरै ।
रांम धणी मोटौ सिर ज्यांरै ॥ ९९

अथ गीत सावझ अडियळ लछण

दूहौ

सोळह मत्ता वरण दस, पद पद झमक गुरंत ।
'किसन' सुजस पढ स्री किसन, अड़ियल गीत अखंत ॥ १००

अरथ

जीके आदकी तथा सारी ही तुका प्रत मात्रा सोळै होय, तुक प्रत आखिर दस दस होय, तुकांत दोय गुरु होय, अंतमे जमक होय सौ अडियल गीत कहीजै । तुक प्रत अख्यर दस छै जिता बे वरण छद छै । कोइक अण गीतनै सावझ अडल पिण कहै छै । च्यार दूहा होय सौ तौ अडियल नै एक दूहौ होय सौ चौसर गाहौ तथा गाथा कहावै ।

अथ अडियल गीत उदाहरण

गीत

निज संतां तारै घणनांमी, नहच्यौ ज्यां नैड़ौ घणनांमी ।
निरपखां पखौ घणनांमी, नाथ अनाथांचौ घणनांमी ॥

---

९९ भारथ–युद्ध । खळ–असुर । जाड़ा–जवडा । भानखी–तोडने वाला । घाडा–आतक, रौव, धन्य-धन्य । धानखी–धनुषधारी । दसाणण–रावण । लेणौ–लेने वाला । भभीखण–विभीषण । सेवग–भक्त । देणौ–देने वाला । तोटौ–कमी, अभाव । त्यारै–उनके । ज्यारै–जिनके ।

१०० मत्ता–मात्रा । वरण–अक्षर । झमक–झमकाव । गुरत–जिसके अतमे गुरु (वर्ण) हो । अखत–कहते हैं । जींके–जिसके । तुका-प्रत–प्रति तुक या प्रति चरण । अख्यर–अक्षर । कोइक–कोई । अण–इस । पिण–भी ।

१०१ घणनामी–ईश्वर । नहच्यौ–धैर्य, निश्चितता । ज्या–जिन । नैडौ–निकट । निरपखा–जिसका कोई पक्ष न हो । पखौ–पक्ष, मदद, सहायता ।

रीझ सदांमासूं गिरधारी, ग्रवी ग्राथ बाथां गिरधारी ।
धारै चक्र भुजां गिरधारी, धायौ गज बाहर गिरधारी ॥
ग्रीध ग्राह तारण गोब्यंदौ, गणका गत देणौ गोब्यंदौ ।
ग्रहीयां जम भीड़ू गोब्यंदौ, गुण गावण जेहौ गोब्यंदौ ॥
सिघां तीन लोकां सांवळियौ, सूर कुळां छोगौ सांवळियौ ।
साहै चाप रांम सांवळियौ, सीतावर सांमी सांवळियौ ॥ १०१

अथ गीत धडउथल लछण

दूहौ

सोळै मत्ता सरब तुक, अंत एक गुरु होय ।
उलटै पाछौ अरधहूं, कह धड़ उथल सकोय ॥ १०२

अरथ

सोळै ही तुकामे मात्रा सोळै होय । एक तुकात गुरु होय । आधासूं तुका पाछी उलटै तथा पूरबारधसूं उतरारध वणै । लाटानुप्रास अलकार होय सौ धड़उथल गीत कहीजै । कोइक इणनै कवि ईलोळ पण कहै छै। गीत धडउथलमे न्यून जथा छै सौ देख लीज्यौ ।

अथ गीत धडउथल उदाहरण

गीत

जम लगै कठै भै सीस जियां, तन दासरथी नित वास तियां ।
तन दासरथी नह वास तियां, जम लगसी माथै जोर जियां ॥

---

१०१ रीझ—प्रसन्न होकर । ग्रवी—दान दी । ग्राथ (अर्थ)—धन-दौलत । बाथां—दोनो भुजाग्रोको आपसमे फैला कर मिलानेसे बनने वाला बीचका स्थान या इस स्थानमे समा सके उतना पदार्थ, वाहुपाश । धायौ—दौडा । बाहर—रक्षा । गोब्यदौ—गोविंद । गणका—गनिका । गत—गति, मोक्ष । देणौ—देने वाला । ग्रहीयां—पकडने पर । जम—यमराज । भीडू—सहायक । गुण—यश । जेहौ—जैसा । सिघा—श्रेष्ठ । सांवळियौ—श्रीकृष्ण । छोगौ—अवतश । साहै—धारण करता है । सीतावर—सीतापति । सामी—स्वामी ।

१०२ मत्ता—मात्रा । पाछौ—वापिस । पण—भी ।

१०३ कठै—कहा । भै—भय । सीस—शिर, ऊपर । जिया—जिनको । दासरथी—श्रीरामचद्र भगवान । तिया—उनमे । नह—नही ।

समरै न जिके नर सांमळियौ, क्रत-अंत जिकां सिर काहुळियौ ।
क्रत-अंत करै की काहुळियौ, समरंत जिके नर सांमळियौ ॥
गज-तार न वाक जिकां गुणियौ, सुत-भांण दियै दुख त्यां सुणियौ ।
सुत भांण तिकां दुख नां सुणियौ, गज-तार तिकां मुखहूं गुणियौ ॥
रसना पतसीत नकूं ररियौ, भव डंड जिकां जमरै भरियौ ।
रसना पतसीततणौ ररियौ, भव डंड जिकां जम नां भरियौ ॥१०३

अथ गीत सीहचला लछण

दूहौ

अंत रगण अठार धुर, दूजी तेरह जांण ।
सोळह तेरह तुक सरब, सीह चलौ वाखांण ॥ २०४

अरथ

जीके पैली तुक मात्रा उगणीस होय । दूजी तुक मात्रा तेरै होय । तीजी तुक मात्रा सोळै होय । चौथी तुक मात्रा तेरै होय । तुकात रगण होय जी गीतरौ नाम सीहचलौ कहीजै ।

अथ गीत सीहचलौ उदाहरण

गीत

सीता सुंदरी अरधंग ससोभत, सेवग मारुत सारखा ।
बाळ जिसा बळवंड बिहंडण, पांण भुजाडंड पारखा ॥

---

१०३. समरै—स्मरण करते हैं । जिके—जो । सामळियौ—ईश्वर, श्रीकृष्ण । क्रत अंत—कृतान्त, यमराज । जिका—जिनके । काहुळियौ—कोप किया । की—क्या । समरत—स्मरण करते हैं । जिके—जो, वे । गज-तार—गजका उद्धार करने वाला । वाक—वाणी । जिका—जिन्होने । गुणियौ—वर्णन किया । सुत-भाण—यमराज । त्या—उनको । तिकां—उनको । ना—नही । मुखहू—मुखसे । रसना—जिव्हा, जीभ । पतसीत—सीतापति, श्रीरामचद्र । नकू—नही । ररियौ—रटा । भव-डड—ससारका दण्ड या साजा । पतसीततणौ—सीतापतिका ।

१०५ अरधग—अर्द्धांगिनी । मारुत—हनुमान । सारखा—समान, सदृश । बाळ—बालिन्दर । बळवड—शक्तिशाली, जबरदस्त । बिहडण—ध्वश करने को, या ध्वश करने वाला । पांण—शक्ति । भुजाडड—बली, शक्तिशाली ।

कोसिक ज्याग अभंग सिहायक, दांणव घायक दूधरी ।
पाय रजी रघुराय परस्सत, आ त्रीय गौतम उधरी ॥
आभ्मौ राख जनकतणौ पण, मौड़ खळां दळ मांनकी ।
धींग भुजां सत खंड करी धनु, जेण बरी प्रिय जांनकी ॥
साल निवार सुरीस कियौ सुख, बीसभुजा हण बंकरौ ।
बेख दियौ रघुराज भुजां बळ, राज भभीखण लंकरौ ॥ १०५

अथ गीत अध चितविलास लछण

दूहा

सभ्भ खट कळ कर वीपसा, विच संबोधन वेस ।
तिण पर चवदह मत तुक, मोहर दुगुरु मिळेस ॥ १०६
गाय अरटिया गीतरौ, यण पर दूहौ अेक ।
प्रथम चरण अध अंत पढ, सुचितविलास विसेक ॥ १०७

अथ गीत अधचितविलास उदाहरण

गीत

गह गंजै रे गह गंजै, भिड़ जंग वडा खळ भंजै ।
ग्रीधां सांमळ दीध पळां गळ, मैंगळ खागति मंजै ॥

---

१०५. कोसिक–विश्वामित्र । ज्याग–यज्ञ । सिहायक–सहायक । दाणव–राक्षस । घायक–सहार करने वाला, नाश करने वाला । पाय–चरण । रजी–धूलि । परस्सत–स्पर्श करते ही ।

१०५. आभ्मौ–अटल । जनकतणौ–जनकका । पण–प्रण । धींग–जबरदस्त । जेण–जिस । साल–शल्य, दुख । सुरीस–सुरेश, इन्द्र । बीसभुजा–रावण । बेख–देख ।

१०६ सभ्भ–रख । खट (षट)–छ । कळ–मात्रा । वीपसा (वीप्सा)–एक शब्दालकार जिसमे अर्थ या भाव पर जोर देनेके लिये शब्दावृत्ति होती है, दुबारा कहनेकी क्रिया या भाव । तिण–उस । चवदह–चौदह । मत–मात्रा । मोहरा–तुकबन्दी । मिळेस–मिलने हैं ।

१०७ यण–इस । दूहौ–गीत छंदके चार चरणोका समूह ।

१०८ गह–गर्व । गजै–नाश करते हैं । भिड–युद्ध कर । खळ–दुष्ट, राक्षस । भजै–ध्वंश करते हैं । सामळ–एक मांसाहरी चीलकी जातिका पक्षी विशेष । पळां–मांसोका । गळ–पिंड, निवाला । मैंगळ–हाथी । खागति–तलवारसे । भंजै–ध्वंश करते है, मारते है ।

सूरजवंसतणौ नृप सूरज, पाधर आसुर पंजै ।
रे गह गंजै ॥
जिण जीता रे जिण जीता, भड़ रांवण कुंभ अभीता ।
आस्रय राख भभीखण आतुर, लाख मुखां जस लीता ॥
भार ग्रहे घणनाद जिसा भट, चौपट मार अचीता ।
रे जिण जीता ॥
जग जांणै रे जग जांणै, जिण लंक व्रवो जग जांणै ।
स्री-मुख दाख सुकंठ सहोदर, राख प्रभाव घरांणै ॥
कारुणस्यंध किकंध पते कर, बाळ हतै रिण बांणै ।
रे जग जांणै ॥
जस जापै रे जस जापै, ते संत हरे त्रिण तापै ।
संघट तोड़ अघां घण स्रीरंग, कौड़ जमांभय कांपै ॥
आसा राघव पूर अनेकां, थांनक दासां थापै ।
रे जस जापै ॥ १०८

अथ लघु चितविलास लछण

दूहौ

चवद चवद मत च्यार तुक, अठ मत पंचम आंण ।
बि गुरु अंत आवरत तुक, चित विलास पहचांण ॥ १०९

---

१०८ सूरजवशतणौ–सूर्य वशका । पाधर–खुला मैदान । आसुर–राक्षस । पजै–ध्वश करते हैं । जिण–जिस । भड–योद्धा । कुभ–कुभकर्ण । अभीता–वह जो डरे नही, निशक । आस्रय–शरण । भभीखण–विभीषण । आतुर–दुखी । लीता–लिया । घणनाद–मेघनाद, इन्द्रजीत । भट–योद्धा । चौपट– नाश, ध्वश । अचीता–बिना चिंता । लक–लका । व्रीवी–दान दे दी । स्री-मुख–स्वय, खुद । दाख–कह । सुकंठ–सुग्रीव । सहोदर–भाई । घराणै–वशका, वशमे । कारुणस्यध–करुणासिधु, कृपासागर । किकध–किष्किधा । पते–पति, स्वामी । बाळ–वालि नामक बदर । हतै–सहार कर । जापै–वर्ण करते हैं, जपते हैं । ते–उस । त्रिण–तीन । तापै–ताप, कष्ट । सघट–दुख । तोड–मिटा कर, नाश कर । अघा–पापो । घण–बहुत अधिक । स्रीरंग–विष्णु, श्रीरामचद्र । जमा–यमराजो । थानक–स्थान । दास–भक्त । थापै–स्थापन करता है।
१०९ चवद–चौदह । अठ–आठ । आण–ला, रख । बि (द्वि)–दो । आवरत–आवर्त्त, आवृत्ति ।

अरथ

पै'ली तथा च्यार ही तुकामे मात्रा आठ होवै, दोय गुरु अखिर तुकात होवै। पै'ली तुकरौ आध सौ पाचमी तुक होवै। आवरत पद होवै। आवरत फेर पढणौ कहीजै, जी गी तकौ नाम लघु चितविलास कहीजै। पै'ली तुकरी छ मात्रा करने वीपसा करणौ, विचै जीकार सबोधन धरणौ।

अथ गीत लघु चितविलास उदाहरण

गीत

घणनांमी जी घणनांमी, निज जोर परां घणनांमी ।
भुज लोक त्रिहूंपत भांमी, बिरदैत बहै धुर बांमी ।
जी घणनांमी ॥

बिरदाळौ जी बिरदाळौ, दुज गाय पखी बिरदाळौ ।
सीताचौ सांम सिघाळौ, पौह सेवगरां प्रतपाळौ ।
जी बिरदाळौ ॥

रघुराजा जी रघुराजा, रणधीर बडौ रघुराजा ।
सुज तारण संत समाजा, लह बहियां राखण लाजा ।
जी रघुराजा ॥

हद हाथां जी हद हाथां, है लंक व्रवी हद हाथां ।
सत्र भंज जुधां समराथां, गुण राखण बिसुधा गाथां ।
जी हद हाथां ॥ ११०

---

१०९ पै'ली–प्रथम। धरणौ–रखना।

११० घणनांमी–ईश्वर। भांमी–न्यौछावर, वलैया। विरदैत–विरुदधारी, योद्धा, वीर। धुर–तरफ। वामी–वायी। विरदाळौ–विरुदधारी, यशस्वी। दुज (द्विज)–ब्राह्मण। पखी–पक्षी। सीताचौ–सीताका। साम–स्वामी, पति। सिघाळौ–श्रेष्ठ। पौह–प्रभु, राजा। सेवगरा–सेवको। प्रतपाळौ–रक्षक। तारण–उद्धार करने वाला। हद–धन्य, धन्यवाद। लक–लका। व्रवी–दे दी, प्रदान की। सत्र–शत्रु। भज–तोड कर। समराथा–समर्थो। गुण–यश। विसुधा–पृथ्वी। गाथा–कथाओ।

अथ गीत घोड़ादमौ लछण

दूहौ

अठ्ठारह मत पहल अख, सोळ मत्त तुक आंन ।
दाख गीत घोड़ादमौ, दु गुरु अंत तुक दांन ॥ १११

अरथ

जी गीतकै पै'ली तुक मात्रा अठ्ठारा होय । दूजी सारी ही तुका मात्रा सोळै होय । तुकात दोय गुरु अखिर आवै, जिण गीतरौ नाम घोडादमौ कहीजै । घोडादमा नै त्रबकडौ एक छै । यण गीतमे सुध जथा छै ।

अथ गीत घोडादमौ उदाहरण

गीत

राघव गह पला कीर कह पै रज ,
सिला उडी जांणै जग सारौ ।
जीवन जगत कुटंब दिस जोवौ ,
पग धोवौ तौ नाव पधारौ ॥
पदमण रिख असमांन पहूंती ,
पंखां विनां जिहांन पढीजै ।
केवट कुळ प्रतपाळ दयाकर ,
चरण पखाळ जिहाज चढीजै ॥
हिक छिन मांझ सुरगळ अहल्या ,
पूगी है फळ रूप रज पै सौ ।

---

१११ अठ्ठारह–अठारह । मत–मात्रा । पहल–प्रथम । अख–कह । सोळ–सोलह । मत्त–मात्रा । आन–अन्य । दाख–कह ।

११२ गह–पकड कर । पला–अचल । कीर–मल्लाह । पै–चरण, पाव । दिस–ओर, तरफ । पदमण–पद्मिनी । रिख–ऋषि । पहूंती–पहुँची । केवट–मल्लाह । प्रतपाळ–रक्षा, पालन-पोषण । पखाळ–धो कर । जिहाज–जहाज, नाव, नौका । हिक–एक । छिन क्षण । माझल–मध्य, मे ।

मोहित काळ कहै कमळमुख,
बौहित बिमळ ओण कर बैसौ ॥
मुळक जांनकी रांम लिच्छमण,
भणियौ दुचै स करम न भाई ।
राधव चरण धुवाय कृपा कर,
तरण कीर सकुटंब तिराई ॥ ११२

अथ गीत अरटिया लछण

दूहौ

धुर अठार फिर बार धर, सोळ बार गुरु दोय ।
सोळ बार मत तुक सरब, सखै अरटियौ सोय ॥ ११३

अरथ

पै'ली तुक मात्रा अठारै होय । दूजी तुक मात्रा बारै । तीजी तुक मात्रा सोळै होय । चौथी तुक मात्रा बारै होय । पछै दूजा दूहा पै'ली मात्रा सोळै । दूजी तुक मात्रा बारै । तीजी तुक मात्रा सोळै । चौथी तुक मात्रा बारै । सोळै, बारै ईं क्रमसू होय । दोय गुरु तुकात होय, जी गीतनै अरटियौ कहीजै ।

अथ अरटिया गीत उदाहरण

गीत

दाखां आठरै खट भाख चवदह, पाठ विधांन पिछांणै ।
जिकै अकाथ ज्ञांन बिन झूठा, जे रघुनाथ न जांणै ॥
दीनदयाळ बिना गुण दूजा, आळ-जंजाळ अलप्पै ।
'किसनौ' कहै पात जे केहा, जेहा रांम न जंपै ॥

---

११२. बौहित–नाव, नौका । बिमळ–विमल, निर्मल । ओण–चरण । बैसौ–बैठिए । मुळक–हस कर । लिच्छमण–लक्ष्मण । तरण–नाव, नौका । तिराई–तैरा दी, पार कर दी ।

११३. धुर–प्रथम । बार–बारह । सखै–कहते हैं । जीं–जिस ।

११४ भाख–भाषा । चवदह–चौदह । जिकै–जो, वे । अकाथ–व्यर्थ । गुण–काव्य-रचना । दूजा–दूसरा । आळजजाळ–व्यर्थका प्रलाप । अलप्पै–अल्प, तुच्छ । जे–जो । केहा–कैसा । जेहा–जीभ । जपै–पढते हैं, वर्णन करते है ।

गिरा प्रसाद भेद बुध गाथां, बातां भूठ बणावै ।
चारण जनम पाय सुध चूका, गिर तारणनह गावै ॥
बूडा जे कर कर जस बूंबां, सूमां ऊमर सारौ ।
बुध सारू गायौ सीताबर, जोता जिकै जमारौ ॥११४

दूहौ

सोळ प्रथम बीजी चवद, मगण यगण पछ दाख ।
सोळ चवद मत क्रम सुकव, भल सेलार सु भाख ॥ ११५

अरथ

पै'ली तुक मात्रा सोळै । दूजी तुक मात्रा चवदै । तीजी तुक मात्रा सोळै । चौथी तुक मात्रा चवदै । पै'ली, तीजी तुकरै मोहरै मगण होय । दूजी चौथी तुकरै मोहरै यगण होय । तुकांत मगण यगण होय । ईं गीतरै सारा दूहा पै'ली तुक मात्रा सोळै । दूजी तुक मात्रा चवदै, ईं क्रम च्यार ही दूहा मात्रा होय सौ गीत नाम सेलार कहावै । लखपत पिंगळ मध्ये छद सेलार छै, जिणरै तुक प्रथम प्रतमात्रा तेरै छै । यणरै पै'ली तुकमे मात्रा तीन वधी । दूजी तुकमे मात्रा एक वधी जीसू गीत सेलार छै । पै'ली तीजी तुकरै अत मगण होय । दूजी चौथी तुकरै अत यगण अथवा दुगुरु होय ।

अथ सेलार गीत उदाहरण

गीत

मह ईजत आव अमंपै रे, चढ सीम जिकां कुण चंपै ।
कीनास भये नह कंपै रे, जे राघव राघव जंपै ॥
दिन सोहै आथत दवारे रे, ब्रद ईजल आव बधारै ।
जे नर धन धन जमवारे रे, सीताचौ सांम संभारै ॥

---

११४ गिरा–सरस्वती । प्रसाद–कृपा । बुध–पडित । सुध–ध्यान । गिरतारण–रामचद्र भगवान । बूडा–डूब गये । बूबा–जोरकी आवाज । सूमा–कृपणो । ऊमर–उम्र । सारौ–सव । जमारौ–जीवन ।

११६ मह–महान । आव–आयु, उम्र । चंपै–भयभीत करे । कीनास–यमराज । कपै–डरे । जपै–स्मरण करे । सोहै–शोभा देता है । आथ–धन-दौलत । दवारे–द्वार पर । धन-धन–धन्य-धन्य । जमवारे–जीवनमे । सीताचौ–सीताका । साम–स्वामी, पति । सभारै–स्मरण करते हैं ।

एकोतर बंस उधारै रे, निज लोक उभै निसतारै ।
साराह जिकां जग सारै रे, अवधेसर जीह उचारै ॥
करुणानिध जनहितकारी रे, बांमै अंग सीतबिहारी ।
सारी ज्यां बात सुधारी रे, धरियौ उर धानंखधारी ॥ ११६

अथ गीत झमाळ लछण

दूहा

दूहौ पहलां दाखजै, चंद्रायणौ सुपच्छ ।
दूहा उलटै चवथ तुक, सोय झमाळ सुलच्छ ॥ ११७
दूहौ अर चन्द्रायणौ, विहुंवै मत्ता छंद ।
यां लछण कहिया अगै, पिंगळ मांझ कव्यंद ॥ ११८

अरथ

पै'लां तौ दूहौ होय। पछै चद्रायणौ होय। दूहारी चौथी तुक दोय बखत पढी जाय सौ झमाळ नामा गीत कहीजै। दूहौ चद्रायणौ दोई मात्रा छद छै सौ यण पिंगळमे लछण दोयारा कह्या छै, सौ काम पडै तौ देख लीज्यौ। दूहौ पै'ली तुक मात्रा तेरै। तुक दूजी मात्रा इग्यारै। तुक तीजी मात्रा तेरै। तुक चौथी मात्रा इग्यारै। चद्रायणौ तुक प्रतमात्रा इकीस। अत रगण सौ चद्रायणौ। आद दूहौ पछै चद्रायणौ सौ झमाळ नामा गीत कहावै।

अथ झमाळ गीत उदाहरण

गीत

धाड़ा राघव धुर-धमळ, अवनाड़ा अणबीह ।
ऊबेड़ण जाड़ा असह, सुज धांसाड़ा-सीह ॥

---

११६ निसतारै—उद्धार करता है। हितकारी—हित करने वाला। बामै—बाया। धानखधारी—धनुषको धारण करने वाला।

११७ पहला—प्रथम, पहिले। दाखजै—कहिए। चद्रायणौ—चद्रायण नामक मात्रिक छद। सुपच्छ—पश्चात। चवथ—चतुर्थ।

११८ अर—और। विहुवै—दोनो। मत्ता—मात्रिक। या—इस प्रकार, इनका। लछण—लक्षण। अगै—पहिले, पूर्व। मांझ—मध्य।

११९ धाडा—धन्य-धन्य। धुर-धमळ—अग्रगामी। अवनाडा—वीर, योद्धा। अणबीह—निडर, निशक। ऊवेडण—उखेडना। जाडा—जवडा। असह—शत्रु। घासाडा-सीह—सेनाको पीछे हटाने वाला, शक्तिशाली।

सुज घांसाड़ासीह अबीह अचल्लगा ।
झूसर खाग तियाग भुजाडंड झल्लगा ॥
रहचगा दससिर जिसा असह मझ राड़ रे ।
बेढक अंकी बार धनंकी धाड़ रे ॥
रखवाळगा जिग रायहर, रजवट पाळगा राह ।
दिया लखगा रघुनाथ दहुं, नृप रिख साथ निबाह ॥
नृप रिख साथ निबाह नंद रख नाहरां ।
पंथ ताड़का निपात जिका कथ जाहरां ॥
परसुबाह हत सर मारीच अताळियौ ।
जिग कोसिक रिखराज राज रखवाळियौ ॥
रख्ये जिग कोसिक अडुरपुरो, मिथळेस पधार ।
पंथ अहल्या पाय रज, राघव कियौ उधार ॥
राघव कियौ उधार निपट रिख नाररौ ।
बळ धानंख लख घटे नृपां जिगा बाररौ ॥
दासरथी बर सीत पराक्रम दक्खियौ ।
राघव भंजे धनंख जनक पगा रक्खियौ ॥
आवंतां मारग अवध, डरवध हरख अमाप ।
आय फरस धर आफळगा, चाप बैर हर चाप ॥

---

११६ अबीह–निडर, निर्भय । तियाग–त्याग । भुजाडड–समर्थ, शक्तिशाली । झल्लणा–धारण करने वाला । रहचण–वश करनेको, सहार करनेको । दससिर–रावण । मझ–मध्य । राड–युद्ध । बेढक–जबरदस्त । अकी–अंकित की । बार–समय । धनकी–धनुषधारी । धाड–धन्य-धन्य । जिग–यज्ञ । निपात–सहार कर, मार कर । जाहरा–प्रसिद्ध । परसुबाह–परशुराम । सर–तीर, बाण । अताळियौ–उडाया, दूर फेंका । कोसिक–विश्वामित्र । रिखराज–ऋषिराज । राज–श्रीमान, आप । रखवाळियौ–रक्षा की । मिथळेस–राजा जनक । पाय–चरण । रिख–ऋषि । दासरथी–श्री रामचन्द्र । बर–पाणिग्रहण कर । सीत–सीता । दक्खियौ–प्रकट किया, बतलाया । पण–प्रण । रक्खियौ–रखा । अवध–अयोध्या । हरख–हर्ष । अमाप–अपार ।

चाप बैर हर चाप जाप धक्रख जपिया ।
उभै रांम जुध कारण तांम अड़पिया ॥
लछवर धनंख साथ तेज निज हर लिया ।
रद कर मद दुजराम अवधपुर आविया ॥ ११९

अथ मुडैल अठताळी गीत लछण

दूहा

चवद प्रथम बो ती चवद, चौथी दस मत जांण ।
पंच छठी सप्तम चवद, अष्टम दस मत आंण ॥ १२०
पहल दुती तीजी मिळै, दु गुरु अंत जिण दाख ।
मिळ तुक चौथी आठमी, अंत लघु जिण आख ॥ १२१
पंचम अठमी सातमी, मिळै अंत गुरु दोय ।
मुड़ियल अठताळौ मुणौ, किव जिण नांम सकोय ॥ १२२

अरथ

जिणरै पहलै तुक मात्रा चवदै होवै । दूजी तुक मात्रा चवदै होवै । तीजी तुक मात्रा चवदै होवै । चौथी तुक मात्रा दस होवै । पाचमी चवदै, छठी चवदै, सातमी चवदै, मात्रा चवदै चवदै होवै । तुक आठमी मात्रा दस होवै । पै'ली दूजी तीजी तुका मिळै । तुकात दोय गुरु होय । चौथी तुक आठमी तुकसू मिळै । तुकात लघु होय । पाचमी, छठी, सातमी तुक मिळै । तुकात दोय गुरु होय, जिण गीतनै मुडैलअठताळौ कहीजै । अठताळौ अथातरसू पिण लछण सुध छै । हमीरपिंगळमे मुडैलअठताळौ कहै छै नै रुगनाथरूपगमे अठताळौ हीज कहै छै ।

अथ मुडैलअठताळौ गीत उदाहरण

गीत

सुख दियण दुख गमण स्वांमी, नाथ त्रिभुवन आपनांमी ,
भंज दससिर भुजां भांमी, रांम भूप अरेह ।

---

११९ मद–गर्व । दुजरांम–द्विज-राम, परशुराम ।
१२० वी (द्वी)–दूसरी । ती (तृतीय)–तीसरी । चवद–चौदह । मत–मात्रा ।
१२१ दुती (द्वितीय)–दूसरी । दु–दो । दाख–कह । आख–कह ।
१२२ मुणै–कहते है । किव–कवि । सकोय–सब ।
१२३ दियण–देने वाला । गमण–गमाने या मिटाने वाला । आपनामी–अपने नामसे प्रसिद्धि प्राप्त करने वाला । भामी–बलैया । अरेह–निष्कलक ।

चुरस चित ब्रत नीतचारी, निरवहे ब्रत हेक नारी,
धींग पांण धनंखधारी, निपट संतां नेह ॥
असीचौ-लख जीव एता, जपै तौ प्रभ जीह जेता,
भजै जटधर निगम भेता, नंद दसरथ नांम ।
गरुड़ध्वज रिममांणगाळा, वैर वाहर सीत वाळा,
कहां भ्फौक अनूप काळा, रूप भूपां रांम ॥
विसू रक्खण सुजस वातां, इंद्र कौसळ आखियातां,
देव वंछित दांन दाता, दुभ्फल दीन दयाळ ।
गाव दससिर बांण गंजे, प्रगट खळ जन भूप भंजे,
जनक पण रख चाप भंजे, भले अवध भुवाळ ॥
गरब आसुर समर गाहे, सधर भुज खित्रवाट साहे,
रटे जग जग सीस राहे, गहर कीरत गाथ ।
तेण सर गिरराज तारे, महा खळ दहकंध मारे,
अडर उरबी भर उतारे, नमौ स्री रघुनाथ ॥१२३

अथ गीत हिरणझप लछण

दूहौ

धुर सोळह दूजी चवद, ती चौवीस तवंत ।
चौथी पंचम सत चवद, छठ चौवीस छजंत ॥ १२४

---

१२३. चुरस–श्रेष्ठ। नीतचारी–नीति पर चलने वाला। निरवहे–निभाया। हेक–एक। धींग–जबरदस्त। धनखधारी–धनुषधारी। निपट–बहुत। असीचौ-लख–चौरासी लाख। एता–इतने। तौ–तुझको। प्रभ–प्रभु। जीह–जीभ। जेता–जितने। जटधर–शिव। निगम–वेद, वेद-मार्ग। नंद–पुत्र। गरुडध्वज–विष्णु श्रीरामचन्द्र। रिम-माण-गाळा–शत्रुओं का गर्व गंजन करने वाला। वाहर–रक्षा। सीत–सीता। झौक–धन्य-धन्य। अनूप–अनोखा। काळा–वीर। विसू (वसु)–पृथ्वी। आखियातां–अद्भुत। दुभ्फल–वीर। चाप–धनुष। अवध–अयोध्या। भुवाळ–राजा। आसुर–राक्षस। समर–युद्ध। गाहे–नष्ट किया। खित्रवाट–क्षत्रियत्व। साहे–धारण किया। गाथ–गाथा, कथा। तेण–उस। सर–समुद्र। गिरराज–पर्वत। खळ–असुर, राक्षस। दहकध–रावण। उरवी–भूमि। भर–भार।

१२४ धुर–प्रथम। दूजी–दूसरी। चवद–चौदह। ती–तीसरी। तवंत–कहते है। छजंत–शोभा देता है, शोभा देती है।

पहली दूजी मेळ पढ, तीजी छठी मिळाप ।
मेळ चवथी पंचमी, जपै वडा किव जाप ॥ १२५

धुर बी चौथी पंचमी, भगण नगण यां अंत ।
तीजी छठी अंत तुक, जगण अहेस जपंत ॥ १२६

अरथ

पै'ली तुक मात्रा सोळै, तुक दूजी मात्रा चवदै, तुक तीजी मात्रा चवदै, तुक चौथी मात्रा चवदै, तुक पाचमी मात्रा चवदै, तुक छठी मात्रा चौवीस होवै । पै'ली दूजी रै पछै नगण । चौथी, पाचमी तुकरै अत भगण तथा अत लघु होवै । तीजी छठी तुकरै अत जगण होवै । दूजा दूहा—पै'ली, दूजी, चौथी, पाचमी तुकां मात्रा चवदै होवै । तीजो छठी तुक मात्रा चौवीस होवै, जी गीतरौ नाम हिरणझप कहीजै ।

अथ गीत हिरणझप उदाहरण

गीत

निज आठ जोग अभ्यास अहनिस,
सधै सुर घर जुगम रवि सस,
करै रेचक पूरक कुंभक, वहै दम सिर ठांम ।
असी च्यार सुधार आसण,
धौत बसती नीत धारण,
करौ अेता कठिण विधक्रम, न सम राघव नांम ।

---

१२५ चवथी—चतुर्थ ।

१२६ बी (द्वि)—दूसरी । या—इन । अहेस (अहीश)—शेष-नाग ।

१२७ आठ-जोग—अष्टांग योग । अहनिस—रात-दिन । सुर (स्वर)—नाकसे निकलने वाली वायु । जुगम (युग्म)—दो । रवि—सूर्य । सस (शशि)—चन्द्रमा । रेचक—प्राणायामकी एक क्रिया विशेष जिससे खीचे हुए सासको विधिपूर्वक बाहर निकाला जाता है । पूरक—प्राणायामकी प्रथम क्रिया या विधि जिसमे सासको भीतरकी ओर बलपूर्वक खीचते हैं । कुंभक—प्राणायामकी एक विधि जिसमे सासकी वायुको भीतर ही रोक रखते है । दम—सास । धौत—शरीर-शुद्धिकी योगकी एक क्रिया, धौति । बसती (वस्ति)—योगकी एक क्रिया विशेष । नीत—कपडेकी एक पतली धज्जीको गलेसे पेटमे डाल कर आंतोको शुद्ध करनेकी हठयोगकी एक क्रिया—(सम—बराबर, समान)

बंकनाळ समीर वासय,
चक्रखट तत पंच भिद चय,
सुचित मधुकर वसै संतत, जळज भ्रकुटी मझार।
भूम खेचर चाचरी भण,
मुनीउन आ गोचरी मुण,
निवह मुद्रा तपण नाहि, मीढ रेफ मकार।
अधोमुख उध पाय आसण,
धूम्रपांन सदीव धारण,
महा औ विध कठिण मांनव, करौ लाख करोड़।
तप क्रिया ब्रत होम तीरथ,
अवर परबी दांन हिम अथ,
निपट औ विध कदे नावै, जाप राघव जोड़।
तरुण गणिका नांम जै तर,
पेख सवरी जात पांमर,
बार अबखी देख बारण, पेख कीध पुकार।
अजामेळ सरीख आधम,
बाळमीक पुलिंद . बेखम,
'क्रिसन' हेकण छिनक कीधौ, यतां नांम उधार ॥ १२७

१२७ बकनाळ—योगियोकी बोलचालमे सुषुम्ना नामक नाडीका एक नाम। समीर—हवा। चक्रखट (षट-चक्र)—योगके शरीरस्थ छ चक्र। तत—तत्त्व। पच—पाच। मधुकर—भौंरा। सतत—सदैव, निरन्तर। जळज—कमल। मझार—मध्य। खेचर—खेचरी-मुद्रा। चरचरी (चर्चरी)—योगकी एक मुद्रा। मुनीउन (उनमुनी)—हठ योगकी एक मुद्रा। मुण—कह। मीढ—समान, बराबर। रेफ— र अक्षर। मकार—म अक्षर। अधोमुख—औंधा मुख। उध—ऊपर। पाय—चरण। सदीव—नित्य। हिम—स्वर्ण, सोना। कदे—कभी। जाप—जप। जोड—समान, बराबर। पामर—नीच। बार—वेला, समय। अबखी—कठिन। बारण—हाथी। कीध—की। सरीख—समान। आघम—नीच। पुलिंद—एक प्राचीन असभ्य जाति। हेकण—एक। छिनक—क्षण, थोडा। कीधौ—किया। यता—इतने।

अथ गीत कैवार लछण

दूहौ

धुर अठार बी नव धरौ, ती सोळह नव वेद ।
दु गुरु अंत चौथी दुती, भण कैवार सुभेद ॥ १२८

अरथ

पै'ली तुक मात्रा अठारै होवै । तुक दूजी मात्रा नव होवै । तुक तीजी मात्रा सोळै होवै । तुक चौथी मात्रा नव होवै । पछै सोळै नै नव ईं क्रम होवै । दूजी चौथी तुकरै अंत दोय गुरु होवै, ती गीतरौ नाम कैवार कहीजै ।

अथ कैवार उदाहरण

गीत

कीजै वारणै छिब कांम कौटिक, दीन दुख दाघौ ।
साभाव सरण-सधार स्रीवर, राजरौ राघौ ॥
धानंखधारी विरद धारण, तोय गिरतारी ।
राजवाळौ नंद दसरथ, भरोसौ भारी ॥
भव चाप भंज जनंक भूपत, राज पण रक्खै ।
सुज पूर खित्रवट वरी सीता, सूर सिस सक्खै ॥
रघुनाथ संत समाथ तारण, नाथ बोहौ नांमी ।
दसमाथ भंज प्रचंड दाटक, भुजाडंड भांमी ॥ १२९

---

१२८ बि (द्वि)—दो, दूसरी । ती—तीसरी । तीं—उस ।

१२९ वारणै—न्यौछावर । छिब—शोभा । कौटिक—करोड । दाघौ—दग्ध, जला हुआ । साभाव—स्वभाव । सरण-सधार—शरणमे आए हुएकी रक्षा करने वाला । स्रीवर (श्रीवर)—विष्णु । राजरौ—श्रीमानका । राघौ—राघव, रामचन्द्र भगवान । तोय—पानी । गिरतारी—पर्वतोको तैराने वाला । राजवाळौ—श्रीमानका, आपका । नंद—पुत्र । भव—महादेव, शिव । चाप—धनुष । पूर—पूर्ण । खित्रवट—क्षत्रियत्व । सूर—सूर्य । सिस (शशि)—चन्द्रमा । सक्खै—साक्षी है । समाथ—समर्थ । बोहौ—बहुनामी । दसमाथ—रावण । भंज—नाश कर । दाटक—जबरदस्त, शक्तिशाली । भुजाडंड—जबरदस्त । भांमी—बलैया, न्यौछावर ।

अथ गीत दोढा लछण

दूहा

धुर बी ती चवदह धरौ, चौथी बार चवंत ।
पंच छठी सप्तम चवद, अठमी बार अखंत ॥ १३०
पहली बीजी तीसरी, मेळ रगण पछ होय ।
मिळ चौथीसूं आठमी, जै तुकांत लघु जोय ॥ १३१
पंचम छठी सातमी, मेळ रगण पय छेह ।
भाख रांम गुण 'किसन' भल, आखत दोढौ अेह ॥ १३२

अरथ

दोढा गीतरै पै'ली दूजी तीजी तुक मात्रा चवदै होय। चौथी आठमी तुक मात्रा बारै होय । पाचमी छठी सातमी तुक मात्रा चवदै होय । पै'ली दूजी तीजी तुका मिळै, अत रगण होय । चौथी आठमी तुक मिळै, अत लघु होय । पाचमी छठी सातमी तुक मिळै, अंत रगण होय, जी गीतकौ नाम दोढौ कहीजै ।

अथ गीत दोढा उदाहरण

गीत

भड़ असुर आहव भंजिया, गह कुंभ सरखा गंजिया ।
रघुराज संतां रंजिया, वडवार कीरत व्यंद ॥
आजांनभुज बळ अंगरौ, जैतार दससिर जंगरौ ।
अख रूप कौट अनंगरौ, बिबुधेस नीत पय बंद ॥

---

१३०. धुर–प्रथम । बी–दूसरी । ती–तीसरी । चवदह–चौदह । बार–बारह । चवत–कहते हैं । चवद–चौदह । अखत–कहते हैं ।

१३१. पछ–बादमे, पश्चात ।

१३२ पय–चरण । छेह–अत । भल–ठीक । आखत–कहते हैं । ऐह–यह । चवदै–चौदह । बारै–बारह । जीं–जिस ।

१३३ भड–योद्धा । असुर–राक्षस । आहव–युद्ध ।. भजिया–ध्वश किये । गह–गभीर, महान । कुभ–रावणका भाई कुभकर्ण । सरखा–समान । गजिया–ध्वश किये । रजिया–प्रसन्न किये अथवा प्रसन्न हुए । वार–समय । कीरत–कीर्ति । व्यंद–वदन । आजानभुज–आजानबाहु । जैतार–जीतने वाला. जीत कर उद्धार करने वाला । दससिर–रावण । अख–कह । कोट–करोड । अनगरौ–कामदेवका । विवुधेस–इन्द्र । पय–चरण । वद–वदन करता है ।

कौटे'क अघदळ काटणौ, असुरेस मूळ उपाटणौ ।
थिर संत थांनक थाटणौ, अभनिमौ सगर अरोड़ ॥
सुज तेज कौटक सूररौ, रज कौट इंद्र जहूररौ ।
निज समुख रजवट नूररौ, महराज रवि कुळ मोड़ ॥
बांनैत भूपत बंकड़ा, घण भंज रिण असुरां घड़ा ।
सुज़ दास टाळण संकड़ा, लहरेक आपण लंक ॥
भूपाळ सिघ धन भूपती, रिझवार कीरत बड रती ।
अंग लियां पौरस आसती, अवधेस जुध अणसंक ॥
सुज भ्रात जेठी सेसरा, दइवांण वंस दनेसरा ।
हृद कंज मधुप महेसरा, मन महण रूप समाथ ॥
हृद भाळ सुसबद भळहळा, निज कदंम समहर नहचला ।
साधार सेवग सांवाळ, नृपराज दसरथ नंद ॥ १३३

अथ गीत हसावळी साणौर लछण

दूहौ

धुर अठार फिर पनर धर, सोळ पनर सरवेण ।
लछण औ है अंत लघु, जपै वेलियौ जेण ॥ १३४

---

१३३ अघ—पाप । दळ—समूह । काटणौ—काटने वाला । असुरेस—रावण । मूळ—जड, वश । उपाटणौ—मिटाने वाला । थिर—स्थिर । थानक—स्थान । थाटणौ—शोभा वढाने वाला, वैभव वढाने वाला । अभनिमौ—वशज । सगर—एक सूर्यवशी राजाका नाम । अरोड—जबरदस्त । सुज—वह । कौटक—करोड । सूररौ—सूर्यका । रज—वैभव । जहूर (जुहूर)—प्रकाशन, प्रकट । रजवट—क्षत्रियत्व, शौर्य । नूर—काति, दीप्ति, सुन्दरता । रवि—सूर्य । बानैत वीर । भूपत—भूपति राजा । बकडा—बकुरा । घण—बहुत, अधिक । रिण—युद्ध असुरा—राक्षसो । घडा (घटा)—सेना । दास—भक्त । टाळण—मिटानेको, दूर करने को । सकडा—सकुचित, सकट । आपण—देने वाला । लक—लका । सिघ—श्रेष्ठ । धन—धन्य । रिझवार—प्रसन्न होने वाला । बड—महान, बडी । रती—काति, दीप्ति । आसती—महान, प्रबल । अणसक—निडर, निर्भय । भ्रात—भाई । जेठी (जेष्ठ)—बडा । सेसरा—लक्ष्मणका । दइवाण—महान, जबरदस्त । दनेसरा (दिनेशका)—सूर्यका । हृद—हृदय । कज—कमल । मधुप—भौंरा । महेसरा—महादेवका । महण (महार्णव)—समुद्र । समाथ—समर्थ । सुसबद—कीर्ति, यश । कदम (कदम)—चरण । समहर—युद्ध । साधार—रक्षक, सहायक । सेवग—भक्त । सावळा—श्रीकृष्ण, श्रीराम । नद—पुत्र ।

१३४. धुर—प्रथम । अठार—अठारह । पनर—पनरह । सोळ—सोलह । सरवेण—सवमे ।

तुक प्रत बे बे कंठ तव, रा रा सबद सरास ।
कहै नांम जिण गीतकौं, हंसावळौ सहास ॥ १३५

अरथ

वेलिया साणौर गीतरै तुकप्रत बे बे अनुप्रास एक सरीखा होवै । सोळै तुकामे बतीस कठ होवै सौ गीत हसावळी साणौर कहावै ।

अथ गीत हंसावळारौ उदाहरण

गीत

सतरा हरचंद सुमतरा सागर, चितरा विलंद सुदतरा चाव ।
वतरा व्रवण प्रभतरा वाधण, नतरा तार मुक्रतरा नाव ॥
वनरा वांस सुमनरा काज वस, पुनरा निध तनरा आपांण ।
भय मेटण जनरा भन भनरा, महदनरा मनरा महरांण ॥
रिखरा निज मखरा रखवाळण, दुखरा तन लखरा जन दाह ।
धखरा खळ मुखरादस धड़चण, नरपखरा पखरा निरबाह ॥
सुखकररा थिररा वासी सुज, संकररा उरररा सामाथ ।
वररा सीत तार‌ गिरवरररा, हररा अघ रघुबरररा हाथ ॥१३६

---

१३५. कठ–अनुप्रास । सरास–रसपूर्ण । सहास–आनदपूर्वक, हर्षपूर्वक ।

१३६. सतरा–सत्यका । हरचद–राजा हरिश्चद्र । सुमतरा–सुमतिका । चितरा–चितके । विलद–महान, वडा । सुदतरा–श्रेष्ठ दानका । चाव–उमग । वतरा–धनका । व्रवण–देने वाला । प्रभतरा–यशका, कीर्तिका । वाधण–बढाने वाला । नतरा–नही तैर सकने वाला पापी, पर्वतादि । तार–तैराने या उद्धार करने वाला । सुक्रतरा–श्रेष्ठ कार्यका । सुमनरा–देवताओका । काज–काम । पुनरा–पुण्यका । निध (निधि)–खजाना । तनरा–शरीरका । आपाण–शक्ति, वल । महराण (महार्णव)–समुद्र । रिखरा–ऋषिका । मखरा–यज्ञका । रखवाळण–रक्षा करने वाला । लखरा–लाखोका । धखरा–द्वेषका, कोपका । खळ–राक्षस । मुखरादस–रावण । धडचण–मारने वाला, काटने वाला । नरपखरा– जसका कोई पक्ष या सहायक न हो । पखरा–पक्षका । निरवाह–निभाने वाला । ररा –पृथ्वीका । सामाथ–समर्थ । तार–तैराने वाला । गिरवरररा–पर्वतोका । अघ–पाप ।

अथ गीत रसखरा लछण

दूहा

धुर सोळह बी ती चवद, चौथी दस मत चाह ।
पंच छठी सप्तम चवद, दस आठमी सराह ॥ १३७
धुर बी ती पंचम छठी, सप्तम खट तुक मेळ ।
मिळ चौथीसूं आठमी, भल तुकंत लघु मेळ ॥ १३८
नगणक भगण तुकंत खट, तगण जगण चव आठ ।
सुकव रसखरौ गीत सौ, पढ जस राघव पाठ ॥ १३९

अरथ

पै'ली तुक मात्रा सोळै होवै । दूजी तुक मात्रा चवदै होवै । तीजी तुक मात्रा चवदै होवै । चौथी तुक मात्रा दस होवै । पांचमी तुक मात्रा चवदै होवै । छठी तुक मात्रा चवदै होवै । सातमी तुक मात्रा चवदै होवै । आठमी तुक मात्रा दस होवै । पै'ली, दूजी, तीजी, पांचमी, छठी, सातमी अै तुका मिळै । या छ ही तुकारै अंतमे नगण तथा भगण तुकांतमे आवै अर चौथी तुक आठमो तुकसूं मिळै । ज्या दोयारै तुकात नगण तथा जगण होवै, जी गीतरो नाम रसखरो कहीजै । गुरुवत छै । हिरणझंप रसखरारी अेक लछण छै ।

अथ गीत रसखरारी उदाहरण

गीत

सुज रूप भूप अनूप स्यांमळ, जेम बरसण घटा छिब जळ ।
वणै अंबर पीत वीजळ, सुकव कीत सराह ॥

१३७ धुर–प्रथम । बी–दूसरी । ती–तीसरी । चवद–चौदह । मत–मात्रा ।

१३८ खट–छ ।

१३९. नगणक–नगण । चव–कह । सुकव–श्रेष्ठ कवि । या–इन । ज्या–जिन । दोयारै–दोनोंके । जीं–जिस । गुरुवत–वह जिसके अन्तमे गुरु हो ।

नोट—मूल प्रतिमें गुरुवत शब्द लिखा मिला । यहा पर लघ्वात होता तो ठीक रहता क्योंकि रसखरा गीतमे सर्वत्र अन्त लघु वर्ण ही होता है ।

१४०. स्यामळ–श्याम, कृष्ण । वरसण–वर्षा । छिब–कांति । अंबर–वस्त्र, आकाश । पीत–पीला । वीजळ–बिजली, विद्युत । सराह–प्रशंसा ।

कंज सरभर समुख कोमळ, कांन झगमग हरि कुंडळ ।
नयण परसत पत्र निरमळ, दूठ रांम दुबाह ॥
भुजा बळ खळ भंज भारथ, अथघ अपहड़ ब्रवण किव अथ ।
सरब बातां वणै समरथ, धार बांण धनंख ॥
कहै मुख मुख जगत जस कथ, असुर समहर नाथ ऊनथ ।
दुझल राघव सुतण दसरथ, लियण भुजबळ लंक ॥
घड़ण नोखा घाट अणघट, वणै लंगर पाय रिणवट ।
घणूं व्यापक ईस घट घट, संत कारज सार ॥
मेल दळ घण रीछ मरकट, पाज बंध समंद जळ पट ।
खळां सबळां भंज खळ खट, विजै कर रणवार ॥
बिहद भूपत सीत वाहर, जार दससिर समर जाहर ।
थरर लंका जिसा थाहर, विसर त्रंबक वाज ॥
नेतबंध रघुनंद नाहर, छत्री सरण हित ऊछाहर ।
भभीखण कर लंक स्रीवर, मौज की महराज ॥१४०

अथ गीत भाखडी लछण

दूहा

एक दवाळौ आंकणी, औ पै'ला कर ओम ।
ग्यार मत्त धुर नव दुती, निज ग्यारह नव नेम ॥ १४१
अवर दवाळां वीस खट, तुक प्रत मत्त तवंत ।
मिळै च्यार तुक अंत लघु, किव भाखड़ी कहंत ॥ १४२

---

१४०. कज–कमल । सरभर–समान । झगमग–दमक-चमक । हीर–हीरा । दूठ–जबरदस्त । दुबाह–वीर । भंज–नाश कर । भारथ–युद्ध । अथघ–अपार । अपहड–दानवीर, दातार । ब्रवण–दान देने वाला । किव–कवि । अथ (अर्थ)–धन-दौलत । नाथ–नाथना, वशमे करना । ऊनथ–वह जो बन्धनमे न हो, उद्दण्ड । दुझल–वीर । सुतण–पुत्र । लियण–लेने वाला ।

१४१ दवाळौ–गीत छदके चार चरणका समूह । ग्यार–ग्यारह । मत्त–मात्रा ।

अरथ

भाखडीनामा गीतकै पै'ली तौ आकणीकौ एक दवाळौ होय, सौ दवाळौ भाखडीका सारा दवाळाकै आगै पढचौ जाय, जी आकणीका दवाळाकी पै'ली तुक मात्रा इग्यारै, चौथी तुक मात्रा नव होय और गुरु अन होय और भाखडीका दवाळाकी सारी तुका प्रत मात्रा छाईस होय। अत लघु होय, जी गीतकौ नाम भाखडी कहीजै। मात्रा उपछद छै।

अथ गीत भाखडी उदाहरण

गीत

खग दत ब्रद खटांजी, राखण रजवटां।
थूरण खळ थटांजी, राघव रिणवटां॥
रिणवटां राघव खळां रहचण भुजबळां अणभंग।
सुज पळां प्रघळां दियण समळां, गळां ग्रीध सुचंग॥
चळवळां जोगण खपर चढवै, सिंभ कमळां स्त्रंग।
जग गीत चिहूंवै-वळां जाहर, सुजस हुवै सुढंग॥
खग दत ब्रद खटांजी, राखण रजवटां।
थूरण खळ थटांजी, राघव रिणवटां॥
भड़भड़ै के लड़थड़ै भारथ, अड़ै के अखड़ैत।
वड़वड़ै के हड़हड़ै वीजळ, जड़ै के जरदैत॥
अड़वड़ै के धड़हड़ै आतस, जुड़ै के कज जैत।
विच समर हेकण धड़ै राघव, बडै रंग बिरदैत॥

---

१४३. खग–तलवार। दत–दान। खटा–प्राप्त करें। रजवटां–क्षत्रियत्व। थूरण–ध्वश करना, नाश करना, सहार करना। खळ–शत्रु। थटां–दल। रिणवटा–युद्धो। रहचण–सहार करनेको। अणभग–नही भगने वाला वीर। पळा–मास। प्रघळा–वहुत। दियण–देने वाला। समळा–मासाहारी पक्षी विशेष। गळा–मास-पिडो। चळवळ–रक्त, खून। जोगण–योगिनी, चडी। सिभ–शभु, महादेव। कमळा–मस्तको। स्त्रग (शृक)–माला। चहूंवैवळा–चारो ओर। सुढग–श्रेष्ठ। भड–योद्धा। भडै–भिडते हैं, युद्ध करते हैं। लडथडै–लडखडाते हैं। भारथ (भारत)–युद्ध। अडै–अडते हैं, भिडते हैं। के–कई। अखडैत–योद्धा। वडवड़ै–भिडते हैं। हडहडै–हसते हैं। वीजळ–तलवार। जडै–प्रहार करते हैं। जरदैत–कवचधारी योद्धा। अडवडै–हडवडाते है। धडहडै–तोपोकी ध्वनि होती है। जुडै–भिडते हैं। कज–लिये। जैत–विजय। विच–वीचमे। समर–युद्ध। हेकण–एक। धडै–तरफ, ओर, दलमे। विरदैत–विरुदधारी, वीर।

खग दत ब्रद खटांजी, राखण रजवटां।
थूरण खळ थटांजी, राघव रिणवटां॥
पह बीरहाक पनाक पणचां, बाज डाक त्रबाक।
असनाक पर ग्रीधाक आवध, करग बाज कजाक॥
चठ्ठा करत खप्पराक चंडी, राग बज अयराक।
रिणछाक चढ़ रिव ताक राघव, लखण सहित लड़ाक॥
खग दत ब्रद खटांजी राखण रजवटां।
थूरण खळ थटांजी, राघव रिणवटां॥
पाराथ सेवग आथ आपण करण सिध मन काथ।
दसदूण हाथ समाथ दाटक, मार खळ दसमाथ॥
जुड़हाथ माथ नमाय जंपै, गुणां 'किसनौ' गाथ।
सरणाय लंक समाथ समपण, निमौ स्री रघुनाथ॥
खग दत ब्रद खटांजी, राखण रजवटां।
थूरण खळ थटांजी, राघव रिणवटां॥ १४३

अथ अन्द विधि गीत भाखडो लछण

दूहौ

धुर नव मत जीकार फिर, चवद गुरू लघु अंत।
एम च्यार तुक आंकणी, किव भाखड़ी कहंत॥ १४४

---

१४३ बीरहाक—वीर-ध्वनि। पनाक—धनुष। पणचां—प्रत्यचाओ। डाक—डका। त्रबाक—नगाडा। चठ्ठा—द्रव पदार्थको जीभसे खीच कर पीनेसे होने वाली ध्वनि। अयराक—तेज, भयकर। रिणछाक—युद्धोन्मत्तता। रिव (रवि)—सूर्य। लखण—लक्ष्मण। लडाक—योद्धा। पाराथ—प्रार्थना। सेवग—भक्त। आथ—धन-दौलत। आपण—देनेको। काथ—कथा। दसदूण—वीस। समाथ—समर्थ। दाटक—जवरदस्त, महान। खळ—राक्षस। दसमाथ—रावण। जुडहाथ—कर-वद्ध होकर। माथ—मस्तक। नमाय—नमा कर, झुका कर। जपै—कहता है। गुणा—यश, कीर्ति। गाथ—कथा, गाथा। सरणाय—शरणमे आया हुआ। समाथ—समर्थ। समपण—समर्पण करनेको, समर्पण करने वाला।

१४४ धुर—प्रथम। मत—मात्रा। चवद—चौदह। कहत—कहते हैं।

अथ गीत द्रुतीय भाखडी उदाहरण

गीत

सीव्रर सारणौ जी, केतां निबळ संतां कांम ।
महपत मारणौ जी, मह जुध फरसधरसां मांम ॥
धजबंध धारणौ जी, बंका बरद भुज बरियांम ।
सरण-सधारणौ जी, रविकुळ आभरण रघुरांम ॥
रघुरांम भूपत आभरण, रविवंस अडर अरेह ।
भुज धरण बंका बिरद अणभग, तीख खित्रवट तेह ॥
दिल गहर ओपत सुतण दसरथ, बोल सुख लख बेह ।
सुत पूर आसां सरब समरथ, निपट दासां नेह ॥ १४५

अथ गीत अरधभाखडी तृतीय लछण

दूहौ

अरध दवाळौ आंकणी, बीजौ अरध वखांण ।
अरधभाखड़ी कवि अखै, जुगत त्रिहूं विध जांण ॥ १४६

अथ गीत अरधभाखडी उदाहरण

गीत

आरख अंगरा जी दुती भळळाट रवि दरसेण ।
रूप अनंगरा जी जोयां हुवै रद छबि जेण ॥

---

१४५. सीवर (श्रीवर)–विष्णु, श्री रामचन्द्र । सारणौ–सिद्ध करने वाला, सफल करने वाला । केता–कितने । निबळ–निर्बल । महपत (महिपति)–राजा । मारणौ–मारने वाला । फरसधरसा–परशुरामजीसे । मांम–गर्व, प्रतिष्ठा । धजबध–वीर । धारणौ–धारण करने वाला । बका–बाकुरे । बरद–विरुद । बरियाम–श्रेष्ठ । सरण-सधारणौ शरणमे आए हुएकी रक्षा करने वाला । आभरण–आभूषण । रविवस (रविवंश)–सूर्यवंश । तीख–विशेषता । खित्रवट–क्षत्रियत्व, वीरता । गहर–गभीर । ओपत–शोभा देता है । सुतण–पुत्र । बोल–यश, शब्द । निपट–बहुत । दासां–भक्तो । नेह–स्नेह ।

१४६ दवाळो–गीत छदके चार चरणका समूह । बीजौ–दूसरा । अखै–कहते हैं । जुगत–युक्ति । त्रिहू–तीनो । विध–विधि, प्रकार, तरह । जाण–समझ ।

१४७ आरख–चिन्ह, लक्षण । दुति (द्युति)–काति, दीप्ति । भळळाट–चमक, दमक । रवि–सूर्य । दरसेण–दर्शनसे । अनगरा–कामदेवका । जोया–देखने पर । रद–खराब, निकम्मा, रद्द । छवि–शोभा । जेण–जिमसे ।

जिण जोय रद छबि हुवै जाहर कौट कांम कांम ।
सुत भूप दसरथ नूप सोभा रूप रविकुळ रांम ॥ १४७

अरथ

यण तरै च्यार दवाळा तथा यधक दवाळाई होय, तिणनूं अरधभाखडी कहीजै । तुक दो आकणीरी हुवै ।

अथ गोखौ गीत लछण

दूहौ

बारह मत तुक आठ प्रत, आख वीपसा अंत ।
छीनूं मत दवाळ प्रत, यूं गोखौ आखंत ॥ १४८

अरथ

ग्रध गोखा गीतरै तुक आठ होवै । तुक अेक प्रत मात्रा बारै होवै नै आठमी तुकमे वीपसा होवै, जिकौ गोखौ सावझडौ गीत कहीजै ।

अथ गीत गोखा उदाहरण

गीत

साझीके बखत सांम, बेल संत बारियांम ।
ते कहै प्रथी तमांम, नमौ आप आप नांम ॥
धार चाप तेज धांम, वांम अंग रमा बांम ।
किता सार संत कांम, सिया रांम सिया रांम ॥ १४९

अथ दुतीय गोखौ गीत लछण

दूहौ

मझ खट तुक बारह मता, बेद अठम नव जांण ।
कळ नेऊ लघु अंत कह, इक गोखौ इम आंण ॥ १५०

---

१४७ जोय–देख कर । कौट–करोड । नूप (अनूप)–अद्भुत । यण–इस । तरै–तरह, प्रकार । यधक–अधिक । तिणनूं–उसको । हुवै–होती है ।

१४८ मत–मात्रा । प्रत–प्रति । आख–कह । वीपसा (वीप्सा)–एक शब्दालंकार जिसमे अर्थ या भाव पर बल देनेके लिए शब्दावृत्ति होती है । दवाळ–गीत छदके चार चरणोंका समूह । यूं–ऐसे । आखत–कहते हैं ।

१४९ बेल–मदद । वारियाम–श्रेष्ठ । तमाम–सब । धार–धारण कर । चाप–धनुष । वाम–वाया । रमा–लक्ष्मी, सीता । किता–कितने । सार–सफल कर ।

१५० मझ–मध्य । खट–छ । मता–मात्रा । वेद–चतुर्थ, चौथी । अठम–आठमी । कळ–मात्रा । नेऊ–नव्वे । इक–एक । इम–ऐसे । आण–ला, रच ।

अरथ

दूजा गोखारै तुक तीन, पै'ली दूजी तीजी मात्रा बारै होय। तुक चौथी मात्रा नव होय। तुक पाचमी, छठी, सातमी मात्रा बारै-बारै होय। तुक आठमी मात्रा नव होय। कुल मात्रा एक दवाळामे नवे होय। गुरु लघु तुकत पै'ली दूजी तीजी मिळै। चौथी आठमी मिळै। पाचमी छठी सातमी मिळै। कोई कवि यू पिण गोखौ कहै छै तोई सावभडौ छै।

अथ दुतीय गोखा गीत उदाहरण

गीत

साझीके बखत सांम, बेल संत बारीयांम।
ते कहै प्रथी तमांम, नमौ आप नांम॥
धार चाप तेज धांम, बांम अंग रमा बांम।
किता तार संत कांम, रांम रांम रांम॥
सझै बंदगी सुरीस, देव तौ जपै दनीस।
लाख लछीस, नांमणौ नरीस॥
बाढ जंग भुजावीस, रीझियां लँका वरीस।
कियौ जे सखा कपीस, ईस ईस ईस॥
भेत गुणां गाथ भेव, आभड़ै न अहंमेव।
ईदसा सुरा अजेव, साझ तास सेव॥
कीरति वांणी कहेव, दिलां धरै संभदेव।
वाह जेण चेत वेव, देव देव देव॥

---

१५०. यू-ऐसे। पिण-भी। तोई-तव भी।

१५१. सझै-करता है। वदगी-टहल, सेवा। सुरीस (सुरेश)-इन्द्र। तौ-तुझे। दनीस (दिनेश)-सूर्य। लछीस (लक्ष्मी+ईश)-विष्णु, श्री रामचन्द्र। नामणौ-नमाने वाला, झुकाने वाला। नरीस (नरेश)-राजा। बाढ-काट कर। जग-युद्ध। भुजा-बीस-रावण। रीझिया-प्रसन्न होने पर। लका-वरीस-लकाका दान देने वाला। सखा-मित्र। कपीस-सुग्रीव। भेव-भेद। आभडै-स्पर्श करता है। अहमेव-अभिमान, गर्व। ईदसा-इन्द्रके समान। सुरा-देवता। साझ-करते है। तास-उस। सेव-सेवा। वाणी-सरस्वती। कहेव-कहती है। सभ (शभू)-शिव।

नरेस अनाथ नाथ, अनाथियां घरे आथ ।
करै तूं सुधारे काथ, रटां सांमराथ ॥
भंज के खळां भराथ, गुणां वेद ब्रंह्म गाथ ।
मुणै तौ नमाय माथ, नाथ नाथ नाथ ॥ १५१

अथ गीत ढोलचलौ तथा ढोलहरौ-सावझड़ौ लछण

दूहौ

धुर बी ती तुक सोळ मत, चौथी मत्त अढार ।
सावझड़ौ तुक अंत लघु, ढोलहरौ निरधार ॥ १५२

अरथ

जिण गीतरै पै'ली, दूजी, तीजी तुक मात्रा सोळै होय । तुक चौथी मात्रा अढारै होय । पण लघु कर पढ्या चाहै तौ सोळै ही पढी जाय, सावझड़ौ होय। कदा'क पै'ली, दूजी, तीजी, तुकामे मात्रा सोळै सू अधिक होय तौ अटकाव नही। पण सोळै सू घटती तौ नही सभवै । जूनौ गीत देख कीदौ छै ।

अथ गीत ढोलचलौ तथा ढोलहरौ सावझड़ौ उदाहरण

गीत

पेख बणै जिण बाह परध्धर, धींग भुजां निज चाप सरध्धर ।
जेण भजै रिखी ब्रह्म जट धर, गावबे गावबे गाव गिरधर ॥
तौ चित चाह उधार सुतंनह, सेवत तौ दसरथ सुतंनह ।
रात दिनां कर खांत रसंनह, बोलबे बोलबे बोल विसंनह ॥

---

१५१ अनाथियां—गरीबो । आथ—धन-दौलत । काथ—कार्य, काम । सामराथ—समर्थ । भराथ—युद्ध । मुणै—कहते है । तौ—तुझको । नमाय—नमा कर । माथ—मस्तक ।

१५२ धुर—प्रथम । बी—दूसरी । ती—तीसरी । सोळ—सोलह । मत—मात्रा । मत्त—मात्रा । अढार—अठारह । निरधार—निश्चय । पण—परन्तु । कदा'क—कदाचित् । अटकाव—अड़चन । कीदौ—किया ।

१५३ पेख—देख कर । बणै—बनता है । धींग—जबरदस्त । चाप—धनुष । सरध्धर—बाण धारण करता है । जेण—जिसको । रिख—ऋषि । ब्रह्म—ब्रह्मा । जटधर—शिव । गिरधर—गिरधारी । तौ—तेरे । चाह—इच्छा । सुतनह—पुत्र । खांत—विचार । रसंनह—जीभ । विसंनह—विष्णु ।

बेढबखौ यम ऊंबर सौ बित, आळ-जंजाळ विसार अलच्छत ।
सांन विमास विसास धरेसत, पढबे बढबे पद्ध रघ्घुपत ॥
कारुणचौ निध जांनुकीकंतह, स्यांम सुनाथ करै घण संतह ।
तूं 'किसना' चित रक्ख नच्यंतह, अखबे अखबे अक्ख अनंतह ॥१५३

अथ गीत त्रकुटबध लछण

दूहा

धुर चवदह चवदह दुती, तीजी मत छाईस ।
चवदह चौथी पंचमी, इम तुक पंच कहीस ॥ १५४
आठ तुकां फिर कंठकी, पै'ली सोळह मत्त ।
चवद चवद कळ आठ तुक, नवमी दसह निरत्त ॥ १५५
पै'ली दूजीसूं मिळै, तिणरै गुरु तुकंत ।
तीजी दूहा अंतरी, उभै मिळै लघु अंत ॥ १५६
मिळै चवथी पंचमी, जिकां अंत गुरु जांण ।
अनुप्रासकी आठ तुक, मिळै अंत लघुमांण ॥ १५७
त्रकुटबंध तिण गीतनै, कहै सरब कवियांण ।
राघव जस जिण मझ रटै, वळै सतारथ वांण ॥ १५८

---

१५३ बेढ–लडाई । बखौ–कष्ट, दुख । ऊबर (उम्र)–आयु । आळजजाळ–व्यर्थका प्रपच । विसार–भूल जा । सान–बुद्धि । विमास–विचार कर । विसास–विश्वास । कारुणचौ निध–करुणाका खजाना । जानुकीकतह–जानकीका पति, श्री रामचद्र । स्याम–स्वामी । घण–बहुत । नच्यतह–निश्चित । अखबे–कह रे । अक्ख–कह । अनतह–विष्णु, श्री रामचद्र ।

१५४. चवदह–चौदह । दुती–दूसरी । मत–मात्रा । छाईस–छब्बीस । कहीस–कह, कही जाती है ।

१५५. कठ–अनुप्रास । चवद–चौदह ।

१५७. चवथी–चौथी । लघुमाण–लघु ।

१५८. कवियांण–कविजन । राघव–श्री रामचन्द्र भगवान । मझ–मध्य । वळै–फिर । सतारथ (सत्यार्थ)–सत्य । वाण–वाणी, वचन ।

अरथ

त्रकुटबंध गीतरै पै'ली तुक मात्रा चवदै। दूजी तुक मात्रा चवदै। तीजी तुक मात्रा छाईस। पै'ली दूजीसू मिळै तुकत गुरु। तीजी सारा ही दूहारी अतरी तुकसू मिळै। तीजीरै नै अतरीरै अत लघु। विचली अनुप्रासारी तुक आठ, ज्यामे पै'लीरी तुक तौ मात्रा सोळै और सात ही तुका प्रत मात्रा चवदै चवदै होय। अनुप्रासारी आठ ही तुकारा मोहरा मिळै नै तुकत लघु होय। यण प्रकारसू गीत त्रकुटबध कहीजै। अनुप्रासारी तुक आठ ज्यामेसू च्यार घटती कहै जीनै मुगट-बध कहीजै। अतरौ त्रकुटबध मुकटबधरै भेद छै। दूजू दोनूई एक छै, काई तफावद नही।

अथ गीत त्रकुटबध उदाहरण

गीत

अवधेस लंका ऊपरै, धर कुरख धंखा जुध धरै।
अठ्ठार पदम कपेस अणघट, मेळ दळ महराज॥
गत विसर त्रंबक गड़गड़ै।
भारथ कपी आसुर भड़ै।
भड़ अनड़ बडबड अमुड़ जुध भड़।
दुजड़ पड़ झड़ बड़ड़ खित झड़।
दड़ड़ रत पड़ भ्रगुट दड़दड़।
चड़ड़ ऊधड़ प्रगड चख म्रड।
खड़ड़ नरहड खपर खड़खड़।

---

१५८ चवदै—चौदह। बिचली—बीचमे, मध्यकी। ज्यामें—जिनमे। यण—इस। तफावत, तफावद—फर्क, अन्तर।

१५९ कुरख—कोप। घखा—इच्छा। पदम—गणितमे सोलहवें स्थानकी सख्या। कपेस—बानर। अणघट—अपार। गत—प्रकार, तरह। विसर—भयकर, भयावह। त्रबक—नगाडा। गडगडै—वजते है। भारथ—युद्ध। कपी—वानर। आसुर—राक्षस। भिडै—युद्ध करते हैं। भड—योद्धा। अनड—स्वतत्र। बडबड—बडे-बडे। अमुड—नही मुडने वाले। दुजड—तलवार। झड—प्रहार। बडड—ध्वनि विशेष। खित—पृथ्वी। झड—कट कर। दडड—द्रव पदार्थका तेज प्रवाह या ध्वनि। रत—रक्त, खून। भ्रगुट—शिर। दडदड—ध्वनि विशेष। खडड—ध्वनि विशेष। खडखड—ध्वनि विशेष।

हड़ड़ नारद बीर हड़हड़ ।
धड़ड़ आतस सिखर धड़हड़ ।
गहड़ बिखम त्रबंक गड़गड़, गड़ड़ धर नभ गाज ॥
पड़ मार तरवर पाथरां, रिण विकट कपी रघुनाथरां ।
दससीस दळ भुजबळां, द्रहवट कीध अडर सकोप ॥
नभ खंचरथ अवनाड़रा ।
खिलकत कौतूक राड़रा ।
दळ प्रबळ चौवळ कळळ दमंगळ ।
भळळ बीजळ सेल भळहळ ।
अहप सिर लळ अचळ चळ यळ ।
वाज हूंकळ कळळ वळवळ ।
खळळ चळवळ सरित खळहळ ।
समळ पळगळ लीध सांमिळ ।
मिळ कमळ स्रगनेत मंगळ ।
जुध वयळ कुळ नूमळ चढ जळ, अचळ राघव ओप ॥
धख हणू भुजब्रद धारखा, सूग्रीव अंगद सारखा ।
नळ नील दध-मुख पणस नाहर, बिहद जंबूवांन ॥

---

१५६ हडड–हसनेकी ध्वनि । हडहड–हसनेकी ध्वनि । घडड–तोपोकी ध्वनि । बिखम–विषम । गडगड़–नगारेकी ध्वनि, नगाडा बजना । गडड–ध्वनि विशेष । नभ–आकाश । तरवर–वृक्ष । पाथरा–पत्थरो । रिण–युद्ध । विकट–भयकर । दससीस–रावण । दळ–सेना । भजबळा–भुजाबलसे । द्रहवट–ध्वश, नाश । अवनाडरा–सूर्यका । राडरा–युद्धका । चौवळ–चारो ओर । कळळ–कोलाहल । दमगळ–युद्ध । भळळ–चमक, दमक । बीजळ–तलवार । सेल–भाला । भळहळ–चमक, दमक । अहप–शेषनाग । लळ–झुक जाते हैं, झुक गये । अचळ–पर्वत । चळ–चलायमान । यळ (यला)–पृथ्वी । वाज–घोडा । हूकळ–घोडोकी हिनहिनाहटकी ध्वनि । कळळ–कोलाहल । वळवळ–चारो ओर । खळळ–द्रव पदार्थके बहनेकी ध्वनि । चळवळ–रक्त, खून । सरित–नदी । खळहळ–बहने लगी । समळ–मासाहारी पक्षी विशेष । पळ–मास । गळ–पिंड, कौर । वयळ–सूर्य । नूमळ–निर्मल । जळ–काति, दीप्ति । अचळ–अटल । ओप–काति । हणू–हनुमान । सारखा–समान । जबूवान–जामवन्त ।

जग वय मयंद गवाखसा ।
लड़ हेक भंजण लाखसा ।
इर अंतर लसकर समर ओर ।
सघर घण सुर कंवर दससिर ।
सुक्कर धर सर बजर ससतर ।
गहर हर वह पथर तर गिर ।
वहर सिर कर देह वाखर ।
पहर चौसर सुवर अपछर ।
सधर रघुबर दुछर वह सर ।
असुर दससिर दुसर छिद उर, मछर भंज अमांन ॥

क्रोधाळ लिछमण कांमरौ, रिण लड़ै बंधव रांमरौ ।
तिण मेघनाद विभाड़ ताखै, पाड़ असहां पूज ॥

कूंभेण दससिर क्रांमती ।
पह भंज हेकल रघुपती ।
रिण कुंभ सुरघण मार रांवण ।
कठण खळ जण कीध कणकण ।
विभीखण जग चरण वासण ।
सरणहित तिण लंक समपण ।
ऊछव घण सिय तरण आंणण ।
प्रसण हण मन महण द्रढ पण ।

---

१५९. चौसर–पुष्पहार । अपछर–अप्सरा । दछर–वीर । मछर–गर्व । क्रोधाळ–क्रुद्ध । लिछमण–लक्ष्मण । बधव–भाई । विभाड–संहार कर, मार कर । ताखै–वीर । असहां–शत्रुओ । पूज–समूह । पह (प्रभु)–योद्धा, राजा । कणकण–तितर-वितर । ऊछव–उमग । घण–वहुत । सिय–सीता । आणण (आनन)–मुख । प्रसण–शत्रु । महण (महार्णव)–समुद्र ।

सयरा हुलसरा दुयरा सकुचरा ।
ग्रहरा मोखरा धररा सुरगरा ।
जपरा कविजरा सुजस जराजरा, जैत रांम अंगज ॥ १५६

अथ गीत दुतीय त्रकुटबध

चौपई

जांरा उभय तुक भंवर गुंजार, सोळह प्रथम चवद बी सार ।
ती चवदह दस गुरु लघुवंत, यरा मुहमेळ चवदमो अंत ॥१६०
चवद मत तुक दोय चवंत, रटजै मूहमेळ रगरांत ।
अनुप्रासरी तुक रच आठ, पढ धुर सोळह चवद अन पाठ ॥१६१
प्रत तुक कंठ च्यार प्रमांरा, उभै कंठ घट तुक यां आंरा ।
तुक आठूं ही होय लघुंत, नवमी दस मत गुरु लघु अंत ॥१६२
दूहा अेक प्रत यम तुक होय, साखै बियौ त्रकुटबंध सोय ॥१६३

अथ दुतीय गीत त्रकुटबध उदाहरण

गीत

जांनकी नायक जगत जाहर, वीर संतां कररा वाहर ।
वहत कथ सुज वेद दुजबर, धनौ करुरााधांम ॥

---

१५६ सयण—सज्जन । हुलसण—हर्ष, प्रसन्नता । दुयण (दुर्जन)— शत्रु, दुष्ट । मोखण—छोडना । सुरगण—देवता । जपण—जपने को । कविजण—कविजन । जणजण—प्रत्येक व्यक्ति । जैत—विजय । अगंज—जो जीता न जा सके ।

१६०. उभय—दोनो । चवद—चौदह । बी—दूसरी । ती—तीसरी । लघुवत—जिसके अन्तमे लघु हो । यण—इस । मुहमेळ, मूहमेळ—तुकवदी । चवदमी—चौदहवी ।

१६१. चवत—कहते हैं । रगणत—जिसके अतमे रगण हो । अन—अन्य ।

१६२ कंठ—अनुप्रास । लघुत—जिसके अतमे लघु हो ।

१६३. प्रत—प्रति । यम—इस प्रकार । साखै—कहते हैं, साक्षी देते हैं । बियौ—दूसरा । सोय—वह ।

१६४ वाहर—रक्षा । वहत—चलता है । कथ—आज्ञा । दुजबर—ब्राह्मण । धनौ—धन्य-धन्य । करुणाधाम—करुणासागर ।

यभ दास तारण वासतै ।
पोह छंड कमाळा पासतै ।
सुर अतुर गिर कर स्रवण स्रीवर ।
तळप परहर अतुर चढ तुर ।
चकरधर मग सधर संचर ।
सिथळ पर घर जांण ईसर ।
छांड नगधर धरण दूछर ।
मकर यर सर चकर मोख'र ।
फंद हर पग सथर कर फिर ।
वळ सुकर गह सुकर रघुबर, तार सिंधुर तांम ॥ १६४

अरथ

ई प्रकारसू च्यार ही दूहा दूसरौ त्रकुटबध जाणज्यौ ।

अथ गीत सुपखरौ वरण छद लछण

दूहौ

धुर तुक अखर अठार धर, चवद सोळ चवदेण ।
सोळ चवद क्रम अंत लघु, जपै सुपंखरौ जेण ॥ १६५

अरथ

सुपखरौ गीत वरण छद तिणरै मात्रा गिणती नही । अखिर गिणती होय । जीरै पहली तुकरा आखर अठारै होय । दूजी तुक आखर चवदै होय । तीजी तुक आखर सोळै होय । चौथी तुक आखर चवदै होय । पाछला दूहारी पै'ली तुक हर तीजी तुक आखर सोळै होय । दूजी, चौथी तुक आखर चवदै होय । तुकात लघु होय । जी गीतनै सुपखरौ कहीजै ।

---

१६४. यभ (इभ)–हाथी । दास–भक्त । वासतै–लिए । पोह–प्रभू । छड–छोड कर । कमळा–लक्ष्मी । पासतै–पास से । तळप (तल्प)–शय्या, पलग । परहर–छोड कर । चकरधर–विष्णु । मग–मार्ग । सधर–सधैर्य । सचर–गमन । सिथळ–मद । जाण–समझ कर, जान कर । छाड–छोड कर । नगधर–गरुड । दूछर–वीर । मकर–ग्राह । यर–शत्रु । चकर–चक्र । मोख'र–छोड कर । फद–बधन, जाल । हर–मिटा कर । सथर–स्थिर, अटल । वळ–फिर । सुकर–हाथ । गह–पकड कर । सिधुर–हाथी, गज ।

अथ गीत सुपंखरो उदाहरण

गीत

पैंडां नीतरा चलाक धू छ-च्यार भंज पलीतरा ।
सूर धीर चीतरा अछेह ओप संस ॥
धीतरा कीतरा रिखी सुकंठ मीतरा धनौ ।
वाहरू सीतरा रांम अदीतरा वंस ॥
वंदनीक पायरा गायरा दुजां विसावीस ।
आसुरां भंजणा आडे घायरा अमाव ॥
अडोळ पायरा सीह सुभायरा आसतीक ।
सिहायरा जनां औधरायरा सुजाव ॥
खेस जंद द्वंद रांम दंधरा सिंघार खरा ।
दहै बाळरा स्रीनंदरा भांण दात ॥
दासरथी सिधरा अबंधरा बंधरा देण ।
पंच दूण कंधरा कबंधरा निपात ॥
हणू जिसा किंकरा पघोर के वंकरा हल्लां ।
जूधां जीत अनंकरा रोड़णा जोधार ॥

---

१६६. पैडा–कदमो । नीतरा–नीतिके । चलाक–चलने वाला । धू–शिर । छ-च्यार–दस । पलीतरा–असुरके । अछेह–अपार । रिखी–ऋषि । सुकठ–सुग्रीव । मीतरा–मित्रके । धनो–धन्य । वाहरू–रक्षक । सीतरा–सीताके । अदीतरा–सूर्यके । वदनीक–वदनीय । पायरा–चरणोके । दुजा–ब्राह्मणो । विसावीस–पूर्ण । आसुरां–राक्षसो । भजण–सहार करने वाला । आडे–विरुद्ध । घायरा–प्रहारका । अमाप–अपार । अडोल–दृढ, अटल । पायरा–चरणका । सीह–सिंह । सुभायरा–स्वभावका । आसतीक–समर्थ, शक्तिशाली, आस्तिक । सिहायरा–सहायताके । जना–भक्तो । औधरायरा–राजा दशरथके । सुजाव–पुत्र । खेस–असुर । जद–असुर । द्वद–युद्ध । सिघार–विध्वंश । दासरथी–श्री रामचन्द्र । सिधरा–समुद्र । अवध–वधनरहित । वधरा–वधनका । देण–देने वाला । हणू–हनुमान । जिसा–जैसा । किंकरा–सेवक । पघोर–सीधा करने वाला । वक–वक्र । अनकरा–नगाडाके । रोडणा–वजाने वाला । जोधार–योद्धा, वीर ।

रोळै लेण लंकरा निसंकरा विभाड़ रांम ।
हाथां झौक रंकरा लंकरा देणहार ॥ १६६

अथ गीत हेकलवयण तथा मात्रारहित हसगमण लछण

दूहा

धुर अठार उगणीस मत, त्रदस सोळ त्रदसेण ।
दु लघु अंत सांणोर लघु, जपै खुड़द कवि जेण ॥ १६७
जिण छोटा सांणोरमें, गुरु अखिर नह होय ।
सरब लघु सोळह तुकां, हेकल वयण स कोय ॥ १६८

अरथ

खुडद लघु साणोर तथा वेलिया साणोर गीतरी सोळै ही तुकांमे गुरु अखिर अेक ही न होय । सोळै ही तुकामे सरब लघु अखिर होय, जी गीतरौ नाम हेकल-वयण कहीजै तथा मात्रारहित कहीजै । कठे'क दवाळा एकरा तुकात प्रत गुरु अेक होय । इणनै धणकठ साणोर पिण कहीजै ।

अथ गीत हेकलवयण उदाहरण

गीत

जग जनक धनक हर हरण करण जय ।
चत नरमळ नहचळ चरण ॥
अकरण करण समरण अघ अणघट ।
सक रघुबर असरण सरण ॥
लछवर सधर अमर नर रख लज ।
महपत समरत हरत मळ ॥

---

१६६ रोळै–युद्धमे । विभाड–वीर । झौक–धन्य । रंकरा–गरीबका । देणहार–देने वाला ।

१६७ उगणीस–उन्नीस । मत–मात्रा । त्रदस–तेरह ।

१६८. सोळ–सोलह । त्रदसेण–तेरहसे । दु–दो । जेण–जिसको । अखिर–अक्षर । सकोय–वह । कठे'क–कही पर । पिण–भी ।

१६९ जनक–पिता । धनक–धनुष । हर–महादेव । हरण–तोडने वाला । चत–चित्त । नरमळ–निर्मल । नहचळ–निश्चल, अटल । अघ–पाप । अणघट–अपार, नही मिटने वाला । लछवर (लक्ष्मीवर)–विष्णु, श्री रामचन्द्र । सधर–दृढ । लज–लज्जा । महपत (महिपति)–राजा । समरत–स्मरण करते हैं । मळ–पाप, मैल ।

छजत बयण पय सरस मयण छब।
कमळ नयण रव तरण कळ ॥
सकर धनख सरस रस सदन सख।
नरख बदन जग भय नसत ॥
तन मन बय सम स जन सहज तूय।
लछण भरथ अरिघण लसत ॥
तन घण बरण धरण दसरथ तण।
सदय समन गरवत सहज ॥
तज तज अवर 'कसन' कव नत-प्रत।
धर मन नहचळ गरड़-धज ॥ १६९

अथ गीत भुजंगी लछण

दूहौ

बारा अखिर तुक अेक प्रत, यगण चार गुरु अंत ।
गीत भुजंगी तास गण, वरण छंद बुधवंत ॥ १७०

अरथ

जा गीतरै तुक अेक प्रत च्यार यगण होय। अंत गुरु होय, वरण छंद छै। मात्रा गिणती नही। जिण गीतनै भुजंगी कहै छै।

अथ गीत भुजंगी उदाहरण

गीत

महाराज औधेस आधार संतां, वार खारी रखै लाज बेखौ।
हरी काज पै आसरा दीह हेके, लछीनाथ दी सेवगां लंक लेखौ ॥

१६९. छजत–शोभा देता है। बयण–वचन। मयण–कामदेव। छब–कांति, दीप्ति। रव–सूर्य। तरण–तरुण। धनख–धनुष। सदन–घर। नरख–देख कर। बदन–मुख। नसत–नाश होता है। लछण–लक्ष्मण। अरिघण–शत्रुघ्न। लसत–शोभा देते हैं। घण–बादल। धरण–धारण करने वाला। तण (तनय)–पुत्र। नत-प्रत–सदैव। नहचळ–निश्चल। गरड-धज–गरुडध्वज, विष्णु।

१७०. बारा–बारह। तास–उस। गण–समझ। बुधवत–बुद्धिमान। गिणती–गिनती, सख्या।

१७१. औधेस (अवधेश)–दशरथ, श्री रामचन्द्र। खारी–भयकर। वेखौ–देखो। लछीनाथ (लक्ष्मीनाथ)–विष्णु।

तवै भू अहल्या गणांका तिराई, रटां बोर भीलीतणा खाय रीधौ।
सरां ताड़का मार ऊधार सांमी, करां ग्रीधवाळौ वळे स्राध कीधौ॥
रदा सिंभ वांसे सदा अेकरंगी, गवै जास पंगी नरां बेद गाथां।
तनां खीणहूंतौ मुणै भ्रात तोनूं, हणै बाळ सुग्रीव दे राज हाथां॥
कसौ जोड़ भूमंड तै ओर कीजै, भुजाडंड मोटा ब्रदां जोग भाळौ।
अठूंजांम जीहां 'किसनेस' आखै, वडौ आसरौ रांम पै कंज वाळौ॥१७१

अथ गीत वडौ साणोर अहरणखेडी लछण

दूहा

तेवीसह मत पहली तुक, बी अठार ती बीस।
चौथी तुक अठार चव, लघु तुक अंत लहीस॥ १७२
वडा जेण सांणोर बिच, पवरग ऊ न पयंप।
अहरणखेड़ी नांम उण, जस राघव मझ जंप॥ १७३

अरथ

पै'ली तुक मात्रा तेवीस। दूजी तुक मात्रा अठारै। तीजी तुक मात्रा बीस। चौथी तुक मात्रा अठारै होय सो गीत बडौ साणोर कहावै। अत लघु होय। जी बडा साणोरमे पवरगरा पाच आखर प फ ब भ म अर ऊ व, अे सात आखर सारा गीतमे न होय अर गीत पढता होठ मिळै नही, जी गीतरौ नाम अहरणखेडी कहीजै। अहर=होठ न खेडी कहता खडै नही, हालै नही यौ अरथ छै।

---

१७१ तवै–स्तुति करते हैं। भू–ससार। भीली–भिल्लनी। वळै–फिर। कीधौ–किया। रदा–हृदय। सिंभ–शभू, शिव। गवै–गाया जाता है। जास–जिसका। पगी–कीर्ति, यश। मुणै–कहता है। तोनू–तुझको। बाळ–बालि वानर। कसौ–कौनसा। जोड–बराबर, समान। भूमड–भूमडल। भुजाडड–शक्तिशाली, समर्थ। जोग–योग्य। भाळौ–देखो। अठूजाम–अष्टयाम। जीहा–जीभ। आखै–कहता है। आसरौ–सहारा। पै–चरण। कज–कमल।

१७२ मत–मात्रा। बी–दूसरी। ती–तीसरी। चव–कह। लहीस–लेगा।

१७३ पयप–कह। मझ–मध्य। जप–कह। सौ–वह। यौ–यह।

अथ गीत अहरण(न)खेडी उदाहरण

गीत

करां धाड़ लागै रघौराज दत कीजतां ।
सरसतां रीझतां संत सुख साज ॥
लीजतां नखत्र-डर सरण हेकण लहर ।
रीझतां दियौ लंका जिसौ राज ॥
सर धनंख धरण कर दहण दैतां सधर ।
दुख नरक त्रास हण जनां जगदीस ॥
हरख रिण इंद्रतण नास कीधौ हठी ।
अरकतण कियौ केकंध गढ ईस ॥
तिकां सिर दया रुख होय हरि तौ तणी ।
किणी दिन न लागै जिकां आतंक ॥
घणाघण छटा तन क्रंत धरियां घणी ।
सह जनां संकट हरण धणी निरसंक ॥
चरण असरण सरण कहै आंणणचतुर ।
अहोनिस संत जण करण आणंद ॥
दूणदसहाथ हण गाथ राखण दूनी ।
नाथ 'किसनेस' कौसळतणा नंद ॥ १७४

---

१७४. फरा–हाथो । धाड–वन्य । रघौराज–श्री रामचन्द्र । दत–दान । नखत्र–डर–(नखत्र–भं+डर–भीसण–भभीसण)–विभीषण । जिसौ–जैसा । दहण–नाश । सधर–दृढ । त्रास–भय, आतक । जना–भक्तो । हरख–हर्ष । रिण–युद्ध । इंद्रतण (इन्द्रतनय)–बालि वानर । कीधौ–किया । हठी–हठ करने वाला, जिद्दी । अरकतण (अर्कतनय)–सुग्रीव । कियौ–किया । केकध–किष्किंधा । ईस–राजा । तिका–उन, जिन । रुख–इच्छा । तौ तणी–तेरी । किणी–किसी । आतक–डर, भय । घणाघण–बादल । छटा–कांति, दीप्ति, बिजली । क्रंत–कांति, दीप्ति । धरिया–धारण किये हुए । घणी–बहुत । धणी–स्वामी । निरसक–निशंक, निर्भय । आणणचतुर (चतुरानन)–ब्रह्मा । दूणदसहाथ–रावण । हण–मार कर । गाथ–कीर्ति, यश । दुनी–दुनिया, संसार । नंद–पुत्र ।

अथ गीत विडकठ तथा वीरकठ लछण

दूहा

धुर तुक मत चौवीस धर, वळ दूजी अकवीस ।
ती चौवीसह चतुरथी, कळ अकवीस कवीस ॥ १७५

दख यम मता चव दूहां, अंत लघू तुक अेक ।
सोळ चवद अखिर सुक्रम, कह विडकंठ विमेक ॥ १७६

अरथ

पै'ली तुक मात्रा चौवीस होय । दूजी तुक मात्रा अकवीस होय । तीजी तुक मात्रा चौवीस होय । चौथी तुक मात्रा अकवीस होय । यण क्रमसू च्यार ही दूहां मात्रा होय । अत तुकरै अेक लघु होय । इण लेखे तौ विडकठ गीत मात्रा छद छै नै पै'ली तुक आखर सोळै । दूजी तुक आखर चवदै । तीजी तुक आखर सोळै अर चौथी तुक आखर चवदै होय । यौ क्रम च्यार ही दवाळा होय । आखर गिणतीके लेखे विडकठ वरणछद छै । इण प्रकार विडकठ गीत कहीजै । गणाकौ क्रम गीतकौ तुकासू देख लीज्यौ । लछणका दूहा घणा होय जिणसू न कह्या छै । कोई इण गीतरौ नाम वीरकठ पिण कहै छै ।

अथ गीत विडकठ तथा वीरकठ उदाहरण

गीत

जै नरेस राघवेस आसुरेस जुधां जेस ।
के कवेस देस देस कीरती कहंत ॥
स्रीधराज राख लाज कीध काज संत साज ।
हेल सिध रूप इंद विरदां वहंत ॥

---

१७५ वळ–फिर । अकवीस–इक्कीस । ती–तीसरी । चतुरथी (चतुर्थी)–चौथी । कळ–मात्रा । कवीस–महाकवि, कवि ।

१७६ दख–कह । यम–ऐसे । चव–चार । सोळ–सोलह । चवद–चौदह । अखिर–अक्षर । विमेक–विवेक । यौ–यह ।

१७७ जै–जय । नरेस–राजा । राघवेस–श्री रामचन्द्र भगवान । आसुरेस–राक्षस, रावण । के–कई । कवेस (कवीस)–महाकवि । कीरती (कीर्ति)–यश । कहत–कहते है । स्रीधराज–श्री विष्णु, श्री रामचन्द्र । कीध–किया । हेल–लहर । सिध–समुद्र । इद–इन्द्र । बिरदा–विरुदो । वहत–धारण करते हैं ।

साज पांण चाप बांण खळां खांण घमंसांण ।
सुरांरांण भुजांपांण जै कियौ असंक ॥
ताप खाय दितांराय बंद आय पाय तास ।
लखै रंक ही अवंक मेट दीध लंक ॥
ओप अंग स्यांम रंगते सुचंग जै अनं ।
पीतरंग नी सारंग भंग कौड़ पाप ॥
सूरवीर जनां भीर गज्जगीर पै सधीर ।
जळै पाप अणमाप जेण नांम जाप ॥
दुनी पाळ इंद्र ढाल बिरदाळ जै दयाळ ।
गुणी साथ सांमराथ रटै कीत गाथ ॥
नांम जेस करे खेस पढै सेस 'किसनेस' ।
निराधार ज्यां अधार निमौ औधनाथ ॥ १७७

अथ गीत अट्ठा लछण

दूहौ

छंद अरध नाराजरी, चौ तुक दूहां सचीत ।
लघु गुरु क्रम तुक बरण अठ, गिण तिण अट्ठौ गीत ॥ १७८

अरथ

वरण छ्द छै अठौ गीत । जिणमे अरधनाराच छ्दरी तुक च्यारसू अेक दूहौ होय। पै'ली लघु पछै गुरु, इण क्रमसू तुक अेक प्रत आखर आठ होय। जिणरै च्यार ही तुकारी तुकात अेक होय। सावभडौ होय, जिणनै अट्ठौ गीत कहीजै।

---

१७७ साज–धारण कर सज कर। पांण–हाथ। चाप–धनुष। खळा–राक्षसो। खाण–नाश कर नाश करनेको, नाश करने वाला। घमंसाण–युद्ध। सुराराण–इन्द्र। भुजापाण–भुजाके प्रभावसे। जे–जिस। असक–निर्भय। ताप–भय, आतक। दिताराय–दैत्यराज। पाय–चरण। तास–उसके। दीघ–दी, दिया। पीतरग–पीला रग। जना–भक्तो। भीर–मदद, सहायता। गज्जगीर–युद्ध। पै–चरण। सधीर–धैर्य-युक्त, अटल। अणमाप–अपार, असीम। जेण–जिम। दुनी–ससार। पाळ–पालक। ढाल–रक्षक। बिरदाळ–विरुदधारी। गुणी–कवि। साथ–समूह। सांमराथ–समर्थ। औधनाथ–श्रीरामचन्द्र भगवान।

१७८ चौ–चार।

अथ गीत अट्ठी वरण छंद उदाहरण

गीत

दखै 'किसन्नदास' रे, तवूं विरूद तास रे ।
सदा वसां हुलास रे, अभंग रांम आस रे ॥
सुकीरती समाज रे, प्रसिद्ध सिंध पाज रे ।
जनां निबाह लाज रे, रहूं अधार राज रे ॥
पटैत रूप पांणरा, खळां भराथ खांणरा ।
सुखी रहूं सुजांणरा, भरोस वंस भांणरा ॥
प्रसन्न दास प्रीतरा, बियार अत्थबीतरा ।
जुधां दयंत जीतरा, सरंम नाथसीतरा ॥ १७९

अथ गीत दूणौ अट्ठौ वरण छंद लछण

दूहौ

छंद व्रधनाराचरी, चौ तुक हेक दवाळ ।
वरण छंद सौ गीत वद, दूणौ अठौ दिखाळ ॥ १८०

अरथ

व्रधनाराचरी च्यार तुकारौ अेक दवाळौ होय सौ सावझड़ौ गीत दूणौ अठ्ठौ कहावै । लघु गुरु ईं क्रमसू तुक अेक प्रत अखिर सोळह होय । इण प्रकार सोळै ही तुका होय सौ दूणौ अट्ठौ गीत तुकत गुरु वरण छंद छै ।

अथ गीत दूणौ अट्ठौ सावझड़ौ उदाहरण

गीत

विभाड़ पंचदूणमाथ आथ देण वेस रे ।
मझार ध्यांन कंज सौ वसै रदा महेसरे ॥

---

१७९ दखै—कहता है । तवूं—स्तुति करता हूँ, वर्णन करता हूँ । तास—तेरे । हुलास—आनन्द, हर्ष । अभग—नही भागने वाला, वीर । आसरे—आश्रय मे । सिंध—समुद्र । पाज—सेतु, पुल । निबाह—निभाने वाला । राजरे—श्रीमानके, आपके । पटैत—वीर, योद्धा । पाणरा—शक्तिका । भराथ—युद्ध । खाणरा—ध्वश करने वाला, नाश करने वाला । भरोस—विश्वास, भरोसा । भाण—सूर्य । दयत—देने वाला अथवा दैत्य । नाथसीतरा—सीतानाथके ।

१८० दवाळ—गीत छदके चार चरणोका समूह । दिखाळ—दिखला दे, दिखला ।

१८१ विभाड—ध्वश कर, सहार कर । पचदूणमाथ—रावण । आथ—धन, द्रव्य । मझार—मध्य । कज—ब्रह्मा । रदा—हृदय । महेसरे—महादेवके ।

सदा नमंत ओधराय पाय धू सुरेस रे ।
वदां नरेस आंन कूण जोड़ राघवेस रे ॥
निबाह सीतनाथ वाह संतचा नेहड़ा ।
अमोघ बांण चाप पांण वांण जे अछेहड़ा ॥
जुधां निपात सांमराथ लंकनाथ जेहड़ा ।
कहां नरिंद दासरथ्थनंद जोट केहड़ा ॥
अपार तेज अंगधार धार तेज आकती ।
कपै अमाप पाप ताप नांम जाप कांमती ॥
जुधां जयंत सेवमें रहै अनंत साजती ।
भणा किसौ समांन आंन कौसळेस भूपती ॥
महामदंध आसुरां सुरंद चाड मारणा ।
त्रिलोकनाथ गोह ग्राह ग्रीध आद तारणा ॥
'किसन्न' पात व्है दयाळ पाळ सिध कारणा ।
धनौ नरेस राघवेस चीत नीत धारणा ॥ १८१

अथ भाण गीत मात्रा वरण प्रमाण लछण

दूहा

धुर बीजी मत बार धर, वद तीजी बावीस ।
बारह चौथी पंचमी, वळ छठी बावीस ॥ १८२

---

१८१ ओधराय–श्री रामचन्द्र भगवान । पाय–चरण । धू–शिर, ध्रुव । सुरेस–इन्द्र । वदां–कहे । नरेस–राजा । आन–अन्य । कूण–कौन । जोड–बराबर, समान । राघवेस–श्री रामचन्द्र भगवान । नेहडा–स्नेह । अमोघ–नही चूकने वाला । अव्यर्थ, अचूक । निपात–गिराना । सामराथ–समर्थ । लकनाथ–रावण । जेहडा–जैसा । नरिंद–राजा । दासरथ्थ–राजा दशरथ । नद–पुत्र । जोट–जोडी । केहडा–कैसा । कपै–काटते है । अमाप–अपार । ताप–आतक, भय । जयत–जीतना । सेवमें–सेवामे । अनत–लक्ष्मण । जती–जितेन्द्रिय, यती । किसौ–कौनसा । आन–अन्य । आसुरा–राक्षसो । सुरद–इन्द्र । चाड–पुकार । मारणा–मारने वाला । गोह–गुह नामक निषाधराज । आद–आदि । तारणा–तारने वाला । पात–कवि । पाळ–रक्षा । सिध–सिंधुर, गज । कारणा–कारण, करने वाला । धनौ–धन्य । चीत–नित्त । नीत–नीति । धारणा–धारण करने वाला ।

१८२. धुर–प्रथम । बीजी–दूसरी । मत–मात्रा । बार–बारह । वद–कह । वळ–फिर ।

पहली दूजीसूं मिळै, तीजी छठी समेळ ।
मिळै चवथ्थी पंचमी, भल तुकंत लघु भेळ ॥ १८३
आठ वरण धुर दूसरी, तीजी पनर तुकंत ।
पुण अठ चौथी पंचमी, छठी पनर छजंत ॥ १८४
विध इण मत्ता वरणरौ, परगट जांण प्रमांण ।
भांण-गीत जिण नांम भल, भण जस रघुकुळ भांण ॥ १८५

अरथ

पै'ली तुक मात्रा बारै । दूजी तुक मात्रा बारै । तीजी तुक मात्रा बावीस । चौथी तुक मात्रा बारै । पाचमी तुक मात्रा बारै, । छठी तुक मात्रा बावीस होय । तुकांत लघु होय । पै'ली दूजी तुक मिळै । तीजी छठी तुक मिळै । चौथी पाचमी तुक मिळै अथवा च्यार तुक कीजै तौ पैली तुक मात्रा चौबीस । तुक दूजी मात्रा बावीस । तुक तीजी मात्रा चौबीस । तुक चौथी मात्रा बावीस । यूं तौ भांण गीत मात्रा छंद होय । अखर गिणती कीजै तौ तुक पै'ली दूजीरा आखर आठ होय । तीजी छठीरा आखर पनरै पनरै होय । चौथी पाचमीरा आखर आठ होय तथा च्यार तुका कीजै तौ पै'ली तीजी तुकरा आखर सोळै होय । दूजी चौथी तुकरा आखर पनरै पनरै होय । तुकांत लघु । ईं तरै भाण गीत वरण छंद होय ।

अथ भाण गीत उदाहरण

गीत

नरेस रांम नंमळा, उरां सभाव ऊजळा ।
अरेस भंज आदवां, करेस देव काज ॥
सपांणचाप सायकं, घड़ा अरेस घायकं ।
चवंत सिद्ध चारणां, प्रसिद्ध सिंघ पाज ॥

१८३ चवथ्थी—चतुर्थ, चौथी । भल—ठीक ।
१८४ पुण—कह । अठ—आठ । पनर—पनरह । छजत—शोभा देता है ।
१८५ विध—प्रकार, तरह । मत्ता—मात्रिक । भण—कह । बारै—बारह । यूं—ऐसे । अखर—अक्षर । ईं—इस । तरै—तरह ।
१८६ नंमळा—निर्मल । उरा—उर, हृदय । ऊजळा—उज्ज्वल । अरेस—शत्रु । सपांणचाप—हाथमे धनुष सहित । सायक—तीर । घडा—सेना । घायक— सहार करने वाला । चवत—कहते हैं । सिंघ—समुद्र ।

गरब सत्रां गंजणा, रमा सुचित रंजणा ।
भुजां सजोर भंजणा, चढाय सिंभ चाप ॥
गळे दुजेस गावरा, सधीर जे सभावरा ।
अभंग हेम अद्रसा, अडोळ नंग आप ॥
अनेक संत आसरे, वसै सहीव वासरे ।
प्रथीप रांम पोखणा, अमी सुदीठ अंग ॥
सधीर भ्रात सेससा, मनां रटै महेससा ।
खळां अनेक खेसणा, जपां अपीठ जंग ॥
दितेस सेन दाहणा, रघूस क्रीत राहणा ।
करी ऊधार कारणा, हरी विलंद हाथ ॥
नमे सुरेससा नगां, सधार दीन सेवगां ।
'किसन' पातसूं कहै, नमौ अनाथ नाथ ॥ १८६

अथ गीत दुमेळ लछण

दूहौ

तुक धुर तीजी सोळ मत, दोय मेळ दाखंत ।
दूजी चौथी मत दस, अख दुमेळ लघु अंत ॥ १८७

अरथ

धुर कहता पैंली तुक मात्रा सोळै होय । पैंली दूजी तुकमे दोय मेळ आवै जीसू गीतरौ नाम दुमेळ कहावै । दूजी तुक मात्रा दस होय । चौथी तुक मात्रा दस होय । दूजी चौथी तुकरै तुकात लघु होय । जिण गीतकौ नाम दुमेळ कहावै ।

---

१८६ गरव–गर्व, अभिमान । गजणा–मिटाने वाला । रमा–लक्ष्मी । रजणा–प्रसन्न करने वाला । सजोर–शक्तिशाली । भजणा–नाश करने वाला । सिभ–शभु, शिव । दुजेस–द्विजेश, महर्षि, परशुराम । सभावरा–स्वभावका । अभग–दृढ, अटल । हेम अद्रसा–हिमालय पर्वतके समान । नग–पैर, चरण । प्रथीप–राजा । पोखणा–पोषण करने वाला । अमी–अमृत । सुदीठ–सुदृष्टि । खेसणा–नाश करने वाला । अपीठ जग–वह जो युद्धमे अपनी पीठ शत्रुको न दिखाता हो । दितेस–असुरेश, रावणादि । दाहणा–ध्वश करने वाला । रघूस–रघुवश । क्रीत–कीर्ति । राहणा–रखने वाला । नगा–पैरो । सधार–रक्षक ।

अथ गीत दुमेळ उदाहरण

गीत

भूपाळां भांमी नेक नांमी, सेव पाय सुरेस ।
सुज दया सिंधू दीनबंधू, अखै कीत अहेस ॥
बटपंच बास सत्रनासे, राज कज सुरराज ।
खर खेत खंडे थूर थंडे, सूर कुळ सिरताज ॥
भुजवीस भंजे गाव गंजे, स्रोण भुंजे सार ।
सरणा सधारे बिरदधारे, तोय पाथर तार ॥
निरबळां नेकां कीध केकां, साहि हाथ सुनाथ ।
गुण 'किसन' गावै प्रसिध पावै, अमर ईजत आथ ॥ १८८

अथ गीत उवग सावझड़ौ लछण

दूहौ

सगण सोळ मत प्रथम तुक, दो गुर अंत दिपंत ।
आंन च वद अख, उभै वीपसा अंत ॥ १८९

अरथ

पै'ली तुकरै आद तौ सगण नै सोळै मात्रा होय । और साराई गीतरी पनरै ही तुका मात्रा चवदै होय । तुकात दोय गुरु अखिर होय जिण सावझड़ा गीतनै उमग कहीजै तथा कोई कवि उवग पण कहै छै । चौथी तुकमे दोय वीपसा आवै छै ।

---

१८८ भामी–न्योछावर, वलैया । सेव–सेवा करता है । पाय–चरण । सुरेस–इन्द्र । सिंधू–समुद्र । अखै–कहता है, वर्णन करता है । अहेस–शेषनाग । बटपच–पचवटी । सत्र–शत्रु । नासै–नाश किये । कज–लिये । सुरराज–इन्द्र । भुजवीस–रावण । भजे–नाश किया । गाव–गर्व । गजे–मिटाया, नाश किया । स्रोण (शोणित)–खून, रक्त । भुंजे–भक्षण किया । सार–तलवार । सरणा–शरणागत । सधारे–रक्षा की । तोय–पानी । पाथर–पत्थर । कीध–किया किये । केका–कई । गुण–यश, कीर्ति । प्रसिध–कीर्ति, प्रसिद्धि । आथ–धन, दौलत ।

अथ गीत उवग सावझड़ौ उदाहरण

गीत

जगनाथ अंतरतणौ जांमी, गाहणौ खळ गुरड़ गांमी।
साच वायक सिया सांमी, भुजां भांमी भुजां भांमी॥
थूरण रिण दैतां थोका, लाज रक्खण संत लोका।
रांम रिण दसमाथ रोका, करां भौका करां भौका॥
देण सेवग लंक दाता, घल्ल व्याध कवंध घाता।
बिसू रखण कीत वातां, हद्द हातां हद्द हातां॥
मीढ ना अज इस माधौ, थाह दिल नावै अथाघौ।
देव दीनां कसट दाधौ, रंग राघौ रंग राघौ॥ १९०

अथ गीत अरधगोखौ सावझड़ौ वरण छंद लछण

दूहौ

रगण जगण गुरु लघु हुवै, जिणरै तीन तुकंत।
होय वीपसा चवथ तुक, अरध गोख आखंत॥ १९१

अरथ

जिण गीतरै पै'ली दूजी तीजी तीना तुका तौ पै'ली रगण गण। पछै जगण गण। पछै गुरु लघु। ईं क्रमसू आठ अखर तीन तुका होय। चौथी तुक पै'ली रगण। पछै जगण छ अखिर होय। ईं क्रमसू च्यार तुका होय सौ अरधगोख वरण छंद सावझड़ौ कहीजै नै जीके ईं क्रमसू आठ तुका होय जिणनै व्रधगोख कहीजै, सौ व्रधगोख तौ आगै कह्यौ ईज छै सौ देख लीज्यौ।

---

१९० अतरतणौ—भीतर का, अन्दर का। जामी—पिता। गाहणौ—नष्ट करने वाला। खळ—राक्षस। वायक—वाक्य, वचन। सिया—सीता। भामी—बलैया, न्यौछावर। थूरण नाश करना, ध्वंश करना। दैता—दैत्यो। थोका—समूह। दसमाथ—रावण। भौका—धन्य-धन्य। घाता—नाश। बिसू—पृथ्वी, ससार। कीत—कीर्ति। मीढ—समान, सदृश्य। अज—ब्रह्मा। ईस—शिव। माधौ—माधव। थाह—गहराई, गभीरता। अथाघौ—अपार, असीम। दाधौ—जलाने वाला। रग—धन्य-धन्य। राघौ—श्री रामचन्द्र।

अथ गीत अरधगोखौ सावझडौ उदाहरण

गीत

बंद पाय राघवेस, जोध मेघनाद जेस ।
बंध वांमणी विसेस, सेस सेस सेस ॥
पाड़िया जुधां बिपच्छ, रांम पाय सेव रच्छ ।
ओर मेर रूप अच्छ, लच्छ लच्छ लच्छ ॥
सूर धीर तास संत, मांण पांण तेज मंत ।
दाहणौं जुधां दयंत, नंत नंत नंत ॥
चीत प्रीत कीत चाह, दैत राज सेस दाह ।
लेण रांम सेव लाह, वाह वाह वाह ॥ १९२

अथ गीत धमळ तथा रिणधमळ, सम तथा असम चरण लछण

दूहा

धुर तुक मत छाईस धर, छै बीजी छाईस ।
तीस मत तुक तीसरी, चौथी मात्र चौवीस ॥ १९३
अवर दवाळा अवर विध, नहीं मत्त निरबाह ।
ईसर बारठ अक्खियौ, असम चरण यणराह ॥ १९४

अथ धमळ गीत अन्य विध लछण

दूहा

वदिया लछण अवर विध, खट तुक होय विसक्ख ।
चवद प्रथम दूजी चवद, अठाईस त्रिय अक्ख ॥ १९५

---

१९२ बद–नमस्कार कर । पाय–चरण । राघवेस–श्री रामचन्द्र । जोध–योद्धा । मेघनाद–इन्द्रजीत । जेस–जैसा । प।डिया–मारे । बिपच्छ–विपक्षी, शत्रु । दाहणौ–मारने वाला, ध्वश करने वाला । दयत–दैत्य । सेव–सेवा । लाह–लाभ । वाह-वाह–धन्य धन्य ।

१९३ धुर–प्रथम । तुक–पद्यका चरण । मत–मात्रा । छाईस–छब्बीस । छै–है । बीजी–दूसरी । मझ–मध्य, मे । दवाळा–गीत छदके चार चरणका समूह ।

१९४ अवर–अन्य । निरवाह–निर्वाह । अक्खियौ–कहा । यणराह–इसके ।

१९५ वदिया–कहे । लछण–लक्षण । विसक्ख–विशेष । चवद–चौदह । दूजी–दूसरी । त्रिय–तीसरा । अक्ख–कह ।

चवदह चौथी पांचमी, छट्ठी वीस विचार।
असम चरण तौपण अवस, वद यम धमळ विचार ॥ १९६
त्रकुटबंधरी आद तुक, पांच देख परमांण।
उभै तुकां मिळ अंतरी, जुगत धमळ यम जांण ॥ १९७

अरथ

धमळ गीतकै मात्रा वरण प्रमाण नही जिणसू असम चरण छै। पै'ली तुक मात्रा छाईस होय। दूजी तुक मात्र छाईस होय। तीजी तुक मात्रा तीस होय। चौथी तुक मात्रा चौबीस होय। बाकीरा और दूहा ईं प्रकार तथा और ही तरै मात्रा होय पण सम मात्राकौ निरवाह नही। आगै बारठजी स्री ईसरदासजी क्रत गीत धमळ स्री परमेसरमे छै सौ पण इण तरै छै जीनै देख नै मै कह्यौ छै तथा और लछण करनै मात्राकौ निरूपण करा तौ पण असम चरण छै। और विध मात्रा प्रमाण करा छा। छ तुक करनै सौ कवेसर देख विचार लीज्यौ।

गीत रणधमळकै छ तुका हुवै छै। पै'ली तुक मात्रा चवदै। दूजी तुक मात्रा चवदै। तीजी तुक मात्रा अठावीस। चौथी तुक मात्रा चवदै। पाचमी तुक मात्रा चवदै। छठी तुक मात्रा चौबीस। अत लघु तौ पिण रणधमळ असम चरण छद छै और सुगम लछण कहा छा। गीत त्रकुटबधरी पाच तुका तौ आदरी नै दोय तुका दूहारै अतरी, अेक कठरी नै अेक दूजी या दोयारी अेक तुक करणी। या छ ही तुकानै भेळी कर पढजै, सौही धमळ जाणणौ। सोई ग्रथमे पण त्रकुटबध कह्यौ छै सौ देख लीज्यौ। इति रणधमळ गीत लछण निरूपण समापत। इण गीतरौ नाम धमळ कह्यौ छै।

अथ गीत धमळ उदाहरण

गीत

सांमाथ तूं सुरनाथ तूं, रिमघात तूं रघुनाथ।
रघूनाथ तूं दसमाथ रांमण, भांजवा भाराथ ॥

---

१९६ तौ पण–तो भी। अवस–अवश्य। वद–कह। यम–इस प्रकार। आद (आदि)–प्रथम। उभै–दो, दोनो। जुगत–युक्ति। पण–परन्तु। पण–भी। निरूपण–विचार, निर्णय। कवेसर–कवीश्वर।

१९७ अठावीस–अठाईस। आदरी–आदि की। कठ–अनुप्रास। या–इन। दोयारी–दोनोंकी। भेळी–म.ध।

१९८ सामाथ–समर्थ। सुरनाथ–देवताओंका स्वामी। रिमघात–शत्रुओंका विध्वंशक या महारक। दसमाथ–दस शिर। भांजवा–नाश करनेको। भाराथ–युद्ध।

अणबीह तूं नरसीह ओपै, लीह संतां नकूं लोपै ।
ईस वात अघात हाथां, व्रवण रंकां आथ ॥
लंकाळ सेवग तूझ लांगौ, भ्रात लिछमण खळां-भांगौ ।
पती-कुळ स्वारथो पांगौ, करण असह निकंद ॥
जांनकी नायक जंगमें, रोसेल बीरत रंगमें ।
बिरदैत जस रथ धमळ बंका, निमौ दसरथनंद ॥
जुध दुसह दससिर जारणा, मह कूंभसा खळ मारणा ।
धनुबांण धारण पांण धजबंध, जबर जोम जिहाज ॥
जटजूट सिर बन पट झलै, अंग अघट रजवट ऊझळै ।
अणभंग जैतां जंग आसुर, रंग कोसळराज ॥
रख पय भभीखण रंकरा, लहरे'क आपण लंकरा ।
काकुसथ खळदळ भसम कर, साधार-सरण सभेव ॥
निज बिरद नाथ अनाथरा, सुज धरण भुजां समाथरा ।
किव 'किसन' बेग सुनाथ कीजै, दीनबंधव देव ॥१९८

अथ गीत त्रिभंगी लछण

दूहौ

धुर अठार बी बार धर, ती सोळह चव बार ।
बि गुरु अंत सौ पूणियौं, सोय त्रिभंगी सार ॥ १९९

---

१९८ अणबीह–निर्भय, निडर । लीह–रेखा, मर्यादा । नकू–नही । लोपै–उलघन करता हैं । व्रवण–देने को, देने वाला । रंका–गरीबो । आथ–धन । लंकाळ–वीर, श्री रामचन्द्र भगवान । तूझ–तेरा । लांगौ–हनुमान । लिछमण–लक्ष्मण । खळा-भांगौ–राक्षसोका नाश करने वाला । पांगौ–पगु । असह–शत्रु । निकंद–नाश । रोसेल–जोशीला । बीरत–वीरत्व । बिरदैत–विरुद धारणकरने वाला । पाण (पाणि)–हाथ । धजबंध–अपनी ध्वजा या झंडा रखने वाला वीर । जबर–जबरदस्त । जोम–जोश । जिहाज–जहाज । जटजूट–जटाजूट । अघट–अपार । रजवट–क्षत्रियत्व । ऊझळै–उमडता है । आपण–देने वाला । साधार-सरण–शरणमे आए हुएकी रक्षा करने वाला । किव–कवि । बेग–शीघ्र ।

१९९ बी–दूसरी । बार–बारह । ती–तीन, तीसरी । चव–चार, चौथी । बि–दूसरी । सोय–वह, वही ।

अरथ

त्रिभगी गीतरै पै'ली तुक मात्रा अठारै। दूजी तुक मात्रा बारै। तीजी तुक मात्रा सोळै । चौथी तुक मात्रा बारै होय । पछै सारा ही दूहा पै'ली तुक मात्रा सोळै । दूजी तुक मात्रा बारै । ई प्रमाणै होय सौ गीत त्रिभगी कहावै नै सोई पूणियौ साणोर कहावै । नाम दोय छै । लछण दोय नही जीसू पूणियौ साणोर आगै पहली कह दीधौ छै जीसू नही कह्यौ छै । काम पडै तौ सात साणोरा माय देख लीज्यौ ।

अथ गीत सीहलोर लछण

दूहौ

सीहलोर पिण पूणियौ, सुध लछणां सुभाय ।
अठ दस बारह सोळ अख, बार बि गुरु पछ पाय ॥ २००

अरथ

सीहलोर पिण पूणियौ साणोर छै । इणमे कोई भेद नही । पै'लौ तुक मात्रा अठारै । दूजी तुक मात्रा बारै। तीजी तुक मात्रा सोळै । चौथी तुक मात्रा बारै । तुकात दोय गुरु । पछला दूहा पै'ली तुक मात्रा सोळै । दूजी तुक मात्रा बारै । ई क्रम होय । त्रिभगी सीहलोर अे दोई पूणिया गीत छै। नामकौ भेद, लछण भेद नही जीसू आगै पूणियौ कह दीधौ छै सौ फेर नही कह्यौ । इति सीहलोर लछण निरूपण ।

अथ गीत सारसगीत लछण

दूहौ

गीत बडा सांणोर गण, सकौ सार संगीत ।
तेवीसह अट्ठार मत, वीस अठार प्रवीत ॥ २०१

अरथ

सार सगीत गीतनै वडौ साणोर गीत एक छै । नाम दोय छै । लछण एक । पै'ली तुक मात्रा तेवीस । दूजी तुक मात्रा अठारै । तीजी तुक मात्रा बीस । चौथी

१९९ अठारै–अठारह । बारै–बारह । ई–इस । दीधौ–दिया । जीसू–जिससे । कह्यौ–कहा ।
२०० पिण–भी, परन्तु । अख–कह । बार–बारह । बि–दो, दूसरी । पछ–पश्चात, बाद । पाछला–पश्चातका, बादका । दीधौ–दिया ।
२०१. सकौ–वही, वह । अट्ठार–अठारह । मत–मात्रा ।

तुक मात्रा अठारै अंत लघु। सौ बडी साणोर सोई सारसंगीत कहावै। सौ आदमे सुध सांणोर सतसर कह्यौ छे सौ देख लीज्यौ। इति गीत सारसगीत निरूपण।

अथ गीत सीहवग साणोर लछण

दूहौ

धुर अठार चवदह धरौ, सोळ चवद गुरु अंत।
वेखह सोई सीहवगौ, किव सांणोर कहंत॥ २०२

अरथ

जिण गीतरै पै'ली तुक मात्रा अठारै होवै। दूजी तुक मात्रा चवदै होवै। तीजो तुक मात्रा सोळै होवै। चौथी तुक मात्रा चवदै आवै सौ सोहणौ साणौर, सोई सीहवग कहीजै। नांम भेद छै, लछण भेद नही। पै'ली साणोर कह्यौ छै सो देख लीज्यौ। इति सीहवग गीत निरूपण।

अथ गीत अहिगन साणोर लछण

दूहौ

धुर अठार मत्त सुधर, पनर सोळ पनरेण।
अंत लघु सौ अहिगन, जपै वेलियौ जेण॥ २०३

अरथ

गीत अहिगन नै वेलियौ साणोर अेक छै। नाममे भेद छै, लछणमे भेद नहीं। पै'ली तुक मात्रा उगणीस तथा अठारै होय। दूजी तुक मात्रा पनरै होय। तीजी तुक मात्रा सोळै होय। चौथी तुक मात्रा पनरै होय। तुकांत लघु होय। पछै मात्रा सोळै, पनरै होय। ईं क्रमसू होय सौ वेलियौ साणोर, सोई अहिगन साणोर, पै'ली आगे साणोरामे कह्यौ छै सो देख लीज्यौ। इति अहिगन गीत निरूपण।

अथ गीत रेणखरौ लछण

दूहौ

रटां गीत रेणखरौ, सौ जांणजै प्रहास।
तिल भर भेदन तेणमें, सुध लछण सर रास॥ २०४

---

२०२ सोळ—सोलह। चवद—चौदह। वेखह—देख। कहत—कहते हैं। सोई—वही।

२०३ पनर—पनरह। पनरेण—पनरहसे। जेण—जिसको। सोळै—सोलह। पछै—पश्चात, बादमे। सोई—वही।

२०४ तेणमें—उसमे। अगाडी—पहिले। ज्या—जिन। हर—अर, और। सोई—वह, वही।

अरथ

रेणखरी गीत नै प्रहाससाणोर दोन्यू गीत अेक छै। नाम दोय छै। लछण एक छै। पै'ली तुक मात्रा तेवीस। दूजी तुक मात्रा सतरै। तीजी तुक मात्रा बीस। चौथी तुक मात्रा सतरै होय। अंत दोय गुरु पछै बीस सतरै इण क्रमसू मात्रा होवै छै। आगै साणोरमे प्रहास कह्यौ छै,सो देख लीज्यौ। इति रेणखरा गीत निरूपण।

अथ गीत मुडियल सावझड़ौ लछण

दूहौ

मुड़ियल सावझड़ौ हुवै, पालवणीस दुमेळ।
सावझड़ौ जयवंत सौ, सुध लछणां समेळ ॥ २०५

अरथ

मुडियल गीत सावझडौ दुमेळ तथा पालवणी तथा जयवत नाम सावझडौ। अगाडी पै'ली प्रथम तीन सावझडा कह्या ज्या मध्ये जयवंत सावझडौ जिणनै दुमेळ कर पढणौ। सोई पालवणी, हर सोई मुडियल कहावं। मात्रा प्रमाण। पै'ली तुक मात्रा उगणीस तथा मात्रा अठारै होय और पनरै ही तुका मात्रा सोळै सोळै'री होय। तुकात दोय गुरु अखिर आवै सौ मुडंल (मुडियल) सावझडौ तथा पालवणी दुमेळ जयवत अेक छै। आगै जयवत पालवणी कह्या छै सौ काम पड़ै तौ देख लीज्यौ। इति मुडियल गीत निरूपण।

अथ गीत प्रौढ साणोर निरूपण लछण

दूहौ

सोरठिया हर प्रोढ मझ, भेद रती नह भाळ।
सोरठियौ यण ग्रंथ मझ, दीधौ प्रथम दिखाळ ॥ २०६

अरथ

प्रोढ साणोर हर सोरठियौ साणोर अेक छै। यारा लछण अेक छै। रती भेद नही। नाम दोय छै। मात्रा प्रमाण पै'ली तुक मात्रा उगणीस तथा सोळै। बीजी तुक मात्रा दस। तीजी तुक मात्रा सोळै होय। चौथी तुक मात्रा दस होय। तुकात लघु होय। पछै मात्रा इग्यारै, दस, सोळै दस ई क्रमसू होय। आगै इण ग्रथमे कह्यौ छै,सौ देख लीज्यौ। इति गीत प्रोढ निरूपण।

---

२०६ हर–अर, और। मझ–मध्य। भेद–फरक। नह–नही। भाळ–देख। यण–इस। दीधौ–दिया। दिखाळ–दिखलाई। यारा–इनके। पछै–बादमे। ई–इस।

अथ गीत दीपक वेलियौ साणोर लछण

दूहा

दीपक सोही वेलियौ, भेद अधिक तुक हेक ।
तीजी तुक व्है बेवड़ी, वद तुक पंच विवेक ॥ २०७
धुर उगणीस अठार धर, पनरह दुती पढंत ।
त्रती चवथी सोळ मत, पंच पनर पुणंत ॥ २०८

अरथ

गीत दीपक नै गीत वेलियौ साणोर अेक हौवै छै। यणामे इतरौ भेद छै। वेलियासाणोररै तुक च्यार होवै छै। पैं'ली तुक मात्रा अठारै तथा उगणीस होवै। दूजी तुक मात्रा पनरै होवै। तीजी तुक मात्रा सोळै होवै। चौथी तुक मात्रा सोळै होवै। पाचमी तुक मात्रा पनरै होवै। इण भात दीपकरै पाच तुका दूहा एक प्रत होवै। दूजा दूहा मात्रा सोळै पनरै सोळै सोळै पनरै ईं प्रमाण होय। तुकात लघु होय सौ गीत दीपक। वेलियारै च्यार तुक यौई फरक। इति दीपक लछण।

अथ गीत दीपक उदाहरण

गीत

सुंदर तन स्यांम स्यांम वारद सम, कौटक भा रद कांम सकांम ।
नायक सिया दासरथ नंदण, विमळ पाय सुरराजा वंदण ।
रीझवजै महराजा रांम ॥
कमर निखंग पांण धनु सायक, सुखदायक संतां साधार ।
कीधां कहर माथदस कापे, अेकण लहर लंक गढ आपे ।
आठ पहर जिण नांम उचार ॥

---

२०७ सोही—वही। वेवड़ी—दोहरी। वद—कह। पच—पाच।
२०८ दूती—दूसरी। पढत—पढते हैं। त्रती—तीसरी। चवथी—चौथी। पुणत—कहते हैं। पण—परन्तु। इण भात—इस प्रकार। योई—यही।
२०९ वारद—बादल। सम—समान। कौटक—करोड। भा—हुए। दासरथ—दसरथ। नदण—पुत्र। विमळ—पवित्र। पाय—चरण। सुरराजा—इन्द्र। रीझवजे—प्रसन्न कीजिए। निखग—तर्कश। पाण—हाथ। धनु—धनुष। सायक—तीर, बाण। सुखदायक—सुख देने वाला। साधार—रक्षक। कीधा—करने पर। कहर—कोप। माथदस—रावण। कापे—काट दिये, मारा। आपे—दे दिया।

ते रज पाय तरी रिख तरणी, मझ्फ वेदां बरणी अहमेण।
डहिया विरद वडा भुजडंडे, तीख करे मिथळापुर तंडे।
जटधर चाप विहंडे जेण॥
जनक सुता मनरंजण जगपत, भंजण खळ रांवण भाराथ।
सरणसधार काज जन सारण, 'किसन' अहौनिस गाव सकारण।
नूप रघुनाथ अनाथां नाथ॥२०९

अथ गीत अहिवध वरण छद लछण

दूहा

रगण सगण अंतह गुरू, तुक खट यण बिध कीन ।
यगण रगण अंतह लघु, चौथी आठम चीन ॥ २१०
अठाईस पूरब अरध, ऊतर अठाईस ।
अेम गीत अहिबंध अख, बरण छंद बरणीस ॥ २११

अरथ

अहिबध गीत बरण छद छै, मात्रा छद नही। तिणरै गण तथा तुक प्रत अखिरारी गिणती छै। दूहा अेक प्रत तुक आठ आठ होवै। तुक अेक प्रत अखर सात सात होवै। दूहा एक प्रत आखर छपन होवै। सारा गीतरा दूहा च्यार आखर दोयसौ चौबीस होवै। पै'ली तुक दूजी तोजी तुक रगण सगण अेक गुरु सवाय होवै। यूही तुक पाचमी छठी सातमी तुक रगण सगण अेक गुरु होवै। तुक चौथी अौर आठमी यगण रगण अेक लघु सवाय होवै। आठ ही तुका प्रत आखर सात सात होवै। तुक पै'ली दूजी तीजीरा तुकात मिळै। तुक चौथी तुक आठमीसू मिळै। यण प्रकार गीत अहिवध कहीजै। जू वध हुवौ थकौ साप

२०९ ते–उम। रज–धूलि। रिख–ऋषि। तरणी (तरुणी)–स्त्री। अहमेण–ब्रह्मासे। डहिया–धारण किये। तीख–विशेषता। तडे–जोशपूर्ण आवाज की। जटधर–महादेव। विहडे–नाश किया। मनरजण–मनको प्रसन्न करने वाला। जगपत (जगतपति)–ईश्वर, श्री रामचन्द्र। भजण–नाश करने वाला। खळ–राक्षस। भाराथ–युद्ध। सरणसधार–शरणमे आए हुएकी रक्षा करने वाला। काज–कार्य। जन–भक्त। सारण–सफल करने वाला। अहौनिस–रात-दिन। गाव–स्मरण कर, गुणगान कर।
२१० यण–इस। विध–प्रकार। कीन–की, रची।
२११. अख–कह। यूही–ऐसे ही।

सकडतौ चालै जू तुका ठसती सकडती चालै, जी तावै गीतरौ नाम अहिबध छै। गीत अडबडाटसू पढचौ जावै, जी तावै नामरौ यौ लछण लख्यौ छै।

अथ गीत अहिबध उदाहरण

गीत

रांम नांम रसा रे, जाप संभ जसा रे।
बोल तू म बिसा रे, पहारै कौड़ पाप ॥
सेस भ्रात सही रे, कंज जात कही रे।
दैत थाट दही रे, चहीरै बांण चाप ॥
तेण संत तराया, गाथ बेदस गाया।
लेख हाथ लगाया, दळां आसंख दाट ॥
तार बांम रखीते, सू चंदर सखीते।
पाळ दीन पखीते, कळेसां सत्र काट ॥
कोसकेस कंजारां, लीध वंस लजारां।
हांण दैत हजारां, धजारां ब्रद धार ॥
ग्राह गोह गयंदां, देख ब्याध मदंधां।
पेख ग्रीध पुलिंदां, पयोध नध पार ॥
आच साह अनेकां, कीध वार वसेकां।
मांण राख वमेकां, करे के संत कांम ॥
हेळ पाप हताजे, जमंवार जीताजे।
माह ऊंच मताजे, ॥२१२

२११ जू–जैसे। सकडतौ–सकुचित होता हुआ।
२१२. जाप–जप कर। सभ (शम्भु)–महादेव। जसा–जैसा। म–मत, नही। विसारे–भूलना। पहारै–मिटाता है। सेस–लक्ष्मण। कज जात–ब्रह्मा। दैत–दैत्य। थाट–दल, समूह। दही रे–नाश किया। गाथ–कथा। बाम–स्त्री। रखी–ऋषि। सूर–सूर्य। चद–चद्रमा। सखी ते–साक्षी दी। पाळ–पालक। पखी ते–पक्ष करने वाला। हांण–हानि। धजारा–ध्वजा, ऊंचा। गोह–गुह नामक निषादराज। गयदा–गज, हाथी। पुलिदा–एक प्राचीन पिछड़ी जाति। पयोध (पयोधि)–समुद्र।

अथ गीत अरट मात्रा छंद लछण

दूहौ

धुर अठार ग्यारह दुती, सोळ त्रती चव ग्यार ।
सोळै ग्यार क्रम अंत लघु, अरट गीत उचार ॥ २१३

अरथ

अरट गीत साणोर गीत छै पंण सात साणोर गीतासू भिन्न छै। दूजी चौथी तुक ग्यारै मात्रा, यौ भेद छै जीसू जुदौ कही दिखायौ छै। पै'ली तुक मात्रा अठारै होय। दूजी तुक मात्रा ग्यारै होय। तीजी तुक मात्रा सोळै होय। चौथी तुक मात्रा ग्यारै होय। पछै सोळै ग्यारै ईं क्रमसू पाछली तीन ही दूहा मात्रा होय। दूजी चौथी तुकरै तुकात लघु होय, जी गीतनै अरट नाम साणोर कहीजै। कोई ईनै उमख नाम गीत पिण कहै छै। त्राटकौ पण योही कहीजै, जीसू त्राटकौ पण जुदौ नही कह्यौ छै।

अथ गीत अरट साणोर उदाहरण

गीत

धन राघव हाथ अभंग धुरंधर, आथवरीस असंक ।
दीध भभीखण आस्रय देख कर, लीध बिना दत लंक ॥
बाळ महाबळ घायक भूबळ, सारंग सायक संठ ।
भ्रात कहेस किकंधपुरी भल, कीध नरेस सुकंठ ॥
संत अनाथ दस सायक, ध्रू पहळाद उधार ।
कांम उबारण आय सकारण, बारण तारण बार ॥

---

२१३ ग्यार–ग्यारह। दुती–दूसरी। सोळ–सोलह। त्रती (तृतीय)–तीसरी। चव–चौथी, चतुर्थ। पण–परन्तु। यौ–यह। जुदौ–पृथक, अलग। पछै–पश्चात। पाछली–पीछेकी। पिण–भी। पण–भी। योही–यही।

नोट—रघुनाथरूपकमे जो त्राटका गीत है वह गीत इस गीतसे भिन्न है।

२१४ आथवरीस–रुपयोका दान देने वाला। दीध–दिया। भभीखण–विभीषण। लीध–लिया, ली। दत–दान। वाळ–वालि वानर। घायक–सहारक। सारग–धनुष। सायक–तीर, वाण। सठ–मजबूत, दृढ, जबरदस्त। किकधपुरी–किष्किधापुरी। भल–ठीक। कीध–किया। नरेश–राजा। सुकठ–सुग्रीव। ध्रू–भक्त ध्रुव। पहलाद–भक्त प्रह्लाद। वारण–गज।

कोट गयंद सतौल निधे कर, तोलण हेक तराज ।
पात 'किसन' अडोल रघुपत, बोल गरीबनवाज ॥ २१४

अथ गीत अठताळौ लछण

दूहौ

ले धुरसूं तुक सोळ लग, चवद चवद मत चीत ।
अंत गुरु जस नांम अख, गण अठताळौ गीत ॥ २१५

अरथ

जिण गीतरै पै'ली तुकसू लगाय नै च्यार ही दूहारी सोळै ही तुकामे चवदै-चवदै प्रत तुक मात्रा होय । अत गुरु होय । सावझडौ होय, जिण गीतनै अठताळौ कहीजै ।

अथ गीत अठताळौ सावझडौ उदाहरण

गीत

अंग धार आरख ऊजळा, करतार चित चढती कळा ।
विसतार जस चहूंवैवळा, साधार सेवग सांवळा ॥
सिर-जोर खग दत सजणा, पह रोर आंमय पंजणा ।
भड़ जुध असंतां भंजणा, रघुराज संतां रंजणा ॥
विपळ सत सघण नवीनरा, अत गाय दुज आधीनरा ।
भुज दहण खळ जस भीनरा, दिल महण बंधव दीनरा ॥
मह सीत वर महराज रे, लख जनां राखण लाज रे ।
किव 'किसन' वसै सकाज रे, रघु चरण सरणे राज रै ॥ २१६

---

२१४ तराज–समान, तुल्य ।

२१५ सोळ–सोलह । लग–तक । चवद–चौदह । मत–मात्रा । चीत–विचार कर । अख–कह ।

२१६ आरख–चिन्ह, लक्षण । चहूवैवळा–चारो ओर । साधार–रक्षक । रोर–निर्धनता । आंमय–रोग । पजणा–मिटाने वाला । भजणा–नाश करने वाला । रजणा–प्रसन्न करने वाला । दुज (द्विज)–ब्राह्मण । महण (महार्णव)–सागर । सीत–सीता । लेख–देवता ।

अथ गीत काछौ मात्रा समचरण छंद लछण

दूहा

धुर-अठार चवदह दुती, बारह तीजी बेस ।
तीन कंठ धुरतुकतणा, मत चौमाळ मुणेस ॥ २१७

मुण बी तुक छाबीस मत, तीन कंठ तिण माह ।
पूरब अरध तुकंतरै, अंत लघु आ राह ॥ २१८

तुक तीजी अठवीस मत, बेद छबीस बिचार ।
त्रण त्रण कंठ तुकंत लघु, चौथीतणै उचार ॥ २१९

अन दूहां धुर तुकतणौ, मत चाळीस मंडांण ।
छावी बीजी चतुरथी, ती अठवीस प्रमांण ॥ २२०

अनुप्रास गुरु अंत अख, भण तुकंत लघु भाय ।
जपियां आछौ रांम जस, काछौ गीत कहाय ॥ २२१

अरथ

काछा गीतरै तुका च्यार दूहा प्रत जिणरै मात्रा प्रमाण । पै'ली तुक मात्रा चौमाळीस । कठ तीन पै'ली तुकमे होय । पहलौ कठ तौ मात्रा अठारै ऊपर होवै । दूजौ अनुप्रास मात्रा चवदै पर होवै । तीजौ अनुप्रास मात्रा बारै पर होवै । यू पै'ली तुक तीन अनुप्रास गुरुवंत होवै । मात्रा चौमाळीस होवै । तुक दूजी मात्रा छाईस होवै । अनुप्रास तीन । पै'ली कठ मात्रा नव पर । दूजौ कठ मात्रा सात पर । तीजौ कठ मात्रा दस पर । तीसरौ पूरवारध नै उतरारध दोनोही लघु अत होय । तुक तीजी मात्रा अठावीस (अठाईस) तीन कठ होय । चौथो तुक मात्रा छाईस

---

२१७ दुती—दूसरी । कठ—अनुप्रास । धुरतुकतणा—प्रथम चरणके । मत—मात्रा । **चौमाळ—**चवालीस । **मुणेस**—कह ।

२१८ **मुण**—कह । **बी**—दूसरी । **छाबीस**—छब्बीस । **तिण**—उस । **माह**—मे ।

२१९ **अठवीस**—अठाईस । **बेद**—चार, चतुर्थ । **छबीस**—छब्बीस । **त्रण**—तीन । **चौथीतणै—**चौथीके ।

२२० **अन**—अन्य । **दूहा**—गीत छदके चार चरणोके समूहका नाम । **धुरतुकतणै**—प्रथम चरणके । **मडाण**—रख । **छावी**—छब्बीस । **बीजी**—दूसरी । **ती**—तीसरी । **अठवीस—**अठाईस ।

२२१ **अख**—कह । **यू**—ऐसे । **गुरुवत**—जिसके अन्तमे गुरु वर्ण हो । **छाईस**—छब्बीस ।

तीन कंठ होय । यूही सारा गीतरी अेक तुक प्रत कठ तीन तीन गुरु कठ होय । दूहारै तुकत लघु होय । और सारा ही गीतरा दूहा प्रत मात्रा प्रमाण कहां छा । पै'ली तुक मात्रा चाळीस होवै । दूजी तुक मात्रा छावीस होवै । तीजी तुक मात्रा अठावीस होवै । चौथी तुक मात्रा छावीस होवै । यू तीन ही लारला दवाळा मात्रा होवै, जिण गीतनै काछौ कहीजै । चार ही तुका मात्रा सम नही, जीसू असम चरण छद छै ।

अथ गीत काछौ उदाहरण

गीत

पहपत रघुपती दत भ्हौक पांणां ।
वदत सुज कथ वेद-वांणां सधर पांणां साहणौ ।
सारंग बांणां, जुध सभ्हांणौ पण मुड़ांणां पूठ ॥
सुखवर सुरांणां, गौ दुजांणां माघवांणां सुख मिळै ।
मह जिग मंडांणां थांणथांणां दैत घांणां दूठ ॥
धनक सायक भुजाधारी, तेण रज रिख नार तारी ,
पायचारी पंथमें ।
मिथळाविहारी स्रीमुरारी रमां नारी रंज ॥
पह छत्रधारी मिळ अपारी मांण हारी मंडळी ।
धनु जेणवारी रांवणारी जटाधारी भंज ॥

---

२२१ यूही–ऐसे ही ।

२२२ पहपत (पृथ्वीपति)–राजा । दत–दान । भ्हौक–धन्य-धन्य । पाणा–हाथो । वदत–कहता है । सुज–वह । कथ–कथा । वेद-बाणा–वेदवाणी । सधर–दृढ । साहणौ–धारण करने वाला । सारग–विष्णुके धनुषका नाम । वाणा–तीरो, वाणो । सुराणा–देवताओ । दुजाणा–ब्राह्मणो । माघवाणा–इन्द्र । मह–पृथ्वी, महान । जिग–यज्ञ । मडाणा–रचा गया । थांणथाणा–स्थानो-स्थानो । दैत–दैत्य । घाणा–नाश । दूठ–दुष्ट । धनक–धनुष । सायक–बाण, तीर । तेण–उस । रज–धूलि । रिख–ऋषि । पायचारी–पदचारी । पथमे–मार्गमे । रमा–शत्रुओ । रज–दुख । पह–योद्धा । छत्र-धारी–राजा । अपारी–असीम । माण–मान, गर्व । मंडळी–समूह । धनु–धनुष । जेणवारी–जिस समय । जटाधारी–महादेव । भज–तोड दिया ।

पित आय सचित प्रकासे, वीर वट-पंच वासे ,
असुर नासे आहवां ।
भय मेट दासे विरद भासे, खळां त्रासे खूर ॥
पड़ लंक पासे जंग जासे, अत प्रकासे आवधां ।
ग्रीधां ढीगासे मांस ग्रासे, सुज हुलासे सूर ॥
करण भूपत देव काजा, मांण रख गौ दुज समाजा ,
क्रीत पाजा दध कहै ।
ते सुकव ताजा ब्रवण बाजा, गजां राजा गांम ॥
छज ऊंच छाजा दिलदराजा, जेत वाजा जंगियं ।
लख राख लाजा संत साजा, महाराजा रांम ॥ २२२

अथ गीत सवैयौ वरण छंद लछण

दूहौ

दोय सगण पद च्यार दख, पंचम चव सगणांण ।
सावझड़ौ कह चरण ब्रती, जिकौ सवायौ जांण ॥ २२३

अरथ

सवायौ गीत वरण छंद होय जिणरै तुक पाच, दूहा अेक प्रत होय । तुक अेक प्रत सगण दोय आवै । अखिर छ आवै । इसी तुक च्यार होय । पाचमी तुकमे च्यार सगण गण पडै । अखिर बारा होय । पाच ही तुकारा मोहरा मिळै, जिणसू सावझडो सवायौ गीत जाणजै ।

अथ गीत सवैयौ उदाहरण

गीत

थिर बूध थटौ क्रतहीण कटौ, दुख ओघ दटौ मह पाप मटौ ।
रिववसतणौ रिव रांम रटौ ॥

---

२२२ वट-पच—पचवटी । वासे—निवास किया । नासे—नाश किया । आहवा—युद्धो । खळा—राक्षसो । खूर—समूह । ढीगासे—ढेर, समूह । ग्रासे—भक्षण किया । हुलासे—प्रसन्न हुए । सूर—सूर्य । दुज—ब्राह्मण । क्रीत—कीर्ति । पाजा—पुल । दध—समुद्र, सागर । ब्रवण—देने को । बाजा—घोडे । छज—शोभा । ऊच—ऊची । छाजा—शोभा देती है । दिलदराजा—उदार दिल, दातार ।

२२३ दख—कह । चव—कह । सगणाण—सगण गण । अखिर—अक्षर ।

२२४ थिर—स्थिर, अटल । बूध—बुद्धि । थटौ—धारण करो । क्रतहीण—पाप । कटौ—काट डालो । ओघ—समूह । दटौ—नाश कर दो । मह—महान । मटौ—मिटा दो । रिववसतणौ—सूर्यवश का । रिव—सूर्य ।

तन खेत तजौ मत सुद्ध मजौ, सुभ रीत सजौ वड संत वजौ।
भव तारण कौसळनंद भजौ ॥
हिय लोभ हरौ धख पुन्य धरौ, क्रत ऊंच करौ सुरराज सरौ।
रघुनायक दायक मोख ररौ ॥
मन भाव मढौ दुज सेव दढौ, गुरु वेण गढौ चित रंग चढौ।
पतसीत सप्रवीत सप्रवीत पढौ ॥ २२४

अथ गीत सालूर लछण

दूहौ

धुर अठार बारह दुती, सोळै त्रति चव बार।
आद वेद मिळ बी त्रती, यूं सालूर उचार ॥ २२५

अरथ

पै'ली तुक मात्रा अठारै होय। दूजी तुक मात्रा बारै होय। तीजी तुक मात्रा सोळै होय। चौथी तुक मात्रा बारै होय। पै'ली तुक नै चौथी तुक मिळै दु गुरु तुकंत होय। बीजी तुक नै तीजी तुक मिळै। लघु तुकंत होय सौ सालूर गीत कहीजै।

अथ गीत सालूर लछण

गीत

सुज बीजै नर पकां मनह सीधौ।
जनक तांम मुख जापत, आ जौ महमा काळ अमापत।
क्रत पण खंडत कीधौ ॥

---

२२४ खेत–क्षेत्र। तजौ–छोड दो। वजौ–कहे जाओ, प्रसिद्ध हो। भव–जन्म ससार। कौसळनंद–श्री रामचद्र भगवान। धख–इच्छा। क्रत ऊच–उत्तम कार्य। सुरराज–इन्द्र। दुज–ब्राह्मण। दढौ–दृढ करो। पतसीत–श्री रामचन्द्र। सप्रवीत–पवित्र।

२२५ दुती–दूसरी। त्रति–तीसरी। चव–चार। बार–बारह। वेद–चौथी। बी–दूसरी। त्रती–तीसरी। यू–ऐसे।

२२६ महमा–महिमा। अमापत–अपार। खंडत–खडित। कीधौ–किया।

तायक लखण पयंपै तेथी ।
वायक रोस विरुता, है नर बीर जनक मुखहूंता ।
जंप न राघव जेथी ॥
मुनि मित्त आयस राघव मंगे ।
छक घण रोम ऊछाजै, बूठै खित्रवट नूर विराजै ।
ऊठै सूर उमंगे ॥
चाप उठाय नमाय चहोड़ै ।
तोड़ै खळां अतंका, बरी सिया दासरथी बंका ।
राघव डंका रोड़ै ॥ २२६

अथ गीत त्रिबको लछण

दूहौ

सोळ कळा धुर सोळ बी, ती बतीस गुरवंत ।
त्रि बखत उलटै तुक त्रती, कविस त्रिबंक कहंत ॥ २२७

अरथ

पै'ली तुक मात्रा सोळै होय । दूजी तुक मात्रा सोळै होय । तीजी तुक मात्रा बतीस होय । जिण तीजी तुकरै दोय मात्रा तौ आद नै पछै दोय चौकळ गण ज्यानै तीन बखत पढणा उलट-पलट करनै, जठा पछै छ मात्रा फेर हुवै, तुक तीनका मोहरा मिळै । एक दोय गुरुकौ तौ नेम ही नही पिण तुकत गुरु होवै सौ त्रबकौ गीत कहीजै ।

अथ गीत त्रबक उदाहरण

गीत

रे राखै ऊजळ भाव रदा, गहिया कज नीरज चक्र गदा ।
सुज रे मन राघव रे मन राघव, रे मन राघव जाप सदा ॥

---

२२६ लखण—लक्ष्मण । पयपै—कहता है । तेथी—वहा । विरुता—पूर्ण । मुखहूता—मुखसे । जप—कह । राघव—रामचन्द्र भगवान । जेथी—जहा । छक—जोश । चहोडै—चढाते हैं । अतका—आतक ।

२२७ सोळ—सोलह । कळा—मात्रा । बी—दूसरी । ती—तीसरी । त्रती—तीसरी । कहंत—कहते हैं । जठा पछै—जिसके बाद ।

२२८ भाव—विचार । रदा—हृदय । कज—कमल । नीरज—शख । जाप—जप, स्मरण कर ।

गजग्राहै जाहर ग्राहांणी, जिण वाहर कीधी जग जांणी ।
मह माधव केसव केसव माधव, माधव केसव पढ प्रांणी ॥
लंका हण रांवण जुध लीजै, दत दीन भभीखणनूं दीजै ।
रे कौसळनंदण नंदण कौसळ, कौसळनंदण समरीजै ॥
पै रज रिखघरणी गति पाई, वळ तरणी भ्फीवर तिरवाई ।
भण सीता रघुबर रघुबर सीता, सीता रघुबर भण भाई ॥२२८

अथ गीत धमाळ लछण

दूहौ

पूरबारध मत भाख पढ, ऊपर नव मत अक्ख ।
है तुकंत लघु गुरु हरख, सौ धमाळ विसक्ख ॥ २२९

अरथ

भाख गीत सावभ्फडा गीतरी तुक मात्रा चवदैरी होवै सौ भाख गीतरी तुक सवाय मात्रा नव होवै । लघु गुरु तुकत होवै । च्यार ही मोहरा मिळै सौ धमाळ गीत कहावै ।

अथ गीत धमाळ उदाहरण

गीत

कवसळ सुता राजकंवार, क्रत जन काजरा ।
दरसै चखां दत खग दोय लंगर लाजरा ॥

---

२२८ जिण–जिस । वाहर–रक्षा । कीधी–की । माधव–विष्णु । दत–दान । दीन–गरीब । भभीखणनू–विभीषणको । नदण–पुत्र । समरीजै–स्मरण कीजिए । पै–चरण । रज–धूलि । रिख–ऋषि । घरणी–गृहिणी । गति–मोक्ष । वळ–फिर । तरणी–नौका । भ्फीवर–मल्लाह । भण–कह ।

नोट—त्रिबक गीतके लक्षण रघुनाथरूपकमे अधिक स्पष्ट है । यहाँ पर उसकी नकल दी जाती है । त्रिबक गीतमे प्रत्येक पदमे सोलह मात्राएँ होती हैं । प्रथम, द्वितीय और चतुर्थ पदके तुकात मिलाये जाते है । तीसरे पदमे आदिमे दो मात्राएँ मध्यमे दो चौकल और अतमे एक षटकल रखना चाहिए । तीसरे पदमे जो चौकल आवे वह पलट कर चौथे पदमे भी आनी चाहिए । उदाहरण देखनेसे स्पष्ट हो जायेगा ।

२२९ मत–मात्रा । भाख–एक गीत छदका नाम । अक्ख–कह । विसक्ख–विशेष ।

२३० क्रत–काम । चखा (चक्षु)–नेत्र, नयन । दत–दान । खग–तलवार । लगर–पैरोंको वाधनेका बधन विशेष, पैरो का एक आभूषण ।

जपां कमण नूप ता जोड़ अधपत आजरा ।
बंदां मघादिक सुर व्रंद रघुबर राजरा ॥
छत्रवट तूझ दसरथ नंद ओप अच्छेहड़ा ।
बाढे खगां रिण दसमाथ कर धड़ बेहड़ा ॥
वळमुखहूंत निकसै वैण 'आखर वेहड़ा ।
जुग पद वसै सुगट सहीव सुरपत जेहड़ा ॥
वेढक फरसधर विकराळ बंक अबंकसा ।
सुज जिण कीधा रांम नरेस सूधसणंकसा ॥
लहरे हेक दीधी लछीस थांनक लंकसा ।
सुज पय नमै अविरळ सीस सुरप असंकसा ॥
दखूं किसूं हे महाराज दासां दास रे ।
वरणां जीभहूं बुध जोग नित जसवास रे ॥
हिरदै वसौ ध्यांन हमेस रूप हूलास रे ।
जपै 'किसन' रख रघुराज, औ पण आस रे ॥ २३०

अथ गीत रसावळ लछण

दूहौ

प्रथम तीन तुक चवद मत, मोहरे रगण मिळाय ।
चवथ ग्यार मत सगण मुख, रसावळौ खगराय ॥ २३१

---

२३० कमण—कौन । ता—उस । जोड—समान, बराबर । अवधपत—श्रीरामचद्र भगवान । मघादिक—इद्र आदि । सुर—देवता । व्रंद—समूह । छत्रवट—क्षत्रियत्व । तूझ—तेरा । नद—पुत्र । अच्छेहडा—अपार । बाढे—काट डाले । रिण—युद्ध । दसमाथ—रावण । धड—शरीर । बेहडा—एक के ऊपर एक रखनेकी क्रिया या ढग, तह । वैण—बचन । वेहडा—विधाताके । जुग—दो । पद—चरण । सुरपत—इन्द्र । जेहडा—जैसा । वेढक—वीर । फरसधर—परशुराम । कीधा—किया । सूधसणकसा—बिलकुल सीधा । लहरे—तरगमे, उमगमे । दीध—दे दी, दे दिया । लछीस—लक्ष्मीपति । थानक—गढ । लकसा—लकाके समान । पय—चरण । अविरळ—निरतर । सुरप—इन्द्र । दखू—कहू । दासांदास—भक्तोका दास । बुध—बुद्धि । जोग—योग्य । जसवास—यश, कीर्ति । हिरदै—हृदयमे ।

२३१ मोहरे—तुकवदी । चवथ—चौथी । खगराय—गरुड । नाग—शेषनाग । खगराज—गरुड ।

अरथ

जिण गीतरै प्रथमरी तीन ही तुका मात्रा चवदै चवदै होय। मोहरे रगण गण होय। तुक पै'ली मात्रा चवदै, तुकात रगण होय। तुक दूजी मात्रा चवदै, तुकात रगण होय। तुक तीजी मात्रा चवदै, तुकात रगण होय। तुक चौथी मात्रा अग्यारै, तुकात मोहरे सगण होय सौ गीत नाग कहै छै। हे खगराज गरुड सौ गीत रसावळौ कहावै छै।

अथ गीत रसावळौ उदाहरण

गीत

सझ भुजां निज धानंख सरा, मझ अड़ै भूहां मोसरा।
रिण रांम नूप दसमाथरा, खित वेध लगा खरा॥
उण दसा राखस आहुड़ै, भड़ भाल कपि यण दस भड़ै।
लूथबथ अह घणसुर लड़ै, गज धरा नभ गड़ड़ै॥
कोमड कीधां कुंडळां, वरसाळ सर दुत वीजळा।
खळ कुंभ राघव खंडळा, झड़ नयण आग झळा॥
भड़ रांम दससिर भंजिया, दत लंक सरणागत दिया।
विभ अवध सिय ले आविया, कळ चंदनांम किया॥२३२

अथ गीत सतखणा लछण

दूहा

लघु सांणोर क पूणियौ, धुर अठार बी बार।
सोळ बार क्रम मत सरब, दु गुरु तुकंत बिचार॥ २३३

---

२३२ धानख–धनुष। सरा–वाण, तीर। मझ–मध्य। मोसरा–श्मश्रु, मूछें। दसमाथरा–रावणका। खित–पृथ्वी। वेध–युद्ध। दसा–ओर, तरफ। राखस–राक्षस। आहुडै–भिडे। भड–योद्धा। भाल–रीछ। कपि–बंदर। यण–इस। दस–तरफ, ओर। लूथबथ–परस्पर भिडनेकी क्रिया, द्वन्दयुद्ध। अह–लक्ष्मण। घणसुर–मेघनाद। गडडै–गुंजायमान हुए। कोमड–धनुष। वरसाळ–वर्षा। सर–तीर, वाण। दुत–द्युति। वीजळा–बिजली, तलवार। दससिर–रावण। दत–दान। विभ–वैभव। अवध–अयोध्या। सिय–सीता। कळ–युद्ध। चदनामा–यश।

२३३ बी–दूसरी। बार–बारह। सोळ–सोलह। मत–मात्रा। दु–दो।

सोळ मत तुक पंचमी, संबोधन धुर मध ।
तुक छठी मझ नव कळा, सौ सतखणौ प्रसिध ॥ २३४

अरथ

गीत छोटौ साणोर तथा पूणियौ साणोर पै'ली तुक मात्रा अठारै । दूजी तुक मात्रा बारै । तीजी तुक मात्रा सोळै होय नै बीच संबोधन रेकार शब्द पांचमी तुकरै आद मध्य आवै नै तुक छठी मात्रा नव होवै जिणनै गीत सतखणौ कहीजै ।

अथ गीत सतखणौ उदाहरण

गीत

प्रांणी सौ झूट कपट चित परहर, गुण हर काय न गावै ।
जमदळ आय फिरेलौ जाडौ, आडौ कोय न आवै ।
रे दिन जावै रे दिन जावै, लाहौ लीजिये ॥
बेखै मात पिता त्रिय बंधव, कुळ धन धंधव काचौ ।
चौरंग मझ जमहूँत बचायब, साहिब राघव साचौ ।
रे जग काचौ रे जग काचौ, लाहौ लीजिये ॥
अंत दिनां आडौ खम आसी, साचौ जनां संबंधौ ।
डिग चित अवरां दिसी म डोलै, बोलै लिछमण बंधौ ।
रे जग धंधौ रे जग धंधौ, लाहौ लीजिये ॥
धू पहळाद भभीखण सिंधुर, अपणाया सुख आपे ।
पीतंबर काटै दुख पासां, थिरके दासां थापे ।
रे हरि जापै रे हरि जापै, लाहौ लीजिये ॥२३५

---

२३४ मध–मध्य । मझ–मध्यमे । कळा–मात्रा ।

२३५ परहर–छोड दे । गुण–यश । काय न–क्यों नही । जाडौ–बहुत, घना । कोय न–कोई नही । लाहौ–लाभ । बेखै–देखते है । त्रिय–स्त्री । बंधव–भाई धंधव–धंधा, काम । चौरंग–आवागमनका बंधन युद्ध । मझ–मध्यमे । जमहूँत–यमराजसे । साहिब–स्वामी । जनां–भक्तो । संबंधौ–संबंध । अवरां–अन्यो । दिसी–ओर, तरफ । म–मत । लिछमण–लक्ष्मण । बंधौ–भाई, बंधु । धू–ध्रुव भक्त । पहळाद–प्रहलाद । सिंधुर–गज । पीतंबर–पीताम्बर वस्त्र धारण करने वाला विष्णु । जापै–जप, स्मरण कर ।

अथ गीत उमग सावझड़ौ लछण

दूहौ

सोळह मत तुक प्रत सरब, मोहरा च्यारूं मेळ ।
सावझड़ौ सगणांत सख, सोय उमंग सचेळ ॥ २३६

अरथ

घड उथलरै पण तुक प्रत मात्रा सोळै होय । अंत गुरु होय नै यूही उमगरै तुक प्रत सोळै मात्रा नै अंत गुरु होय पिण अंतरौ भेद छै सौ घडउथल तौ आधासू उलटै नै उमग सावझड़ौ च्यारूं तुका मिळै नै उलटै नही यौ भेद छै ।

अथ गीत उमग सावझड़ौ उदाहरण

गीत

नर नाग सुरा सुर जोड़ नथी, कथ वेद पुरांण दुजांण कथी ।
मुर कीटमधु हण सिंध मथी, रट रे मन राघव दासरथी ॥
के नाथ अनाथ सुनाथ किया, सुज जेण वेरी दळ चाप सिया ।
वळ रांवण कुंभ जिसा वहिया, है कांम भलौ भज राम हिया ॥
मह पाळ सिघां कुळ मित्तारौ, पह पाळक संतां पीसारौ ।
जग जाय जमारौ जीतारौ, सुज संभर सायब सीतारौ ॥
वाराधिप सेतां बंधणारौ, कुळ राखस जूथ निकंदणारौ ।
दिल तूं 'किसना' जग बंदणारौ, नहचौ रख कौसळ नंदणारौ ॥२३७

---

२३६ सगणंत–जिसके अन्तमे सगण हो । सख–कह ।

२३७ जोड–बराबर, समान । नथी–नही । कथ–कथा । दुजाण (द्विज)–महर्षि, मुनि । कथी–कही । मुर–एक असुरका नाम । कीटमधु–मधुकैटभ । सिंध–समुद्र । दळ–तोड कर । चाप–धनुष । सिया–सीता । वहिया–चले गये । भलौ–उत्तम, ठीक । महपाळ–(महिपाल) राजा । सिघा–श्रेष्ठ । कुळ मीतारौ–सूर्य का वंश । संभर–स्मरण कर । सायब–(साहिब) स्वामी । वाराधिप–समुद्र । जूथ–समूह । निकंदणरौ–नाश करने वाले का । नहचौ–विश्वास, धैर्य । नंदणरौ–पुत्रका ।

अथ गीत यकखरौ (इकखरौ) लछण

सरलोकौ

मात्रा चवदै तुक हेकण मांहै ।
आंणै सोळै तुक यण विध ऊछाहै ॥
कायब सावझड़ौ रगणांत कीजै ।
मोहरा सोळै हीरै रे मेलीजै ॥
गीत यकखरौ यण विध कवि गावै ।
राघव राजानै जसकर रीझावै ॥
चवजै बीसू मत पद हेकण चोखौ ।
लीजौ वरतारौ समझे सरलोकौ ॥ २३८

अरथ

यकखरा गीतरै सोळै ही तुका प्रत चवदै मात्रा आवै । तुकत रगण आवै । सारी ही तुका प्रतरै यसौ सबोधनरौ एक अखर आवै । मोहरै सौ यकखरौ गीत कहावै । यणरा लछणारौ छद सरलोकौ छै । वाणिया, जती तथा भोजक बोहोत पढै छै ।

अथ गीत यकखरौ उदाहरण

गीत

कौसिक रिख जग काज रे, जाचिया स्री रघुराज रे ।
सुज विदा दसरथ साज रे, मेल्हिया स्री महराज रे ॥
गत पंथ तारक गाह रे, सुज सपत दिन जिग साह रे ।
हरण खंड कीध सुबाह रे, मारीच नख दध माह रे ॥

---

२३८ हेकण–एक । माहै–मे । आणै–रखे, ले आये । यण–इस । विध–प्रकार, तरह । ऊछाहै–उमगमे, जाशमे । कायब–काव्य, कविता । रगणात–वह छद जिसके अतमे रगण हो । कीजै–करिये । मेलीजै–रखिए । रीझावै–प्रसन्न करे । चवजै–कहिए । बीसू–बीस । मत–मात्रा । पद–चरण, तुक । चोखौ–उत्तम । वरतारौ–वह छद या गद्य परिभापा जिसमे छद विशेपके रचनाके नियम व मात्रा वर्ण आदि दिए हुए हो । सरलोकौ–राजस्थानीका एक मात्रिक छद विशेप । यसौ–ऐसा । अखर–अक्षर । यण–इस । लछण–लक्षण । बोहोत–बहुत ।

२३९ कौसिक–विश्वामित्र । रिख–ऋपि । जिग–यज्ञ । काज–लिए । जाचिया–याचना की । खड–नाश, ध्वश । कीध–किया । नख–डाल दिया । दध–समुद्र । माह–मे ।

जिग जनक आरंभ रांम रे, कर रिखी गवरण सकांम रे ।
भव सिला गौतम भांम रे, रज पाय तारी रांम रे ॥
दस कमळ बळ सुत दैत रे, नृप अवर मांण नमैत रे ।
जिग धनंख हण की जैत रे, बर स्त्रीया जद बांनैत रे ॥२३९

अथ गीत अमेळ लछण

दूहौ

सरस वेलिया सूहणा, सांमिळ तुकां सझाय ।
मोहरा अंत मिळै नहीं, सौ अमेळ सुभाय ॥ २४०

अरथ

वेलिया गीतरी नै सोहणा तथा खुडदरी तुका सामिळ होय । अत मोहरा मिळै नही, जिणनू अमेळ साणोर कहीजै । यणहीज तरै सुपखरौ पिण अमेळ वणै छै ।

अथ गीत अमेळ साणोर उदाहरण

गीत

दसरथरा नंद मुकतरा दाता, असुर जुधां घाता असेस ।
निज कुळ मुकट जांनकीनायक, सुखदायक सेवगां सही ॥
उर भ्रगु लात सुहात अनूपम, जग जाहर विक्रम राजेस ।
किती बार महराज त्रविक्रम, राजहूंत तन लाज रही ॥
बाढ सुबाह जिगन रखवाळे, महण बीच डाले मारीच ।
ताई विमद करे नृप ताखा, विरदाई जांनकी वरी ॥

---

२३९ रिखी–ऋषि । गवण–गमन । भाम–भामिनी, स्त्री । पाय–चरण । दसकमळ–रावण । अवर–अन्य । मांण–गर्व । हण–नाश कर । बांनैत–वीर ।

२४० सूहणा–सोहणा नाम गीत छंद । सामिळ–साथ, शामिल । सझाय–सज कर, रख कर । जिणनू–जिसको । पिण–भी ।

२४१ नद–पुत्र । मुकतरा–मुक्तिके । दाता–देने वाला । घाता–सहारक । असेस–अपार । अनूपम–अद्‌भुत । लात -पद-प्रहार । सुहात–शोभा देता है । विक्रम–वीरता । किती–कितनी । त्रविक्रम–त्रिविक्रम । राजहूत–श्रीमानसे । बाढ–काट कर, मार कर । जिगन–यज्ञ । महण–समुद्र । ताई–शत्रु । विमद–गर्वरहित । ताखा–वीर । विरदाई–विरुदधारी ।

फसरा अरस कर आडौ फिरियौ, हुवौ फरसधर तेजविहरा ।
जग मझ रांम न कौ तौ जेहौ, केहौ भूपत मीढ करां ॥२४१

अथ गीत भवरगुजार लछरा

दूहा

सोळ प्रथम चवदह दुती, ज्यांरै लघू तुकंत ।
ती चवदह नव चतुरथी, अख बी गुरु जिरा अंत ॥ २४२
यरा हीज विध उत्तर अरध, चतुर सुकवि विचार ।
भरा जस रस रघुवर भंवर, गीत भंवर गुंजार ॥ २४३

अरथ

भवरगुजार गीतरै तुक आठ मात्रा प्रमाण कह्या छा । तुक पै'ली मात्रा सोळै । तुक बीजी मात्रा चवदै । तुक तीजी मात्रा चवदै । तुक चौथी मात्रा नव । तुक पाचमी मात्रा सोळै । तुक छठी मात्रा सोळै । तुक सातमी मात्रा चवदै । तुक आठमी मात्रा नव होय । पै'ली बीजी तुकरा मोहरा मिळै । तुकत लघु होय । तीजी चौथीसू भेळी पढी जाय । आठमी तुकरा मोहरा मिळनै तुकात दोय गुरु होय । पाचमी छठी तुकरा मोहरा मिळनै तुकात लघु होय । सातमी आठमी तुक भेळी पढी जाय । यण प्रकार च्यार ही दूहा प्रत मात्रा होय, जिण गीतरी नाम भवरगुजार कहीजै ।

अथ गीत भवरगुजार उदाहरण

गीत

रे अधम नर समर रघुबर,
सिया नायक दया सागर ।
कड़े दध जिरा सुजस कहजै भिड़ै खळ भंजे ॥
जंपै सिव रिव सेस जाहर,
वेख की प्रहळाद वाहर ।
रूप नाहर धार राघौ गाव रिम गंजे ॥

---

२४१ फसण–लडनेको । अरस–कोप । फरसधर–परशुराम । तेजविहीण–कातिहीन । मझ–मध्य । कौ–कोई, कौन । तौ–तेरे । जेहौ–जैसा । केहौ–कौनसा । मीढ–समान, तुल्य ।
२४२ दुती–दूसरी । त्यारै–उनके । ती–तीसरी । चतुरथी–चौथी । अख–कह । बी–दो ।
२४३ यण–इस ।
२४४ कडे–तट पर । दध–समुद्र । खळ–असुर । रिव (रवि)–सूर्य । वेख–देख । वाहर–रक्षा । नाहर–नृसिंहावतार । राघौ–श्रीरामचन्द्र । रिम–शत्रु । गजे–नाश किये ।

बळ थियौ दित हरणाच्य अप्रबळ ,
तेज मीहर धर रसातळ तांम ।
ब्रह्म पुकार रघुपत करण मुख कहै ॥
गरुड़धुज विप धांम गिड़ ,
प्रळय जळ मग गंध सुध पड़ ।
आंण घर घर देत अणघट, विकट अर वहै ॥
तन मछ्छ जोजन स्रंग लख तण ,
रेण जन सत वरत रखण ।
समंद प्रळय विहार स्रीरंग, वेद मुख वांणी ॥
वळ चवद रतन उधार हित वप ,
कठण पिठ धारी मंद्र कछ्छप ।
उदध कर मंथांण अणघट, प्रगट कंज पांणी ॥
बळ छ्ळण तन धरि हास बावन ,
पुरंदर द्रढ कर सपावन ।
फरसधर विप धार हरि फिर, खत्र खळ खंड ॥
रच रांम तन यर रहच रांमण ,
हुवा हळधर बुध दित हण ।
वळै की वंकी होण राघव, मही सत्त मंड ॥ २४४

अथ गीत दूजौ भवरगुजार लछण

दूहौ

चवद प्रथम दूजी चवद, सोळ त्रती नव च्यार ।
पूब उतर सम अंत गुरु, जुगम भंवर गुंजार ॥ २४५

---

२४४ वळ–फिर । थियौ–हुआ । दिन–दैत्य । हरणाक्ष्य–हिरण्याक्ष । अप्रवळ–अत्यन्त वलशाली । मीहर–सूर्य । अणघट–अपार । मछ–मत्स्य । जोजन–योजन । पिठ–पीठ । मद्र–मद्राचल पर्वत । उदध–समुद्र । कज–कमल । पाणी–हाथ । वळ–राजा वलि । पुरदर–इन्द्र । सपावन–पवित्र । फरसधर–परशुराम । खत्र–क्षत्रियत्व । रहच–मार कर ।

२४५ त्रती–तीसरी । जुगम (युग्म)–दो, दूसरा । भेळी–साथ ।

अरथ

बीजा भमरगुजाररै पै'ली तुक मात्रा चवदै। बीजी तुक मात्रा चवदै। तीजी तुक मात्रा सोळै। चौथी तुक मात्रा नव। यूंही उतरारधरी च्यार तुका होय। पै'ली दूजीरा मोहरा मिळै। अत गुरु होय। तीजी चौथी भेळी पढी जाय। चौथी आठमीरा मोहरा मिळै। अत गुरु होय। पाचमी छठीरा मोहरा मिळै। गुरु अत होय। पूरबारध उतरारध समान मात्रा होय। यूं च्यार ही दूहा होय सौ बीजौ भमरगुजार गीत कहावै।

अथ गीत बीजौ भंमरगुजार उदाहरण

गीत

सुभ देह नीरद सुंदरं, साधार सेवग स्रीवरं।
रघुनाथ नाथ अनाथ रहे, हेल अघ हरणं॥
धर सुकर सायक धानुखं, लड़ समर रहचण लखं।
दुज राज गरब विभंज दस्सत, सरब जग सरणं॥ २४६

अथ गीत चौटियौ लछण

दूहौ

प्रगट जांगड़ा गीत पर, अधिक मत्त उगणीस।
अंत दु गुरु तुक आंणजै, कवि चौटियौ कहीस॥ २४७

अरथ

वेलियौ, सूहणौ, खुडद, जागडौ, या च्यार ही गीता छोटा साणोरा मेहलौ। जागडौ गीत पै'ली तुक मात्रा अठारै। बीजी तुक मात्रा बारै। तीजी तुक मात्रा सोळै। चौथी तुक मात्रा बारै होय। दो गुरु तुकत होय, पछै सोळै बारै ईं क्रम होय, जी जागडा गीतरा दूहारै पाचमी तुक एक मात्रा उगणीसरी अधिक होय। दो गुरु तुकत होय। इण प्रकारसूं च्यार ही दूहा होय, जिणनै चौटियौ गीत कहीजै।

---

२४६ नीरद—बादल। साधार—सहायक, रक्षक। सुकर—श्रेष्ठ हाथ। सायक—तीर। धानुख—धनुष।

२४७ मत—मात्रा। उगणीस—उन्नीस। कहीस—कहेगा। बीजी—द्वितीय, दूसरी। बारै—बारह। ईं—इस।

अथ गीत चौटियौ उदाहरण

गीत

जांमी अघ भांन सुरसरी जेथी, ध्यांन मुनीसां धायौ।
वरणै वेद यसा नग राघव, आं सरणे हूं आयौ।
केसव रावळौ निज दास कहायौ ॥
त्रिभुवण मांभ नहीं त्यां तोलै, ओळै सुतअरव्यंदौ।
म्है किव 'किसन' हुलासे चितमें, आसे लियौ अमंदौ।
बर-सी राजरै चोटीकट बंदौ ॥
रज परसण उदमाद करै रिख, मरै हूंस मघवांणौ।
क्रत दत कोट कियां हूं यधकौ, हरि नग ओट रहांणौ।
कुळमें धन्य हूं किंकर कहांणौ ॥
भण चौरासी घेर उदध-भव, नरपत फेर नह नाचूं।
कौसळनंद अडग 'किसनौ' कह, जुग जुग याही जाचूं।
राघव रावळा चरणां नित राचूं ॥२४८

अथ गीत मदार लछण

दूहा

तुक धुर बी सोळह मता, मोहरा मेळ गुरंत।
ती अठार चौथी त्रिदस, तेरै कह रगणंत ॥ २४९

---

२४८ जामी–पिता। अघ–पाप। सुरसरी–गगा नदी। जेथी–जहा। धायौ–स्मरण किया, भजन किया। यसा–ऐसा। नग–चरण। आ–उन। हू–मैं। रावळौ–श्रीमानका, आपका। त्रिभुवण–तीन लोक। माभ–मे, मध्य। तोलै–समान। सुत अरव्यदौ–ब्रह्मा। बर-सी–सीतावर, श्रीरामचद्र भगवान। राजरै–आपके, श्रीमानके। बदौ–सेवक, अनुचर। रज–धूलि। परसण–स्पर्शन। उदमाद–इच्छा। रिख–ऋषि। हूस–अभिलाषा। मघवाणौ–इद्र। क्रत–कार्य, काम। दत–दान। यधकौ–अधिक। ओट–आड, शरण। रहाणौ–रह गया हूँ। हू–मैं। किंकर–दास, भक्त। कहाणौ–कहा गया। रावळा–आपके।

२४९ धुर–प्रथम। बी–दूसरी। मता–मात्रा। ज्यारै–जिनके। गुरत–जिस शब्दके अतमे गुरु वर्ण हो। रगणत–जिसके अतमे रगण हो।

अध पूरब जिम उतर अध, समझौ कवि सुविचार ।
क्रीत जेण बिच रांम कह, दाख गीत मंदार ॥ २५०

अरथ

पै'ली तुक मात्रा सोळै । बीजी तुक मात्रा सोळै । तीजी तुक मात्रा अठारै । चौथी तुक मात्रा तेरै होय । पै'ली बीजी तुक मिळै ज्यारै गुरत होय । पूरबारध उतरारध समान होय । पाचमी तुक मात्रा सोळै । छठी तुक मात्रा सोळै । सातमी तुक मात्रा अठारै और आठमी तुक मात्रा तेरै होय । आठमीके रगणंत होय सौ मदार नाम गीत कहीजै ।

अथ गीत मदार उदाहरण

गीत

पण-राखण दास गदापांणी, मझ सौ कथ जाहर भूमांणी ।
अपखी प्रहळाद जिसा आतुर, संग्रहिया निज हाथसूं ॥
जे जुध हरणाकुसनूं जरियौ, धड़ नाहर मांनवचौ धरियौ ।
जिण कारण देव दितेस दुजेसर, न्याय नमै रघुनाथसूं ॥
पित मात दसा तजया लंकनूं, बित जे चित हूं धू बाळकनूं ।
बन जाय करे तप हेत विसंभर, अेक पया दळ ऊपरी ॥
घण साधै जोग सधीर घणौ, सुर राजा कांपै बात सुणौ ।
निरधार अधार पधार नरायण, भूप कियौ द्रढ भूपरी ॥
दुरवासा डारण स्राप दियौ, लखजे अंबरीख उबार लियौ ।
बिच पेट परीछत मीच बचाय'र, थेट हरी जन थापिया ॥

---

२५१ गदापाणी—विष्णु । भूमाणी—समार, भूमडल । अपखी—वह जिसका कोई पक्ष न करता हो । सग्रहिया—अपनाया, रक्षा की । जे—जिसने । हरणकुसनू—हिरण्यकशिपुको । जरियौ—सहार किया । घड—शरीर । नाहर—सिह । मानवचौ—मनुष्यका । धरियौ—धारण किया । दितेस—दैत्य, दैत्येश । दुजेसर—द्विजेश्वर, महर्षि । विसभर—ईश्वर । पया—पैर । दुरवासा—एक ऋषिका नाम । डारण—जवरदस्त । स्राप—शाप । परीछत—परीक्षित । मीच—मृत्यु ।

बळमीक पुळिंद रिखी बागौ, कीधौ गुरु सुकनाधिप कागौ ।
भख अेंठित बोर करां कर भीलण, अेम घणां पद अप्पिया ॥
निरधारां ओठम घणनांमी, भुज दीन सीहाय ब्रद भांमी ।
नह विसार संभार अहोनिस, जैनूं आठूं जांममें ॥
दिल ऊजळ ठाकर दासरथी, कथजे गुण आकर वेद कथी ।
कर तूं अभिलाख रदा 'किसना' क्रिव, राख सदा चित रांममें ॥२५१

अथ गीत झडलुपत सावझडौ लछण

दूहौ

सावझड़ौ रमणी वसंत, तुक धुर बी मिळ बेद ।
मोहरौ तुक तीजी अमिळ, सौ झड़लुपत सुभेद ॥ २५२

अरथ

गीतारा प्रकरणमे पै'ली तीन सावझडा कह्या । अेक वसतरमणी, बीजौ जयवत नै तीजौ मृणाळ, ज्यामे पै'ली वसतरमणी नाम सावझडौ, जिणरै पै'ली तुक मात्रा अठारै होय नै और सारा ही गीतरी सारी ही तुकामे सोळै सोळै मात्रा होय । तुकत भगण होय सौ तौ वसतरमणी सावझडौ, जिणरी च्यार ही तुका मिळै नै झडलुपतरी पै'ली तुक दूजी तुक चौथी तुक मोहरा मिळै नै तीजी तुक मोहरौ मिळै नही, जिणनू झड़लुपत कहीजै तथा कोई कवि यणने त्रिमेळ पालवणी पण कहै छै सौ पण सत्य छै ।

अथ गीत त्रिमेळ पालवणी तथा झडलुपत सावझडौ उदाहरण

गीत

दत किरमर जोड़ नकौ विरदायक ।
घण दळ रोड़ कौड़ खळ घायक ॥

---

२५१ बळमीक–वाल्मीकि ऋषि । पुळिंद–एक प्राचीन कालकी पिछडी जाति । रिखी–ऋषि । कीधौ–किया । सुकनाधिप–गरुड । कागौ–काकभुशुण्डि । अेंठित–उच्छिष्ट । ओठम–शरण, सहारा । घणनामी–ईश्वर । ब्रद–विरुद । भामी–बलैया । जैनू–जिसका । आठू जाममें–अष्ठ याममे । दासरथी–श्रीरामचद्र भगवान ।

२५२ धुर–प्रथम । बी–द्वितीय । वेद–चतुथ, चौथी । मोहरौ–तुकबदी । अमिळ–नही मिलने वाली । ज्यामें–जिनमे । यण–इस । पण–भी ।

२५३ दत–दान । किरमर–तलवार । जोड–समान । नकौ–कोई नही । विरदायक–विरुद-धारी, यशस्वी । घण–बहुत । दळ–सेना फौज । रोड–रोक कर । खळ–शत्रु । घायक–सहार करने वाला ।

अघ तम दळद तोड़ दुत आसत ।
निज कुळ मौड़ जांनकी नायक ॥
जुध आचार भार भुज जोपत ।
रिमहर मार धजा जय रोपत ॥
वदै तमांम वेद मूनीवर ।
औ रवि वंस रांम रवि ओपत ॥
नूप खग दांन लियां सुख नूर ज ।
प्रसणां भांन खित्रीवट पूरज ॥
बळबळ प्रथी सुजस सद बोलत ।
सूरज तड़ दासरथी सूरज ॥
सदन सुकंठ भभीखण सांमंत ।
निरख कंठदस भांज अनांमत ॥
रे कुळभांण भांण नूप राघव ।
कौड़'क भांण लियां सुख क्रांमत ॥ २५३

अथ गीत त्रिपखौ लछण

दूहौ

धुर बी तुक मत सोळ धर, ती तुक बीस मताय ।
गळ अनियम मिळबौ, अेक त्रिपंखौ गाय ॥ २५४

---

२५३ अघ-पाप । तम-अंधेरा । दळद-दारिद्रय, कगाली । दुत-द्युति । आसत-शक्ति । आचार-दान । जोपत-जोशमें होता है । रिमहर-शत्रु । रोपत-रोपता है । तमाम-सब । रविवस-सूर्य वंश । रवि-सूर्य । ओपत-शोभा देता है । नृप-राजा । नूर-कांति, दीप्ति । ज-ही । प्रसणा-शत्रुओं । भान-नाश कर । खित्रीवट-क्षत्रियत्व । पूरज-पूर्ण । बळबळ-चारों ओर । सद-शब्द । बोलत-बोलता है । तड़-[illegible] । दासरथी-श्री रामचन्द्र । सदन-भवन । सुकंठ-सुग्रीव । भभीखण-विभीषण । सामंत-[illegible] । निरख-देख, देख कर । कंठदस-रावण । भाज-नाश [illegible] । अनामत-जो नहीं झुकता या नमता था । कुळभाण-सूर्य वंश । भाण-सूर्य । कोड़'क-[illegible] । क्रामत-कांति, दीप्ति ।

२५४ बी-[illegible] । मत-मात्रा । ती-तीसरी । मताय-मात्रा । गळ-अनुप्रास, तुकबंदी ।

अरथ

पै'ली तुक मात्रा सोळै । दूजी तुक मात्रा सोळै होय । पै'ली ही दूजी तुकारा मोहरा मिळै । तुकात लघु गुरुरौ नेम नही । कठै'क गुरु मोहरा, कठै'क लघु मोहरा होय । तुक तीजी मात्रा बीस होय । मोहरौ मिळै नही । गुरु लघु तुकात नेम नही । यण रीतसू च्यार ही दवाळा होय जिण गीतनू त्रिपखौ गीत कहै छै ।

अथ गीत त्रिपखौ उदाहरण

गीत

सारंग हण आया अवधेसर, सेसहूंता पूछै राजेस्वर ।
किण-विध न दीसै सीत सूनी कुटी ॥
काहिल बांण कूक म्रग कीधी, दौड़ लछण अग्या मौ दीधी ।
भूप म्हैं नटै जद कटुक कथ भाखिया ॥
अह वायक सुण रांम उचारै, वनिता वयण पुरख न विचारै ।
करी वन त्री ढली जका भोळप करी ॥
अेह कथ सुण बंधव आगी, जंपै सेस ज्वाळा तन जागी ।
सत्र कर भंज हूं आंण बंधव सिया ॥
भ्राता कंठ लगाड़ै भाई, स्रीबर सुर कज बात सुणाई ।
त्रिलोकीराव नर भांव तन विसतारे ॥२५५

---

२५५ सारग–हरिण । हण–मार कर । अवधेसर–श्री रामचद्र भगवान । सेसहूता–लक्ष्मणसे । राजेस्वर–राजेश्वर । किण-विध–किस प्रकार । दीसै–दिखाई देता है । सीत–सीता । काहिल–घायल । कूक–पुकार । कीधी–की । लछण–लक्ष्मण । अग्या–आज्ञा । मौ–मुझको । दीधी–दी । जद–जब । कटुक–कटु, कठोर । कथ–वचन । भाखिया–कहे । अह–लक्ष्मण । वायक–वचन । वनिता–स्त्री । वयण–वचन । पुरख–पुरुष । त्री–स्त्री । ढली–छोडी । जका–जो । भोळप–भूल । अेह–यह । कथ–वचन । बधव–भाई । आगी–अगाडी । जपै–कहता है । सेस–लक्ष्मण । ज्वाळा–कोपाग्नि । तन–शरीर । सत्र–शत्रु । भज–सहार, ध्वश । हू–मैं । आण–ले आऊं । बधव–भाई । सिया–सीता । स्रीवर (श्रीवर)–विष्णु, श्री रामचद्र । सुर–देवता । कज–लिए । त्रिलोकीराव–श्री रामचद्र ।

वारता

गीत पालवणी १, गीत झडलुपत २, गीत दुमेळ ३, गीत त्रवकडो ४ नै सावझ अटल, अे पाच छोटे साणोररी विखम तुक पै'ली, तुक तीजी अे विखम तुक त्यारा वर्णं नै यतरा गीतारै तुक प्रत मोळ मात्रा हुवै नै मोहरामे तफावत होय। कठे'क गुरु तुकांत कठे'क लघु तुकांत होवै नै यतरा गीत वडा सांणोररी विखम तुकांरा वर्णं, सावझड़ो अरध सावझड़ो आद। तुक प्रत मात्रा वीस होय। पै'ली तुक मात्रा तेवीस होय।

अथ गीत वडा सावझड़ा तथा अरध सावझड़ा लछण

दूहौ

मुण धुर तुक तेवीस मत, अवर वीस रगणांत ।
मिळ चव तुक वड सावझड़ौ, दुमिळ अरध दाखंत ॥ २५६

अरथ

गीत वडौ सावझड़ौ नै अरध सावझड़ौ दोन्यूंई वडा साणोररी विखम तुक पै'ली तीजीरा हुवै। पै'ली तुक मात्रा तेवीस। बीजी तुक मात्रा वीस ओर सारा ही तुकां मात्रा वीस होय। तुकांत रगण आवै नै च्यारूं तुकांरा मोहरा मिळै सो वडो सावझड़ौ नै अरध सावझड़ारै दोय तुकांत मिळै नै कठे'क रगण तुकांत आवै, कठे'क गुरु करणगण तुकांत आवै ओ भेद सो अरध सावझड़ौ कहावै।

अथ गीत वडो सावझड़ो उदाहरण

गीत

लछण कसीसै भुजां धांनख दथ लाजण ।
गोम नभ धड़ड आनंक जय गाजण ॥
सझाण पारंभ किय उद्धव सांमाजण ।
रे असुर देख आरंभ रघुराजण ॥

---

२५६ मत–मात्रा। अवर–अन्य। रगणांत–जिस चरण के अन्त में रगण हो। चव–चार। [illegible] नै–और। दोन्यूंई–दोनों ही, दोनों ही। बीजी–दूसरा। कठे'क–कहीं पर। करणगण–दो दीर्घ मात्रा का नाम।

२५७ [illegible] [illegible] [illegible] धांनख–धनुष। दथ– [illegible] [illegible] धड़ड– [illegible], शब्द कर। आनंक–नगाड़ा। [illegible] [illegible]

रारियां सुभट तूटै दमंग रीसरा ।
त्रिलोचण जिसा खूटै नयण तीसरा ॥
सिर कसै ऊकसै लसै भुजगीसरा ।
जोय दससीस थट कीस जगदीसरा ॥
दहल पुर नयर पूगी महळ दोयणां ।
भय रहित किया सुर नाग नर-भोयणां ॥
उमंग जुध करग चंचळ अचळ औयणां ।
लेख लंकेस अवधेस दळ लोयणां ॥
मांन पीव वच संप ससमाथनै ।
हर चरण जाह जुड़ दूणदसहाथनै ॥
कुळ अनेक करै निज सुधारै काथनै ।
नांम तौ माथ दसमाथ रघुनाथनै ॥ २५७

अथ गीत अरध सावझड़ौ उदाहरण

[ऊपरला सावझडा गीतनै दुमेळ कर पढणौ तथा दरसावा छा]

गीत

कमर बांधियां तूण सारंग गहियां करां ।
सुकर खग दांन जेहांन ऊंचासरा ॥

---

२५७ रारियां–नेत्रो । दमंग–अग्निकण । त्रिलोचण–शिव । खूटै–खुलते हैं । भुजगीसरा–शेषनागके । जोय–देख कर । दससीस–रावण । थट–समूह, दल । कीस–वानर । दहल–धाक, रौब । नयर–नगर । पूगी–पहुच गई । दोयणा–शत्रुओ । सुर–देवता । नर-भोयणां–नर लोक, ससार । करग–हाथ । औयणा–चरणो, पैरो । लेख–देख कर, समझ कर । लकेस–रावण । अवधेस–श्रीरामचन्द्र भगवान । दळ–सेना । लोयणा–नेत्रो, लोचनो । पीव–पति । वच–वचन । ससमाथ–समर्थ, शिव । दूणदसहाथ–रावण । काथनै–वैभवको । नाम–झुका दे । तौ–तेरा । माथ–मस्तक । दसमाथ–रावण । ऊपरला–उपर्युक्त, ऊपरका । दुमेळ–वह छद या पद्य जिसके पथम दो चरणोकी तुकबदी हो ।

२५८ तूण–तर्कश । सारग–धनुष । गहिया–पकडे हुए । करां–हाथो । जेहान–ससार । ऊचासरा–श्रेष्ठ ।

सुचित धंका जनां निवारण सांकड़ा ।
वाह रघुनाथ लंका लियण बांकड़ा ॥ २५८

अथ दुतीय गीत झडमुकट लछण

दूहौ

खुड़दतणौ तुक अग्ग पछ, देह झमक दरसाय ।
जिणनूं दूजौ झड़ मुकट, रटै वडा कविराय ॥ २५६

अरथ

खुडद गीत छोटौ साणोर होय। पैं'ली तुक मात्रा अठारै । दूजो तुक मात्रा तेरै । तीजी तुक मात्रा सोळै नै चौथी तुक मात्रा तेरै होय । तुकात दोय लघु होय सौ खुडद गीत कहावै । जी खुडद गीतरी सोळैई प्रत तुकरै आद अंत जमक होय सौ गीत बीजौ झडमुकट कहावै । अेक आगै कह्यौ छै सौ देख लीज्यौ । सावझडौ छै ।

अथ गीत झडमुकट उदाहरण

गीत

रेणायर मथण मथण रेणा यर, भर धर टाळण समर भर ।
कर जन साता जगत अभै कर, वरदाता जांनकीवर ॥
सारंग पांण बांण तन सारंग, धरणसुता धव खग धरण ।
वारण जम भै तारण वारण, करण प्रसुण अघ सुख करण ॥
धर ध्रम चाळण धरम धुरंधर, कमळ पांण मुख चख कमळ ।
नायक अकह जांनुकी नायक, अचळ तार दध जुध अचळ ॥

---

२५८ धका–इच्छा वाकडा–वाँकुरा ।

२५६. जीं–जिम । झमक–यमकानुप्रास । वीजौ–दूसरा ।

२६० रेणायर–समुद्र । मथण–मथन । रेणा–पृथ्वी । यर–शत्रु । भर–वोझ । धर–पृथ्वी । टाळण–दूर करने वाला । समर–युद्ध । साता–कुशल । वरदाता–वरदान देने वाला । जानकीवर–सीतापति, श्रीरामचद्र भगवान । सारग–धनुष । वाण–तीर । सारग–बादल, मेघ । धरण-सुता–सीता । धव–पति । खग–तलवार । वारण–मिटाने वाला । जम–यमराज । भै–भय । तारण–तारने वाला । वारण–हाथी । पाण–हाथ । चख–चक्षु, नेत्र । अचळ–पर्वत । दध–उदधि, समुद्र । अचळ–दृढ, अटल ।

धन अन विलस जनम मांनव धन, म कर ईरखा तन मकर ।
सर पर कियौ चहै व्है जग सिर, धर निज मन रघुवर सधर ॥२६०

अथ गीत दुतीय सेलार लछण

दूहौ

धुर अठार सोळह सरब, सावझड़ौ अध सोय ।
अलंकार विध चतुर तुक, सख सेलारह सोय ॥ २६१

अरथ

अेक सेलार गीत तौ पै'ली कह्यौ अर दूजारौ यौ लछण छै। पै'ली तुक मात्रा अठारै अौर सारी तुका मात्रा सोळै सोळै होय। गुरु लघु तुकंतरौ नेम नही पण गुरु तुकत बोहोत होय। चौथी तुकमे कह्यौ सब्दारथ फेर कहणौ विध-अलकार होय, जी गीतनै दुतीय सेलार गीत कहीजै ।

अथ गीत सेलार उदाहरण

गीत

चित करणी म्रखा दिसी नह चाहै, आप विरदचा पखा उमाहै ।
पतित खीण कुळहीण अपारै, तारै रे सीतावर तारै ॥
कळिया दुख सागर जन काढै, विपत रोग अघ आगर वाढै ।
नातौ दीनदयाळ निहाळै, पाळै रे संतां हरि पाळै ॥
अजामेळ सा घोर अधम्मी, नारी गणिका भील निकम्मी ।
असरण दीन अनाथ अथाहै, साहै रे माधौ कर साहै ॥

---

२६० धन–धन्य । म–नही । ईरखा–इर्ष्या ।

२६१ अध–आधा, अर्द्ध । सोय–वह, उस । सख–कह । सारी–सब । बोहोत–बहुत । जीं–जिस । दुतीय–द्वितीय ।

२६२ म्रखा (मृषा)–असत्य, व्यर्थ । खीण–क्षीण । अपारै–अपार । सीतावर–श्रीरामचद्र । कळिया–डूबा हुआ, मग्न । जन–भक्त । काढै–निकालते हैं। अघ–पाप । आगर–समूह । वाढै–काटते है । नातौ–सवध, रिश्ता । निहाळै–देखते हैं। पाळै–पालन-पोषण करते हैं। अधम्मी–अधर्मी । निकम्मी–बेकार, नीच । साहै–उद्धार करते हैं। माधौ–माधव, विष्णु ।

गाफिल आळ जंजाळ न गावै, भुज सांमळियौ सरम भळावै ।
'किसन' कह जमहूंत म कंपै, जंपै रे मन राघव जंपै ॥ २६२

अथ गीत त्राटकौ लछण

दूहा

धुर अठार सोळह दुती, ती सोळह मिळतेह ।
बेद अग्यार तुकंत बळ, अख गुरु लघु अच्छेह ॥ २६३
मिळै तीन तुक आदरी, त्रिण तुक अंत मिळंत ।
मिळै चवथी आठमी, किव त्राटकौ कहंत ॥ २६४

अरथ

त्राटकरै पै'ली तुक मात्रा अठारै । दूजी तुक मात्रा सोळै । तीजी तुक मात्रा सोळै । चौथी तुक मात्रा अग्यारै । गुरु लघु तुकत होय । पाचमी तुक मात्रा सोळै । छठी तुक मात्रा सोळै । सातमी तुक मात्रा सोळै होय । आठमी तुक मात्रा अग्यारै होय । गुरु लघु तुकत होय । पछै सारा दूहा पै'ली तुक सोळै । दूजी तुक मात्रा सोळै । तीजी तुक मात्रा सोळै । चौथी तुक मात्रा अग्यारै । पाचमी तुक मात्रा सोळै । छठी तुक मात्रा सोळै । सातमी तुक मात्रा सोळै । आठमी तुक मात्रा अग्यारै । पै'ली दूजी तीजीरा मोहरा मिळै । पाचमी छठी सातमीरा मोहरा मिळै । यण रीत होय सौ गीत त्राटकौ कहावै ।

अथ गीत त्राटकौ उदाहरण

गीत

भज रे मन रांम सियावर भूपत, अंग घणाघण सोभ अनूप ।
नीरज जात सुगाथ निरूपित, कौटिक कांम सकांम ॥

---

२६२ सामळियौ—श्रीकृष्ण, श्रीराम । भळावै—सौंप देता है । जमहूत—यमराजसे । कंपै—डरना ।

२६३ दुती—दूसरी । ती—तीसरी । वेद—चौथी, चतुर्थ । अग्यार—ग्यारह । बळ—फिर । अख—कह । अच्छेह—अंतमे ।

२६४ तिण—तीन । चवथी—चौथी । किव—कवि । कहंत—कहते है । पछै—बादमे, पश्चात । मोहरा—तुकबंदी ।

२६५ सियावर—सीतापति, श्रीरामचंद्र । घणाघण—बादल । सोभ—कांति, दीप्ति । अनूप—अद्भुत । नीरज—कमल । सुगाथ—सुन्दर शरीर । कौटिक—करोड़ ।

पीत दूकूळ कटी लपटांणौ, बीर अभंग निखंग बंधांणौ।
अंस अजेव धनू उरमांणौ, रूप यसै नृप रांम॥
सोहत बांम दिसा निज सोता, बादळ बीज प्रभाव वनीता।
पाय खळांहळ गंग पुनीता, की तासै अघ कोड़े॥
लोभत कंज सरभ्र लोयण, भाळ सखी नहचै नर-भोयण।
आहव खंभ विजै जिम औयण, मांणस दोयण मोड़े॥
जै रघुराज जपै जगजाहर, है उर मांझ निवास सदा हर।
सेस धनेस दिनेस रटै सुर, ईखण जे अभिलाख॥
माथ पगां सुरनाथ नमावै, गौरव सारद नारद गावै।
पार गुणां करतार न पावै, सौ स्रुति संप्रत साख॥
मारुति जेण कियौ अजरामर, केकंध भूप सुकंठ दियौ कर।
रीझ भभीखण लंक नरेसुर, की जन सारै काज॥
ऊ करसी चित सोच असंन्नह, सास उसास संभार रसंन्नह।
कीरत स्रीवर भाख 'किसन्नह', राख रिदे रघुराज॥२६५

अथ गीत मनमोह लछण

दूहौ

कह दूहौ पहला सुकव, कड़खा ता पर कथ्थ।
पंथ प्रगट कड़खौ दुहौ, सौ मनमोह समथ्थ॥ २६६

---

२६५ पीत–पीला। दूकूळ–वस्त्र। लपटाणौ–आवेष्ठित। निखग–तर्कश। धनू–धनुष। सोहत–शोभा देती है। बाम–बाया। दिसा–तरफ, ओर। बीज–बिजली। वनीता–स्त्री। पाय–चरण। खळाहळ–जलप्रवाहकी ध्वनि। गग–गगा नदी। पुनीता–पवित्र। लोभत–लोभायमान होते हैं। कज–कमल। लोयण–लोचन, नेत्र। भाळ–देख। नहचै–निश्चय। नर-भोयण–नर लोक। आहव–युद्ध। औयण–चरण। माणस–मनुष्य। दोयण–शत्रु। माझ–मध्य। हर–महादेव। धनेस–कुबेर। दिनेस–सूर्य। सुर–देवता। ईखण–देखनेकी। अभिलाख–अभिलाषा, इच्छा। माथ–मस्तक। पगा–चरणो। सुरनाथ–इन्द्र। गौरव–यश। सारद–सरस्वती। मारुति–हनुमान। जेण–जिस। अजरामर–वह जो न तो वृद्ध हो और न मरे, अमर। केकध–किष्किधा। सुकठ–सुग्रीव। रीझ–दान। भभीखण–विभीषण। ऊ–वह। असन्नह–भोजन। रसन्नह–जीभ। भाख–कह। रिदे–हृदय।

२६६ ता–उस। कथ्थ–कह।

अरथ

पै'ला तौ अेक दूहौ कहीजै। पछै दूहा ऊपर कडखा छदरी च्यार तुका कहीजै। यण तरै अेक अेक दूहौ वणै। यसा च्यार दूहा होवै जिण गीतरौ नाम मनमोह कहीजै। दूहारी तुक प्रत मात्रा तेरै। ग्यारै, तेरै, ग्यारै कडखारी तुक प्रत मात्रा सैंतीस होय। दूहा कडखारी लछ्रण यण ग्रथमे प्रसिध छै सौ देख लीज्यौ।

अथ गीत मनमोह उदाहरण

गीत

तारै दासां त्रिकमाह, भय वारै जम भूप।
हूं बळिहारी स्रीहरी, रै थांने निज रूप॥
रूप थारौ हरि हरि भूप त्रयलोकरा।
मांझ अनूप त्रैभू न मावै॥
नाग नर देव भूपाय आहुट नथो।
गणो बळदाब तळ वेद गावै॥
दास तन भजन विन तौ सबी दासरथ।
थिरू बस कौड़ बाते न थावै॥
देवपत रूप वैराट थारौ दुगम।
अणु मन सेवगां सुगम आवै॥
आवै तूं ऊतावळौ, पावै दास पुकार।
धारण गिर ज्यूं धांमियौ, बारण तारण बार॥
वार वारण तिरण करण कारण विसन।
घरण तज तरण ब्रद चीत घालै॥

---

२६७ त्रिकमाह (त्रिविक्रम)–विष्णुका एक नाम। वारै–दूर करता है। माझ–मध्य, मे। त्रैभू–तीन भवन, त्रिभुवन। देवपत–विष्णु। वैराट–महान, बडा। दुगम–दुर्गम। सुगम–सरलता से। ऊतावळौ–शीघ्रतासे। पावै–प्राप्त करता है। बारण–हाथी। बार–अवसर, समय। विसन–विष्णु। घरण–गृहिणी, स्त्री।

मंद लख वाह सुपरण तजे मागमें ।
चरण ऊबांहणौ धरण चाले ॥
हरण नक्रण वहै सुदरसण हरोली ।
पाय तंता गरण छिद अपाळै ॥
खंड जळचार गिरधार आरत खटक ।
झटक करतार करतार झाले ॥

झाले भुजडंड झूसरी, मार झुंड यर मांण ।
भांज रांम कोडंड भव, प्रचंड खित्रीवट पांण ॥

पांण खित्रीवट अघट मित्र जग पाळियौ ।
रिख त्रिया तिरी रिखदेव रंजे ॥
जांनकी व्याह ऊछाह पण धनुख जिग ।
सुज नृपत अनग आरंभ संजे ॥
लसै बळ भूप अन जनक मन दुमन लख ।
भुजां बळ दासरथ चाप भंजे ॥
बांण दसमाथ भ्रगुनाथ दे आद बोह ।
गाव रघुनाथ खळ साथ गंजे ॥

गंजे रिम केतां गरब, धार सरब ब्रद घेठ ।
दे कौड़ां दुजबर दरब, जीत परब जग-जेठ ॥

---

२६७ वाह–गति, चाल, वाहन । सुपरण–गरुड । मागमें–मार्गमे । ऊबाहणै–बिना वाहन या बिना पैरोंमे जूती पहने हुए । धरण–भूमि । हरण–मिटाने को । नक्रण–मगर, घडियाल । सुदरसण–सुदर्शन चक्र । हरोली–अग्र, अगाडी । झटक–शीघ्र । भांज–तोड कर । कोडण्ड–धनुष । भव–महादेव । खित्रीवट–क्षत्रियत्व । पांण–बाहु, भुजा, हाथ । अघट–अपार । मित्र–विश्वामित्र । जग–यज्ञ । पाळियौ–रक्षा की । रिख–ऋषि । त्रिया–स्त्री । रजे–प्रसन्न हुए । व्याह–विवाह । पण–भी परन्तु । धनख–धनुष । जिग–यज्ञ । लसै–शोभा देते हैं । अन–अन्य । दुमन–खिन्न, उदासीन । लख–देख कर । दासरथ–श्रीरामचद्र भगवान । चाप–धनुष । बाण–बाणासुर राक्षस । दसमाथ–रावण । भ्रगुनाथ–परशुराम । आद–आदि । बोह–वहुत । खळ–असुर । साथ–समूह । गजे–नाश किया, मिटाया । रिम–शत्रु । केतां–कितनोका । गरब–गर्व । ब्रद–विरुद । घेठ–जबरदस्त । कोडा–करोडो । दुजबर–ब्राह्मण । दरब–धन, द्रव्य । परब–उत्सव, यज्ञ । जग-जेठ–ईश्वर, श्रीरामचद्र भगवान ।

जेठरा भांण सम असह बरफांण जम ।
मांण दुजरांण असहांण मारे ॥
किता जुध जीत अग जीत नहचळ कदम ।
सेवगां प्रीत कर काज सारे ॥
रोपियां दास यर जास कीधा सरद ।
धींग रविवंस भुज विरद धारे ॥
रटै कवि 'किसन' महराज तन लाज रख ।
तेण रघुराज के संत तारे ॥ २६७

दूजा दूहारो अरथ

वांणी धारी आरतरी जिण खटक क्रोध पर जळचर ग्राहनै खड्यौ नै करतार कर झाले हाथ पकड़नै कर हाथीनै तार्यो झटक सतावीसूं—इति अरथ ।

अथ गीत ललितमुकट लछण

दूहौ

प्रथम दूहौ कर तास पर, दाख त्रिभंगी छंद ।
ललित मुकट जिम सीहलख, कह जस रांम कव्यंद ॥ २६८

अरथ

पै'ली दूहौ कहीजै । जठाउपरांत दूहा पर त्रिभंगी छंदरी तुक च्यार कहीजै । यण तरै च्यार ही दूहा होय । सिंघावलोकण तरै तुक होय जिण गीतरी नाम ललितमुकट कहीजै । दूहारो नै त्रिभगी छंदरो लछण यण ग्रंथमे प्रसिद्ध छै जिणसूं अठै दूहारो नै त्रिभगीरो लछण न कह्यो छै ।

---

२६७. जेठरा—जेष्ठ मासका । भांण—सूर्य । सम—बराबर, समान । असह—शत्रु । बरफांण—बर्फ, हिम । जम—एकत्रित । मांण—गर्व । दुजराण—परशुराम । असहांण—शत्रु, शत्रु राजा । अगजीत—विजयी । नहचळ—निश्चल, अटल । कदम—चरण । सेवगां—भक्तों । प्रीत—प्रीति, प्रेम । काज—काय । सारे—सफल किये । यर—शत्रु । कीधा—किये । सरद—पराजित । धींग—जबरदस्त, समर्थ । तेण—उस । के—कई । तारे—उद्धार किये । वांणी—पुकार । आरतरी—दुखीकी । खटक—क्रोध । खड्यौ—भाग । सतावी—शीघ्र ।

२६८. तास—उस । दाख—कह । सीहलख—सिंहावलोकन । कव्यंद (कवीन्द्र)—महाकवि । जठाउपरांत—तत्पश्चात । यण—इस । तरै—तरह, प्रकार ।

अथ गीत ललित मुकट उदाहरण

गीत

वडा भाग ज्यांरी विसू, लछबर चरणां लाग ।
पाव रांम गुण प्रीतसूं, आठ पहर अनुराग ॥
राघव अनुरागी भव बडभागी मति सुभ लागी पंथमही ।
हरि संत कहांही जम भय नांही स्यंध तिरांही सुभ वसही ॥
कहि सिव सनकादं धू प्रहळांद अहपत आद जेण जपै ।
सुक नारद व्यासं जल कहि जासं थिर कर तासं दास थपै ॥
थपे दास कर सथर, रघुबर किता अरोड़ ।
बिरद पीत 'सागर' बिये, मोततणैकुळ मौड़ ॥
मौड़ कुळमीता जुध अरि जीता, लख जस लीता अवन अखै ।
अत दास उधारे सरण-सधारे रांमण मारे सुमन सखै ॥
सुग्रीव सकाजा रच कपिराजा भूपत निवाजा भ्रात भणे ।
भुरजास भभीखण क्रत दत कंचण साख पुरांणण वेद सुणे ॥
सुणे छकोटा तन सुजस, रिम दोटा सुर रंज ।
धन राघव मोटा धणी, भव जन तोटा भंज ॥

---

२६६ ज्यारी–जिनकी । विसू–भूमि । लछबर–लक्ष्मीपति । गुण–यश । अनुराग–प्रेम । अनुरागी–प्रेमी । भव–ससार, जन्म । बडभागी–बडा भाग्यशाली । मति–बुद्धि । जम–यमराज । स्यध (सिंधु)–समुद्र । धू–भक्त ध्रुव । अहपत–शेषनाग । आद–आदि । जेंण–जिसको । जास–जिसका । थिर–स्थिर, दृढ । तास–उसको । दास–भक्त । थपै–स्थापित करता है । थपे–स्थापित किये । सथर (स्थिर)–अटल । किता–कितने । अरोड–जबरदस्त । सागर–सूर्यवशी एक राजाका नाम । बिये–वशज, दूसरा । मोततणैकुळ–सूर्यके वशका । मौड–श्रेष्ठ । कुळमीता–सूर्यवश । अवन–पृथ्वी, ससार । अखै–कहता है । अत–बहुत । सरण-सधारे–शरणमे आए हुएकी रक्षा की । सुमन–देवता । सखै–साक्षी देते है । क्रत–किया । दत–दान । कचण–सुवर्ण, सोना । छकोटा–समूह, पुंज । रिम–शत्रु । दोटा–नाश । सुर–देवता । रज–प्रसन्न कर । भव–ससार, जन्म । तोटा–कमी, अभाव, हानि । भज–नाश ।

तूं भंजरा तोटा अनम अंगोटा जुध यर जोटा जै वाणं।
रिख गोतम नारी उपळ उधारी देह सुधारी देवाणं॥
पय मिथुला पथ्थं साभ्क समथ्थं हरा धनु हथ्थं पह पांणे।
सिय परण सिधाये दुजपत आये गरब गमाये जग जांणे॥

जग जांणै बळ जगतपत, कुळ हांणे दसकंध।
सुख गिरबांण समपिया, आंणे सिया उकंध॥

आंणे सिय उकंध जीपण जंगं रूप अभंगं दासरथी।
आकाय अनंतं तारण संतं क्रीत सुमंतं वेद कथी॥
न भजै रघुनंदं दयासमंदं जे मतमंदं जांण जडा।
गुण राघव गाणै 'किसन' कहांणै विच प्रथमांणे भाग वडा॥२६९

अथ गीत मुकताग्रह लछण

दूहौ

कह प्रहास सांणोर किव, अंत विखम सम आद।
तुक सिघाविलोकरण तिम, मुकताग्रह मुरजाद॥ २७०

अरथ

प्रहास साणोर कहौ तथा गरभित साणोर कहौ जिण प्रहास साणोररी

---

२६९ भजण–नाश करने वाला। अनम–नही नमने या मुडनेका भाव। अगोटा–अगुण्ठ। यर–शत्रु। जोटा–समूह। उपळ–पत्थर। उधारी–उद्धार किया। देवाण–देवता। पय–चरण। पथ्थ–मार्ग। समथ्थ–समर्थ। हण–नाश कर। धनु–धनुष। हथ्थ–हाथ। पह–प्रभु। पांणे–शक्तिसे, बलसे। परण–विवाह कर। सिधाये–प्रस्थान किया। दुजपत–परशुराम। गरब–गर्व। गमाये–नाश किया। जग–समार। बळ–शक्ति। जगतपत–ईश्वर, श्रीरामचद्र भगवान। हाणे–नाश किया। दसकध–रावण। गिरबांण–देवताओको। समपिया–दिया। उकध–उद्धरस्कध। जीपण–जीतनेको। जग–युद्ध। दासरथी–श्रीरामचन्द्र भगवान। आकाय–शक्ति, वल। अनत–अपार, ईश्वर, श्रीरामचद्र। क्रीत–कीर्ति। रघुनद–श्रीरामचद्र। दयासमद–दयासागर। जे–वे, जो। मतमद–मतिमद, मूर्ख। विच–बीच। प्रथमाणे–पृथ्वीमे, ससारमे।

२७०. किव–कवि। मुरजाद–मर्यादा।

विखम तुक कहनां पै'ली तीजी नै सम तुक कहता दूजी चौथो पै'ली तुकरौ अंत नै सम तुकरौ आद होय जठे स्यघावलोकण तरै होय, जिणनै मुकताग्रह गीत कहीजै ।

अथ गीत मुकताग्रह उदाहरण

गीत

सुतण दासरथ रूप लसवांन कौटक समर ।
समर जसवांन नृप सियासांमी ॥
तवंतां नांम नसवांन अघ भवतणा ।
भवतणा हिया वसवांन भांमी ॥
चीत ऊदार दत कनक आपण चुरस ।
चुरस निज जनक कुळ आब चाड़ा ॥
घड़च दससीस खळ रहण हिकधारणा ।
धारणा धनख सर भुजा धाड़ा ॥
लोभियां क्रीत कज गंज समपण लछी ।
लछीवर सराहे त्रिहूं लोका ॥
खेध अह पूंज विमुहा खड़ै भाट खग ।
भाट खग थाट यर भंज भोका ॥

---

२७० जठे–जहां । स्यघावलोकण–सिंहावलोकन । तरै–तरह ।

२७१ सुतण–पुत्र । लसवान–शोभायमान । कौटक–करोडो । समर–कामदेव । समर–युद्ध । जसवान–यशपूर्ण, यशस्वी । सियासामी–श्रीरामचद्र । तवता–कहने पर । नसवान–नाश । अघ–पाप । भवतणा–जन्मके, ससारके । भवतणा–महादेवके । हिया–हृदय । वसवान–निवास करने वाला । भामी–न्योछावर, बलैया । चीत ऊदार–चित्त उदार, दातार । दत–दान । कनक–सुवर्ण, सोना । आपण–देनेको, देने वाला । चुरस–चाहसे, इच्छासे, हर्ष, प्रसन्नता । चुरस–श्रेष्ठ । जनक–पिता । आब–काति, दीप्ति । चाडा–चढाने वाला । घडच–सहार कर, मार कर । दससीस–रावण । हिकधारणा–एक ही तरह । धारणा–धारण करने वाला । धनख–धनुष । सर–तीर, बाण । धाडा–धन्य-धन्य । लोभिया–लोभ करने वाले । कज–लिये । गज–पु ज, समूह । समपण–देने को । लछी–लक्ष्मी । लछीवर–लक्ष्मीपति, विष्णु । सराहे–प्रशसा करते है । खेध–द्वेष । अह–नाग, हाथी । पू ज–समूह । विमुहा–विमुख । भाट–प्रहार । खग–तलवार । थाट–समूह, दल । यर–शत्रु । भोका–धन्य-धन्य ।

संत जण तरण चख क्रपा रुख साहरै ।
साह रे विरद भुजडंड सिघाळा ॥
वीस भुज भांजणा समर हथवाह रे ।
वाह रे रांम अवधेस वाळा ॥ २७१

अथ गीत पखाळौ लछण

दूहौ

छोटा वडा सांणोर रौ, नेम नहीं नहचेण ।
निमंधे त्रिण दूहा निपट, तवै पंखाळौ तेण ॥ २७२

अथ गीत पखाळौ उदाहरण

गीत

दसरथ नूप नंदण हर दुख दाळद, मिटण फंद जांमण मरण ।
कर आणंद वंद नित 'किसना', चंद रांम वाळा चरण ॥
दीनानाथ अभै पद दानंख, भांनख अंतक समर भर ।
मांनख जनम सफळ कर मांगण, धांनखधर पद सीसधर ॥
सुरसर सुजळ नूमळ संजोगी, दळ मळ अघ ओघी दुख दंद ।
साझ कमळ पद रांम असोगी, मन अलियळ भोगी मकरंद ॥२७३

अथ दुतीय वरण उपछद गीत सालूर लछण

दूहा

धुर बे गुरु चौवीस लघु, अंत सगण तुक अेक ।
सावझड़ौ यम च्यार तुक, विध सालूर विवेक ॥ २७४

---

२७१. जण–भक्त । चख–नेत्र । साह–आपके । साह–धारण करता है । सिघाळा–वीर । वीस-भुज–रावण । भाजणा–सहार करने वाला । समर–युद्ध । हथवाह–प्रहार । वाह रे–धन्य है ।

२७२ नेम–नियम । नहचेण–निश्चय । निमधे–रचे, वनाये । त्रिण–तीन । तवै–कहते हैं ।

२७३ नदण–पुत्र । हर–मिटा । दाळद–कगाली । फद–वधन, जाल । जामण–जन्म । मरण–मृत्यु । मानख–मनुष्य । मागण–याचक । धानखधर–धनुषधारी । सुरसर–गगा नदी । नूमळ–निर्मल । अघ–पाप । ओघी–समूह । अलियळ–भौरा । भोगी–भोग करने वाला, रमास्वादन करने वाला । मकरद–फूलोका रस ।

२७४ यम–ऐसे । विघ–प्रकार, तरह ।

यक तुक गुणतीसह अखिर, जांण वरण उपछंद ।
वरण व्रतरा अंत विच, कहियौ अगर कविंद ॥ २७५

अरथ

सालूर गीत वरण उपछद छै । तुक अेक प्रत गुणतीस अखिर होवै । पै'ली दोय गुरु होवै । पछै चौबीस लघु होवै । पछै अेक सगण होवै । यौ ईं गीतकौ सचौ छै । ऽऽ ।।।। ।।।। ।।।। ।।।। ।।।। ।।।। ।।ऽ अेक करण, छ दुजवर, अेक सगण, यौ अेक तुक प्रमाण, यूं पनरै तुका होवै । अेक दूहा प्रत तुक च्यारका मोहरा मिळै, सावझड़ौ छै । यौ गीत वरण व्रतमे वरण छदामे सालूर छद कह्यौ छै सौ देख लीज्यौ ।

अथ गीत सालूर उदाहरण

गीत

माया मत भिद सम हण भव दुसतर ।
तरण मनव सुण सर समझौ ॥
सीतापत सुमर सुज अहनिस ।
सुतन लहण फळ सुमन सझौ ॥
लाखां छळ कपट झपट झणवट ।
लख ललच मुचत लत करण लजौ ॥
भूपाळ धनखधर म धर अडर जग ।
अवर करत तज सु हर भजौ ॥ २७६

ईं प्रकार दुतीय सालूररा च्यार ही दूहा जाणणा

अथ गीत भाख मात्रा छद लछण

दूहौ

ले धुरहूं तुक सोळ लग, चवदह मत्त सवाय ।
सावझड़ौ तुक अंत लघु, भाख गीत यण भाय ॥ २७७

---

२७५ यक–एक । अगर–अगाडी, पहिले । कविंद–कवि । यौ–यह । ईं–इस । सचौ–छद रचनाका नियम । करण–दो गुरु मात्राका नाम । दुजवर–चार लघु मात्राका नाम ।

२७६ अहनिस–रातदिन । सुमन–देवता, श्रेष्ठ मन । झणवट–अपार ।

२७७ लग–तक, पर्यन्त । मत्त–मात्रा । यण–इस । भाय–मगर, प्रकार ।

अरथ

पै'ली तुकसू लगायनै सोळै ही तुका ताई तुक अेक प्रत मात्रा चवदै होय। अंत लघु होय। च्यार तुकारा मोहरा मिळै, सावभडी, जिण गीतरी नांम भाख कहीजै। इति भाख नांम गीत निरूपण। भाख गीतरी दोय तुकारा मोहरा मिळै सौ अरधभाख कहीजै—यणनै गजल पिण कहै छै।

अथ गीत भाख उदाहरण

गीत

सुंदर सोभत घणस्यांम, तड़िता पट-पीत छिब तांम।
वांमे अंग सीता वांम, रूप अनंग कौटिग रांम॥
निज कटि सुघट तट तूनीर, सर धनु सुकर धार सधीर।
भंजण कौड़ संतां भीर, रे मन गाव स्री रघुबीर॥
विध त्रिपुरार रिख पाय बंद, सरणसधार करणसमंद।
कह गुण गाथ 'क्रिसन' किवंद, नाथ अनाथ दसरथनंद॥
कवसळ सुता राजकुमार, अबखी बखत सुजन अधार।
सुसबद कियौ तिण मत विसार, जीता जिकै नर जमवार॥२७८

अथ गीत अरधभाख लछण

दूहौ

भाख गीत तुक कवि भणै, मोहरा दोय मिळंत।
अरध भाख जिणनूं अखै, कोइक गजल कहंत॥२७९

२७७. ताई—तक, पर्यन्त। तुक प्रत—प्रत्येक। मोहरा—तुकबंदी। निरूपण—निर्णय। पिण—भी।

२७८. तड़िता—बिजली। पट-पीत—पीताम्बर। छिब—शोभा, कांति। वांमे—बांया। वाम—स्त्री। अनंग—कामदेव। कौटिग—करोड़। कटि—कमर। सुघट—सुंदर। तूनीर—तर्कश। सर—बाण, तीर। धनु—धनुष। सुकर—श्रेष्ठ हाथ। भंजण—मिटाने वाला। भीर—संकट, कष्ट। विध (विधि)—ब्रह्मा। त्रिपुरार—त्रिपुरारि, शिव। रिख—ऋषि। पाय—चरण। बंद—वंदन करते है। सरणसधार—शरणमें आए हुएकी रक्षा करने वाला। करणसमंद—करुणासागर। गाथ—कथा, वर्णन। किवंद—कवींद्र, कवि। अबखी—कष्टप्रद, भयावह, संकटका। बखत—समय। सुजन (स्वजन)—भक्त। अधार—सहारा, आश्रय। सुसबद—यश। तिण—उस, जिस। मत—बुद्धि। जमवार—जीवन, जिंदगी, यमराजका प्रहार या वार।

अथ गीत अरधभाख उदाहरण

गीत

पर हर अवर धंध अपार, भज नित जांनुकी भरतार ।
करमत कलपना मन कोय, हरि बिण बिये मुकत न होय ॥२८०

अरथ

लखपतपिंगळ मध्ये छंद उधोर जीरी च्यार तुकारौ अेक दूहौ सोही गीत भाख । इति अरथ ।

अथ गीत जाळीबंध बेलियौ साणोर लछण

दूहा

आद अठारै पनर फिर, सोळ पनर क्रम जेण ।
अंत लघु सांणोर कहि, तवै वेलियौ तेण ॥ २८१
नव कोठां मझ अेक तुक, लखजै चित्त लगाय ।
उरध अधबिचलौ आखर, दौवड़ वंच दिखाय ॥ २८२
लखियां दीसै नव अखिर, ऊचरियां अगीयार ।
जाळीबंध जिण गीतरौ, नांम सुकव निरधार ॥ २८३

अरथ

जाळीबंध गीत वेलियौ साणोर होवै । जिणरै पै'ली तुक मात्रा अठारै । दूजी तुक मात्रा पनरै । तीजी तुक मात्रा सोळै । चौथी तुक कहौ अथवा पाछली तुक मात्रा पनरै होवै । पाछला तीन ही दूहा पै'ली तुक मात्रा सोळै । दूजी तुक मात्रा पनरै । तीजी तुक मात्रा सोळै अर चौथी तुक मात्रा पनरै होवै । ईं क्रमसू होवै । अंत लघु होवै सौ वेलियौ साणोर जीकौ जाळीबंध वणै । जाळीबंधरै

---

२८० अवर(अपर)—अन्य । धंध—धंधा, कार्य । कलपना—विचार । बिये—दूसरेसे । मुकत—मुक्ति, मोक्ष ।

२८१ अठारै—अठारह । पनर—पनरह । सोळ—सोलह । जेण—जिस । तवै—कहते हैं । तेण—उसको ।

२८२ कोठा—कोष्ठको । मझ—मध्य । उरध—ऊपर । अधविचलौ—मध्यका, बीचका । दौवड—दोनो ओर । वंच—पढनेकी क्रिया ।

२८३ ऊचरिया—उच्चारण करने पर । अगीयार—ग्यारह । निरधार—निश्चय । ईं क्रमसू—इस क्रममे ।

तुक एक प्रत कोठा नव होवै । लिखता आखर कोठामे न दीसै । सूधी ओळा आखर लेखैतौ अग्यारै होवै । नव कोठारै माहै ऊपरलौ नै हेठलौ विचाळा दोय कोठारा दोई आखर दोय वेळा वचै सौ गीत जाळीबध साणोर चित्रकाव्य कहीजै ।

अथ जाळीबंध गीत वेलियौ साणोर उदाहरण

गीत

साखी रे भांण नसापत सारै, कीध महाजुध कीत सकांम ।
साच तकौ कज साधां सारत, राच महीप सु रांमण रांम ॥
दासरथी सुखदाई सुंदर, नमै पगां सुर नर आनूप ।
नरकां मिट जन तारै नकौ, भाख पयोध प्रभाकर भूप ॥
पती-सीत भूतप परकासी, वासी सिव उर वास विसेस ।
आपी तसां लंक आसत अत, नरा सत्र हण नमौ नरेस ॥
कळ नावै नेड़ौ कह 'किसन, आव थरु सुख आसत आथ ।
दख नांके जैरै दन अदना, नाथ थयां समना रघुनाथ ॥२८४

---

२८३. सूधी—सीधी । ओळा—पक्तियो । लेखै—नियमसे, हिसावसे । अग्यारै—ग्यारह । ऊपरलौ—उपर्युक्त, ऊपरका । हेठलौ—नीचेका । बिचला—मध्यका । वचै—पढे जाय ।

२८४ साखी—साक्षी । भाण—सूर्य । नसापत—चद्रमा । कीध—किया । तकौ—वह । कज—काम । सारत—सफल करता है । राच—लीन हो । महीप—राजा । दासरथी—श्रीरामचद्र भगवान । सुखदाई—सुख देने वाला । सुर—देवता । नकौ—कोई नही । भाख—कह । पयोध—समुद्र । प्रभाकर—सूर्य, चन्द्रमा । पत-सीत (सीतापति)—श्रीरामचद्र भगवान । वासी—निवास करने वाला । सिव (शिव)—महादेव । आपी—दी, प्रदानकी । तसा—हाथो । लक—लका । आसत—शक्ति, वल । अत—अति । सत्र—शत्रु । हण—नाश करने वाला । कळ—पाप, कलयुग । नेडौ—निकट । आथ—धन-दौलत । दख—दुख । जैरै—नाश करे । दन—दिन । अदना—वुरा, खराव । थया—होने पर । समना—अनुकूल, प्रसन्न ।

दवाळा १	न	सा	प	घ	की	त	ज	सा	धा	सु	रा	म
	ण	खी	त	जु	ध	स	क	च	सा	प	च	ण
	भा	रै	सा	हा	म	का	कौ	त	र	ही	म	रा
दवाळा २	ख	दा	ई	र	न	र	ज	न	ता	प्र	भा	क
	सु	स	सू	सु	मैं	श्रा	ट	र	रे	घ	ख	र
	थी	र	द	गा	प	नू	मि	का	नै	यो	प	भू
दवाळा ३	त	प	प	र	वा	स	क	श्रा	स	ण	न	मो
	भू	ती	र	ऊ	सी	वि	ल	पी	त	ह	रा	न
	त	सी	का	व	स	से	सा	त	श्र	त्र	स	रे
दवाळा ४	डो	क	ह	ख	श्रा	स	रै	द	न	म	ना	र
	नै	ळ	कि	सु	व	त	जै	ख	श्र	स	थ	घु
	वं	ना	स	रु	थ	श्रा	कौ	ना	द	या	थ	ना

अथ गीत गहाणी वेलियौ साणोर लछण

दूहा

गाहा लछण ग्रंथरै, वदियौ श्राद विचार ।
सुज बेलियौ सांणोररौ, लिखियौ लछण लार ॥ २८५

पहली गाहौ पर वजै, गीत दूहौ यक पच्छ ।
फिर गाहौ दूहौ सुफिर, गीततणौ दख दच्छ ॥ २८६

च्यारूं गाथा गीतरा, च्यार दूहां धुर तथ्थ ।
गाहा सामिळ गीत जिण, नांम गहांणी कथ्थ ॥ २८७

२८५ लछण–लक्षण । वदियौ–कहा । श्राद–श्रादि, शुरूश्रातमे । सुज–श्रौर । लार–पीछे ।

२८६. यक–एक । पच्छ–पश्चात । गीततणौ–गीतका । दख–कह ।

नोट— –प्राचीन राजस्थानीमे पूर्ण विराम का चिन्ह ।

अरथ

वेलिया साणोर गीतरा दूहा दूहा प्रत आद गाथौ होय। च्यार ही गीतरा दूहारै आद च्यार गाथा होय। क्यूक गाथारी चौथी तुकरा अखिरारौ आभास गीतरी पै'ली तुकमे होय। गाथौ नै गीत सामिळ छै जिणसू गीतरौ नांम गहाणी छै। मात्रा दंडक छद छै। गहाणी तथा गाथारौ लछण पै'ली ग्रथमे कह्यौ छै नै वेलिया साणोर गीतरौ पण लछण कह्यौ छै जिणसू अठै लछण न कह्यौ छै।

अथ गीत गहाणो उदाहरण

गीत

नर नह ले हरि नांम, जड़िया जंजीर कौड़ अघ जीहा।
नर ले राघव नांम, ज्यां सिर रांम अनुग्रह जांणौ॥
सिर ज्यांरै जांण अनुग्रह स्रीवर, चरणकमळ चींतवण सचेत।
पातक दहणतणौ गह पैंडौ, हरिहर कहणतणौ मन हेत॥
सह पढियौ गुण सार न, नह पढियौ हेक नांम रघुनायक।
पढ पसु नांम प्रकार, पेखौ जे मांनवी पायौ॥
पढ खट भाख संसक्रत पिंगळ, सुकवी वणौ समझ गुण सांम।
प्रांणी रांम नांम विण पढियां, निज पढ पसु धरायौ नांम॥
सुरसरी राघव सुजस, मंजण जिण कीध सुध चित मांनव।
तीरथ अड़सठ तेण, बोलै स्रुत लाभ ग्रह बासत॥
बोलै बेद लाभ ग्रह बासत, तीरथ अड़सठ सुफळ तयार।
निज मन हुलस सांपड़ै जे नर, जस रघुबर सुरसरी मझार॥
वदन सुरस ना वांणी, सिर लोयण उदर हाथ पग सहता।
जस तिलक लख पै जळ, जुइ फिर रांम पवितर जेण॥

---

२८८ जडिया—जटित किये। अघ—पाप। जीहा—जीभ। अनुग्रह—कृपा, दया। स्रीवर—(श्रीवर) विष्णु, श्रीरामचद्र। पातक—पाप। दहणतणौ—जलाने वालेका। गह—पकड। पैंडौ—मार्ग, पीछा। कहणतणौ—कहनेका। पेखौ—देखो, देखिए। सुरसरी—गगा नदी। मजण—स्नान। हुलस—प्रसन्न होकर, हर्षपूर्वक। सापड़ै—स्नान करते हैं। जे—जो, अगर, यदि। मझार—मध्य। लोयण—नेत्र। सहता—सहित। पै—चरण। पवितर—पवित्र। जेण—जिस।

दीध प्रदछ्‌ण हाथ जोड़ न हरि, चरणाम्रत दरस निहार।
करै तिलक राघव जस किता, जीता 'किसन' जिके जमवार ॥२८८

अथ गीत घणकठ सुपखरौ लछण

दूहा

पहल अठारह बी चवद, सोळ चवद लघु अंत।
आद अंत गिणती अखर, गुण सुपंखरौ गिणंत ॥ २८९
कंठ सुपंखरा बीच कह, आठ प्रथम बी सात।
आठ सात क्रम यण अधिक, नावै कंठ निघात ॥ २९०
आद कंठ चव अक्खिरां, अंत दोय ठहराव।
यौ सुबंध घट अक्खियां, बिगड़ै कंठ वणाव ॥ २९१

अरथ

सुपखरौ गीत वरण छद छै जिकै तुक प्रत आखिर गिणती। पै'ली तुक वरण अठारै। दूजी तुक वरण चवदै। तीजी तुक वरण सोळै। चौथी तुक वरण चवदै होवै। पाछला दूहारा वरण सोळै चवदै सोळै चवदै ईं क्रमसू होवै, जीसू सुपखरा गीतमे कठको हद कहै छै। पै'ली तुकमे कठ आठ होय। दूजी तुकमे कठ सात होय। तीजी तुकमे कंठ आठ होय। चौथी तुकमे कठ सात होय। अठा आगै कठ न होय। च्यार ही आखरारौ कठ तौ उरलौ होय। अठा सवाय आखर आया कठ सिथळ होय। दोय अखिरसू कठ घटतौ न होय। दोय अखिरसू कठकी हद छै सो दरसाई छै। पछै पाछला दूहा मे कठ घाट-बाध छै। घणा कठामे कारण कारज सारथक आवै नही। थोडा कठामे कारण कारज सारथक आवै। घणा कठासू तुक आछी वणै नही। समभाव कठसू तुक रूप पावै।

---

२८८ दीध–दी। प्रदछण–प्रदक्षिणा। दरस–दर्शन। निहार–देख कर। किता–कितने। जमवार–जीवन, यमराज का प्रहार।

२८९ बी–दूसरी। चवद–चौदह। सोळ–सोलह। गुण–काव्य, कविता, गीत। गिणत–गिनते हैं, समझते है।

२९० कठ–अनुप्रास। निघात–अधिक।

२९१ चव–चार। अक्खिरा–अक्षरो। घट–कम। वणाव–रचना, बनावट। पाछला–पीछेके। हद–सीमा। अठा आगै–इससे अगाडी। उरलौ–चौडा, विस्तारपूर्ण। घटतौ–कम। घाट-बाद–कम-अधिक। पावै–प्राप्त करे।

अथ गीत घणकठ सुपखरो उदाहरण

गीत

कार कार खार बार धार सुरार संघार कार ।
प्यार राख मार छार कार बार पार ॥
डार गार लार लार चार हार भार डार ।
बार नार तार सार धार बार बार ॥
सुराळ नराळ व्याळ आळ पाळ ढाळ सक्र ।
सिघाळ अकाळ काळ टाळ वेद साख ॥
आळ पाळ बंधमां विसार रे जंजाळ आळ ।
दयाळ विसाळ भाळ विरदाळ दाख ॥
भांम गांम धांम ठांम ठहांम नकूं आंम ।
तमाम निहार सांम ले अरांम तांम ॥
दांम दांम विसार निकांम भौड़ ह्वै उदांम ।
नरां जांम जांममें उचार रांम नांम ॥
पनंगेस धरेस सुरेस तेस सभ्भै पेस ।
भूतेस विसेस च्ंितवेस ध्यांन भेस ॥
जीतेस अरेस बंध सेस क्रीत जपौ जेस ।
'किसनेस' कवेस नरेस कौसळेस ॥ २९२

२९२ कार—सीमा, मर्यादा । खार बार धार— समुद्र । सुरार—राक्षस । संघार—संहार । कार—करने वाला । मार छार कार—महादेव, शिव । डार—समूह । लार लार—पीछे-पीछे । बार नार—गणिका । बार नार तार—वेश्याको तारने वाला, ईश्वर । सुराळ—देवता । व्याळ—सर्प । सक्र—इन्द्र । सिघाळ—श्रेष्ठ । काळ—मौत । साख—साक्षी । जंजाळ आळ—संसारका प्रपंच । दयाळ—दया करने वाला । विरदाळ—विरुदधारी । दाख—कह । भांम—स्त्री । तमाम—सब । विसार—भूल जा । निकांम—व्यर्थ । भौड—टंटा, कळह । जांम जांममे—याम याममे । पनंगेस—शेषनाग । धरेस—सुमेरु पर्वत, राजा । सुरेस—इन्द्र । भूतेस—महादेव, शिव । च्ंितवेस—चिंतन करते हैं । जीतेस—जीतने वाला । अरेस—शत्रु । सेस—लक्ष्मण । कवेस—कवीश, महाकवि । नरेस—राजा । कौसळेस—श्रीरामचंद्र भगवान ।

अरथ

कठ साकडा छै। गीतरा पहला दूहारा जी तावै पहला दूहारौ अरथ लिखा छा। तुक पै'ली अरथ स्रीरामचद्र किसाक छै। अरथ अन्वयसू लागसी। खार बार धार कैना—खार = समुद्र जीकै कार कार कैता अजादाकौ करणहार, दरियावके पाज नही, मजादकी पाज कोधी इसौ स्रीरामचद्र फेर सुरार राखस ज्याकौ मिंहारकार कैता सिघारकरता इसौ राम ॥१

तुक दूजी अरथ—जी रामचद्रजीसू मार छार कार कैता कामदेवका बाळणहार सिवकौ प्यार छै, हर फेर राम नाम तथा जस महातमका सिव समुद्र छै, इसौ राम जीनै हे प्राणी तू भज।

तुक तीजीरौ अरथ—हे प्राणी, तू मार कैता मारिया" स जीकौ डार समूह मानवी छै जीका लार लार कैता पाछै पाछै चार कैता चालणौ, माटी का मनखारी लार लार फिरवासू हार कैता हठ मती। फिरै भार डार कैता ससारकी कामनाकौ भार बोझ सौ डार कैना पटक दै, अळगौ मेल।

तुक चौथीरौ अरथ—हे प्राणी, तू तरबौ चाहै छै तौ बार नार तार कैता वेस्या गणकाकौ तारणहार स्री रामचद्र सार छै, सत्य छै, जीनै तू हरदामे बार बार धारण कर। जीभसू तौ राम नाम लै, हर ध्यान कर, सौ गणका नीच जातनै अजाणसू सुवौ पढावता तारी इसौ स्री रामचद्र दयाळ छै तौ तीनै सुध मन भजतां तारै ही तारै। ईमे सदेह नही। यौ पै'ला दूहारौ अरथ छै। कठण जिणसू लख्यौ छै। बाकीरा तीन ही दूहारौ अरथ सुगम छै जीसू नही लख्यौ छै। यू कोई कवि घणकठ गीत वणावौ सौ देख विचार लीज्यौ। म्हैंतौ म्हारी वुध माफक गैलौ बताय दीधौ छै। कोई बात सुध असुध होवै तौ वडा कवि तगसीर खिमा कीज्यौ। म्हैंतौ स्री राम-जस कीधौ छै सौ सीतारामजीनै सरम छै।

अथ गीत सुपखरौ उरला कंठा तावै तथा साकळिया कठा तावै अरथरा कारण कारज सहेत स्री हणूमानजीरौ किसना क्रत।

---

२९२. कठ–अनुप्रास। साकडा–पास-पास, सकुचित। किसाक–कैसा। कीधी–की। सुरार (सुरारि)–राक्षस। राखस–राक्षस। हर–और। पाछै पाछै–पीछे पीछे। सुवौ–तोता। सुगम–सरल।

गीत

मही राखण गाथरा आखियातरा गातरा मेर।
दैण सत्रां दाथरा हाथरा घाव दाव॥
साथरै माथरा भंज क्रोधवांन समाथरा।
स्रीनाथरा जोध भ्रौका वातरा-सुजाव॥
धांनमाळी पछाड़ा हुकमां चाड़ा सीस धणी।
रोखंगी ऊपाड़ा द्रोण भुजां राह दूत॥
बैरियां ऊबेड़ जाड़ा धंखी माह बांबराड़ा।
दुबाह अखाड़ाजीत धाड़ा रांमदूत॥
तैंही लंक सांगा सौ जोजनां गियौ तूछरेल।
मूछरेल अढांगा अयारां मेल मीच॥
डरावणो रूपरा दयंतां भांगा दूछरेल।
भांमणौ रांमरा लांगा पूंछरेल भीच॥
संतां अभैदांनकी उछाह रे अरोड़ा सदा।
बिजै रोड़ा आंनकी जाहरे बार बार॥

२९३ गाथरा–यशका। आखियातरा–अद्भुत, विचित्र, अमर। गातरा–शरीरका। मेर–सुमेरु पर्वत। दैण–देनेको। सत्रा–शत्रुओ। दाथरा–सहारका। माथरा–मस्तकका। भज–नाश। समाथरा–समर्थके। स्रीनाथरा–विष्णुका। जोध (योद्धा)–वीर। भ्रौका–धन्य-धन्य। वातरा-सुजाव–वायु-पुत्र, हनुमान। धानमाळी–एक असुरका नाम। पछाड़ा–मारने वाला, गिराने वाला। चाडा–चढाने वाला। सीस–शिर। धणी–मालिक। रोखगी–जोश वाला, रोष वाला। ऊपाडा–उठाने वाला। द्रोण–द्रोणाचल पर्वत। ऊबेड–उन्मूलन कर, उखाड कर। जाडा–जवडा। धखी–जोश वाला, उमग वाला, द्वेष वाला। बावराडा–जवरदस्त। दुबाह–वीर, योद्धा। अखाडा-जीत–युद्ध विजयी। धाडा–धन्य-धन्य, शावास। जोजना–योजनो। तूछरेल–वीर। मूछरेल–मूछो वाला, वीर। अढागा–महान, विकट। अयारा–शत्रुओ। मीच–मृत्यु, मौत। डरावणे–भयप्रद, भयावह। दयता–दैत्यो। भागा–नाश करने वाला, वीर। दूछरेल–वीर, योद्धा। भामणै–न्योछावर, वलैया। लागा–हनुमान। पूछरेल–पूछधारी। भीच–योद्धा। उछाह–उमंग, जोश। अरोडा–जवरदस्त। बिजै–विजय। रोडा–वजाने वाला, वजवाने वाला। आनकी–नगाडा। जाहरे–प्रसिद्ध।

मोड़ा जातधानंकी ग्रीवरा हणू ठमाहरे।
जांनकी पावराखोड़ा वाहरे जोधार ॥ २६३

अथ गीत दूजौ स्री हणूमानजीरौ
गीत जयवत सावझड़ौ

ओपत तन तेल्ल सिंदूरां आंगा, आच गदाधर रूप अढंगा।
भारथ थोक सबळ खळ भांगा, लागै झौका महाबळ लांगा ॥
खळ दससंध उपाड़ण खूंटा, कीरत भुज जाहर चिहूं कूंटा।
लखण काज आंणण गिर लूंठा, टेक निवाह वाह किप-टूंटा ॥
दायक खबर रांम सिय दौड़ा, तोयक काळ नेस सिर तोड़ा।
राड़ फतै पायक आरोड़ा खायक असुर धाड़ भड़ खोड़ा ॥
जै नांमी गढ़ लंक जयंता, सिव एका दसमा निज संता।
कीधौ अमर जांनुको कंता, हुकमी दास जांण हणमंता ॥२६४

दूहौ

किया निरूपण 'किसन' कित्र, गुण हर विध विध गीत।
जड़ता दाघव कविजनां, जस राघव जग जीत ॥२६५

---

२६३ मोडा—मोडने वाला, पीछे हटाने वाला। जातधानकी (यातुधान)—राक्षस। हणू—हनुमान। जानकी—सीता। पावराखोडा—लगडा। वाहरे—धन्य-धन्य। जोधार—योद्धा, वीर।

२६४ आगा—पहनावा। आच—हाथ। गदा—एक प्रकारका शस्त्र विशेष। अढगा—अद्भुत। भारथ—युद्ध। थोक—समूह। भागा—तोडने वाला, नाश करने वाला। झौका—धन्यवाद। लांगा—हनुमान। खळ—राक्षस। दसकध—रावण। उपाडण—उखडने वाला। खूटा—जड। चिहू कूटा—चारो दिशाओ। आणण—लाने वाला। गिर—द्रोणाचल पर्वत। लूठा—जबरदस्त। टेक—प्रण, मान। निवाह—निभाने वाला। वाह—शाबास। किप-टूटा—हनुमान। दायक—देने वाला। दौडा—दौडने वाला, सेवक। तोयक—दुष्ट। नेस—धर। सिर तोडा—शिरको तोडने वाला। राड—युद्ध। पायक—प्राप्त करने वाला। आरोडा—जबरदस्त। खायक—नाश करने वाला, ध्वश करने वाला। धाड—शाबास, धन्य। भड—योद्धा। खोडा—हनुमान। जयंता—जीतने वाला। कीधौ—किया। जानुकी—सीता। कता—पति। हुकमी—हुक्म मानने वाला। हणमता—हनुमान।

२६५ निरूपण—वर्णन। गुण—यश। हर—हरि, विष्णु, श्रीरामचद्र। विध विध—तरह-तरहके। जडता—अज्ञान। दाघव—जलानेको।

अथ गीत रूपग तथा द्वितीय गजगत लछण

गीत

च्यार दूहांके च्यार ही, धुर आंकणी दवाळ।
ग्यार मत धुर नव दुती, ग्यारह नव क्रम भाळ॥ २९६

अठाईस मत अंत गुरु, आंन दवाळा होय।
रूपग जस रघुनाथ रट, समझौ गज गत सोय॥ २९७

बीस छ मता अंत लघु, छजै भाखड़ी छंद।
आठ बीस मत अंत गुरु, गजगत अे प्रबंध॥ २९८

अरथ

आंकणीरी दवाळी भाखड़ीरै तौ दवाळा सारा प्रत अेक ही होय। हर गजगतरै दवाळा दवाळा प्रत आकणीरी दवाळी नवीन नवीन होय। अेक तौ गजगत नै भाखड़ीरो यो भेद होय। दूजो भेद भाखड़ीरै दूजा भाखड़ीरा दवाळा मात्रा छाईस अंत लघु होय। गजगतरै दूजा दवाळांरी तुक अेक प्रत मात्रा अठाईस नै अंत गुरु होय। अतरो भेद होय। दूजा गजगत भाखड़ी अेक तरैरा रूपग छै। आंकणीरी मात्रा नव नव होय। सवाय रैकार तथा जीकार अत होय। तुक पै'ली तीजीरै प्रमांण पै'ली तुक मात्रा अग्यारै, दूजी तुक मात्रा नव, तीजी तुक मात्रा अग्यारै, चौथी तुक मात्रा नव, अत गुरु होय। दूजा दवाळा प्रत तुक मात्रा अठावीस सारी तुकां होय। अत गुरु होय। ईं प्रकार रूपग गजगत कहीजै। आगै गजगत गीत न कह्यो छै, भूल गया जीसूं पछै कह्यो छै। गीत गजगतरी आंकणी तौ भाखड़ीरीज होवै। भाखड़ीरै तुक अेक प्रत मात्रा छब्बीस होय। अंत लघु होय। गजगतरै तुक अेक प्रत मात्रा अठावीस होय, अंत गुरु होय तथा भाखड़ीरी तुकरै अंत अेक स ना य गुरु अखर धरजै सोई गीत गजगत रूपग छै।

---

२९६. धुर–प्रथम। दवाळ–गीत छंदके चार चरणोंका समूह। दुती–दूसरी।

२९७ आन–दूसरा। सोय–वह।

२९८. सो–वह। रै कार–रे तू शब्द कह कर पुकारनेका शब्द। लघु रूपसे पुकारने का शब्द, संबोधन शब्द। जीकार–जी, सम्मानपूर्वक पुकारनेका शब्द।

अथ गीत रूपग गजगत उदाहरण

गीत

रवि कुळ रूपरा रे, समथ सरूपरा, प्रगट अनूपरा रे,
भुज रघु भूप ।

भूपरा रघु भुजदंड भास तरह च्यर सगरांमरा ।
नव खंड भूम अरोड़ नांमण कौट मंड सकांमरा ।
धुज धरम सर कोदंड धारण मेर ओपत मांमरा ।
आनूप भुज परचंड आहव रूप रविकुळ रांमरा ।

सुज ब्रद साहणौ रे निबळ निबाहणौ चित जिस चाहणौ रे,
गज थट गाहणौ ॥

गाहणौ गज थट अघट गाढंम प्रगट रजवट पेखजै ।
लंकाळ घट छट अलल लाटण तीख कुळवट तेखजै ।
जिण कीध वटपट निपट जळधर अद्र तार ऊमेखजै ।
सिर मुगट जग रट अघट स्रीवर विरद धार विसेखजै ।

मह जस मंडियौ रे बाळ बिहंडियो ते रण तंडियौ रे,
खळदळ खंडियौ ॥

खळदळां कंकळ सबळ खंड वीर तंडै भुजबळी ।
सुज गळां समपै ग्रीध समळां पळां भोजन परघळी ।

---

२९८ समथ—समर्थ । भूम—भूमि । अरोड—जबरदस्त । नामण—नमाने वाला । सर—बाण । कोवड—धनुष । मेर—समेरू । मामरा—दृढ़ता का । आहव—युद्ध । साहणौ—धारण करने वाला । निबाहणौ—निभाने वाला । चाहणौ—चाहने वाला । थट—दल, समूह । गाहणौ—ध्वंश करने वाला । गाढम—शक्ति । रजवट—क्षत्रियत्व । लकाळ—वीर । तीख—विशेषता । जळधर—समुद्र । अद्र—पर्वत । बाळ—बालि वानर । विहडियौ—ध्वंश किया, मारा । रण—युद्ध । तंडियौ—दहाड़ा, जोशपूर्ण शब्द किया । खडियौ—सहार किया । ककळ—युद्ध । खडे—सहार किये । भुजबळी—शक्तिशाली । गळां—मास-पिंड । समळा—मासाहारी पक्षी विशेष । पळा—मास । परघळी—पूर्ण, अपार ।

खळहळां खत चळवळां खापर वीसहथ भर विळकुळी ।
मह वळां चव रघुनाथ अमलां मंड सुसबद मंडळी ।
संत सधारिया रे जुध रिम जारिया भुज व्रद भारिया रे,
अवन उचारिया ॥
ऊचरै अवनी विरद अहनिस करण सिध सुरकाजरा ।
दस माथ दुसह सिंघार दारुण सूर कुळ सिरताजरा ।
कर तेण गजगत किसन कवि कह लखां जन रख लाजरा ।
साधार संत अपार स्रीवर रांम सुसबद राजरा ॥२६६

+++++++++

२६६ चळवळा—रक्त, खून । खापर—खप्पर । वीसहथ—देवी, दुर्गा, रणचंडी । विळकुळी—मस्त हुई, प्रसन्न हुई । सुसबद—यश, कीर्ति । सधारिया—रक्षा की । रिम—शत्रु । जारिया—सहार किया । अवन—पृथ्वी, अवनी । अहनिस—रात-दिन । दसमाथ—रावण । दुसह—भयंकर, जबरदस्त । सिंघार—सहार कर । सूर कुळ—सूर्य वंश । सिरताजरा—श्रेष्ठका शिरोमणिका । राजरा—श्रीमानके, आपके ।

अथ निसाणी छंद वरणण

अथ निसाणी लछण

दूहौ

छै नीसांणी छंदरै, मत तेवीस मुकांम ।
मांझ अेक तुक त्रदस दस, वदै दोय विसरांम ॥ १

अरथ

निसाणी छंदरै अेक तुक प्रत मात्रा तेवीस आवै । इण लेखे तौ निसाणी मात्रा छंद छै नै अेक तुकरा विभाग तथा विस्राम दोय छै । अेक पहलौ विस्राम तौ मात्रा तेरै ऊपर होवै । दूजौ विस्राम मात्रा दस पर होवै यौ लछण छै । पै'ली मात्रा असम चरण छंद कह्या जठे छंद निस्रेणिका कह्यौ, सोई निसाणी छंद जांणणौ । जिके च्यार प्रकाररा छै सौ फेर कहा छा ।

दूहा

रे नीसांणी छंदरा, पढ़िया च्यार प्रकार ।
तिण लछण निरणै तिकौ, वरणै सुकव विचार ॥ २
अेकण द्रु लघु तुकंत अख, बीजी गुरु लघु अंत ।
अंत तीसरी लघु गुरु, चौथी बि गुरु तुकंत ॥ ३

अरथ

निसाणी छंद एक तुक प्रत मात्रा तेवीस होवै । जिणरा च्यार प्रकार । अेकरै तौ तुकत दोय लघु अखर होवै । दूजीरै तुकत आद गुरु अत लघु होवै । तीजीरै तुकत आद लघु अत गुरु होवै । चौथीरै तुकत दोय गुरु करण-गण होवै । अै च्यार प्रकाररी निसाणी छै ।

अथ प्रथम लघु तुकत गरभितनामा निसाणी जागडी उदाहरण

निसाणी

गह भर राघव तारिया, दरियाव विच गैंवर ।
किया स्राध जटायका, निज हत्थ नरेसर ॥

१ मुकाम–विश्राम । माझ–मध्य । त्रदस–तेरह । वदै–कहते हैं । विसराम–विश्राम । यौ–यह । जठे–जहा पर ।

२ तिण–उस ।

३ अख–कह । करण-गण–दो दीर्घ मात्राका नाम ऽऽ ।

४ गह–गर्व । तारिया–उद्धार किये । दरियाव–समुद्र, सागर । विच–बीच, मध्य । गैंवर–हाथी । स्राध–श्राद्ध । जटायका–जटायुके । हत्थ–हाथ । नरेसर–नरेश्वर, राजा ।

मन रुच खाया बेर फळ, जिण सवरी पांमर ।
ते कदमूं रज आभड़े, अवरत गौतम तर ॥
तोते कीन्ह सहाय हत, यळ गणिका उद्धर ।
परचौ नांम तिराइया, पांणी सिर पाथर ॥
जेण उधारे अवधपुर, जग सारे जाहर ।
नांम ब्रह्म सिव आद ले, प्रभणै अह सुर नर ॥
. . . . ।
वे जिन्हां जीता जमार, गाया सीतावर ॥ ४

अथ निसाणी दुमळा नाम जागडी (आद गुरु अंत लघु तुकंत) उदाहरण

निसांणी

विप आनूप सरूप स्यांम, घट वरसण वार ।
कसियौ कट तट कोमळा, चपळा पट-चार ॥
भुज-आजांन विसाळ भाळ, कट संघ प्रकार ।
नयण भ्रूंह नासिका कमळ, धनु सुक निरधार ॥
परम जोंत दसरथ प्रथीप, ते ग्रह अवतार ।
जंग अडोळ अबोळ नाट, दससिर खळ जार ॥
सोवन्न लंक भभीखणाह, दी सरणसधार ।
औ जगनायक रांमचंद, निरधार अधार ॥ ५

---

४ सवरी—भिल्लनी । पामर—नीच । ते—तेरी । कदमू—चरण । रज—धूलि । आभडे—स्पर्श की । अवरत—औरत । तोते—तोता, शुक । कीन्ह—की । यळ—पृथ्वी । परचौ—चमत्कार । सिर—ऊपर । पाथर—पत्थर । जग—ससार । सारे—सब । जाहर—प्रसिद्ध । प्रभणै—वर्णन करते हैं, स्मरण करते हैं । अह—नाग । जमार—जन्म, जीवन । गाया—वर्णन किया । सीतावर—श्रीरामचद्र ।

५ विप—शरीर । आनूप—अनुपम । कट—कटि, कमर । कोमळा—कोमल । चपळा—विजली । पट-चार—वस्त्र । भुज-आजान—आजानबाहु । भाळ—ललाट । कट—कमर, कटि । सघ—सिंह । नासिका—नाक । सुक—तोता । जोत—प्रकाश । प्रथीप—राजा । ते—उसके । ग्रह—घर । जग—युद्ध । अडोळ—दृढ । नाट—निषेधात्मक शब्द । दससिर—रावण । खळ—राक्षस । जार—ध्वश, सहार । सोवन्न—सुवर्ण, सोना । सरणसधार—शरणमे आए हुएकी रक्षा करने वाला । निरधार—जिसका कोई आश्रय या सहारा न हो ।

नोट—उपर्युक्त दुमिळा निसाणी छदका लक्षण ग्रथमे स्पष्ट नही है । इस दुमिळा निसाणी छदके प्रत्येक चरणमे चौदह और नव पर विश्राम सहित कुल २३ मात्राएँ हैं तथा अतमे गुरु लघु होते हैं ।

अथ दुतिया दुमिळा निसाणी छद लछण

दूहौ

धुर चवदह नव फेर धर, अंत गुरु लघु अक्ख ।
यक तुक मिळ मोहरा उभै, सौ दुमिळा कवि सक्ख ॥ ६

अथ दुतिय दुमिळा निसाणी उदाहरण

निसाणी

अह नर सुर कह कवण ओड़, जै दत खग जोड़ ।
चक्रवत कर सुधा नीचोड़, मद वंका मौड़ ॥
वहिया मख रिख ठोड़ ठोड़, काटे भय कौड़ ।
तेगां खळ दसमाथ तोड़, रघुनाथ अरोड़ ॥ ७

अथ मुद्ध निसाणी जागडी (तीजी तुकात लघु गुरु) उदाहरण

निसाणी

तै रघुनाथ विसारिया, त्रिहु ताप तपणा ।
छूटा गरभ ग्रभवासमें, बह बार छपांणा ॥
धर धर तन ऊसीच्चियार, लख जोणां धपणा ।
खिण खिण आव संसारह, बुदबुद ज्यूं खपणा ॥
कर कर पर उपकार पुन, तन प्राचत कपणा ।
संसारी दा भगळखेल, जांणै जिम सपणा ॥

---

६ धुर–प्रथम । अक्ख–कह । यक–एक । मोहरा–तुकबदी । उभै–दो । सक्ख–कह, साक्षी दे ।

७ अह–नाग । कवण–कौन । ओड–समान । जै–जीत । दत–दान । जोड–समानता । चक्रवत–राजा, चक्रवर्ती राजा । सुधा–सीधा । मद–गर्व । वका–बांकुरा । मोड–श्रेष्ठ । मख–यज्ञ । रिख–ऋषि । तेगा–तलवारो । खळ–राक्षस । दसमाथ–रावण । तोड–सहार कर, काट कर । अरोड़–जबरदस्त ।

८ तै–तूने । विसारिया–विस्मरण किया । त्रिहु–तीन । ताप–तप, तपस्या । तपणा–तप करने वाला । गरभ–गर्व । ग्रभवासमें–गर्भवासमे । बह–बहुत । छपाणा–गुप्त रहा । ऊसीच्चियार–चौरासी । जोणा–योनियो । खिण–क्षण । बुदबुद (बुद्ध बुद्ध)–पानीका बुल्ला बुल्ला, जलका फफोला । खपणा–नाश होना । ससारीदा–ससारका । भगळखेल–इन्द्रजाल, मायावी, धोखा । सपणा–स्वप्न ।

आखर-दिन अवधेस विण, नह कोई अपणा ।
जिण कज हे मन रांम रांम, जीहा नित जपणा ॥ ८

अथ सुद्ध निसाणी जागडी चौथी तुकात दौ गुरु उदाहरण

निसाणी

कदम सुभंदा मेरगिर, नहचळ मझ्फ कंका ।
सुज तर बंक पधोर कीध, के सूध-सणंका ॥
बहिया बाळ मुकाळ बुळ, हीया व्रद बंका ।
डारण सज्झे दहकमळ, वज्जे जस डंका ॥
रिम सबळ मारण सुभाव, साधारण रंका ।
धू-धारण कारण जनां, कज सारण धंका ॥
आचां झौक रांमचंद, सुदतार असंका ।
लिन्हां-विण जिण दिन्हियां, सरणायत लंका ॥ ९

अथ निसाणी मारू लछण

दूहौ

मत सोळह फिर बार मुण, दख मोहरे गुरु दोय ।
मारू नीसांणी मुणौ, सुकव महा मत सोय ॥ १०

---

८ आखर-दिन—मृत्यु-समय । कज—लिए । जीहा—जीभ ।

९ कदम—चरण । सुभंदा—शोभा देते है । मेरगिर—सुमेरुगिरि । नहचळ—अटल, निश्चल । मझ्फ—मध्य, मे । कका—युद्ध । कीध—किये, किया । सूध-सणंका—बिलकुल सीधा । डारण—जबरदस्त । सज्झे—सहार किया, मारा । दहकमळ—रावण । जस—यश, जिसका । रिम—शत्रु । साधारण—उद्धार करने वाला रक्षा करने वाला । रका—गरीब । धू-धारण—निश्चय । कज—कार्य, लिए । सारण—सफल करने को । धंका—इच्छा । आचां—हाथो । झौक—धन्य-धन्य । असका—निर्भय, निशक । लिन्हा-विण—विना लिए ही । जिण—जिस । दिन्हियां—दे दी । सरणायत—शरणागत ।

१० मत—मात्रा । वार—बारह । मुण—कह । दख—कह । मत—बुद्धि । सोय—वह ।

अथ मारू निसाणी उदाहरण

निसाणी

कांम क्रोध मद लोभ मोह कर, अवस रहे अडगांणे।
लाह नह रख न सोच अलाभे, मन संतोख समांणे॥
सत्र मित्र पर भाव अेक सम, पत्थ रहेम प्रमांणे।
धरमें 'किसन' कहै ते नर धन, जे मन राघव जांणे॥ ११

अथ निसाणी वार लछण

दूहौ

मुण तुक प्रत जिण तीस मत, मगण क र तुकंत।
वार निसांणी 'किसन' कवि, मत उपछंद मुणंत॥ १२

अरथ

तुक अेक प्रत मात्रा तीस होय, तुकत मगण अथवा रगण होय सो निसाणी वार नामा मात्रा उपछद छै।

अथ वार नामा निसाणी उदाहरण

निसांणी

बंध ग्राह दरीयाव बीच, पड़ संघट फील पुकारियां।
ईस ऊबाहण-पाय आय, धर हत्थूं सूंड उधारियां॥
धू भजीया हरी धूधड़ै, कर नहचळ तै सुखकारियां।
सत-व्रत भगती सज्झीयां, ते प्रळय पयोनिध तारियां॥

---

११ अवस–अवश्य अडगाणे–अटल, निश्चल। लाह–लाभ। सतोख–सतोष। समाणे–समा गया, समाया हुआ। सत्र–शत्रु। पत्थ–मार्ग। रहेम–ईश्वर। धर–पृथ्वी। धन–धन्य।

१२ मुण–कह। तुक प्रत–प्रति चरण। जिण–जिस। मत–मात्रा। क–या, अथवा। र–रगण गण। मुणंत–कहता है।

१३ दरीयाव–सागर। सघट (सकट)–दुख। फील–हाथी। पुकारिया–पुकार करने पर। ऊबाहण-पाय–नगे पैर। धर–पकड कर। हत्थू–हाथसे। उधारियां–उद्धार किया। धू–भक्त ध्रुव। धूधड़ै–निशक, निर्भय। नहचळ–निश्चल। सत-व्रत (सत्यव्रत)–सातवें मनुका नाम, इक्ष्वाकुवशी हरिश्चद्रके पिताका नाम। सज्झीयां–साधन किया। ते–वे। पयोनिध–समुद्र सागर।

बेख दास प्रहळाद बारह, बिप नरहर धार उबारियां ।
सत्य बळ दे सोह जग सखै, हरि तन सभ्झ मंगणहारियां ॥
गोह अहल्या सवरी गीध, बळ व्याध कमंध बिचारियां ।
भी सुग्रीव भभीखणांह, ब्रजराज सतोल बधारियां ॥
निबळ अनाथ निधार नेक हरि, सबळां कीन्ह निहारीयां ।
सीताबर संत सधारियां, सीताबर संत सधारीयां ॥ १३

अथ मात्रा उपछंद निसाणी हसगत तथा रूपमाळा लछण

दूहौ

मुण तुक प्रत बत्तीस मत, अंत भगण गण आंण ।
गण निसांणी हंसगत, वरणत रांम बखांण ॥ १४

अरथ

तुक अेक प्रत बतीस मात्रा होय । तुकके अत भगण गण होय, सौ निसाणी हसगत कहीजै तथा बेअखरी छदरी दोय तुकासू अेक तुक वणै सौ हसगत निसाणी । हसगत निसाणीरै नै बेअखरी छदरै अतरौ तफावत छै सौ कहा छा । बेअखरी छदरै तौ तुकरै अत गुरु लघुरौ नीयम नही छै । कठैक तुकन गुरु, कठैक तुकत लघु होय नै हसगतरै तुकत भगणहीज आवै सौ लघु तुकतरौ नेम छै । यतरौ भेद छै । यणनै कोई रूपमाळा पिण कहै छै ।

अथ हसगत निसाणी उदाहरण

निसांणी

स्रीरघुनाथ अनाथ नाथ सुज, बेढ सत्र दसमाथ विहंडण ।
जाहर मही जहूर सुजस जिण, महपत नूर सूरकुळ मंडण ॥

---

१३ बेख–देख कर । बिप (वपु)–शरीर । नरहर–नृसिंहावतार । उबारिया–रक्षा की । तन–शरीर । सभ्झ–धारण कर । गोह–गुहनामभक्त, निषादराज जो रामका परम भक्त था । बळ–राजा बलि । सधारीया–रक्षा की, रक्षा करने पर ।

१४ मुण–कह । तुक प्रत–प्रति चरण । मत–मात्रा । वखाण–यश । अतरौ–इतना । तफावत–भेद, फर्क । कठैक–कही पर । नेम–नियम । यतरौ–इतना । यणनै–इसको । पिण–भी ।

१५ बेढ–युद्ध । सत्र–शत्रु । दसमाथ–रावण । विहडण–सहार करने को । जाहर–जाहिर, प्रसिद्ध । मही–पृथ्वी । जहूर–प्रकाशन । सुजस–सुयश । महपत–राजा । नूर–काति, दीप्ति । सूरकुळ–सूर्य वश । मडण–आभूषण ।

झूठ अवाच अपूठ महाजुध, दूठ सरूठ अदंडांदंडण।
भुज परचंड मंड जय भासत, खंडपरस कोदंड बिखंडण॥
दसरथनंद निकंद पाप दळ, घणनांमी आणंदतणौ घण।
संतां काज सकाज सुधारण, महाराज सुरराज सिरोमण॥
दीनदयाळ पाळकर गौ दुज, निज प्रिया सिया मनरंजण।
जाप 'किसन' मा बाप रांम जस, भव त्रय ताप पाप दळ भंजण॥ १५

अथ निसाणी झीगर लछण

दूहौ

धुर अठार फिर चवद धर, मोहरे मगण मिळंत।
झींगर निसांणी जिकाह, 'किसन' कवेस कहंत॥ १६

अथ झीगर निसाणी उदाहरण

निसांणी

जिण कीड़ी कुंजर जीव दुनीदा, रूप चराचर रच्चा है।
रक्ख हत्थूं डोर लख चौरासी, नाच नच्चाय नच्चा है॥
तिणदी विण जोत गोत मिट्टी तन, 'किसन' कहै सब कच्चा है।
बोलै स्त्रुत संम्रत स्यंभ अज वायक, सीतानायक सच्चा है॥१७

---

१५ अवाच–नही कहना। अपूठ–पीठ फेरनेकी क्रिया। दूठ–जबरदस्त। सरूठ–क्रोध करने पर। अदडादडण–जो किसीसे दडित न किया जाय ऐसे समर्थको अथवा जो कुटिल हो उसको भी दड देने वाला। खडपरस–महादेव। कोदड–धनुष। बिखडण–तोडने वाला। निकद–नाश करने वाला, नाश। सुरराज–इन्द्र। सिरोमण–शिरोमणि, श्रेष्ठ। पाळकर–पालन करने वाला। गौ–गाय। दुज (द्विज)–ब्राह्मण। सिया–सीता। मनरजण–प्रसन्न करने वाला। जाप–जप कर, भजन कर। भव–ससार। त्रय–तीन। ताप–दुख। दळ–समूह। भजण–मिटाने वाला।

१६ मोहरे–तुकवदीमे। मिळत–मिलता है। कवेस (कवीश)–महाकवि। कहत–कहता है, कहते हैं।

१७ कीडी–चिउटी। कुजर–हाथी। दुनीदा–ससारका। रच्चा है–रचा है, बनाया है। हत्थू–हाथ। चौरासी–चौरासी लाख जीव योनि। तिणदी–उमकी। स्त्रुत–श्रुति। सम्रत–स्मृति। स्यभ–शभु, शिव। अज–ब्रह्मा। वायक–वाक्य, वचन। सीतानायक–सीतापति, श्रीरामचद्र। सच्चा है–सत्य है।

अथ निसाणी सीहटप लछण

दूहौ

तुक प्रत मत छबीस तव, तगण क जगण तुकंत ।
सौ निसांणी सीहटप, हणु आंकणी कहंत ॥ १८

अरथ

प्रत तुक मात्रा छावीस होय । तुकतमे जगण बोहत होय। कठैक तगण गण पण तुकतमे होय । दोय तुकारै पछै हणु इसा सबदरी आकणी होय सौ निसाणी सीहटप पण कहीजै ।

अथ सीहटप निसाणी उदाहरण

निसाणी

यक आद-पुरुख अनादसूं दख भ्रहम माया दोख ।
त्रय भ्रहम विसन महेस त्रै गुण हुवा जिण जग होय ॥
हणु हुवा जिण जग होय हरखित चाह बेद चियार ।
तत पंच कर खट तरक तै दरियाव सात उदार ॥
हणु सात दध दस आठ सर जे नवे ग्रह नर नाह ।
अवतार दस कर रुद्र ग्यारह बारह मेघ दुबाह ॥
हणु बारह मेघ नीर विरचित मास तेरह मंड ।
दस च्यार विद्या रतन दाखव पनर तिथि परचंड ॥
हणु पंच दस तिथ सोळ कळ पढ सरस नार सिगार ।
साहंस सतरह खंड गूजर थाप ग्रांम बिथार ॥
हणु थाप गांम बिथार भार अठार वन कर भेद ।
उगणीस वरसे भोम जोबन विसाव्रीस अखेद ॥

---

१८ तुक प्रत—प्रति चरण । मत—मात्रा । छबीस—छव्वीस । तव—कह । क—या, अथवा । कठैक—कही पर ।

१९ यक—एक । आद-पुरुख—आदि पुरुष । दख—कह । भ्रहम—ब्रह्मा । विसन—विष्णु । महेस—महादेव । दध (उदधि) सागर, समुद्र । दाखव—कह । तिथ—तिथि, तारीख । सोळ—सोलह । बुध—पंडित । खंड—देस । विसावीस—पूर्ण, पूरा ।

हणू विसावीस अखेद विचार बुध यण कीध मंड अनेक ।
सौ आदपुरख उचार 'किसना' अचळ राघव अेक ॥

अथ अन्यविधि निसाणी सोहटप तथा सीहचली लछण

चौपई

सोळह दस मत यक पद साज, गीत प्रोढ गुरु लघू गाय ।
सीहचली तुक उलट सकाय, ॥ २०

अथ द्रुतीय सीहचली निसाणी उदाहरण

निसांणी

तन स्यांम अंबुद रूप तड़िता, वसन पीत विचार ।
वासन्न पीत विचार सरवर, धनुख सायक धार ॥
धानंख सायक धर धरम धर, भुजां झल्लण भार ।
जुध जार दससिर कुंभ जेहा, सकळ कांम सुधार ॥
सह कांम दास सुधार समरथ, अेक रांम उदार ॥ २१

अथ निसाणी सिरखुली लछण

दूहौ

मध्य मेळ मत बार पर, नव मत सीस खुलाय ।
तुक प्रत मत यकवीस तव, सिर खुल्ली कह साय ॥ २२

अरथ

जिण निसाणीरै तुक अेक प्रत मात्रा यकवीस होय । तुक अेकका दोय विभाग होय । पै'ला विभागरी मात्रा बारै होय जठै मध्य मेळ निसाणीरौ तुकत, दूजौ विभाग मात्रा नवरौ होय जठै सिरखुली कहीजै ।

---

२० मत–मात्रा । यक–एक ।

२१ अबुद–बादल । तडिता–बिजली । वसन–वस्त्र । पीत–पीला । वासन्न–वस्त्र । धनुख–धनुष । सायक–बाण, तीर । झल्लण–धारण करने वाला । जार–सहार कर, मार कर, व्यभिचारी पुरुष । कुभ–रावणका भाई कुभकर्ण । जेहा–जैसा । सह–सब ।

२२. बार–बारह । यकवीस–इक्कीस । तव–कह ।

अथ सिरखुली निसाणी उदाहरण

निसांणी

राघव सिफत बखांणी, सच्चे सायरां ।
आफताब दुनियांणी, दीद नगाहए ॥
जिन्हां तज जुल्तमांणी, हक्क सराहियां ।
रुख चुगलक ब   जांनी, सिरदह सभ्भियां ॥
परस लिया मद पांनी, दार जुनारदा ।
बभ्भीछरण बगसांणी, लंक पनाहियां ॥
खळक तमांम रचांनी, छिनमें खानी खालकां ।
जपै सुकर जबांनी, कुदरत कौनदी ॥
बंदु परवर   सांनी, सीतासांइयां ॥ २३

अथ घग्घर निसाणी लछण

दूहौ

लछण संजुत आठ तुक, जोड़ त्रिभंगी छंद ।
अंत जगण बत्तीस मत, घग्घर अेह प्रबंध ॥ २४

अरथ

त्रिभगी छदरौ लछण सोई घग्घर निसाणीरौ लछण छै। त्रिभगी छदरी आठ तुक सोई घग्घर निसाणी । तुक अेक प्रत मात्रा बतीस । च्यार विस्राम । पै'लौ विस्राम दस पर होवै । दूजौ विस्राम मात्रा आठ पर होवै । तीजौ विस्राम मात्रा आठ पर होवै । चौथौ विस्राम मात्रा छै पर होवै । अत जगण होवै । सोई त्रिभगी छंद, सोई घग्घर निसाणी । त्रिभगीकी तुकात और अखिर ऊपर मिळै । घग्घर निसाणीका तुकात अेक अखिर ऊपर मिळै सौ भेद छै ।

---

२३ सिफत–विशेपता, गुरा । सात्ररा–कवियो । आफताब–सूर्य । दुनियाणी–ससारका । दीद–देखादेखी, दर्शन । नगाहए (निगाह)–दृष्टि, नजर, कृपा, मेहरबानी । जिन्हा–(जिना) परस्त्रीगमन । जुलमाणी–जुल्म, अत्याचार, हक्क, कर्त्तव्य । सराहिया–सराहना कीजिए । बभीछण–विभीषरा । बगसाणी–प्रदान कर दी । दे दी । पनाहिया–शररामे आने वाले, पनाह लेने वाले । खलक (खल्क)–मानव जाति, सब मनुष्य । खालका–ईश्वर । जपै–प्रार्थना करते हैं । सुकर (शुक्र)–कृतज्ञता । परवर–पालन करने वाला । पालक, ईश्वर । सानी–जोडका, समान, दूसरा । सीतासाइया–श्रीरामचद्र भगवान ।

२४ लछण–लक्षरा । सजुत–सयुक्त । मत–मात्रा । अेह–यह । सोई–वही ।

अथ मात्रा उपछंद घग्घर निसाणी उदाहरण

निसांणी

पोह क्रत कविराजं हरख उछाजं सुजस समाजं दध पाजं ।
रिखबर मुनिराजं सिवसिध राजं स्तुति दुजराजं नित साजं ॥
मुख सहस समाजं जपि अहिराजं रटत सकाजं सुर राजं ।
मुख जोतिस काजं कबि ग्रहराजं जांन सुभाजं खगराजं ॥
कज संख गदाजं चक्र उछाजं आयुध साजं भुज भ्राजं ।
मह गौ दुजमानं रिखि नर राजं सुचित दराजं दत साजं ।
रघुकुळ सिरताजं जन रखि लाजं जय महाराजं रघुराजं ॥२५

अथ द्रुतीय घग्घर निसाणी लछण

दूहौ

दस अठ मत विसरांम दौ, चवद तियौ विसरांम ।
अंत मगण जिणनूं घग्घर, कौ कवि कहै सकांम ॥ २६

अथ द्रुतीय घग्घर निसाणी उदाहरण

निसांणी

हिरणायख हांणे संख सभ्भांणे हयग्रीवा खळ हंता है ।
हरणाकुस हत्ते महणासु मथ्थे छितले बळि छळंता है ॥
यमराज उधारे रांमण मारे तेहण कंस अमंता है ।
कह बुद्ध किलंकी ईस असंकी कळ पूरण सीकंता है ॥ २७

---

२५ दध–समुद्र । पाज–पुल, सेतु । अहिराज–शेषनाग । सुरराज–इन्द्र । जोतिस–ज्योति, प्रकाश । गहराज–सूर्य । जान (यान)–वाहन । खगराज–गरुड । कज–कमल । आयुध–शस्त्र । भ्राज–शोभा देता है । जन–भक्त ।

२६ चवद–चौदह । तियौ–तीसरा । विसराम–विश्राम ।

२७ हिरणायख–हिरण्याक्ष नामक राक्षस । हाणे–मारा । सख–एक असुरका नाम । सभ्भाणे–सहार किया । हयग्रीवा–एक राक्षसका नाम । हता है–मारने वाला है । हरणाकुस–हिरण्यकशिपु । हत्ते–सहार किया । महणसु–समुद्र । मथ्थे–मथन किया । छित–पृथ्वी । सीकता–श्रीकत, विष्णु, श्रीरामचद्र भगवान ।

अथ पैडी निसाणी लछण

दूहौ

ठार सोळ सोळह चवद, तुक प्रत मत चवसाठ ।
नीसांणी मगणांत निज, पैड़ी यण विध पाठ ॥ २८

अरथ

पैडी निसाणीरै तुक अेक प्रत मात्रा चौसठ होय । तुकात गुरु होय तथा मगण होय । तुक अेकमे विसराम च्यार होय । पै'लौ विसराम मात्रा अठारै पर होय । दूजौ विसराम मात्रा सोळै पर होय । तीजौ विस्राम मात्रा सोळै पर होय । चौथौ विसराम मात्रा चवदै पर होय । ई प्रकार च्यार विसराम होय । तुक अेक प्रत मात्रा चौसठ होय, सौ पैडी नाम निसाणी कहीजै ।

अथ पैडी निसाणी उदाहरण

निसांणी

भारा आक्रांत हुवंदी भूम्मी, वरतंदी सुरवार विक्खम्मी ।
अमरूं कथ ब्रहमांण अखंम्मी, थंदे उथ्थल थांनूंदा ॥
आदम अरु बंभदेव मिळियंदे, आए सब दरियाखीरंदे ।
काहल दस्तबंध कुवरंदे, गिरीअरि गुजरांनूंदा ॥
अरजी सुण कर दरियाफत अल्ला, बरदे महरबांन के बुल्ला ।
हूं दे तुम कज जंगूं हमल्ला, यळ अवतार असांनूंदा ॥
संभूमन नृप दसरथ्थ समथ्थी, कोसळ्या सत रूपा कथ्थी ।
जाहर पूत च्यार जग जथ्थी, जांमण सेर जवांनूदा ॥

---

२८ ठार–अठारह । सोळ–सोलह । चवद–चौदह । चवसाठ–चौसठ । यण–इस । विसराम–विश्राम ।

२९ भारा–भार, वजन । आक्रात–घिरा हुआ, आवृत । हुवदी–होती । भूम्मी (भूमि)–पृथ्वी । वरतदी–हो रही हो । सुरवार–देवताओ का समय । विक्खम्मी–विषम । अमरू–देवता । कथ–कथा । ब्रहमाण–ब्रह्मा । अखम्मी–कही । उथ्थल–उलटा । थानूदा–स्थान । आदम–ईश्वर, शिव । बभदेव–ब्रह्मा । मिळियदे–मिले । दरियाखीरदे–क्षीर-सागर पर । काहल–व्याकुल । दस्तबध–कर-बद्ध । गिरीअरि (गिरिअरि)–इन्द्र । अल्ला–ईश्वर । हू दे–मै । कज–लिये । यळ–भूमि । असानूदा–मेरा, हमारा । सभूमन–स्वायभू मनु ।

कौसिकदे जिग परबरसी किन्ना, पै रज करी सिला परविन्ना ।
भंजे चाप अमाप अभिन्ना, सीता ब्याह सुमांनूंदा ॥
ते तेज हरा दुजरांम अताई, पितदे हुकम रिखी ब्रत पाई ।
मारे ब्याध कबंध अमाई, वाटीपच्च वमांनूंदा ॥
रांमरा तद हरी जांनुकी रांणी, भीली बेर भखांनूंदा ॥
मिळ कपि हणुमंत सुकंठी म्यंता, चौपट मारे बाळ अचंता ।
दांन भभोखरा लंक दीयंता, बध पाज जळवांनूंदा ॥

. - |

बंबी जद घोर जंगदा बग्गा, लड़रा मेघनाद रिरा लग्गा ।
भिड़ तिरा सेस भुजूं बळ भग्गा, मिटा सोच मघवांनूंदा ॥
जोधा रिरा कुंभ दसानन जुट्टे, कोपे रांम बिहूं सिर कट्टे ।
आंरा सिया दुख देव अहुट्टे, जंपै कीत जिहांनूंदा ॥ २९

अथ मछटथळ तथा सोहणी नाम निसाणी लछण

दहौ

तेर प्रथम सोळह दुती, मभ्फ तुक बे बिसरांम ।
गुणति मत अंते बे गुरु, निमंध मछटथळ नांम ॥ ३०

अरथ

मछटथळ नाम निसाणीरै तुक प्रत मात्रा गुणतीस होय । तुकरै अंत दोय गुरु अखिर होय । तुक अेक प्रत मात्रा गुणतीस होय, जीरा दोय विसराम होय ।

---

२९. कौसिकदे–विश्वामित्र । जिग–यज्ञ । परबरसी (परवरिश)–रक्षा, पालन-पोपरा । चाप–धनुप । अभिन्ना–निर्भय,निशक । दुजरांम–परशुराम । पितदे–पिताका । वाटीपच–पचवटी । भीली–भिल्लनी । भखानूदा–खाये, भक्षरा किये । सुकठी–सुग्रीव । म्यता–मित्र । चौपट–खुला मैदान । बाळ–वालि वानर । पाज–पुल । जळवानूदा–समुद्रकी । बबी–नगाडा । जद–जव । जगदा–युद्धका । वग्गा–वजा । भिड–योद्धा । सेस–लक्ष्मरा । मघवानूदा–इन्द्रका । जुट्टे–भिडे । विहू–दोनो । कट्टे–काट डाले । अहुट्टे–नाश हुए । जपै–वर्णन करता है । जिहानूदा–ससारके ।

३०. तेर–तेरह । दुती–दूसरी । बे–दो । गुणति–उनतीम । मत–मात्रा । निमध–रच, वना । गुणतीस–उनतीम ।

पै'लौ विसराम तौ मात्रा तेरै ऊपर होय। दूजौ विसराम मात्रा सोळै ऊपर होय, सौ निसाणी मछटथळ नामा कहीजै। इणरौ दूजौ नाम सोहणी पिण छै।

अथ मछटथळ तथा सोहणी निसाणी उदाहरण

निसाणी

तज मक्कर फक्कर तसूं, उर सुध करखे रात अपंदे।
वस करदे इंद्री अवस, तन मझी तप सील तप्पंदे॥
आप रहंदे अघ अळग, पर छिद्रूं निसदीह ढपंदे।
सेव सझंदे सांइयां, पै करमूं कबहू न लपंदे॥
आदम लखूं दरमियांन, छित विरले नर नांहि छिपंदे।
सत ग्रह रदे तजदे असत, धर कदमूं सुभ पंथ धपंदे॥
नांम जिन्हूदा अमर नित, खित जाये जे जीव खपंदे।
जिन्हां जीतब जीतिया, जे रघुबर नित जीह जपंदे॥ ३१

अथ मात्रा असम चरण कडखा छंद लछण

दूहौ

धुर तुक मत चाळीस धर, तुक अन मत सैतीस।
अंत गुरु तुक प्रत अखिर, कड़खौ छंद कहीस॥ ३२

अरथ

पै'ली तुकरी मात्रा चाळीस होय। पछली तीन ही तुका तथा सवाय करै तौ पिण तुक प्रत मात्रा सैतीस होय। तुकत गुरु अखिर तथा करणगण होय। जी

---

३१ मक्कर–गर्व, अभिमान। फक्कर (फक्र)–दीनता, गरीबी, आवश्यकतासे अधिक किसी पदार्थकी कामना न करना। मझी–मध्य। तप–तपस्या। तप्पदे–तपस्या कर। अघ–पाप। अळग–दूर। पर–दूसरोके। छिद्रू–छिद्र। निसदीह–रात दिन। ढपदे–ढकते हैं। सेव–मेवा। साइया–ईश्वर। आदम–ईश्वर। लखू–देख, देखता हूँ। दरमियान–मध्य। छित–पृथ्वी। विरले–कोई। छिपदे–छिपते है। रदे–हृदय। असत–असत्य। जिन्हूंदा–जिनका। खित–पृथ्वी। जाये–जन्मे। जे–जो, वे। खपदे–नाश होते हैं। जिन्हा–जिन्होंने। जीतव–जीवन। जीह–जीभ। जपदे–जपते हैं।

३२ अन–अन्य। मत–मात्रा। कहीस–कहूँगा। पछली–बादकी, पश्चातकी। सवाय–विशेष। करणगण–दो दीर्घ मात्रा का नाम ऽऽ।

छदरौ नाम कडखौ छद कहीजै । निसाणी छदरै उतरारधमे कडखौ छद ढाढी बोहत कहै छै ।

अथ कडखौ छद उदाहरण

छद

रसणा रांम रट रांम रट रांम रट ।
रांम रट रांम रट रांम रट रांम रट ॥
नेह अछेह अरेह सुख गेह निज ।
भूप अनूप पतीसीय भांम ॥
पांण धनु बांण आपांण पंचाण पह ।
ठाह गुण गाह जग ठांम ठांम ॥
सुकवि 'किसनेस' महेस भुजगेस सुज ।
जाप जस जेस प्रति जांम जांम ॥ ३३

अथ कळसरौ छप्पै कवित्त

छप्पै

थाघै कुण दध अथघ कमण प्रभणै गिण रज कण ।
बूंदां जळ वरसात गिणै केहौ तारक गण ॥
पुणै कमण तर पत्र ब्रहम माया कुण भक्खै ।
मह उत्तर पथ माप आप लहरां कुण अक्खै ॥
कुण सकै जोग निरणौ करै रे गोरख सिध राजरौ ।
किव 'किसन' समथ कुण जस कहण रांमचंद्र महराजरौ ॥ ३४

---

३३ रसणा–जीभ । सीय–सीता । भाम–स्त्री । पाण–हाथ । आपाण–शक्ति । पचांण–सिह । ठाह–स्थान, ज्ञान । ठांम–स्थान । माहेस–शिव । भुजगेस–शेषनाग । जेस–जिसका । जाम जाम–याम याम ।

३४ थाघै–सीमा या हदकी जाच करे । कुण–कौन । दध–समुद्र । अथघ–अथाह, असीम । कमण–कौन । प्रमणै–कहे । रज–धूलि । केहौ–कौन । पुणै–कहै । तर–वृक्ष । पत्र–पान । ब्रह्म–ब्रह्मा । भक्खै–कहे । मह–भूमि, पृथ्वी । आप–पानी । अक्खै–कहे । समथ–समर्थ ।

अथ कविवंस वरणण छप्पै कवित्त

छप्पै

'दुरसा' घर 'किसनेस' 'किसन' घर सुकवि 'महेसुर'।
सुत 'महेस' 'खूमांण' 'खांन साहिब' सुत जिण घर ॥
'साहिब' घर 'पनसाह' 'पना' सुत 'दुलह' सुकव पुण।
'दुल्ह' घरे खट पुत्र 'दांन' 'जस' 'किसन' 'बुधौ' भण ॥
'सारूप' 'चमन' मुरधर उतन, प्रगट नगर पांचेटियौ।
चारण जाती आढा विगत 'किसन' सुकव पिंगळ कियौ ॥ ३५

उदियापुर आथांण रांण भीमाजळ राजत।
कवरां-मुकट 'जवांन' नीत मग जग नीवाजत ॥
अठ्ठारै सै समत वरस अैसियौ माह सुद।
बुद्धबार तिथ चौथ हुऔ प्रारंभ ग्रंथ हद ॥
अठारै अनै अकियासिये, सुद आसोज सराहियौ।
सनि बिजैदसमी रघुबर सुज 'किसन' सुकवि सुभक्रत कियौ ॥ ३६

दूहा

रघुबर सुजस प्रकासरौ, अहनिस करै अभ्यास।
सकौ सुकवि वाजै सही, रांम क्रपा सर रास ॥ ३७

प्रगट छंद अनुस्टपां, संख्या गिणियां सार।
सुज रघुबर प्रकास जस, है गुण तीन हजार ॥ ३८

जिणरौ गुण भण जेणनूं, न गिणौ गुर निरधार।
पड़ रौरव ते प्रगट, अवस स्वांन अवतार ॥ ३९

इति स्रीरघुवरजसप्रकास पिंगळ ग्रथे आढा किसना
विरचिते कडखौ अेक अेकादस प्रकार निमाणी
निरूपण वरणण नाम पचमौ प्रकरण
सपूरण। समाप्त।

++++++++++

३५ उतन—वतन, जन्म भूमि।

परिशिष्ट १

पद्यानुक्रमणिका

क्र स.	पक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्याक	नाम
	गाथा				
१	अघ हर सुख कर अमळ	८०	२	१६८	सोभा
२	अजामेळ यक वार	७८	२	१६०	काती
३	असन वसन जळ अहनिस	८१	२	१७३	सिघी
४	असमझ समझ अखीजै	८०	२	१६६	गाहेणी
५	अहमत तज भज ईसर	८०	२	१७०	चक्वनी
६	आळस न कर अजांण	७९	२	१६१	महामाया
७	कमळनयण कमळाकर	७९	२	१६२	कीरती
८	की कहणौ कौसल्या	७७	२	१५२	लज्जा
९	जगत जनक हरि जय जय	८१	२	१७४	हसी
१०	जन लज रखण जरूरह	८१	२	१७१	सारसी
११	जिण दिन रघुवर जपै	७९	२	१६४	माणणी
१२	जीहा राघौ जपै	७७	२	१५१	बुद्धी
१३	तौ सारीखौ तूही	७६	३	१४९	लछी
१४	निज कुळ कमळ दिनेस	७९	२	१६५	रामा
१५	नित जप जप जगनायक	८०	२	१६९	हरिणी
१६	पढ सीतावर प्रांणी	७८	२	१५७	धात्री
१७	भुजबळ खळ दळ भजण	८१	२	१७२	कुररी
१८	रघुवर सौ प्रभु तज कर	८०	२	१६७	वसत
१९	रट रट स्रीरघुराम	७८	२	१५९	छाया
२०	रिखय मख कर रखवाळ	७९	२	१६३	सिद्धी
२१	रिख सिख गगा राम	७८	२	१५८	चूरणा
२२	रे झोका स्रीरांम	७६	२	१५०	रिद्धी
२३	वेदां भेदां वेखौ	७७	२	१५३	विद्या
२४	सज्झी न राघव सेव	७८	२	१५६	गौरी
२५	सुन्दर स्याम सरीर	७७	२	१५५	देवी
२६	है कांनै मौताहळ	७७	२	१५४	क्षम्या
	गीत				
१	अडग तेज अणथघ सरद, ध्यांन स्रुति आसती	१७४	४	२४	सुद्ध सांणोर
२	अडग तेज अणथघ सरद, ध्यांन स्रुति आसती	१९४	४	६१	सुद्ध साणोर

क्र स.	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक	नाम
३	अवधेस लका ऊपरै धर कुरख धखा जुधधरै	२४९	४	१५९	त्रकुटबध
४	आरख अगराजी दुती भळळाट रवि दरसेण	२४४	४	१४७	अरख भाखडी
५	आलम हाथरी रघुनाथ अचरिज, अवध भूप असक	२०४	४	७६	सोरठियो
६	ओपत तन तेल सिंदुरा आगा	३२१	४	२९४	जयवत सावझडो
७	ओयण जे रांम सीया नित अरचै	२००	४	७०	वेलिया साणौर
८	ओयण जे राम सीया नित अरचै	१७३	४	२३	वेलियो साणौर
९	अगधार आरख ऊजळा	२७७	४	११६	अठताळो सावझडो
१०	कमर बाधिया तूण सारग गहिया करां	२९९	४	२५८	अरध सावझडो
११	कर कर आद मे हिक नगण सुभकर	१८८	४	५०	वसतरमणी
१२	करा घाड लागै रघौराज दत कीजता	२५८	४	१७४	अहरण (न) खेडी
१३	करी चूर कुळ सुभावहत् सादूळ कह	१९२	४	५८	वडो साणौर
१४	कवसळ सुता राजकवार क्रत जन काजरा	२८३	४	२३०	घमाळ
१५	कारकार खार वार धार सुरार सधारकार	३१८	४	२९२	घणकठ सुपखरो
१६	कीजै वारणै छिब काम कौटिक, दीन दुखदाधौ	२३६	४	१२९	कवार
१७	कैटभ मधु कुभ कवध कचरिया	२०३	४	७४	पूणियौ तथा जागडो साणौर
१८	कौसिक रिख जग काजरै	२८८	४	२३९	यकखरो
१९	गह गजै रे गह गजै	२४४	४	१०८	अध चितविलास
२०	खगदत अद खटाजी राखण रजवटा	२४२	४	१४२	भाखडी
२१	घणनामी जी घणनामी	२२६	४	११०	लघुचितविलास
२२	चितकरणो आखा दिसी नह चाहै	३०१	४	२६२	सेलार
२३	जग जनक धनक हर हरण करण जय	२५५	४	१६९	हेकल वयण
२४	जगनाथ अतरतणो जामी	२६६	४	१९०	उवग सावझडो
२५	जम लग कठै भै सीस जियां	१७८	४	३४	घडउथल्ल
२६	जम लग कठै भै सीस जिया	२२२	४	१०३	घडउथल्ल
२७	जानकी नायक जगत जाहर	२५२	४	१६४	त्रकुटबध
२८	जांमी अघभान सुरसरी जेथी	२९३	४	२४८	चौटियो
२९	जिण मुख जोवता दुख प्राचत जावै	२२०	४	९९	दुमेळ सावझडो
३०	जै नरेस राघवेस आसुरेस जुधां जेस	२५९	४	१७७	विडकठ तथा वीरकठ
३१	तनै कहू समझाय मत मद जग फद तज	२१६	४	९४	गोख सावझडो
३२	तारै दामा त्रिकमाह, भय वारै जम भूप	३०४	४	२७६	मनमोह
३३	नीकम पाळगर जन देवतरो सो	१९१	४	५४	जयवत सावझडो
३४	थिर वृध यटो क्रत होण कटो	२८०	४	२२४	सवैयो
३५	वर्गे "किमन्न" दासरे तवृ विरुद्ध ताम	२६१	४	१७९	अट्टो

क्र.स.	पक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्याक	नाम
३६	दडी पडता द्रहा मे चढै झाकियौ कदव डाळ	२०६	४	१४८	पाड़गती सुपखरो
३७	दत किरमर जोड नकौ विरदायक	२६५		२५३	त्रिमेळ पालवणी तथा झडलु पत सावझडो
३८	दसरथ नृप नदरण हर दुख दाळद	३१०	४	२७३	पखाळौ
३९	दसरथरा नद मुकतरा दाता	२८९	४	२४१	अमेळ सांणोर
४०	दाखां आठरै खट भाख चवदह	२२८	४	११४	अरटियो
४१	दीनां पाळगर घन सुतन दसरथ	२१७	४	९६	चितईलोळ
४२	घन राघव हाथ अभग धुरधर	२७६	४	२१४	अरट सांणोर
४३	धाड़ा राघव धुर धमळ अवनाडा अणवीह	२३०	४	११९	झमाळ
४४	घंघींगर कदम आवळा धरतौ	१८९	४	५२	मुणाळ
४५	नर नह ले हरिनाम जडिया जजीर फोड अघ जीहा	३१६	४	२८८	गहांणी
४६	नर नाग सुरा सुर जोड नथी	२८७	४	२३७	उमग
४७	न रूप न रेख न रग न राग	२१०	४	८६	बकगीत
४८	नरेस रांम नूमळां, उरा सभाव ऊजळां	२६३	४	१८६	भांण
४९	निज आठ जोग अभ्यास अहनिस	२३४	४	१२७	हिरणझप
५०	निज संता तारै घणनांमी	२२१	४	१०१	अडियल
५१	निरधार निवाजरण भै अघ भांजण	२१५	४	९२	लैहचाळ
५२	पण राखण दास गदापाणी	२९४	४	२५१	मदार
५३	परहर अवर धंध अपार	३१३	४	२८०	अरधभाख
५४	पहपत रघुपती दत झोक पांणां	२७९	४	२२२	काछो
५५	पेख वर्ण जिण वाह परघ्घर	२७४	४	१५३	ढोलचलो
५६	पैडां नीतरा चलाक धू छ्-च्यार भज पलीतरा	२५४	४	१६६	सुपखरो
५७	पचाळी बेर वधायो पल्लव	२०२	४	७२	सोहणो
५८	प्रांणी सो झूट कपट चित परहर	२८६	४	२३५	सतखणो
५९	बूडतो सरवर फील उबारै	१९९	४	६७	मिस्र वेलियो
६०	वद पाय राघवेस, जोध मेघनाद जेस	२६७	४	१९२	अरध गोखो सावझडो
६१	भड असुर आहव भजिया	२३७	४	१३३	दोढा
६२	भज रे मन राम सियावर भूपत	३०२	४	२६५	त्राटको
६३	भूपाळा भामी नेकनामी	२६५	४	१८८	दुमेळ
६४	मह ईजत आव अमपै रे	२२९	४	११६	सेलार
६५	महाराज आजानभुज रांम रघुवंसमरण	२१३	४	९०	चौटियाळ

क्रस	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक	नाम
६६	महाराज औधेस आधार संतां	२५६	४	१७१	भुजंगी
६७	मही राखण गायरा आखियातरा गातरा मेर	३२०	४	२९३	
६८	मात्रा चवदे तुक हेकण माहै	२८८	४	२३८	सरलोकौ
६९	मुखहू ता भाख 'किसन' मह माहण	२११	४	८८	त्रवंकडौ
७०	राघव गह पला कीर कह पै रज	१७७	४	३०	घोडादमौ
७१	राघव गह पला कीर कह पै रज	२२७	४	११२	,,
७२	रांम असरण सरण राजै	२०८	४	८४	त्रिवड तथा हेलौ
७३	रांम नांम रसा रे जाप संभ जसा रे	२७५	४	२१२	अहिबध
७४	रवि कुळ रूपरा रे, समथ सरूपरा प्रगट अनूपरा रे	३२३	४	२९९	रूपग गजगत
७५	रे अधम नर समर रघुवर	२९०	४	२४४	भवरगुंजार
७६	रेणायर मथण मथण रेणा यर, भर धर टाळण समर भर	३००	४	२६०	झडमुकट
७७	रे राखै ऊजळ भाव रदा	२८२	४	२२८	त्रबक
७८	लछण कसीसै भुजा धांनख दध लाजरा	२९८	४	२५७	वडौ सावझडौ
७९	वडा भाग ज्यांरी विसू लछवर चरणा लाग	३०७	४	२६९	ललित मुकट
८०	विभाड पचदूणमाथ आथ देण वेसरौ	२६१	४	१८१	दूणौ अट्ठौ सावझडौ
८१	वसी ऐराकरां छ भाख पैरा-करां खडगवाहा	१७२	४	२२	सुपखरौ
८२	सझ भुजा निज धांनख सरा, मझ अडै भूहां मोसरा	२८५	४	२२२	रसावळौ
८३	सतरा हरचद सुमतरा सागर, चितरा विलंद सुदतरा चाव	२३९	४	१३६	हसावळौ
८४	सरण वखांणै जगत चित वखांणै जेम सिध	१७६	४	२८	धारणंध वेलियौ
८५	सरण वखांणै जगत चित वखांणै जेम सिध	१९६	४	६३	प्रहास साणोर
८६	साखी रे भांण नसापत सारै, कीध महाजुध कीत सकाम	३१४	४	२८४	जाळीवध वेलियौ
८७	साझी के वखत साम, वेलसत वारियाम	२४५	४	१४९	गोखा
८८	साझी के वखत साम, वेल सत वारियांम	२४६	४	१५१	गोखा

क्रम	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक	नाम
८९	सारग हुण आया अवधेसर, सेसहू ता पूछै राजेस्वर	२९७	४	२५५	त्रिपखौ
९०	सांमाथ तू सुरनाथ तू	२६८	४	१९८	धमळ
९१	सिया वाहर समर दसाणण साभा	२१९	४	९८	पालवणी
९२	सिव देवा इंद्र सिघ सिघराजा	१७५	४	२७	साणौर
९३	सीता सुंदरी अरधग ससोभत सेवग मारुत सारखा	२२३	४	१०५	सीहचलौ
९४	सीवर सारणोजी, केता निवळ सतां काम	२४४	४	१४५	दुतीय भाखडी
९५	सुख दियण दुख गमण स्वामी	२३२	४	१२३	मुडंल अठताळौ
९६	सुज वीजै नर पका मनह सीधौ	२८१	४	२२६	सालूर
९७	सुज रूप भूप अनूप स्यांमळ, जेम बरसण घटा छिब जळ	२४०	४	१४०	रसखरारौ
९८	सुतण दासरथ रूप लसवान कौटक समर	३०९	४	२७१	मुक्ताग्रह
९९	सुभ देह नीरद सुवर, साधार सेवग स्रीवर	२९२	४	२४६	भमरगुंजार
१००	सुदर तन स्याम स्यांम वारद सम, कौटक भारद काम सकाम	२७३	४	२०९	दीपक
१०१	सुदर सोभत घणस्याम	३१२	४	२७८	भाख गीत
१०२	स्रीधर स्रीरग सियावर स्रीपत करणाकर कारण करण	२०५	४	७८	छोटौ सांणोर

चौपई

क्रम	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक
१	आठ गुरु वारह लघू होय	१५५	३	१५९
२	आद लघु तळ गुरु धरियेएम	२२	१	७३
३	अंक तीसरौ पूरण हू त	१३	१	४९
४	अत गुरु हेठै लघु आणौ	२२	१	७१
५	अत निकट लघु सिर गुरु धरौ	१७	१	५८
६	अत लघु तळ गुरु धरिएहौ	२३	१	७५
७	अत लघु सिर गुरु परठीजै	२२	१	७२
८	उलट क्रम दखिणसू अक	२५	१	७८,७९
९	कळ वस धुर फिर आठ सकांम	२१४	४	९१
१०	क्रम विपरीत अक लघु सीस	२१	१	६८
११	जांण उभय तुक भवर गुजार	२५२	४	१६० से १६३
१२	ते रै कौड वीयाळी लाख	१६५	३	१८६
१३	थल विपरीत नस्ट कळ कीजै	१९	१	६३
१४	थिर गुरु अत सीस लघु थाप	२३	१	७६,७७

छप्पै

क्र स	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक	नाम
१८	जिण राघव जापियां थरू घर नवनिध थावत	१०१	२	२३५	अधनाळीक
१९	जै जै भूपा भूप सदा सतां साधारै	८९	२	२०३	अजय
२०	ट ठ ड ढ ण गण अरेह, मात्रा गण पच प्रमांणै	७	१	२५	
२१	तरण सरस छब तरण, सरण असरण हरखण- सक	१०७	२	२५३	हेकल्लवयण
२२	तिण मारी ताडका, जिकण रिख मख रखवाळे	१००	२	२३३	लघुनाळीक
२३	थार्घं कुण दध अथघ कमण प्रभणे गिण रज कण	३३९	५	३४	
२४	'दुरसा' घर किसनेस' किसन घर सुकवि महेसुर	३४०	५	३५	
२५	नयण कज सम निपट सुभग आंणण हिम कर सम	९५	२	२१९	समबळ विधान
२६	,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,,	१७४	४	२५	,, ,, ,,
२७	नारायण नरकार, नाथ नरहर जग नायक	१०९	२	२५९	अहर अळग
२८	नारगी ससार नीम अबर कर अबह	१०५	२	२४९	हीराबेधी
२९	पूर अपूरिय आस, तौ पिण उमरथी पूरिय	९७	२	२२५	'सांकळ
३०	पकत खट करि प्रथम, सख्य मत्ता कोठा सम	३८	१	११०	
३१	पखी मुनि मन पख, तीर भव सिंधु तरायक	८८	२	२०१	
३२	प्रथम परठ खट पत्त कोठ वरणां समांन कर	३९	१	११२	
३३	प्रथम ब्रहम मझ बेद, छड मारग दरसायौ	१	१	२	
३४	भव व्रहमा जिण भजै, भजै तिण नाम पापभर	१०३	२	२४३	मुकताग्रह
३५	भ्रमर भ्रामरौ सरभ सैन	६३	२	८३	
३६	मात्रा नष्ट विधान, कहत कविराज प्रमाणहु	१५	१	५५	
३७	भिन्न भिन्न रिध सिध, मित्र दासह जय पावत	४	१	११	
३८	मेर मकर मद सिद्ध	९०	२	२५०	
३९	यू जे तै न कियौ करसु यू जण जण आगळ	१०६	२	२५१	करपल्लव
४०	रट रट रे नर ईस, नाम औरां जिण सीस	१०८	२	२५७	ताळूरव्यव
४१	लच्छी रिद्धी बुद्धी, लज्जा विद्या खम्या	७६	२	१४७	
४२	लाभ नहीं अहलोक नहीं परलोक निरभय	१०२	२	२३९	नाट
४३	वळता जाता सख कमळवधह समवळ कह	९३	२	२१०	
४४	विस्णु नाम कुळ विस्ण विस्णु सुत मित्र अपस वद	१८०	४	३७	
४५	सगर सुतण जिग करत अगत हकनाहक दीनी	९६	२	२२१	जातासंख
४६	सनमुख पहली सुद्ध हुई गरभित सनमुख दख	१६८	४	९	
४७	सुघ वडौ सागोर, समझ दूसरौ प्रहासह	१८५	४	४५	
४८	सूरजपणौ सतेज, स्रवण अम्रत हिमकर सम	१०५	२	२४७	चौटीवंध

छंद

क्र.स.	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक	नाम
२९	केकधा लका कहै, जस रघुनाथ सुजांण	११२	२	२६९	कुंडळियौ दोहाळ
३०	केसव कमळ नैन सत सुख देन सभू	१६४	३	१८५	घणाखरी
३१	कौडक तीरथ राज चिहू दिस घाय करै	१४६	३	१२८	पदनील
३२	कौड दैत भज सज, पारण चाप सायकं	१४३	३	११८	चांमर
३३	कोटिक तीरथ घाय करौ	१५८	३	१६८	किरीट
३४	खर खळ खडरण, महपत मडरण	१२५	३	४४	सवासन
३५	खळदळसमर खपावत किव जरण गावत कीरती	५९	२	६४	गगनागा
३६	गढ कनक जिसा अगज गाहै	१४२	३	११३	अजास
३७	गगा के सुथांन नख करत प्रकास भांन	१६४	३	१८३	मनहर
३८	गावै राघौ सोभरणो पात गाढ़ौं	१३३	३	८०	सालिनी
३९	गाहा मात्र सतावन गावै	८२	२	१७६से१८९	बेअख्यरी
४०	गिरिस गिरा गौ गोरी	७३	२	१३०	महा
४१	गुरु अंत मत चवदह गिरणै	४५	२	१८	झपताळ
४२	गुरु लघु अनियम सोळ मता गरण	४७	२	२६	बैअख्यरी
४३	गुरु लघु विरण नियम तीस बिमत्ता	५५	२	५२	लीलावती
४४	गोपाल गोव्यद खगेस गामी	१३४	३	८६	इद्रव्रज्रा
४५	गै। गै। स्री। थी।	११६	३	७	स्री छंद
४६	गोह सरीखा पामर गाऊं, व्याध कवंधा ग्रीध बताऊं	१३१	३	७१	चपकमाळा
४७	गौतम नार सुपाहन तै रज पाय लगे रघु-नायक तारी	१५७	३	१६४	मत्तगयद
४८	गौ दी। कामौ	११६	३	८	कांम
४९	गौर स्मांम सियरांम गाव रै	१३६	३	९१	रथोद्धिता
५०	घणस्यांम सरूप अनूप घरणौ रै	१४०	३	१०८	तारक
५१	चव आद खटकळ दुकळ गुरु यक पाय सत अठ नीसय	५१	२	३८	हरिगीत
५२	चव कळ उरोज थळ च्यार बोज	५५	२	५४	वरवीर
५३	चव कळ जगारण, मघु भार जारण	४२	२	१०	मधुभार
५४	चव लघु सिव मत चूरण	४३	२	१३	रसिक
५५	चाप करां नृप राम चढ़ै माझ रजी तद भांण मढ़े	१३१	३	७२	सरवती
५६	छ मत वामसमरि स्याम	४१	२	५	वाम
५७	जग माथै राजत ओठ जेतै हरि एहो आनूपा भाय	१५३	३	१५१	सभू
५८	जनक सुता मन रजरण गजरण...	५९	२	६६	द्रुपदी

क्रम स	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक	नाम
८६	देव देव दीननाथ राज राज स्री दयाळ	१४७	३	१२६	चचळा
८७	देव राघव दीनपाळ दयाळ वछित दायकं	१५०	३	१४१	चरचरी
८८	दौ लघु अत पय मत्त खोडस	४६	२	२४	अरिळ
८६	धन धन हरि चाप निखगधरी	४६	२	२२	सिंहविलोकण
६०	धरण कर धनक है जगन सह जनक है	१२६	३	६४	रतिपद
६१	धर धनक जग जनक	१२०	३	३०	जमक
६२	धारण माण पांण सर धनखह रांम बडा ब्रद्र धारै	१५५	३	१५८	नरिंद
६३	धारत कर सायक धनुख जे भोयण सिरताज	४८	२	२८	चूडामण
६४	धानखधारी, पै नीतचारी	१२०	३	२८	हारी
६५	धानुखधर कर पकज धारत	१४१	३	१११	पकावळी
६६	धुर मत्त सोळ अवर चवदह धर	७१	२	११६	चौबेला
६७	नमौ नरेस राघव दराज पाय दाघव	१२६	३	५२	प्रमांणी
६८	नमौ रघुनाथ सधीर समाथ	११८	३	१६	स्रिगेंद्र
६६	नमौ रांम सीतावर ओघनाथ समाथ महावीर ससार सार	१६०	३	१७३	महाभुजगप्रयात
१००	नर जनम जे दियौ समर जांनकीनाथ सौ	१४८	३	१३३	माळाधर
१०१	नरांनाथ सीतापती राम जै नाम	१४१	३	११०	कद
१०२	न रूप रेख लेख भेख तेख तौ निरजण	१४६	३	१२६	ब्रह्मिनाराज
१०३	नागेस भजै राघौ नत ही	१३२	३	१७४	सुखमां
१०४	नायक है जग राम नरेसर	१३६	३	१००	मोदक
१०५	नांम है रामको अंक आरामकौ	१२१	३	३४	विजोहा
१०६	निज आखै कवि 'किसन' निरूपण	७३	२	१३१ से १४६	बेअखरी
१०७	निमौ राम जेण तरी अम्ह नारी	१२६	३	६४	भुजगप्रयात
१०८	नौ मात जेरै, गुरु अतपै रै	४३	२	११	रसकळ
१०६	पद दस पचह मत्त प्रमाण	४५	२	२०	चौपई
११०	पनरै तेरह मत्त पय	७२	२	१२३	रस उल्लाला
१११	पच मत गमक सत	४१	२	४	गमक
११२	पापोघ हरत अत जन चितवत	१६०	३	१७५	साळूर
११३	पाय जुवराज नद अध दुरजोधन सौ	१६३	३	१८२	मनहर
११४	बयकूट विलानस कौ तजि के बध कौन चहै जम पासन की	१५६	३	१७१	दुमिळा
११५	भगत विछळ नयन कमळ ..	११८	३	२१	कमळ
११६	भजन करणौ जीहा भूपा पति रघु भूप रौ	१४६	३	१३८	हरिणी
११७	भव तेरह मत औण, कोय उपदोहा भाखै	५०	२	३४	वयुवा

क्र.स.	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक	नाम
११८	भुज दंड लीजै भांमण अध्रियावण अभीत	११२	२	२६७	कुंडळिया झडउलट
११९	भूप रघुवर सझत धनुसर	४२	२	८	सुगति
१२०	महण मथण राघौ वाग लसास माळी	१४४	३	११९	सालिनी
१२१	महदीप छंद तेरहै दस मत पय जाणौ	४९	२	३१	महादीप
१२२	माथ पंच दूण जुद्ध मारण	१३४	३	८३	सैनिका
१२३	माया परि हरि रे पकरि चरन गुरु	१६२	३	१७६	मनहर
१२४	माहाराजा दसरथके घर रामचद्र जनम लिया	८५	२	१९३	दवावैत
१२५	मुख मगळ नांम उचार सदा तनके अघ ओघन दाघव रे।	१५९	३	१७०	दुमिळा
१२६	मुण पाय दह मात, दीपक्क सुख दात	४३	२	१२	दीपक
१२७	मुण महण तार माथै, सुज गिरवरा समाथै	१२९	३	६६	बिंब
१२८	मूत याको मूळ च्यार भूतते सथूळ किंतू	१६३	३	१८१	मनहर
१२९	महा सुगण रूप है सुचित सार आचारमें	१४७	३	१३१	प्रथ्वी
१३०	यिक रघुनाथ उजाळौ सारौ रघुवंस जेण दुति सरसत	११३	२	२७१	कुंडळणी
१३१	रखण जन सरण रघुराज कौसळ कवर	५८	२	६२	खज
१३२	रघुनाथ भज दुपच माथ अभग रे	१४४	२	१२२	कळहस-
१३३	रघुनाथ रटौ कृत हीण कटौ	१२१	३	३३	तिलका
१३४	रघुराज सिहायक संत रहै	१३८	३	९७	तोटक
१३५	रघुवर भीली कर रै	१२८	३	६१	सारंगिका
१३६	रघुवर महाराज गाव नहचै यक पळ न लाव	६१	२	७२	पचवदन
१३७	रज पाय परस जिण नार रिखी	५७	२	६०	मदनहरा
१३८	रट दासरथी कथ बेद कथी	११७	३	१७	रमण
१३९	रटौ जाम आठू सदा हो जना चू पसू राम राम	१५१	३	१४३	क्रीडा
१४०	रटौ रामचद्र, कटौ पाव कद	११७	३	१५	ससी
१४१	रमा उमा । पिय वियं	११६	३	१०	मही
१४२	रसणा रांम रट राम रट राम रट	३३९	५	३३	कड़खौ
१४३	राघव जपतौ प्राणी मूढ आळस मा करै	१२८	३	५८	अनुस्टप
१४४	राघव ठाकुर है सिर ज्यारै	१३२	३	७७	दोधक
१४५	राघौजी जो गावौ प्राझी लच्छी पवौ	१२१	३	३२	सेखा
१४६	राघौ राघौ जपणरी ढील म राखै	१४०	३	१०७	माया
१४७	राघौ राजा सीता राणी	१२६	३	४९	विद्युन्माळा
१४८	राघौ रूडो स्त्री सीता स्वामी राजै	१३४	३	८५	मालतिका
१४९	राजेस स्त्रीराम जे नैण राजीव	१३८	२	९८	सारंग

दूहा

क्र.ग.	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक	नाम
१८५	धे लट फळ लघु गुरु चरण	४९	२	३६	
१८६	धळ विपरीत उदस्ति सिर	१८	१	६१	
१८७	धल मम मता चव दूहां	२५९	४	१७६	
१८८	धुर अठार बी नव धरौ	२३६	४	१२८	
१८९	धुर अठार बी बार धर	२६९	४	१९९	
१९०	धुर अठार मत्त सुधर	२७१	४	२०३	
१९१	धुर अठार बारह दुती	२८१	४	२२५	
१९२	धुर अठार सोळह दुती	३०२	४	२६३	
१९३	धुर अठार सोळह सरब	३०१	४	२६१	
१९४	धुर उगणीस अठार धर	२७३	४	२०८	
१९५	धुर उगणीसह फळहधर	१९१	४	५३	
१९६	धुर चवदह चवदह दुती	२४८	४	१५४	
१९७	धुर चवदह नव फेर धर	३२७	५	६	
१९८	धुर तीजै मत बार धर	६९	२	११२	नंदा
१९९	धुर तुक अगर अठार धर	२५३	४	१६५	
२००	धुर तुक अन्तिर अठार धर	२०६	४	७९	
२०१	धुर तुक मत चाळीस धर	३३८	५	३२	
२०२	धुर तुक मत चोवीस धर	२५९	४	१७५	
२०३	धुर तुक मत छाईस धर	२६७	४	१९३	
२०४	धुर तुक मत तेवीस धर	२१६	४	९३	
२०५	धुर तुक मत बेवीस धर	१९६	४	६२	
२०६	धुर तुक मत अठार मत	२०१	४	७१	
२०७	धुर नव मत जोकार फिर	२४३	४	१४४	
२०८	धुर बी चौथी पचमी	२३४	४	१२६	
२०९	धुर बीजी मत बार धर	२६२	४	१८२	
२१०	धुर बी ती चवदह धरौ	२३३	४	१३०	
२११	धुर बी ती तुक सोळ मत	२४७	४	१५२	
२१२	धुर बी ती पचम छठी	२४०	४	१३८	
२१३	धुर बी तुक मत सोळ धर	२९६	४	२५४	
२१४	धुर बे गण चोवीस मध	३१०	४	२७४	
२१५	धुर मत्ता अठार धर	२०४	४	७७	
२१६	धुर मत्ता अठार धर	२११	४	८७	
२१७	धुर मोहर दुजी पचम	२३३	४	१२४	
२१८	धुर मोहर बी ती पचम	२४०	४	१३७	
२१९	[illegible]	९	१	२९	

क्र स.	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक	नाम
२२०	नगणक भगण तुकत खट	२४०	४	१३६	
२२१	नगण सगण मगणह रगण	१४६	३	१३७	
२२२	नर-कायब करवा नियत	५	१	१३	
२२३	नर तन पावै जे नरा	६१	२	७५	
२२४	नव कोठा मझ एक तुक	३१३	४	२८२	
२२५	न स घ बिंब तोमर सगण	१२६	३	६५	
२२६	नस्ट सख्य विपरीत निदांन ,	२०	१	६५	
२२७	ना कीज्यौ सैंणा नरां	६४	२	८५	भ्रमर
२२८	नाट सबद गिण कवितमें	१०२	२	२३८	
२२९	निज प्रिय कहिये परम प्रिय	१०	१	३३	
२३०	नूपुर रसना भरण फग्गि	१०	१	३२	
२३१	पडै यगण खट चरण प्रत	१५०	३	१४२	
२३२	पढता होठ मिळै नहीं	१०६	२	२५८	
२३३	पढ वसत रमणी प्रथम	१८५	४	४४	
२३४	पद प्रत मत गुण तीस पढि	५२	२	४१	
२३५	पनर पनर मत दोय पय	७२	२	१२६	
२३६	परगट कट तट तडत पट	६८	२	१०५	सुनक
२३७	परठ दच्छ सुघी पगत	३५	१	१०२	
२३८	पह ज्यारा चित्त लागा	७०	२	११३	
२३९	पहल अठारह बी चवद	३१७	४	२८६	
२४०	पहल त्रतीय पद सोळ मत	६६	२	१०८	
२४१	पहल दुती तीजी मिळै	२३२	४	१२१	
२४२	पहला गुरु तळ लघु परठ	११	१	४१	
२४३	पहलां दूहौ एक पुण	१०४	२	२४४	
२४४	पहली गाहो पर वजै	३१५	४	२८६	
२४५	पहली दूजी तुक मिळै	२०८	४	८३	
२४६	पहली दूजी मेळ पढ़	२३४	४	१२५	
२४७	पहली दूजीसू मिळै	२६३	४	१८३	
२४८	पहली बीजी तीसरी	२३७	४	१३१	
२४९	पहली तीजै बार पढ	६६	२	११०	
२५०	पांच भगण गुरु अंत पद	१४६	३	१२७	
२५१	पूछै अन कवि छंद पढि	९२	२	२०७	
२५२	पूछै यू अन कवि प्रसन	२८	१	९४	
२५३	पूरब अंक सिर अंकसू	३७	१	१०६	
२५४	पूरब अंक सिर पतसू	३७	१	१०७	

क्र स	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक	नाम
२५५	पूरब जुगल पहला पढ़ी	१३	१	४५	
२५६	पूरवारध मत भाख पढ	२८३	४	२२६	
२५७	पेट काज नर जस पढै	२	१	५	
२५८	पेट हेक कज पात	८८	२	१६८	
२५९	पेट हेक कज पात	१६६	४	३	
२६०	पैली दूजी सू मिळै	२४८	४	१५६	
२६१	पंच गुरुसगणह भगण	१४०	३	१०६	
२६२	पंचम अठम सातमी	२३२	४	१२२	
२६३	पंचम छठी सातमी	२३७	४	१३२	
२६४	प्रगट छंद अनुस्टपां	३४०	५	३८	
२६५	प्रगट जांगडा गीत पर	२९२	४	२४७	
२६६	प्रथम तीन तुक चवद मत	२८४	४	२३१	
२६७	प्रथम त्रीये मत बार पढ़	७२	२	१२७	
२६८	प्रथम दूहौ कर तास पर	३०६	४	२६८	
२६९	बडा जैण साणोर बिच	२५७	४	१७३	
२७०	बार प्रथम तेरह दुतीय	५८	२	६३	
२७१	बारह मत तुक आठ प्रत	२४५	४	१४८	
२७२	बारा अखिर तुक एक प्रत	२५६	४	१७०	
२७३	बिबुध भास व्रज भाख बिच	२	१	३	
२७४	बीस अठारह क्रम अवर	१९३	४	६०	
२७५	बीस छ मता अंत लघु	३२२	४	२९८	
२७६	बीस बीस चोपद वरण	१०३	२	२४०	
२७७	बे छंदा मिळ छंद व्है	८८	२	१९९	
२७८	बे सुद्ध थळ बिपरीतरै	२७	१	९०	
२७९	भण पहु चावै भूधरी	६५	२	९४	मदकळ
२८०	भगण रगण दुजवर नगण	१५५	३	१५७	
२८१	भगवत गीता क भणं	८८	२	१९७	
२८२	भ ज स न र ह पनरह अखिर	१४५	३	१२४	
२८३	भमर अखिर छाईस भण	६३	२	८४	
२८४	भाख गीत तुक चवि भणौ	३१२	४	२७९	
२८५	भाग गीतरौ चरण नव	१६	१	५६	
२८६	भाया रस तांडव पाहौ	९	१	३१	
२८७	भेद च्यार जिणरा भणौ	१९८	४	६५	
२८८	भोटा आंणौ राम भज	६८	२	८८	
२८९	मगण [illegible] मगण लघु	२	१	७	

क्र.स.	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक	नाम
३२५	मेवा तजिया मह महण	६३	२	८१	तूंबेरौ
३२६	यक तुक गुणतीस अखिर	३११	४	२७५	
३२७	यक तुक तौ थापै अरथ	११०	२	२६३	
३२८	यक दौ च्यार सु आठ विध	३७	१	१०३	
३२९	यकसू दुगणा रूप सिर	२५	१	८१	
३३०	यकसू वरण छवीस लग	११५	३	५	
३३१	यगण सख्य नारी उभय	१२२	३	३६	
३३२	यण विध पूरव अंक जुड	३८	१	१०८	
३३३	यण हीज विध ऊत्तर अरथ	२९०	४	२४३	
३३४	यतरी मत यतरा वरण	११	१	३८	
३३५	रगण जगण गुरु लघु हुवै	२६६	४	१९१	
३३६	रगण जगण पय अंत गुरु	१२४	३	४२	
३३७	रगण नगण रगणह ध्वज	१३६	३	९०	
३३८	रगण मध्य लघु सगण रं	३	१	८	
३३९	रगण सगण अंतह गुरु	२७४	४	२१०	
३४०	रघुवर सुजस प्रकासरौ	३४०	५	३७	
३४१	रट नर अधिका राज	१७७	४	३१	सोरठौ
३४२	रटा गीत रेणखरौ	२७१	४	२०४	
३४३	रस उल्लाल तिथ तेर मत	७२	२	१२४	
३४४	रस स्यगार य हासरस	९५	२	२२०	
३४५	राघव रट रट हरण कर	६८	२	१०६	
३४६	रांम भजनसू राता	६९	२	१११	
३४७	रे चित व्रत द्रढ़ एम रख	९३	२	२०८	
३४८	रे नाहर रघुनाथरा	६	१	२०	
३४९	रे नीसांणी छवरा	३२५	५	२	
३५०	रे चित व्रत द्रढ़ प्रेम रख	६६	२	९७	वांनर
३५१	रोम रोममे रम रियौ	६५	२	९२	
३५२	लगिया बीसं नव अखिर	३१३	४	२८३	
३५३	लघु गुरु क्रम वरण आठ	१२६	३	५१	
३५४	लघु दीरघ दीरघ लघु	७	१	२१	
३५५	लघु मात्रोत फ पूणियो	२८५	४	२३३	
३५६	सगण सजुत पाठ तुक	३३४	५	२४	
३५७	मागं पढ़ा नाउयं	१०८	२	२५६	
३५८	से मट ... नव मगं	१०९	२	२६०	
३५९	लेपत वरण छ्योस लग	११५	३	३	

क्रस	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक	नाम
४	अमेळ साणोर	२८६	४	२४१	
५	अरट सांणोर	२७६	४	२१४	
६	अरटियो	२२८	४	११४	
७	अरध गोखो सावझड़ो	२६७	४	१६२	
८	अरध भाख	३१३	४	२८०	
९	अरध भाखडी	२४४	३	१४७	
१०	अरध सावझड़ो	२९९	४	२५८	
११	अहरण(न)खेडी	२५८	४	१७४	
१२	अहिवध	२७५	४	२१२	
१३	उमंग गीत	२८७	४	२३७	
१४	उवंग सावझड़ो	२६६	४	१९०	
१५	कोछो	२७९	४	२२२	
१६	कँवार	२३६	४	१२९	
१७	खुडद छोटो साणोर	२०५	४	७८	
१८	गहांणी	३१६	४	२८८	
१९	गोख सावझडो	२१६	४	९४	
२०	गोखा	२४५, २४६	४	१४९, १५१	
२१	घण कठ सुपखरो	३१८	४	२९२	
२२	घड़ उथल्ल	१७८	४	३४	
२३	घोडादमो	१७७, २२७	४	३०, ११२	
२४	चितईलोळ	२१७	४	९६	
२५	चोटियाळ	२१३	४	९०	
२६	चोटियो	२९३	४	२४८	
२७	जयवंत सावझड़ो	१९१, ३२१	४	५४, २९४	
२८	जाळीवध	३१४	४	२८४	
२९	झड़मुकट	३००	४	२६०	
३०	झमाळ	२३०	४	११९	
३१	ढोलचलो तथा ढोलहरो सावझडो	२४७	४	१५३	
३२	त्रकुटवध	२४९, २५२	४	१५९, १६४	
३३	त्रवक (त्रबको)	२८२	४	२२८	
३४	त्रबंकडो	२११	४	८८	
३५	त्राटको	३०२	४	२६५	
३६	त्रिपखो	२९७	४	२५५	
३७	त्रिमेळ पालवणी तथा झडलुपत	२९५	४	२५३	
३८	त्रिवड तथा हेलो	२०८	४	८४	

क्र स	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक	नाम
७४	वडौ साणोर	१६२	४	५८	
७५	वसंत रमणी सावझड़ौ	१८८	४	५०	
७६	विडकठ	२५६	४	१७७	
७७	वेलियौ सांणोर	१७३, २००	४	२३, ७०	
७८	व्रध चितविलास	२२४	४	१०८	
७९	सतखणौ	२८६	४	२३५	
८०	सवैयौ	२८०	४	२२४	
८१	साणोर	१७५	४	२७	
८२	सालूर	२८१, ३११	४	२२६, २७६	
८३	सीहचळौ	२२३	४	१०५	
८४	सुद्ध सांणोर	१७४	४	२४	
		१९४	४	६१	
८५	सुपखरौ	१७२	४	२२	
		२५४	४	१६६	
८६	सेलार	२२९	४	११६	
		३०१	४	२६२	
८७	सोरठियौ	२०८	४	७६	
८८	सोहणौ	२०२	४	७२	
८९	हिरणझप	२३४	४	१२७	
९०	हेकल वयण	२५५	४	१६९	
९१	हसावळौ	२३९	४	१३६	

छप्पै

क्र स	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक
१	अजय छप्पै	८९	२	२०३
२	अहर अळग	१०९	२	२५९
३	कमळबंध	९८	२	२२७
४	करपल्लव	१०६	२	२५१
५	कुडळिया	१०४	२	२४५
६	चौटीबंध	१०५	२	२४७
७	चौपाई	१०३	२	२४१
८	छत्रबंध	९९	२	२२९
९	जातासंख	९६	२	२२१
१०	ताळूरव्यंब	१०८	२	२५७
११	नाट	१०२	२	२३९
१२	नाटसळौ	१११	२	२६४

क्र.स.	पक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्याक	नाम
१३	नीसरणीबध	१०२	२	२३७	
१४	बधनाळीक	१०१	२	२३५	
१५	मझअखिरा	१००	२	२३१	
१६	मुकताग्रह	१०३	२	२४२	
१७	लघुनाळीक	१००	२	२३२	
१८	वळता संख	९६	२	२२३	
१९	विघानीक	१७४	२	२५	
२०	समवळ विधांन	१७४	४	२५	
२१	साकळ	९७	२	२२५	
२२	हल्लव	१०३	२	२२५	
२३	हीरावेधी	१०५	२	२४९	
२४	हेकल्लवयरा	१०७	२	२५३	

क्र.स.	पक्ति	पृष्ठ	अक	पृष्ठ	अक
२५	अन्य कवित्त	१	(१, २)	४	(११)
		१७	(२५)	१५	(५५)
		२८	(९५)	३०	(९७)
		३८	(१०९, ११०, १११)	३९	(११२)
		६३	(८३)	७६	(१४७)
		८८	(२०१)	८९	(२०४)
		९०	(२०५)	९३	(२१०)
		१०९	(२६१)	११०	(२६२)
		११५	(४)	१६१	(१७८)
		१६२	(१७९, १८०)	१६३	(१८१, १८२)
		१६४	(१८३)	१६८	(९)
		१७९	(३५, ३६)	१८०	(३७)
		१८४	(४३)	१८५	(४५)
		३४०	(३५, ३६)		

परिशिष्ट २

छंदानुक्रमणिका

दूहा